प्रकाशकका निवेदन

श्री मनुबहन गांधी पूज्य गांधीजीकी अन्तेवासिनीके रूपमें दिसम्बर १९४६ से अुनके साथ हुअीं और अुनके देहान्त तक अर्थात् ३० जनवरी १९४८ तक अुनके साथ रहीं। अिस सारे समयमें वे रोज डायरी लिखती थीं। गांधीजी अुसे देख लेते थे। अिस प्रकार अुनकी यह डायरी गांधीजीके अुस समयके मनोमन्थन और कार्योंका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन जाती है। अिसीलिअे अिसे पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेका काम हाथमें लिया गया है। यह काम श्री मनुबहनने नवजीवनको सौंपा है, अिसके लिअे मैं अुनका आभार मानता हूं।

अिस कार्यके सिलसिलेमें अब तक नीचे लिखी पुस्तकोंके रूपमें अिस डायरीके कुछ भाग हिन्दीमें प्रकाशित हो चुके हैं:

(१) 'अेकला चलो रे'—अिसमें गांधीजीकी नोआखालीकी धर्म-यात्राकी तारीख १९–१२–'४६ से तारीख ४–३–'४७ तककी डायरी आ जाती है।

(२) 'कलकत्तेका चमत्कार'—अिसमें तारीख १–८–'४७ से तारीख ७–९–'४७ तककी डायरी आ जाती है।

यह तीसरी पुस्तक 'बिहारकी कौमी आगमें' मूल गुजरातीमें १९५६ में प्रसिद्ध हुअी थी। अिसका हिन्दी संस्करण अब प्रकाशित हो रहा है। अिसमें तारीख ५–३–'४७ से तारीख २४–५–'४७ तककी डायरी आती है। अिसके बादकी ता० २५–५–'४७ से तारीख ३१–७–'४७ तककी डायरीकी पुस्तक आगे तैयार होगी। अिस प्रकार अूपर लिखी पहली दो पुस्तकोंके बीचके समयकी डायरी छप जाय, तो फिर तारीख ८–९–'४७ से तारीख ३०–१–'४८ तककी गांधीजीके दिल्ली-निवासकी डायरी बाकी रह जायगी। यह अंतिम दिनोंकी डायरी जब पुस्तकाकार प्रकाशित होगी, तब डायरीके प्रकाशनका यह कार्य पूरा हो जायगा। यह कार्य जल्दी ही पूरा करनेका हमारा विचार है। आशा है पहली दो पुस्तकोंकी तरह यह पुस्तक भी हिन्दी पाठकोंको पसन्द आयेगी।

१२–२–'५९

आशीर्वाद

कुमारी मनु गांधी महात्माजीके परिवारमें पैदा हुअी, पर अिससे भी अधिक अुसका अेक वड़ा सद्भाग्य यह था कि वह अुनके सान्निध्यमें रह सकी और वह भी अैसे समयमें जव महात्माजी चारों ओर धधकती हुअी आगमें अपने जीवनकी तपस्याकी परीक्षा ले रहे थे। अेक प्रकारसे अुस समय महात्माजीका सान्निध्य ही स्वयं अेक कसौटी था। दिन-प्रतिदिन होनेवाली हत्या और लूटमारकी खवरें अुनको तप्त करती रहती थीं। वे अुस अग्नि-परीक्षामें अडिग खड़े थे और अपनी सारी शक्ति लगाकर अुस ज्वालाको ठंडा करनेके प्रयत्नमें प्रतिक्षण प्रयत्नशील थे। अिस डायरीमें मनु गांधीने महात्माजीकी ७८ वर्षकी अवस्थामें भी शारीरिक श्रमकी दिनचर्याके साथ अुनका आश्चर्यजनक साहस और सहिष्णुता, धीरज और स्थिरमतिको चित्रित किया है। अुस संकटकालीन स्थितिमें अपने शरीरकी भी परवाह किये विना वे अिस आगको वुझानेमें लगे थे। गांधीजीके अिस कर्मयोगको मनुने साथ रहकर देखा और अुसका वर्णन किया। अुसने महात्माजीकी शांतिदायी वाणीसे निकले अुपदेशोंका अुल्लेख किया और केवल अुनकी वाणीसे ही मिली शांति और सांत्वनाका नहीं, दिन-प्रतिदिन संपर्कमें आनेवाले व्यक्तियोंको अपने व्यवहारसे गांधीजी किस तरह जीत लेते थे, अिसका भी हृदयस्पर्शी चित्र खींचा है।

मनु गांधीने वताया है कि अिस डायरीको महात्माजी स्वयं देख लिया करते थे और अिस पर हस्ताक्षर कर दिया करते थे। अिससे अिसकी प्रामाणिकता ही नहीं महत्त्व भी वहुत वढ़ गया है। गांधी-साहित्यमें, विशेष करके अुस कालसे सम्वन्ध रखनेवाले साहित्यमें, अुसका अूंचा स्थान है। वापूकी छत्रछायामें रहकर जिस प्रेमसे अुसने अुनकी सेवा की, अुसका भी अनुमान अिस डायरीसे लगता है और वापूने अपने प्यार और आशीर्वादके साथ दिन-प्रतिदिन अुसे अैसी शिक्षा दी है, जो जीवनभर काम आ सकती है। अिस नित्य-नियमके फलस्वरूप जो सुन्दर चीज सवके सामने आ सकी, अुसके लिअे मैं मनुको वधाअी और आशीर्वाद देता हूं।

जनवरी २४, १९५९
माघ ४, १८८०

आमुख

मैं नहीं मानता कि अिस पुस्तकके लिअे किसी आमुखकी जरूरत है। फिर भी चि० मनुवहनके आग्रहके वश होकर कुछ न कुछ लिखनेको मैं प्रेरित हुआ हूं। गांधीजीके जीवनका अंतिम काल कौमी आगको शान्त करनेमें वीता और अुनकी मृत्यु भी अुसी कार्यमें हुअी। यह करुण सत्य हम सवको और सारी दुनियामें गांधीजीके जीवनसे प्रेरणा लेनेवाले भाअी-वहनोंको जाग्रत करनेके लिअे काफी है। गांधीजीका पार्थिव जीवन समाप्त हो जाने पर भी अुन्होंने देश और दुनियाके हितके लिअे अपने दीर्घ जीवन-कालमें जो पुरुषार्थ किया है, वह अुनके कार्यके द्वारा और अक्षर-देहके द्वारा जीवित रहेगा।

पाठक देखेंगे कि अिस वड़ी पुस्तकमें विहार-यात्राके दिनोंकी केवल दो मास और वीस दिनकी डायरीका समावेश हुआ है। अितनी वड़ी अुम्रमें भी गांधीजी प्रात:कालसे रात तक अनेक झंझावातोंके वीच अपने दैनिक जीवनकी नियमितता वनाये रखते थे। अनुशासन और संयमको वढ़ाकर मनुष्य अनेक वड़े कार्य पूरे कर सकता है, अिसके अुदाहरण संसारके अितिहासमें कम नहीं हैं। मनुष्य स्वार्थपरायण होकर अपने अहंकारका पोषण करनेके लिअे अनेक दिशाओंमें परिश्रम करता है। परन्तु गांधीजीने मानव-सेवाके अूंचे आदर्शवाला जो अुदात्त जीवन जीकर संसारको वताया है, अुसकी मिसाल दुनियामें कहीं नहीं मिलती। जिस हद तक हम अुनके जीवन पर अमल कर सकेंगे, अुस हद तक हम अपनेको और जगतको अधिक सुखी वना सकेंगे, अैसी मेरी श्रद्धा है।

संसारके अनेक पैगम्वरोंने मानव-समाजको अपने अपने देशकालके अनुरूप धर्मका अुपदेश किया, अुनके अनुयायियोंने अुस धर्मको सम्प्रदायका रूप दिया और पैगम्वरोंको ओश्वरकी तरह पूजा। फिर वादमें कहीं कहीं धर्मका जनून पैदा हुआ और धर्मके नाम पर रक्तपात भी हुआ। गांधीजीने सव धर्मोका अध्ययन करके, धर्मके तत्त्वरूपमें सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तको स्थापित करके केवल अपने जीवनको सम्प्रदायोंसे परे ही नहीं रखा, परन्तु धर्म और राजनीतिका समन्वय करके संसारके सभी क्षेत्रोंको अपनेमें समा लेनेवाले मानव-धर्म या नीतिधर्मका प्रचार भी किया। कोअी अुनके आदेशोंको वाद या सम्प्रदायका रूप दे, यह अुन्हें पसन्द नहीं था। अिसीलिअे आज संसारके कोने

कोनेसे लोग संसारको शांतिके रास्ते पर मोड़नेके लिअे अुनके जीवनकी खोज करनेको प्रेरित हुअे हैं। हम जिस हद तक अपनेको प्राप्त हुअे अिस अमूल्य अुत्तराधिकारका अपने देशके प्रश्न हल करनेमें अुपयोग करेंगे, अुसी हद तक संसारके दूसरे देशोंके लिअे हम अुदाहरण बनेंगे। अिस दृष्टिसे हम कहां हैं और हमारी जिम्मेदारी कितनी बड़ी है, अिसका विचार करनेकी मैं पाठकोंसे विनती करता हूं।

गांधीजीको विश्व-विभूतिके रूपमें स्वीकार करने पर भी कुछ लोग अुन्हें धुनी मानकर अुनके तत्त्वज्ञानसे घबराते हैं; गांधीजीकी वातें सच्ची और सादी होने पर भी अुनका अमल बहुत कठिन है, अैसा समझकर अुनकी तरफ अुपेक्षाकी वृत्ति रखते हैं। किसी भी प्रश्नके बारेमें अुनका रुख अितना सादा और सरल था कि विद्वान और अपढ़ सबकी समझमें आ जाय। वे हमें सबसे पहले निर्भय बनना सिखाते हैं। निर्भय बनकर हम प्रश्नोंका वैज्ञानिक पद्धतिसे अध्ययन करके किसी निर्णय पर आयें और समग्र मानव-समाजका हित ध्यानमें रखकर अुस पर अमल करें। यह वैज्ञानिक पद्धति अगर सब जगह अपनाअी जाय, तो हम अनेक वादों और सम्प्रदायोंके झगड़ोंसे बच सकते हैं। चि० मनुबहनने बड़ी लगन और सावधानीसे गांधीजीके जीवन-प्रसंगोंकी नोंध ली है और अुसे सुरक्षित रखकर लोगोंके लिअे अुपयोगी सिद्ध होने-वाले ढंगसे तैयार किया है। अिसके लिअे मैं अुन्हें धन्यवाद दूं, यह शायद अुन्हें अच्छा न लगे। अुनका परिश्रम सब पाठकोंके लिअे आशीर्वादरूप सिद्ध हो, यही मेरी प्रार्थना है।*

मोरारजी देसाअी

कोर्सली
बम्बअी – ६
२८–४–'५६

---

* मूल गुजराती पुस्तकका आमुख।

बिहारकी कौमी आगमें

५–३–'४७, बुधवार
कलकत्तेसे पटना जाती रेलमें

रातको लगभग जागरण ही हुआ था। बापूजी सो जाते थे। पर निर्मलदा और मैं जागते ही रहे थे। शैलेनभाअी भी जागते थे। रातको ही मैंने फंड गिन डाला। हुनरभाअीने गिननेमें मदद की थी। हावड़ा स्टेशन परका कुल फंड रु० ७००–६–६ हुआ। अुसके बादके स्टेशनोंका फंड सब अिकट्ठा ही हो गया। जितना गिना जा सका अुतनेका हिसाब सुबह बापूजीको दिया। हावड़ा स्टेशन पर आध घण्टेमें बापूजीने ७०० रुपये अिकट्ठे किये। दातुन करते-करते बापूजीसे मैंने मजाकमें कहा, "आपने हावड़ा स्टेशन पर लोगोंसे जितना पैसा लूटा, अुतना हम चार आदमी हरिजन-कोषके लिअे प्रत्येक स्टेशन पर दर्शनार्थियोंसे पैसा मांगने पर भी अिकट्ठा न कर सके।" बापूजी कहने लगे, "मुझे तो हर स्टेशन पर अुठना और रुपया लेना भी पसन्द है। परन्तु अुस हालतमें दूसरे कामोंके लिये तन्दुरुस्ती कायम नहीं रह सकती, अिसलिअे यह मोह छोड़ना पड़ेगा।"

रोजकी तरह ३–४५ को अुठकर दातुन-कुल्ला करनेके बाद प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजीने नमक, नीबू और गरम पानी लिया। परन्तु बंगालीका पाठ पढ़ते-पढ़ते बापूजी फिर सो गये। ५–१५ पर अुन्हें रस दिया और मैंने डायरी लिखी। अितनी डायरी सुबह रेलमें लिखी थी, बाकीकी अब रातको लिख रही हूं।

सवेरे साढ़े पांच बजे हमारी गाड़ी पटनासे १८ मील दूर फतवा स्टेशन पर खड़ी हुअी। स्टेशन पर बिहारके मुख्यमंत्री श्रीकृष्णसिंह, विकास-मंत्री डॉ० सैयद महमूद, अर्थमंत्री अनुग्रहनारायणसिंह, कांग्रेस कार्यकर्ता, स्वयंसेवक और अब्दुलबारी साहब वगैरा बहुतसे लोग बापूजीका स्वागत करनेके लिअे आये थे। पटना जंकशन पर भीड़ हो जायगी, अिस खयालसे अिस छोटे फाटक पर अुतार लेनेका अिन्तजाम किया गया था।

मैं जरूरी सामान लेकर बापूजीके साथ ही अुतर गअी। मृदुलाबहन भी साथ ही अुतरीं। बाकी सामानके साथ निर्मलदा, देवभाअी, हुनरभाअी वगैरा पटना जंकशन गये।

ट्रेनसे अुतरते ही बापूजीने डॉ॰ सैयद महमूद साहब और बारी साहबसे मजाक किया, "क्यों, आप तो अभी जिन्दे हैं न?"

सब मंत्रियोंने बापूजीको सूतके हार पहनाये। यहां भी कैमरेवाले पहुंच गये थे, यद्यपि यह सावधानी रखी गअी थी कि शहरमें अिस बातका बिलकुल पता न लगे कि बापूजी कहां अुतरेंगे। परन्तु बापूजीका यह कथन बिलकुल सच निकला कि संवाददाता और फोटोग्राफरोंसे तो भगवान भी नहीं जीत सकता। सबने आकर बापूजीको घेर लिया।

श्रीकृष्णबाबूकी मोटरमें ही हम सीधे डॉ॰ सैयद महमूद साहबके बंगले पर आये। यहां भी स्वयंसेवक, स्वयंसेविकाअें और छोटा-सा जनसमुदाय अिकट्ठा हो गया था। साढ़े छह बजे घर पहुंचे। सबसे मिलनेके बाद पैर धो कर बापूजी अन्दर बैठे। तुरन्त ही राजेन्द्रबाबू आये और मंत्रि-मंडल भी आया। किस प्रकार काम किया जाय और क्या क्या घटनाअें हुअी हैं, अिस बारेमें विचार-विनिमय हुआ। मैं घरकी सफाअी करनेमें, सामान मिलानेमें और बापूजीके लिअे पानी और सागभाजीकी व्यवस्था करनेमें लग गअी।

बापूजी अपने काममें थे और मैं अपने काममें थी। अितनेमें अेका-अेक बापूजीने मुझे बुलाया। मैं गअी। कहने लगे, "तुम बेगम साहिबा और बहनोंसे मिल आओ, फिर काम करना। सबसे दोस्ती कर लो।" डॉ॰ साहबके लड़के हबीबभाअी तो सेवाग्राम आश्रममें रह चुके थे, अिसलिअे मैं अुन्हें जानती थी। और किसीको नहीं जानती थी। वे मुझे अपनी मां और बहनोंके पास ले गये।

अैसी है बापूजीकी व्यावहारिकता। मैं तो काममें अैसी डूब गअी थी कि मैंने किसीसे यह नहीं पूछा कि डॉक्टर साहबका परिवार कहां है। वे लोग परदा रखते थे, अिसलिअे बापूजी अकेले हों तभी मिलना हो सकता था। परन्तु मंत्रि-मंडलकी बैठक हो रही थी; वे लोग भी काममें लगे हुअे थे। अिस बीच बापूजीने मुझे बुलाया और अुनसे मिल आनेकी सूचना की। मुझे फौरन अपनी भूल समझमें आ गअी। हम जिनके मेहमान बनें, अुनके परिवारवालोंसे अपरिचित होने पर भी सबके साथ जान-

पहचान करके हमें कुटुम्बका ही अेक आदमी बन जाना चाहिये ! अिस प्रकार अकस्मात् जो पाठ बापूजीसे मिलते हैं, वे सजीव बन जाते हैं। बापूजीके पास रहनेसे क्षण-क्षणमें अनसोचा, अकल्पित, किन्तु जीवनके लिअे अुपयोगी, जीवनको बदल डालनेवाला सूक्ष्म ज्ञान मिलता रहता है। यही अुनके सान्निध्यमें रहनेका मजा है, खूबी है।

बेगम साहिबासे मिलकर और अुनके साथ थोड़ासा नाश्ता करके तथा दूध पीकर मैं अपने काममें लग गअी। मृदुलाबहनने भी खूब मदद की। बापूजी प्रभावतीबहनके साथ घूमे। मैं नहीं घूमी। प्रभावतीबहनसे बापूजीने नोआखालीके यज्ञकी बातें कीं। (प्रभावतीबहन जयप्रकाशनारायणजीकी पत्नी हैं।)

बापूजीने बिहारमें कमीशन नियुक्त करने पर बहुत ज्यादा जोर दिया। दस बजे मैंने बापूजीकी मालिश की। स्नानादिसे निबटनेमें साढ़े ग्यारह हो गये। मालिशमें २० मिनट बापूजी सो लिये। थकावट काफी है। भोजनमें शाक, दूध और अेक खाखरा लिया। बारह बजे बापूजी आराम करनेके लिअे लेटे। प्रभावतीबहनने अुनके पैरोंमें घी मला। प्रभाबहनके होनेसे मैं बड़ी निश्चिन्त हूं। वे स्वभावकी भी बहुत मीठी हैं। मुझे कहने लगीं, "तुम्हें कोअी कुछ भी कहे, परन्तु तुम बापूजीको कभी न छोड़ना।" आगाखां महलसे जुदा होनेके बाद वे पहली ही बार यहां आअीं, अतः नअी-पुरानी बहुत बातें हुअीं।

यहां पानीका कष्ट है। मैंने दुपहरको गाड़ीके और दूसरे बहुतसे कपड़े धोनेके लिअे भिगोये थे, परन्तु पानीके अभावमें बाहर धोने पड़े। दो बजे अुससे निबटी। बापूजी दो बजे अब्दुलअजीज साहबके यहां मिलने जानेवाले थे। वे अपने घर बहुत बीमार हैं। अिसलिअे नहाकर सीधी बापूजीके साथ वहां गअी। हबीबभाअी साथ थे। डॉक्टर साहब अूपर मिलने गये। अब्दुलअजीज साहब लकवे और हृदय-रोगसे पीड़ित हैं। २–३० बजे नवाब अिस्माअिल साहबके यहां गये। वहांसे ३ बजे लौटे। मुझे कड़ाकेकी भूख लगी थी और कल रातका बिलकुल जागरण था, अिसलिअे थक गअी थी। डॉक्टर साहबके यहां ३ बजे दुपहरीका खाना खाया जाता है। बापूजीको अिसका पता नहीं था। मोटरमें लौटते वक्त मुझसे पूछा, "तुमने क्या खाया?" मैंने कहा, "अभी खाना बाकी है।" बड़े नाराज हुअे। परन्तु सारी बात जानी और पहला ही दिन

होनेसे मैं थोड़ी निर्दोष भी सिद्ध हुअी। मगर यह चेतावनी अुन्होंने दे दी कि "कलसे अैसा नहीं चलेगा।"

आकर बापूजीको मिट्टीकी पट्टी दी। मैं जहां खाने जा रही थी वहां अखबारोंके संवाददाता चक्कर लगा रहे थे। अुन्हें नोआखालीमें तो आराम था, क्योंकि तंबू लगाकर वे हमारे पास ही रहते थे। यहां खानगी मकानमें कहां रहते? और शहर भी दूर पड़ता है। अे० पी० आअी० के संवाददाताने कहा कि रहनेकी कुछ सुविधा हो सके तो करा दीजिये। मैं बापूजीसे पूछने गअी। वे कहने लगे, "अिनके व्यवस्थापकसे कह दो कि मुझे अखबारवालों या फोटोग्राफरोंसे कोअी काम नहीं है। ये लोग मुझसे दूर चले जायं, तो मैं अपने पर अीश्वरकी बड़ी कृपा हुअी मानूंगा। और तुम्हें अुन्हें यह भी बता देना है कि बापूजीके कारण डॉक्टर साहब पर अितना बोझ नहीं डाला जा सकता। अिसलिअे आप अपनी व्यवस्था स्वयं कर लें।"

आखों पर भी मिट्टी रखी है। ३॥ बजे हुनरभाअीका पत्रोत्तर सुना। अुनका काम पूरा हो जानेके बाद निर्मलदाका पत्रोत्तर सुना।

मृदुलाबहनने बापूजीका शान्ति-संबंधी और यहांकी राजनीतिक बातों संबंधी तीन-चौथाअी काम संभाल लिया है। जरूरत होती है अुतना ही बापूजीसे पूछने आती हैं। मुलाकातोंका अिन्तजाम वही करेंगी, अिसलिअे अुन्होंने मुझसे जान लिया कि बापूजीका आराम, स्नानादि और भोजनका कौनसा समय होता है। अिससे बहुत आसानी रहेगी और बापूजीको काफी राहत भी मिल जायगी।

४॥ बजे मिट्टी हटाअी और अंगूर, आधा सेब और ८ औंस दूध लिया। यहां गरमी बहुत लगती है। बापूजीकी खुराक पहले ही दिन कम हो गयी।

राजेन्द्रबाबू आये। दिल्लीकी और . . . यहांके वातावरणकी बातें कीं। दुपहरको प्रभाबहन चली गअी थीं। शामको प्रार्थनाके समय आअीं। सात बजे बांकीपुर मैदानमें प्रार्थना-सभा रखी गअी थी। भीड़के कारण वहांके लिअे मोटरमें रवाना हुअे। लाखोंकी भीड़ थी; मोटरमें जाते हुअे दम निकल गया। अेक तरफ 'गांधीजीकी जय', 'जय हिन्द' वगैरा कअी तरहके नारोंसे कान फटे जा रहे थे। दूसरी ओर लोग गांधीजीका चरण-

स्पर्श करके पावन होनेमें अपना सौभाग्य समझते थे, अतः अुन्हें छूनेके लिअे अधीर हो रहे थे। और तीसरी तरफ दर्शन करनेके लिअे असह्य भीड़ आगे बढ़ रही थी।

नोआखालीके अितने शांतिमय जीवनके बाद यह अनुभव बड़ा कठिन लगा। बिहारकी जनता बापूजीकी परम भक्त है, यह भी अिसका कारण है।

प्रार्थनाके मंच पर हम बड़ी मुश्किलसे पहुंच सके। शुरूमें बापूजीने रामधुन बोलनेको कहा, अिसलिअे मैंने रामधुन शुरू की। बादमें पूरी प्रार्थना की। प्रार्थनामें बड़ी शान्ति रही। यह बहुत अच्छा हुआ। अितनी शांति रहेगी, अैसी कल्पना नहीं थी।

आज प्रार्थना-सभाके भाषणमें बापूजीने हृदयके गहरे अुद्गार प्रकट किये। अुनकी गंभीर आवाजसे मनके भीतरके असह्य दुःख और वेदनाका खयाल होता था। आरम्भमें बापूजीने प्रार्थनाकी खूबी बताते हुअे कहा कि, "यदि सच्चे हृदयसे अीश्वरकी प्रार्थना की जाय, तो अुसका जो असर पड़ता है अुसका वर्णन ही नहीं हो सकता। यदि अीश्वर जैसी कोअी शक्ति दुनियामें काम कर रही है (मेरे मनमें तो अिसके लिअे लेशमात्र भी शंका नहीं है), तो समाजमें प्रार्थना अवश्य होनी चाहिये। हिन्दू मंदिरोंमें प्रार्थना करते हैं, अीसाअी गिरजाघरोंमें और मुसलमान मस्जिदोंमें प्रार्थना करते हैं। यह अच्छी बात है। परन्तु सब अेकसाथ मिलकर अपनी-अपनी प्रार्थना करें, तब तो अुससे भी अुत्तम बात होगी। सबका रहस्य तो अेक ही है। केवल नाम अलग अलग हैं।"

बिहारकी यात्राके संबंधमें स्पष्टीकरण करते हुअे बापूजीने कहा, "बिहारने हिन्दुस्तानका नाम डुबो दिया। नोआखालीके जंगली कृत्योंका अनुकरण करना न सीखना और बदलेका विचार किये बिना मृत्युका आलिंगन करके मानवोचित ढंगसे जंगलीपनका सामना करना ही नोआ-खालीका बदला लेनेका अुचित मार्ग है। अगर भारतवासी सचमुच भारतकी आजादी चाहते हैं, तो अुन्हें जंगली तरीकोंकी नकल करना छोड़ देना चाहिये। जो जंगली तरीकोंका आश्रय ले रहे हैं, अुन्हें मालूम हो जायगा कि वे भारतकी मुक्तिका दिन पीछे ढकेल रहे हैं। 'जय हिन्द' का नारा लगाना और काम हिन्दको खतम करनेका करना, अिससे हिन्दकी जय कभी नहीं होगी। यदि हिन्दकी जय करनी है, तो काम भी अुसी तरहका

करना पड़ेगा। हजारों तोतोंको आप पढ़ा देंगे, तो वे भी सीताराम या जय हिन्द कहेंगे, परन्तु अिस तरह सीताराम कहनेसे थोड़े ही स्वर्ग पहुंचा जा सकता है?

"मैं विहारमें वहुत वर्षोंके वाद आया हूं। सच कहूं तो विहारके द्वारा ही मैं अितना प्रसिद्ध हुआ। अिससे पहले तो मैं वीस वर्ष अफ्रीकामें रहा। परन्तु जवसे मैंने चम्पारनमें प्रवेश किया, तवसे सारा हिन्दुस्तान जाग अुठा। और आज वर्षों वाद यहां आया हूं, तव भी मनमें अैसा भाव पैदा होता है जैसा किसी परिचित व्यक्तिको वहुत वर्षोंके वाद देखकर पैदा होता है। विहारको मैंने अपना विहार माना है। अिसलिअे मैं समझता था कि विहार जानेका कोअी कारण नहीं है। वहांके लोगोंको यहां (नोआखालीमें) वैठे-वैठे मैं समझा सकूंगा। परन्तु मुझे यहां आनेको मजवूर होना पड़ा, क्योंकि पता चला कि परिस्थितिमें जैसा चाहिये वैसा सुधार नहीं हुआ। अिसीलिअे मैं यहां आया हूं। मुसलमान यहां मुट्ठीभर हैं। कुछ लोगोंकी अैसी मान्यता भी है कि यहां अुनके साथ जैसा वर्ताव हुआ है, वैसा अितिहासमें कभी नहीं हुआ। मैं तो अितना अधिक नहीं मानता, परन्तु यह वात दूसरी है। वुराअीकी तुलना ही नहीं हो सकती। हैवानियतके खिलाफ हैवानियत करनेसे किसीकी जय नहीं होगी, किसीकी अुन्नति नहीं होगी। मेरे पास यह वात आअी है कि अिसमें कांग्रेसियोंका भी हाथ रहा है। अलवत्ता, आज ही आनेके कारण मैं अभी तक पूरी हकीकतोंसे वाकिफ नहीं हुआ हूं। शायद कल तक कह सकूंगा।

"परन्तु अितना तो सच है कि विहारके अुजले नाम पर काला टीका लग गया है। मान लीजिये कि यहां जो हैवानियत हुअी अुसमें अेक भी कांग्रेसी शामिल नहीं था। फिर भी जो हुआ सो अच्छा नहीं हुआ। अिससे कांग्रेसी अपनी जिम्मेदारीसे मुक्त नहीं हो जाते। मैंने तो लन्दनमें यह दावा किया था कि कांग्रेस सवकी सेवा करती है और भारतकी अेकमात्र सच्ची प्रतिनिधि-संस्था है। यदि पुण्यके कार्योंमें कांग्रेसका हिस्सा हो, तो पापमें अपने-आप हो जाता है। अिसलिअे सव जातियों और वर्गोंके कृत्योंके वारेमें कांग्रेसको अपनी जिम्मेदारी स्वीकारनी ही पड़ेगी। [illegible]नके अिस आन्दोलनमें अेक भी कांग्रेसी शामिल नहीं था, यह कहना तो वास्तवमें गलत ही होगा।

"सारे हिन्दुस्तानको दुनियासे अेक आवाजसे यही कहना चाहिये कि हमसे जो सीखने जैसा मालूम हो वह तुम ले लो, वर्ना हमारा जीना व्यर्थ है। क्या हम अणुवमका मुकावला करेंगे? क्या हम हैवानियतका मुकावला अभी भी अधिक हैवानियत दिखाकर करेंगे?

"हिन्दुस्तानने तो दुनियाके सामने अेक सुन्दर, भव्य और पवित्र वस्तु 'अहिंसा' की रखी है और अुसी रास्ते पर चलकर हम स्वराज्य प्राप्त कर सकेंगे।

"मुसलमान अगर समझें कि हम हिन्दुओंको मिटा देंगे और हिन्दू समझें कि हम मुसलमानोंको मिटा देंगे, तो अिसका नतीजा आखिर क्या होगा?

"मुसलमान हिन्दुओंको मिटाकर अिस्लाम धर्मको अूंचा कभी नहीं अुठा सकते, और न हिन्दू मुसलमानोंको मिटाकर हिन्दू धर्मको अूंचा अुठा सकते हैं। अलग अलग धर्म तो अेक ही वृक्षकी अलग-अलग डालियां और पत्ते हैं। अितना समझ लें तो काफी है। शास्त्रोंमें भी कहा गया है कि जो दूसरोंके धर्मकी निन्दा करता है वह अपने ही धर्मकी निन्दा करता है।

"मैंने सभी धर्मोंका अध्ययन किया है, अिसीलिअे मैं यह कहता हूं।

"परन्तु जो हो गया अुसे वदला नहीं जा सकता। अंग्रेजीमें अेक कहावत है कि 'जो जितना वड़ा अपराधी होगा वह अुतना ही वड़ा सन्त वनेगा।' अिसलिअे अव यदि विहार सच्चे हृदयसे प्रायश्चित्त करेगा, तो अुसका नाम पहले जितना अुज्ज्वल था अुससे भी अधिक अुज्ज्वल हो जायगा। अीश्वर हमें सद्‌वुद्धि दे। अभी-अभी अिस लड़कीने गाया है: 'अीश्वर अल्लाह तेरे नाम, सवको सन्मति दे भगवान'।"

वापस लौटते समय वापूजीने पैदल ही चलना पसन्द किया, क्योंकि मोटरमें तो अुलटी घवराहट होती। वापूजीका अेक हाथ मेरे कंधे पर और दूसरा प्रभावतीवहनके कंधे पर था। परन्तु वापूजीका चरणस्पर्श करनेको भीड़ अुलट पड़ी और घेरा टूट गया। मैं तो अेक वार गिर पड़ी और थोड़ी कुचल भी गअी। वापूजी वड़ी मुश्किलसे वच सके। पुलिसका घेरा भी टूट गया। पुलिसके वूट अैसे लगे कि मेरे पांवकी चमड़ी निकल गअी। अेक चप्पल मेरा गायव हो गया और दूसरा भी पैरसे निकल गया। वेचारी प्रभावतीवहनका हाल तो मुझसे भी वुरा हुआ। घरसे वांकीपुरका मैदान कुल २ मिनटके फासले पर है। लेकिन भीड़से निकल कर घर पहुंचनेमें

आधा घंटा लग गया। बेचारे पुलिस अफसर पसीनेसे तरबतर हो गये। आकर मैंने बापूजीके पैर धोये।

प्रभावतीबहन चली गओीं। हतवाकी महारानी और अुनके कुमार आये। कुमारने गीताके श्लोक सुनाये। बापूजीने अुच्चारणमें भूलें बताओीं। कुमारकी अुम्र कोओी १० वर्षकी होगी।

फिर दूधको फाड़कर (गरम दूधमें नीबूका रस निचोड़कर) लिया। बापूजी बहुत थक गये थे। अिसलिअे पड़े-पड़े आजके भाषणकी रिपोर्ट रंगस्वामीजीको लिखाओी।

रातको साढ़े दस बजे सोनेसे पहले बापूजी थोड़े टहले। टहलते वक्त बेगम साहिबा और अुनकी दो लड़कियां तथा डॉक्टर साहब आये। बापूजीसे तो परदा करनेकी बात ही नहीं थी। मगर दिनभर लोगोंने अुन्हें घेर रखा था, अिसलिअे अिस समय मिलने आये। बापूजी ११ बजे बिस्तर पर लेटे। अुनके पैर दबाकर, सिरमें तेल मलकर और मच्छरदानी बन्द करके मैं यहां आओी। (घरसे सोनेकी जगह थोड़ी दूर है।) बापूजीके कागजात ठीकसे जमा कर रखे, सवेरेके लिअे बैठक जमाओी। डायरी लिखी। अब साढ़े बारह हो गये हैं। आंखोंमें नींद खूब भर गओी है। अिस प्रकार आज पटनाका पहला दिन कामसे भरपूर बीता।

पटना,

६–३–'४७, गुरुवार

नित्यके अनुसार प्रार्थना। प्रार्थनामें देवभाओी, हुनरभाओी, तिवारीजी और स्वयंसेवक थे। प्रार्थनाके बाद बापूजी अंदर कमरेमें गये। गरम पानी और शहद लेकर बंगालीका पाठ किया। मैंने बापूजीका बिस्तर अुठाया और सुबहका दूसरा काम पूरा किया। कोओी ५ मिनट बापूजी सोये। अुठकर पत्रव्यवहारका काम शुरू हुआ। थोड़ी देरमें राजेन्द्रबाबू आ गये। ९ बजे तक बिहारकी परिस्थितिके सिलसिलेमें विचारोंका आदान-प्रदान करते रहे। अिसलिअे बापूजी टहल नहीं सके।

मालिशमें आध घण्टे सोये। अुठकर मुझे पूज्य बाकी दक्षिण अफ्रीकाकी कुछ बातें सुनाओीं। साढ़े दस बजे स्नान किया। अरविन्द बोस आकर बैठे थे; वे बापूजीसे मिले। नेताजीके बारेमें बातें कर गये। सवा बारह बजे यहांके डॉक्टर बापूजीसे मिलने आये। खूनके दबावकी जांच कर

गये और वापूजीकी डायरीमें अपनी रिपोर्ट लिख गये। आराम लेनेकी सूचना की।

भोजनमें दो खाखरे, छः औंस दूध और गुड़पपड़ीका अेक छोटा-सा टुकड़ा लिया। फलमें दो सन्तरे। वापूजी भोजन कर रहे थे, अितनेमें प्रभावतीवहन आ पहुंची। अिसलिअे अुन्हें पंखा देकर मैं नहाने-धोने चली गअी। थोड़ी देरमें जयप्रकाशजी भी आ गये। साढ़े बारह वजे तक बातें होती रहीं। आध घण्टे आराम लेकर अेक वजे वापूजी अुठे। कातते हुअे निर्मलदासे पत्रोत्तर लिखवाये। दो वजेसे मुलाकातें शुरू हुअीं। लीगवाले जाफर अिमाम, मजहर अिमाम, यूनिस साहव और छपराके हिन्दुओंके साथ चार वजे तक मुलाकातें चलीं। लीगवालोंकी वातें मुझे तो कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण लगीं। परन्तु वापूजीने यहां भी गांवोंकी यात्रा स्वयं करके देखनेके वाद ही कोअी राय देनेको कहा है।

वापूजीने आजकी प्रार्थनाको व्यवस्था दूसरे ढंगसे करनेकी सूचना की। "दोनों तरफ स्त्रियोंकी कतार आगेके भागमें रखी जाय। अिससे पुरुषोंकी भीड़ स्त्रियों पर कभी नहीं पड़ेगी।"

अिस व्यवस्थाके सिवा अनुग्रहवावू भी पहलेसे चले गये थे। अुन्होंने लोगोंसे शांति बनाये रखनेका अनुरोध किया। अिससे प्रार्थनामें जाते-आते अच्छी शांति रही। प्रार्थनाके वाद रामधुन भी बरावर ताल देकर लोगोंने गाअी।

प्रार्थना-सभाके भाषणमें वापूजीने शामकी व्यवस्था, शांति और प्रार्थनामें रामधुनके समय सबके अच्छी तरह भाग लेनेके लिअे जनताको वधाअी दी। फिर कल होली होनेके कारण अुसे मनानेका सही तरीका बताते हुअे वापूजी बोले, "अेक जमाना अैसा था जब हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके त्योहारोंमें, रीति-रिवाजोंमें, शादी-गमीके मौकों पर परस्पर सहायता करते और सहानुभूति दिखाते थे। आज भले वह वात न रही हो, फिर भी अैसे अवसरों पर अेक-दूसरेके साथ दुश्मनों जैसा बरताव तो नहीं करना चाहिये।

"नोआखाली और त्रिपुरामें मैं जैसी वातें हिन्दुओंसे सुनता था, वैसी ही वातें यहां मुसलमानोंसे सुनता हूं। अिसलिअे मुझे बड़ी शर्म आती है। फिर भी अुन्हें यह सलाह देता हूं कि आप मनुष्यसे डरना छोड़ दें और अीश्वर पर श्रद्धा रखकर अपना पुरुषार्थ आगे बढ़ायें।

"क्या विहार जैसे प्रान्तमें मुसलमान नहीं रह सकते? डॉ० सैयद महमूद जैसे कांग्रेसके अनेक मुस्लिम सेवक यहां मौजूद हैं। क्या हम अुनका

अिस प्रकार नाश करेंगे? भाअीके हाथों भाअी पर आज जुल्म हो रहा है। यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। अैसी स्थितिका परिणाम यही होगा कि भारत रक्तके सागरमें डूब जायगा। परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम अब भी सचेत होकर अैसा न होने देनेका निश्चय करें तो हमारा भविष्य अुज्ज्वल है। अिसमें मैं स्त्रियों पर बहुत आधार रखता हूं और आशा रखता हूं कि बहनें यदि अिस कार्यमें मदद देने लग जायं, तो वे खूब अुपयोगी सिद्ध होंगी। मैं मानता हूं कि स्त्री अहिंसा और त्यागकी सजीव मूर्ति है। अिसलिअे हम सबको मिलकर होली अिस तरह मनानी चाहिये कि यहांके अेक-अेक मुसलमानको लगे कि हिन्दुओंके मनमें हमारे प्रति जैसा प्रेम पहले था वैसा ही आज भी है। अुसका असर अपने-आप नोआखालीमें जरूर होगा। कलका अुत्सव सचमुच मित्रताकी भावनासे मनाया जाय, तो मैं मानूंगा कि होलीका अुत्सव पवित्र धार्मिक विधिसे ही मनाया गया और मेरा यहां आना भी सार्थक हुआ। मेरे पास अैसी बातें भी आअी हैं कि अभी भी मुसलमान स्त्रियोंको हिन्दुओंके घरोंमें कैद करके रखा गया है। यह बात सच हो तो मैं विनयपूर्वक कहता हूं कि अैसा न कीजिये, अुन सब बहनोंको मेरे पास या राजेन्द्रबाबूके पास पहुंचा दीजिये और अिस पवित्र त्योहारके दिन अपने हृदयोंको शुद्ध कर डालिये। हिन्दू बहनोंसे मेरी खास तौर पर प्रार्थना है कि आप मुसलमान बहनोंको अपनी सगी बहनोंकी तरह अपनाअिये।"

प्रार्थनासे आकर रोजकी तरह बापूजीके पैर धोये। अितनेमें श्रीकृष्ण बाबू और अनुग्रहबाबू आये। अुनसे बातें हो जानेके बाद प्रार्थना-प्रवचन सुधारा। ८–३० को राजेन्द्रबाबू आये। वे दिल्ली जा रहे हैं, अिसलिअे केवल अिजाजत लेने आये थे।

आजसे बापूजीने प्रार्थनाके समय मुस्लिम-सहायता-कोष जमा करना शुरू किया है।

बापूजी वॉल्टन साहबके साथ बातें कर रहे थे, तब मैंने यह चंदा गिना। रु० ३९६–४–८ अिकट्ठे हुअे।

रातको १०॥ बजे टहले। और टहलते टहलते शैलेनभाअीके साथ बातें कीं।

११॥ बजे बाद बापूजी बिस्तर पर लेटे। मैं भी अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर तुरंत सो गअी।

पटना,
७-३-'४७, शुक्रवार

नित्यकी भांति प्रार्थनाके लिअे ३॥ वजे अुठे। दातुन-कुल्ला करके प्रार्थना की। नोआखालीमें मैं सुवहकी प्रार्थनामें हिन्दी या गुजराती भजन और शामको वंगाली भजन गाती थी। यहां शामको वंगाली भजन नहीं गाये जा सकते, क्योंकि प्रार्थनामें अधिकांश लोग हिन्दी जाननेवाले होते हैं। अिसलिअे 'मैं वंगाली भजन भूल न जाअूं, अिस खयालसे वापूजीने आज सूचना दी कि 'तुम्हें सुवहकी प्रार्थनामें वंगाली भजन ही गाने चाहियें। और जितने नये सीखे जा सकें अुतने सीख लेने चाहिये।'

प्रार्थनाके वाद अन्दर आकर वंगालीका पाठ पढ़ा और गुजरातीका वंगालीमें अनुवाद लिखा।

फिर अकेले संतरेके रसके वजाय अुसमें काली द्राक्षका रस मिला कर लिया। रस पीते समय मैंने अपनी डायरी सुनायी और वापूजीने हस्ताक्षर कर दिये। अिसके वाद .°. . को पत्र लिखवा रहे थे कि अितनेमें डॉ० सैयद महमूद साहव आ गये। (मैं अुन्हें अव्वाजान कहती हूं।) अुनके साथ वातें कीं। अुन्होंने आज कहा: "परसोंकी प्रार्थनामें वहुतसी वुरकेवाली मुस्लिम वहनें आअी थीं; और लगभग रोज आती हैं।"

वापूजी कहने लगे, "तो अिसे मैं वहुत अच्छी निशानी मानता हूं। मेरा तो वर्षोंसे दावा है — क्योंकि मैं स्त्रियोंके हृदयको जानता हूं — कि स्त्रियां मेरे पास निर्भय हैं। और अिसका ताजा अुदाहरण यह लड़की है। अिसको मैंने कितना निर्भय होना सिखाया है, यह कितनी निर्भय हो गअी है और नोआखालीमें क्या क्या हुआ, यह सव अिससे पूछिये। मैं निश्चित रूपसे मानता हूं कि स्त्रियां केवल निर्भय वन जायं, तो अुनमें अद्‌भुत शक्ति भरी हुअी है। परन्तु वह शक्ति अभी सोअी हुअी है। अिसका कारण यह भी हो सकता है कि शायद अुस शक्तिको मार्ग दिखानेवाला कोअी नहीं है। अिसीलिअे मुझे लगा कि मेरे अिस यज्ञमें मुझे अिस ओर पूरा ध्यान देना ही चाहिये।"

टहलते-टहलते मुझे थोड़ी हिसाव-संवंधी वातें कहीं और यह कहा कि मुस्लिम-सहायता-कोपके लिअे यहां वैंकमें खाता खोल लिया जाय।

जमीयतवाले काजी अहमदहुसेन साहब, मौलाना अब्दुलनसब साहब, अब्दुलवैस साहब और मौलाना ताजुद्दीन साहब आये। सब केवल सलाम करने और बापूजीके बिहार आने पर खुशी जाहिर करने आये थे। बापूजीने कहा, "परन्तु आपको नोआखाली जाकर बैठना पड़ेगा और अगर वहां कुछ होगा तो मैं यहां मरूंगा। ठीक है न?" अिस प्रकार विनोदमें बापूजीने बड़ी गंभीर चेतावनी दे दी, और अुन लोगोंको बांध लिया। कभी-कभी तो सचमुच लगता है कि बापूजी वास्तवमें 'बनिये' हैं।

अिन भाअियोंको दंगोंमें काफी नुकसान हुआ है।

टहलकर लौटते समय रास्तेमें अेक अंधा भिखारी बैठा मिला। वह बापूजीको देख नहीं सकता था, परन्तु अुसे बापूजीके पैर छूकर पवित्र बनना था। सारे गांवसे धेला-पैसा जो कुछ मिला अुसे जमा करके चार आने अुसने बापूजीको मुस्लिम-सहायता-कोषके लिअे दिये। जातिसे वह हिन्दू था।

बापूजीके चरणोंमें हजारों रुपये रखे गये होंगे। अुनके आनंदसे अनेक गुना अधिक आनंद बापूजीको अिस अंधे भिखारीके बचाये हुअे चार आने लेनेमें हुआ। अुनका चेहरा हास्य और आनंदके अुल्लाससे चमक अुठा। अुन्होंने भिखारीको पीठ थपथपायी और कहा कि आजसे भीख मांगना छोड़ दो; अंधा आदमी भी बहुत काम कर सकता है। कात तो सकता ही है। मुझे अुस भाअीको तकली देनेको कहा। और सदाकत आश्रममें अुसका सदुपयोग हो, अिस प्रकारका काम देनेकी अेक स्वयंसेवकको सूचना की।

भिखारी बड़े आनंदमें था, क्योंकि अुसकी पीठ पर बापूजीका प्रेमपूर्ण हाथ फिरा था। अुसके जीवनका अुद्धार हो गया। मुझे विचार हुआ कि बापूजीका प्रेम कहां तक पहुंचा है? अथवा कहां नहीं पहुंचा होगा?

पैर धोते समय बापूजी मुझसे कहने लगे, "तुमने देख लिया न, भिखारी जैसेने भी पैसा अपने पेटमें न डालकर खास नाम लेकर मुस्लिम-सहायता-कोषके लिअे दिया। अुसके ४ आनेकी कीमत मेरी दृष्टिमें तो ४ करोड़से भी अधिक है। अिसका नाम है सच्चा दान! यह है बिहारकी जनता! बिहारमें कदम रखे आज तीसरा ही दिन है। अितनेमें ही यह जो छोटी-सी घटना हो गअी अुसका मेरे मन पर बहुत अद्‌भुत असर हुआ है। अीश्वरने यहां तक मेरी आवाज पहुंचाअी है, यह अुसकी महान कृपा है। हम जितने सच्चे होते हैं, निर्मल होते हैं, अुतना अुन गुणोंका

प्रतिविम्ब अीश्वर हमें दिखाता ही है। आजकी अिस घटना पर तुमने गहरा विचार करना।"

मालिशमें वापूजी वीस मिनट सोये। मालिशके वाद स्नानादिसे निवृत्त होकर भोजन किया। भोजनमें शाक और दूध लिया।

निर्मलदाने 'हिन्दू' में आया हुआ फजलुल हकका भाषण पढ़कर वापूजीको सुनाया।

आज प्रभावतीवहन नहीं आओीं। गरमी पड़ने लगी है। वापूजी खाना खाकर आरामके लिअे लेटे तव माथे पर मिट्टी रखवाअी। आंखें वहुत जलती थीं। आध घण्टे वापूजी सोये, अुस वीच मैंने नहाने-धोनेका और अपना दूसरा कामकाज पूरा किया। अुठकर वापूजीने काता। कातते समय प्यारेलालजी और किशोरलाल काकाको पत्र लिखवाये। २-३० से मुलाकातें शुरु हुअीं। मृदुलावहन यहां अथक परिश्रम कर रही हैं। अुनका काम भी वहुत व्यवस्थित है। अनिवार्य होने पर ही वापूजीसे कुछ पूछने आती हैं। वाकी ज्यादातर वातें खुद ही संभाल लेती हैं। मुझे वे छोटी वहनसे भी अधिक प्रेमके साथ रखती हैं।

मुलाकातें सभी अुनके द्वारा तय होती हैं। २-३० से ४-३० तक अेकके वाद अेक मुलाकाती आते रहे। यह क्रम अिस प्रकार रहा: २-३०से २-४० अमीरुल हुसेन साहव, २-४५ से ३-१५ रजाअुर रहमान साहव, मंत्री जमीयतुल अुलमा और मौलेनीन, ३-२० से ४-३० मौलाना मखदुम शाह, वैनूरी और अुनके साथ मौलाना अव्दुल सत्तार, नायव सालार तथा कौहार जिलेके लोग। वादमें वापूजीका शामके भोजनका समय था। अुतनी देर मुलाकातें वन्द रहीं। अेक खाखरा, दो ग्रेपफ्रूट छीलकर अुनकी गिरी, दो वादाम, दो काजू और अेक टुकड़ा गुड़पपड़ीका लिया। आज सुवह खास कुछ नहीं लिया था। शामको दूध छोड़ दिया।

फिर ५ वजे मुलाकातोंका तांता शुरू हुआ। खादीभंडारके कार्यकर्ता आये। वापूजीका दिमाग किस दिशामें काम नहीं करता, यही समझमें नहीं आता। आध घण्टे पहले आये हुअे मुसलमान भाअियोंको कुरान शरीफके महावाक्य सुनाये। फिर 'मुस्लिम स्टुडेन्ट्स फेडरेशन' के नवयुवकोंको प्रोत्साहन मिले अैसा काम करनेकी दिशा वताते हुअे कहा कि वे हिन्दू विद्यार्थी भाअी-वहनोंको अपना मानकर साथ साथ 'लेसन' करें, साथ साथ खेलें वगैरा। अिसके वाद आये खादी-कार्यकर्ता। अुन्हें खादीकार्यमें आनेवाली मुश्किलोंका

अच्छी तरह गले अुतरनेवाला अुपाय बताया। और अन्तमें साढ़े छह बजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें जाते समय बहनों द्वारा दोनों तरफ कतार बना देनेसे बापूजीके जाने-आनेका मार्ग बड़ा सरल हो गया। अिस परसे स्त्रियां कैसे कैसे काम कर सकती हैं, अिस बारेमें बापूजीने मेरे साथ बातें कीं।

आज अेक तार आया है, जिसमें लिखा है, "बिहारके हिन्दुओंको आप जरा भी अुलाहना न दीजिये। अुन्होंने जो कुछ किया है, वह कर्तव्य-पालनकी दृष्टिसे ही किया है।"

अिस तार पर बापूजी प्रार्थना-सभामें बोले कि, "मुझे यह कहते जरा भी संकोच नहीं होता कि अिस प्रकारके तार या प्रचारसे हिन्दुओंकी या हिन्दुस्तानकी सेवा नहीं होती। मुझे अपने धर्म पर अटल विश्वास है और मैं श्रद्धापूर्वक अपनेको सनातनी हिन्दू मानता हूं। अिसी दावे पर यह बात कह रहा हूं। मैं जितना अच्छा हिन्दू हूं, अुतना ही अच्छा मुसलमान, पारसी और ओसाओ होनेका भी मेरा दावा है। हम यहां भगवानका नाम लेनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं और अिसके बाद मैं आपसे जो शब्द कहूंगा वह भी भगवानका नाम लेनेका ही अेक भाग है। कोअी भी भलाअी या पुण्यकार्य हम दूसरे किसीके लिअे थोड़े ही करते हैं? अेक अंग्रेज विद्वानने कहा है कि जो मनुष्य अच्छा काम करता है, वह अपना फर्ज अदा करता है।

"मैं यहां चार दिनसे आया हूं। फिर भी आज शामको सुना कि अभी तक कहीं कहीं लूटपाट होती ही रहती है। यह सुनकर मुझे शर्म आती है। परन्तु मैं कोअी देवदूत या चमत्कारी पुरुष नहीं हूं कि मेरी शक्ति अपार हो। मैं तो अपना काम कर रहा हूं। अपना हृदय आपके सामने खोल देता हूं। असर होना होगा तो होगा। वैसे सबको पालनेवाला तो अेक परमेश्वर ही है। अुसी पर सच्चा भरोसा रखिये।

"मैं मानता हूं कि आप (बिहारके हिन्दुओं) ने यहां जो कुछ किया वह बुरा किया। यह बताकर आपकी आंखें खोलनेमें मैं आपकी सेवा कर रहा हूं। आज पंजाबमें जो कुकृत्य हो रहे हैं अुनके बारेमें सुनकर आपको यहां अुत्तेजित नहीं होना चाहिये। अब हम स्वतंत्रता-प्राप्तिके किनारे पर खड़े हैं। अैसे समय आपको अपनी जिम्मेदारीका खयाल रखना ही पड़ेगा। हिन्दुस्तानके किसी भागमें गलत काम होते हों, तो हमें यहां अुनकी नकल हरगिज नहीं करनी चाहिये। सबसे अच्छे गुण लेकर हमें गुणग्राही बनना चाहिये।"

फिर नियमानुसार चन्दा अिकट्ठा किया। चन्देके पैसे बापूजीके हाथमें देनेकी होड़ लगती थी। रेजगी खूब आअी है। नोट बहुत कम हैं।

प्रार्थनासे आनेके बाद शैलेनभाअीने खबर दी कि अमृतसरको जला दिया गया है। पंजाबमें दंगे जारी हैं।

क्रिप्स और खानसाहबके कुछ समाचार मिले। अैसा मालूम होता है कि खानसाहब (सरहद गांधी) यहां आयेंगे।

रातको प्रार्थना-प्रवचन देख लेनेके बाद बापूजी घूमे। बेगम साहिबा और दूसरी बहनें आअी थीं। यहां गंगाके किनारे टहलने और सोनेकी अच्छी सुविधा है। १० बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। बापूजीको सुलाकर चंदा गिना। रु० १६५–२–० हुअे। तीन बार गिनना पड़ा। अेक पैसेकी भी भूल हो जाय तो परेशान होना पड़ता है। अिसलिअे मेरे गिन लेनेके बाद हुनरभाअीको जांच करनेको दिया। अुसमें ४ आनेकी भूल आअी, अिसलिअे तीसरे आदमीको दिया। अिसमें रातके १२॥ बज गये। बापूजीकी सुबहकी बैठक ठीक की। पत्रोंकी नकलें कीं। बापूजीकी डायरी की दो दिनकी नकल की और अपनी डायरी लिखी। ठीक अेक बज रहा है। अब मैं सोने जा रही हूं।

पटना,
८–३–'४७ शनिवार

नित्यके अनुसार प्रार्थना हुअी। . . . भाअी प्रार्थनामें नहीं आये। यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा। थोड़े दुःखी हुअे। मुझसे कहने लगे, "मैं पूर्ण शुद्धतासे प्रार्थना नहीं करता; अथवा मैं न जानता होअूं और अनजाने मेरा मन अन्यत्र भटकता हो। कुछ भी हो, पूरी अेकाग्रता मुझमें नहीं होगी, वर्ना अुसका असर मेरे साथ रहनेवाले पर क्यों न पड़े? और अेक दिन भी मेरे साथ रहनेवाला प्रार्थनामें अनुपस्थित क्यों रहे? समय पर अुठकर प्रार्थनाके लिअे क्यों नहीं आ सकता? . . . को अितना काम भी नहीं रहता। तुम देखती हो कि निर्मलबाबूका प्रार्थनामें विश्वास न होते हुअे भी वे समय पर आये बिना अेक दिन भी नहीं रहते। परन्तु वे तो प्रोफेसर ठहरे। लेकिन मेरी लड़की . . . की अपेक्षा अपने मनके साथ अधिक है। अिसलिअे आजकी घटनासे मुझे चेतना चाहिये कि मेरे मनमें जाने-अनजाने कुछ न कुछ दोष रहता है।"

गरम पानी पीते हुअे मेरी डायरी सुनकर तुरंत हस्ताक्षर किये। किशोरलाल काकाका पत्र सुनाया। अभी अुसे न भेजनेको कहा। मुझे गीताजीके दो श्लोक समझाकर छुट्टी दी। आजसे रोज सुबह १० मिनटके लिअे अिन श्लोकों द्वारा बापूजी मुझे संस्कृत सिखायेंगे।

मैं रस निकालने चली गअी। अिस बीच बापूजीने स्वयं ही . . . को पत्र लिखे। थोड़ी देर आराम किया। फिर रस लिया। घूमते समय (७॥ बजे) डॉक्टर सैयद महमूद (अब्बाजान) के साथ अुन्हींके बारेमें बातें कीं। और अुन्हें . . . अपना धर्म समझाया।

घूमकर लौटने पर यूनिस साहबसे बातें कीं। मालिश लगभग ९ बजे हो सकी।

मालिशमें मुझे कुछ कौटुम्बिक बातें पूछीं। (मुझसे अेक व्यक्तिगत प्रश्न पूछा और अुसका जवाब बापूजीने लिखित देनेको कहा। यह प्रश्न यद्यपि व्यक्तिगत है, परन्तु बापूजीके अुस प्रश्नके शब्द यहां यह बतानेके लिअे अुद्धृत करती हूं कि अुनकी वाणी कितनी सही निकली।) कुटुम्बकी बातें पूछते-पूछते बापूजी मुझसे कहने लगे, "तुमसे अेक प्रश्न पूछूं? अिसका लिखित अुत्तर दे सको तो मैं अधिक प्रसन्न होअूंगा। . . . मेरे जीते जी तुम आखिरी दम तक मेरी सेवा करना चाहती हो। अिसके सिवा तुम्हारा दूसरा कोअी विचार नहीं है। अिस विचार पर तुम पूरी तरह चलोगी, अिसकी मेरे मनमें जरा भी शंका नहीं है। मेरा तो विश्वास है कि तुम अन्त तक मेरी सेवा कर सकोगी। मैंने अिस बार तुम्हारी कसौटी करनेमें कसर नहीं रखी, अिस परसे यह कह सकता हूं। मेरे पास तुम्हें सेवाके साथ ज्ञान भी मिलता रहता है। और मैंने देख लिया है कि अिससे तुम्हें पूरा संतोष है। जयसुखलालको तो होगा ही। परन्तु मान लो कि तुम मेरे पीछे रह जाओ, तो तुम किस ढंगका जीवन बिताना चाहोगी? अिस प्रश्नका अुत्तर लिखित हो तो अच्छा, अथवा विचार करनेके बाद दिल खोलकर मुझे बताओगी तो भी कोअी हर्ज नहीं। परन्तु लिखित अुत्तर हो तो और भी अच्छा। अिस प्रकार मैं तुम्हारे भावी जीवन पर कुछ प्रकाश डाल सकूंगा। क्योंकि अब तुम्हारी बाल्यावस्था समाजकी दृष्टिसे पूरी हो जायगी, यद्यपि मेरी दृष्टिसे तो तुम बालक ही हो।"

यह बात मालिश करते और नहाते समय कही। मैंने कहा, मैं लिखित अुत्तर दूंगी। स्नानके बाद बापूजीको भोजन कराया। भोजनमें दो

खाखरे, कच्चा शाक और आठ औंस दूध लिया। सोकर अुठने पर फल लेनेको कहा।

पैरोंमें घी मलवा कर बापूजी १२॥ बजे आराम ले रहे थे, तब मैंने अुपरोक्त प्रश्नका लिखित अुत्तर दिया। बापूजी अुठे तब मैंने अुनके हाथमें मेरा अुत्तर रख दिया। यह अुत्तर मेरी डायरीमें ही लिखनेको बापूजीने कहा था, "ताकि वह सुरक्षित रहे"। अिसलिअे मैंने डायरीमें ही लिखा। बापूजीके हाथमें रखकर मैं अुनके लिअे संतरे छीलने गअी। दो संतरे लिये। दूसरे मुलाकातियोंके आ जानेसे वे मेरा अुत्तर न देख सके। बीचमें कुछ पत्र लिखवाये — राजाजी, कानूगा और लोहियाको। ३ बजे कातते-कातते भावलपुरके मुसलमान भाअीसे बातें कीं। अुन्होंने बापूजीसे कहा कि मारवाड़ी लोगोंने मुसलमानोंको खूब तंग किया है। अुनका नाम सैयद महबूब अहमद है। ३ से ३–१५ आजाद हिन्द फौजवाले कर्नल महबूब अहमद। ३–२० से ३–३५ शिया डेप्युटेशनमें नबाब मुबारकअली और नवाब अब्बासअली। ३–४० से ३–५५ अेस० अहमद, सोडा वॉटर और आअिस-क्रीम फैक्टरी, पटना। ५ से ५–२० डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा। ५–२५ से ५–३० मलिक अब्दुलहलीम, जहानाबाद मद्रेसा कैम्प, पटना सिटी। बीचमें अेक बार गरम पानी और शहद लिया। ५–३० से ५–४५ पटनाके मुहम्मद मंजूम हसन और सैयद अब्दुल अजीजको अेक पत्र लिखा और अुन्हें स्वास्थ्यके लिअे नैसर्गिक अुपचार बताया। अुन्हें भेजनेके लिअे मिट्टी तैयार करनेकी बापूजीने मुझे सूचना की। प्रार्थनाके लिअे जानेमें कोअी १० मिनटकी देर थी कि अितनेमें अनुग्रहनारायण सिंह आये। अुनके साथ यहां हो रही गड़बड़ीके बारेमें बातें कीं।

प्रार्थनामें अेकता पर ही जोर दिया। छोटा-सा प्रवचन था। आज मुलाकातियोंका तांता अितना अधिक रहा कि बापूजी खूब थक गये। और गरमी भी पड़ने लगी है। शामको कुछ नहीं खाया। प्रार्थनाके बाद घूमते समय बेगम साहिबा और अुनकी दोनों लड़कियां आअीं। महबूबभाअी (डॉ० सैयद महमूद साहबके बड़े लड़के) का विवाह होनेवाला है। अिसलिअे भोज दिया जाय या नहीं, अिस बारेमें अुन्होंने बापूजीसे पूछा। बापूजीने कहा कि, "मेरी दृष्टिसे हम आगमें जल रहे हैं। अैसी हालतमें भोज हर-गिज न देना चाहिये। परन्तु मेरे कहनेसे ही अथवा मुझे खुश करनेके

लिअे ही जी दुखाकर भोज वन्द न रखा जाय। समझ कर वन्द रखें तो ही अुससे फायदा होगा।" वेगम साहिवाने तुरंत मान लिया और कहा, "हम कुछ नहीं करेंगे। आपकी वात मैं भलीभांति समझ गअी हूं। हम सादगीसे ही सारी रस्म निवटा लेंगे।" दूसरी भी वातें हुअीं।

घूमकर लौटने पर वापूजीने केवल थोड़े अंगूर लिये। आज खानसाहव भी आ गये। वे हमारे साथ ही रहेंगे। अुनके खाने-पीने आदिकी व्यवस्था मैं कर सकूं, तो वापूजीने मुझे सौंपनेकी अिच्छा वताअी। मुझे तो अुनकी सेवा करनेका मौका ही चाहिये था। अिसलिअे दूसरा विचार करनेकी वात ही नहीं थी। मैंने वापूजीसे हंसीमें कहा, "वापूजी, दोनों गांधी (अेक सरहदी गांधीके नामसे प्रख्यात हैं, दूसरे महात्मा गांधी), दोनों वूढ़े, दोनों नेता और दोनों फ़कीर। अिन दोनोंकी सेवा करनेका अवसर मिलनेसे मुझे कैसा आनन्द आयेगा? यह तो अनुभव न करें तव तक आपको क्या पता चले?" वापूजी वोले, "हां, वात सच है। तुम्हें खानसाहवसे कअी वातें जानने, सीखनेको मिलेंगी। मैं तुम्हारे वरावर था तव मुझे अैसा मौका नहीं मिला। अिसलिअे तुम्हारी वात समझ सकता हूं। परन्तु देखना, हो सके तो ही यह काम हाथमें लेना, वर्ना नहीं।" अितनी चेतावनी जव मैं तेल मल रही थी तव लेटे-लेटे वापूजीने मुझे दी।

आजका हरिजन-चंदा रु० १३२–११–३, हस्ताक्षरोंका १५ रुपया और मुस्लिम-सहायता-कोषका ४३ रुपया हुआ। तीनोंको अलग अलग डिव्वोंमें भरा। अपने कामकाजसे निवटकर रातके अेक वजे सोअी। आज अभी तक वापूजीने मेरी डायरी नहीं देखी, क्योंकि वहुत थक गये हैं। ९–३० पर सोये। चंदा गिननेमें मुझे वहुत देर हो जाती है। आज फुटकर पैसे ही अितने अधिक आये कि अुनकी अलग अलग ढेरी लगाकर गिनते-गिनते सचमुच मेरा दम निकल गया। चार वार गिनना पड़ा, क्योंकि हर वार दो तीन रुपयेका फ़र्क आता रहा। सवेरे यह पता चलने पर कि मैं अितनी देरसे सोअी, वापूजी नाराज न हों तो अच्छा। सरदी भी सख्त हो गअी है।

पटना,
९–३–'४७, रविवार

रोजकी तरह प्रार्थनाके समय वापूजीने मुझे अेक दो आवाजें दी होंगी। लेकिन मैं तुरन्त जाग न सकी। रातको देरसे सोअी थी। और अेक दो

दिनसे सरदी भी हो गअी है। रातको वुखार रहा होगा। यद्यपि मुझे तो वुखार जैसा कुछ महसूस नहीं हुआ। वापूजीने मेरे कपाल पर हाथ रखकर मुझे हिलाया, क्योंकि जहां रोज मैं अेक आवाजमें जाग जाती थी वहां आज दो दो आवाजें देने पर भी न जाग सकी। अुन्होंने देखा कि मेरा शरीर गरम है। परन्तु मैं नियमानुसार जाग अुठी। दातुन करते हुअे मुझे टेम्परेचर लेनेको कहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि वापूजी अैसा क्यों कह रहे हैं। मुझे दुवारा कहा, "वस, जो कहा वह पूरा होना ही चाहिये। तुम देखो तो सही, शरीर कैसा तप रहा है। कितने वजे सोअी थी?" मैंने देखा तो वुखार १००.६° था। प्रार्थनाके वाद गरम पानी और रस देकर अपना कसूर होनेके कारण मैं चुपचाप सो गअी। . . . के साथ भी मेरे जैसा ही हुआ। . . . से कहा, "तुम्हारा धर्म नअी तालीमको सुशोभित करना है। केवल कारकुनकी तरह मेरा लिखने-पढ़नेका काम करना या डाक देखना ही तुम्हारा काम नहीं है। तुम्हें सवका प्रेम संपादन करना है। तुम चारोंमें यदि अेकता नहीं रही, तो अिस महाभारत कार्यमें मुझे सफलता हरगिज नहीं मिलेगी। अिसलिअे हर तरहसे सारी वातों पर विचार करना चाहिये।"

ये वातें हो रही थीं कि मैं रस लेकर आअी। अिसलिअे वही वात दुवारा मुझे सुनाकर वापूजी कहने लगे, "तुम्हें थकावट हो तो सो सकती हो। मैंने तुम्हें अभय-दान दे दिया है कि तुम मुझे छोड़ सकती हो, परन्तु मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। मेरे कामके लिअे स्वास्थ्यकी रक्षा न की जाय, अिसमें मुझे पाप दिखाअी देता है। जिसे मेरी सेवा करनी है अुसे पहले अपनी सेवा करनी चाहिये। स्वकल्याणमें ही मेरा कल्याण समाया हुआ है। मेरी सेवा करनेके लिअे तुम खाने-पीनेका समय निकालकर खाती नहीं, अिसे मैं तुम्हारा सूक्ष्म अहंभाव कहूंगा। जो काम न हो सके अुसके लिअे मुझे कह दिया जाय। परन्तु खाना, पीना और सोना भी छोड़कर मेरा काम करना कोअी अच्छी वात नहीं।"

वंगाली पाठ वगैरा दूसरी सव वातें रोजकी भांति चलीं। घूमते वक्त खानसाहव साथ थे। सरहदकी वातें चलीं। मालिशमें वापूजी २० मिनट सो गये। स्नान, भोजन वगैरा रोजकी तरह। भोजनमें दो खाखरे, शाक व दूध लिया। वापूजीको भोजन करानेमें लगी रही, अिसलिअे मैं नहा न सकी।

वापूजीके पैरोंमें घी मलकर और खानसाहबको खाना खिलाकर जब नहा-खाकर लौटी तो अेक बज गया। वापूजी फिर सख्त नाराज हुअे। परन्तु अपनी डायरीमें अुन्होंने लिखा :

"मनुड़ीको अुसका धर्म सूक्ष्म ढंगसे बताया। अुसे सब कुछ नियमसे करना सीखना चाहिये। जब तक मैं जिन्दा हूं, तब तक अुसे कभी नहीं छोड़ूंगा। मैंने अुसे श्रीरामपुरमें यह अभय-वचन दिया है। परन्तु वह मुझे छोड़ सकती है। वह मेरे कामके लिअे अपनी तन्दुरुस्तीका ध्यान न रखे, अिसमें मुझे पाप दिखाअी देता है। जिसे सेवा करनी है, अुसे अपने शरीरकी रक्षा पहले करनी चाहिये। रातको चन्दा गिननेमें अेक बज गया, फिर भी दोपहरको जरा नहीं सोअी। यह मुझे खटका और अुसे रुलाना पड़ा।"

आज मेरा सारा दिन बहुत अुदासीमें गया। अेक ही तरहकी भूल दो बार हुअी। और जब दूसरी बार बापूजी अुलाहना दे रहे थे, तब मेरी आंखोंमें आंसू आ गये। अिससे बापूजी भी बड़े दुःखी हुअे। और अपना दुःख अुन्होंने अिस प्रकार अपनी डायरीमें प्रकट किया।

१२–५० को शंकरनजी आये। अुनसे बापूजीने बात कही कि मुझे बार बार जुकाम होता रहता है, अिसलिअे नैसर्गिक अुपचार करना चाहिये। अुन्होंने मुझे दिनभरमें क्या क्या अुपचार करना चाहिये सो लिख दिया। अुसमें कअी बार गरम स्नान, कटिस्नान और मिट्टीके प्रयोग करनेकी बात थी। अिसलिअे मैंने अुनका अिलाज करानेसे बापूजीको अिनकार कर दिया। अिस अुपचारमें तो बार-बारके स्नानोंमें ही मेरा सारा दिन पूरा हो जाता।

कातते-कातते आजका प्रार्थना-प्रवचन मुझसे लिखवाया। प्रार्थनासे पहले मौन लेना था, अिसलिअे अुसे आधा लिखाकर बापूजी थोड़ी देर सो गये।

२–२० को मुलाकातें शुरू हुअीं। विश्वनाथ मिश्र २–२० से २–३५, निजामुद्दीनखां २–३५ से २–४०, मौलाना अिलियास २–४० से २–४५, मथुरादास २–४५ से ४–०। बादमें प्रान्तीय कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्योंकी सभा। अिस सभामें बापूजीने अपने हृदयकी व्यथा अुंडेली। वे हिन्दीमें बोले: (बापूजीके प्रार्थना-प्रवचन हिन्दीमें ही होते हैं।) "मैं तो नोआखालीमें करने या मरने गया था। पहले दत्तपाड़ा गया, फिर श्रीरामपुर गया। वहां

भी मुझ पर गालियां पड़ती थीं। और सुहरावर्दी साहबका पत्र भी आया था। लिखा था कि बिहारमें देखिये, आपके हिन्दू क्या कर रहे हैं?

"दाल्टन साहब और यदुवहन सहाय आओीं, तो भी मैंने परवाह नहीं की। क्योंकि मैं मानता था कि बिहारमें मेरी कुछ चलती है, अुस पर मेरा कुछ प्रभाव है, अिसलिअे नोआखालीमें बैठे बैठे वहांका काम संभाल लूंगा। परन्तु अन्तमें जब डॉक्टर साहबका पत्र लेकर मुस्तफा साहब आये, तब मैंने तुरन्त यहां आना अपना धर्म समझा। डॉ० सैयद महमूद साहबके साथ मेरा बहुत गहरा सम्बन्ध है। अब यहां आया हूं तो मुझे या तो करना है या मरना है। आप (कार्यकर्ताओं) को अपनी बात समझा सकूं, तो ही मेरा यहां आना सार्थक होगा।

"मेरे हृदयमें जो व्यथा भरी है, अुसे आपके सामने अुंड़ेल रहा हूं। मैं मानता हूं और मैंने अनुभव किया है कि नोआखालीमें भयंकर हत्याकाण्ड हुआ है। वहां बड़ी संख्यामें गुण्डे भरे पड़े हैं। परन्तु अुसका बदला यहां क्यों लिया जाय? बुरी बातमें क्या होड़ हो सकती है? मेरे सुननेमें आया है और दिनमें कितने ही मुसलमान भाओी आकर सुनाते हैं कि मंत्री सब अच्छे तो हैं, परन्तु अुनमें परस्पर मेल नहीं है। कांग्रेस कुछ भी नहीं करती। या तो यह बात सही नहीं है; और अगर अुसमें कुछ भी सच्चाओी हो, तो हमें सुधारना चाहिये। मैं सुनी हुओी बातें आपको सुना रहा हूं। दूसरी तरफ जिन्ना साहबका हम पर आरोप है कि कांग्रेस मुसलमानोंके लिअे नहीं है। अिसे आपने अिस प्रकार सिद्ध करके बता दिया न? आप देखते हैं कि कांग्रेसमें सभी जातियोंके लोग हैं। खानसाहब जैसे रत्न मौजूद हैं। परन्तु आज अुनके जैसे सेवक यहां सही-सलामत नहीं हैं, क्योंकि वे मुसलमान हैं। यह हमारे लिअे कितना लज्जास्पद कलंक कहा जायगा? परन्तु जब तक आप कार्यकर्ता ही शुद्ध नहीं बनेंगे, तब तक जनता कभी शुद्ध नहीं होगी। अगर आप अपनेको कांग्रेसके कार्यकर्ता कहलवाना चाहते हैं, तो आपको अपनी जिम्मेदारीका खयाल भी रखना पड़ेगा। मैं यह भी सुनता हूं कि कार्यकर्ता घूसखोरीमें फंस जाते हैं। यह सब अत्यन्त करुण और दुःखप्रद वस्तु है। राजेन्द्रबाबूके बिहारमें तो अैसा होना ही नहीं चाहिये। आप कार्यकर्ता होकर घूसखोरीमें फंसेंगे, तो आम जनता या कर्म-चारियोंमें से यह बुराओी कैसे निकाल सकेंगे? और काला बाजार कभी नष्ट नहीं हो सकेगा। आपने बरसों देशकी जो सेवा की है, अुसीका यह परिणाम

है कि आज सम्पूर्ण स्वराज्य आपका दरवाजा खटखटा रहा है। अैसे समय वह दरवाजा अपने हाथोंसे ही बन्द करके अपनी सेवा पर आप पानी न फेरिये।

"मैं तो यहां कुछ करूंगा या मरूंगा। आज मुझे सेवाग्राम या दिल्लीमें मरना पसन्द नहीं होगा। मैं बिहार या नोआखालीमें ही मरूंगा।

"आज मुझसे कोअी हुक्म न लें। किसी दिन मैं हुक्म देनेवाला था और आप अुसे माननेवाले थे। परन्तु बड़ी बहादुरी और शुद्धतासे आप काम करेंगे, तो मेरे काममें बहुत मददगार होंगे। मैंने वही कहा है जो मेरे मनमें भरा था। जो भी अपनेको सेवक मानता है, वह अपनी छाती पर हाथ रखकर अिसकी जांच करे और मेरी बातमें थोड़ा भी तथ्य मालूम हो, तो अेक अनुभवी बूढ़ेकी बात मानकर खुद ही अपनेको सुधारे और अपने सुधारके द्वारा पटना, बिहार और सारे हिन्दुस्तानको सुधारे।"

४ बजे सभा खतम हुअी। ४–३० पर विश्वनाथ सहाय आये। फिर आनंदमोहन सहाय और अुनके बाद डॉ० देवेन्द्र मुकरजी, मिर्जा सूबेदार, अेस० अेम० अहमद आये। अुसके बाद हमने राधेलालजीका अलसीका अुद्योग देखा। बहुत अच्छा था। वे अेक तौलिया और अेक कम्बल बापूजीको दे गये। कपड़ा धोने पर भी जैसेका वैसा रहता है। बापूजी कहने लगे, "अिस अुद्योगका विकास किया जा सके, तो बहुत बड़ा काम हो सकता है।" नेपालके महाराजाने अेक दुशाला भेंट किया है।*

आजके प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने जो सन्देश लिखवाया, वही पढ़ा गया। आजके सन्देशमें ये बातें थीं: "यह अच्छा है कि प्रति सप्ताह अेक दिन मेरे मौनका होता है। यदि सब लोग सारा दिन न सही, सुविधानुसार कुछ घंटे या कुछ मिनट भी मौन ले सकें और अंतर्मुख होकर आत्म-मंथन करें, तो कितने ही पापोंसे बच सकते हैं। अुस स्थितिमें अैसे अपराध होंगे ही नहीं। परन्तु यहां मौन-संबंधी मेरे विचार प्रकट करनेका यह समय

---

* ये दोनों बापूजीने थोड़े दिन अिस्तेमाल किये थे। पटनामें मेरा अेपेंडिक्सका ऑपरेशन हुआ अुस समय अपना अिस्तेमाल किया हुआ दुशाला प्रसादीके रूपमें बापूजीने मुझे ओढ़ाया था। अलसीके तौलियेकी तो लगभग १० महीने काममें लेनेके बाद दुशालेके अनुसंधानमें अेक अैतिहासिक प्रसादीके रूपमें मैंने बापूजीसे मांग की थी। बापूजीने तुरन्त मेरी मांग स्वीकार कर ली थी। अिसलिअे ये पवित्र चीजें अुसी रूपमें मेरे पास सुरक्षित हैं।

नहीं है। आज तो मैं संक्षेपमें यह वताना चाहता हूं कि जिन्होंने हत्याकांडमें कहीं भी कोअी भाग नहीं लिया, अुनका अिस समय क्या धर्म है।

"पहली वात तो यह है कि हम अपने विचारोंको शुद्ध करें। जव तक विचार-शुद्धि न हो जाय तव तक आचार-शुद्धिको मैं असंभव मानता हूं। देखा-देखीसे आचरण शुद्ध नहीं होगा। जिसकी विचार-शुद्धि हो गअी है, अुसका धर्म हो जाता है कि वह अपने आचरण द्वारा पड़ोसियोंको सुधारे। विचार-शुद्धिका अितना अधिक असर होता है कि आचार-शुद्धि अपने-आप हो जाती है।

"स्वयंसेवकोंको अव यह समझ लेना चाहिये कि जिसने अपराध किया हो अुसकी भयंकरता अुसे वतानेमें किसीका लाभ नहीं। हृदय-परिवर्तन कानूनसे कभी नहीं होता, परन्तु प्रेमपूर्वक अपने शुद्ध विचार समझानेसे होता है। हृदय-परिवर्तन हो जाय तो मेरी दृष्टिसे कानून वेकार है।"

फिर पीड़ित भाअी-वहनोंके लिअे चंदा अिकट्ठा किया।

प्रार्थनासे आकर वापूजीने भापमें अुवाला हुआ अेक सेव और ८ औंस दूध लिया। थोड़ेसे पत्र देखे।

आजका चंदा रु० २३७–१५–३ हुआ। हस्ताक्षरके १० रु० आये। वापूजी ९। वजे सोये। आज प्रार्थनासे आकर तुरंत मैंने और अखवारवाले भाअियोंने मिलकर हाथोंहाथ चंदेकी रकम गिन डाली। और मैं भी ९। वजे सो गअी। वापूजी यह देखकर वड़े खुश हुअे। सोते-सोते मेरे लिअे अेक पर्चे पर लिखा: "वस, रोज अैसा करो तो मुझे वहुत अच्छा लगे। दोपहरका गुस्सा अुतर गया या नहीं?" (वापूजी हंसते-हंसते लिख रहे थे।) मैंने कहा, "हां, थोड़ा अुतर गया है।" अिस पर जोरसे कान खींचकर मुझे हंसा दिया और लिखा, "तुम्हारी भूल थी न?" मैंने कहा, "हां"। "तो अव गुस्सा पूरा अुतार डालो और मेरे साथ फिर दोस्ती करके गहरी नींदमें सो जाओ।" मैं और वापूजी दोनों हंस पड़े। अिस पर दादा और पोतीके वीचकी किट्टी तोड़कर हंसते हंसते हम दोनों गंगाके किनारे पर सो गये।

पटना,
१०–३–'४७, सोमवार

रोजकी तरह नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके वाद वंगालीका पाठ। वंगालीका पाठ लिखकर वापूजीने गरम पानी और शहद पीते-पीते मेरे लिखे हुअे श्लोक देखे। फिर मैं रस निकालने चली गअी। अिस वीच ... को

पत्र लिखे। अेक पत्र २२–२–'४७ का नोआखालीसे लौटकर आज यहां मिला। अिसलिअे अुस पर बापूजीने खुद ही लिखा, "मिला तारीख १०–३–'४७।" यह पत्र और अुसका अुत्तर दोनों मुझे सौंपे। दोनोंकी नकल करनेका आदेश दिया। वे अिस प्रकार थे:

२२–२–'४७

पूज्य बापूजीकी सेवामें,

आपने पंचगनीमें मुझे अपने पास बैठाकर जो शब्द कहे थे, वे मेरे मनमें तो मौजूद ही थे। . . . रोष करनेसे क्या होता है? अब तो केवल रोनेका जोर रह गया है। अिसलिअे रो-रोकर थक जाअूंगा, तब तक रोअूंगा।

बापू, मनुष्यके तो अेक जन्ममें दो जन्म होते हैं। लेकिन मुझे दूसरे जन्ममें तीसरा जन्म अनुभव करनेका दिन आ गया। मैंने मान लिया था कि . . . को छोड़नेके बाद मेरा दिल बिलकुल टूट जायगा, परन्तु अैसा नहीं हुआ। और अुस दिनसे घासके कीड़ेकी तरह आगेके दो पैर आप पर टिकाकर पिछले दो पैर अुठाये थे। आज जब आपको छोड़ रहा हूं, तब आगेके पैर रखनेका कोअी स्थान दिखाअी नहीं देता। अिसलिअे अब दिलके टूट जानेका अधिक डर है। फिर भी जैसे . . . को मैंने कहा था, वैसे ही आपसे कहता हूं कि अपनी भूल मुझे समझमें आ जायगी, तब आपकी अुसी गोदमें खेलनेको फिर लौट आअूंगा। और आपको अपनी भूल समझमें आ जाय, तब आप मुझे बुलाकर अुसका अिकरार करेंगे। मैंने श्री . . . को छोड़ा तबसे अुन्होंने जो सिखाया अुस पर अधिक लगन और सावधानीसे चल रहा हूं। अिसी तरह आज आपको छोड़ रहा हूं, तब भी आपने जो कुछ मुझे दिया है अुस पर अधिक दृढ़तासे अमल करते रहनेका विचार करके ही छोड़ रहा हूं। आप मेरे दिलका दर्द समझ सकेंगे।

आज्ञाकारी . . . के साष्टांग प्रणाम

आज बापूजीने जवाब दिया:

चि० . . .

तुम्हारा करुण पत्र अभी अभी मिला। अच्छा है कि आज मौन है। तुम रोओ किसलिअे? तुम्हारा तो लड़नेका धर्म है। रोना

हराम होना चाहिये। जैसे . . . जूझे हैं वैसे ही तुम भी जूझो। मैंने तो कहा है कि . . . पूरी तरह जूझते नहीं, और दुःखी होते हैं। दुःख किसलिअे? यदि मैं अधर्मको धर्म मान बैठा होअूं तो मेरा त्याग करें? लेकिन शंकाके लिअे जरा भी स्थान हो तो मुझे अुसका लाभ देकर देखा करो कि क्या होता है। मैं बड़ा नहीं हूं, तुम छोटे नहीं हो। हम सब अेक ही क्षेत्रके साथी हैं। . . . मेरे विचार तो दृढ़ होते जा रहे हैं। यह कुमति है या सुमति, यह कैसे जान सकता हूं? मेरे खयालसे तो सुमति है। परन्तु यह तो 'रजत सीप महं भास जिमि' वाली बात हुअी।

अन्तमें अितना ही कहूंगा कि दुःखी न होओ। निराशाको स्थान न देकर अपना काम करते रहो। मुझे खुशीसे छोड़ दो। मैं तो अभी अग्निकुण्डमें पड़ा हूं। या तो जल जाअूंगा या तर जाअूंगा। दूर रहकर भी प्रार्थना करो कि अीश्वर मुझे सुमति दे। सब कुशलपूर्वक रहना।

बापूके आशीर्वाद

आजके पत्रोत्तरसे पूज्य बापूजीकी अुदारता, निरभिमानता, विवेक और अुसके बावजूद किये हुअे निश्चय पर अटल रहकर चलनेकी शक्ति पर यदि महादेव काका होते, तो अेक छोटी-सी पुस्तिका तैयार हो जाय अितना विवेचन लिख देते। दोनोंके पत्र — और अुनमें भी बापूजीके पत्रका अन्तिम वाक्य 'प्रार्थना करो कि अीश्वर मुझे सुमति दे'। — अैसे हैं कि पूज्य महादेव काकाकी याद आये बिना नहीं रहती। परन्तु आज तो महादेव काकाको याद करके अिन पत्रोंको मैंने अपने खजानेमें रख लिया है।

और भी कुछ पत्र लिखकर बापूजी थोड़ी देरके लिअे लेट गये। १५ मिनट सोये। अुठकर गंगा किनारे डॉक पर घूमने गये, जहां अेक छोटा-सा स्टीमर खड़ा है। सामनेसे अेक स्टीमर जा रहा था। 'महात्मा गांधीकी जय' के साथ लोग दर्शन करनेके लिअे सामनेके किनारे पर अेक-दूसरेसे होड़ लगा रहे थे। बापूजीने हाथ जोड़कर हंसते चेहरेसे सबका वन्दन स्वीकार किया। खानसाहब भी साथ ही टहलने आये थे। लौटने पर बापूजीके पैर धोये। बापूजीने अपना थोड़ा-सा लिखनेका काम किया। अितनेमें मैंने मालिश और स्नानके लिअे गरम पानी रखनेकी तैयारी की। जुकाम हो जानेके कारण

शंकरनजीने बापूजीको भाप दी। स्नानादिसे निवृत्त होनेमें साढ़े दस बज गये। भोजनमें ६ औंस दूध और दो संतरे लिये। और चीजें छोड़ दीं। मिट्टी लेना और कातना वगैरा नियमपूर्वक चला। मौन है अिसलिअे मुलाकातें बहुत नहीं हुअीं। जो लोग आये वे केवल दर्शनके लिअे ही आये थे। ज्यादातर समय बापूजीने लिखनेमें ही बिताया। दुपहरको अलग अलग समयमें लगभग दो-अेक घंटे सोये होंगे। अिसलिअे कुछ आराम मालूम होता है।

पौने चार बजे अेक बीमारसे मिलने गये। वहां मेरी डायरी बापूजी साथ ही ले गये। परसों मुझसे पूछे हुअे व्यक्तिगत प्रश्नका अुत्तर बापूजीने अभी तक देखा नहीं था। रास्तेमें मोटरमें अुसे पढ़ लिया और लिखा :

तुम्हारी आशा और अिच्छा सफल हो यही मेरा आशीर्वाद है।

बापू, १०–३–'४७, सोमवार, मोटरमें जाते हुअे, पटना।

यह आशीर्वाद पाकर मैं तो बहुत ही आनंदित और सन्तुष्ट हो गअी। मुझे डर था कि मुझसे जो प्रश्न पूछा गया है अुसका जवाब मैं अच्छी तरह दे सकूंगी या नहीं। परीक्षामें बैठे हुअे विद्यार्थीकी स्थिति परिणाम निकलनेके दिन जैसी होती है, वैसी ही आज मोटरमें मेरी स्थिति थी।

४।। बजे आकर बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। अेक पर्चे पर मुझे लिखा :

"जैसे तुम्हारे विचारोंको बता सका हूं और तुममें निर्भयता पैदा कर सका हूं, वैसे तुम्हारा शरीर बना सकूं तो मुझे संतोष होगा।"

अभी तक मुझे और बापूजी दोनोंको जुकाम है, अिस परसे यह वाक्य लिखा। और मुझे भी गरम पानी पीनेको कहा। बापूजी शामको भोजनमें कुछ भी नहीं लेनेवाले थे। मुझे थोड़ा समय था, अिसलिअे मैंने कुटुम्बीजनोंको पत्र लिखे। प्रार्थनाके समय बापूजीका मौन खुला। बापूजीका मौन होनेके कारण सारा वातावरण बिलकुल सूना-सूना लगता है।

आज प्रार्थनामें बड़ा शोरगुल था। बापूजीने शुरूमें कहा कि, "आप सब अिस प्रार्थना-सभामें तमाशा देखनेके लिअे नहीं, परन्तु सच्चे दिलसे अीश्वरका नाम लेनेके लिअे और अीश्वरका काम करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं।

"मुझ पर आरोप लगाया जाता है कि मैं यहां प्रार्थनाके लिअे आता हूं और प्रार्थनाके बहाने राजनीतिक बातोंका प्रचार करता हूं। जिसे गालियां देनी हों या किसी न किसी तरह अुलटा ही देखना हो, अुसका तो क्या

अुपाय हो सकता है? परन्तु मैं कभी राजनीतिक बातें करता भी हूं, तो धार्मिक भावनासे ही करता हूं। जो मनुष्य धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा हो, आध्यात्मिक ढंगसे रहता हो, अुसकी जिन्दगी अिस तरह अलग अलग विभागोंमें बंटी हुअी नहीं होती। कोअी व्यापारी अपने व्यापारमें धोखा देकर रुपया अिकट्ठा करे और फिर अुसमें से दान दे, तो अुससे भगवान प्रसन्न नहीं हो जाता। भगवान अैसा भोला नहीं है। सारे संसारको अेक सूत्रमें पिरोकर रखनेवाला कानून और अुस कानूनको बनानेवाला, —ये दो अलग किये ही नहीं जा सकते। अैसा मनुष्य जो भाषा काममें लेता है अुसे काममें लेकर मैं यहां तक कह सकता हूं कि स्वयं अीश्वर भी अपने चलाये हुअे नियम-चक्रके वश रहकर ही चलता है। घासका अेक तिनका भी अुसकी अिच्छाके विरुद्ध अुड़ नहीं सकता।

"हम अपना धर्म पहचानें और अुसके अनुसार चलें। हैवानियत करनेसे न पाकिस्तानका भला होगा, न हिन्दुस्तानका भला होगा। यह सारी लूट-पाट और मारकाट किसके लिअे होती है? अैसा करके आप क्या करेंगे? और अभी तो हम सब गुलामीमें ही पड़े हैं न?"

आज बापूजीने खुद ही बैठकर चंदा अिकट्ठा किया। अेक घंटे बैठे। अितनेमें नोटोंका, फुटकर रुपये-पैसोंका देखते-देखते ढेर लग गया। लोग बापूजीको हाथों-हाथ देते थे। बहनोंने अिसी समय मुस्लिम-सहायता-कोषमें अपने नाक-कान-हाथके जेवर अुतार कर दिये। खानसाहब भी मुझे यह सब अिकट्ठा करानेमें मदद कर रहे थे।

प्रार्थनासे आकर गरमी बहुत होनेके कारण बापूजी बाहर बैठे। अखबारवालोंके साथ थोड़ी देर बातें कीं। प्रार्थना-प्रवचन देखा। पैर धोकर भाप ली। शामको मुलाकाती लोग आये। मंत्रीगण भी आये।

मैंने चन्दा गिना। आज कुल रु० १९५४–१५–० आये। अिसके सिवा जेवरमें आठ अंगूठियां (सोनेकी), अेक लॉकेट (मोतीका), अेक सोनेकी चूड़ी, दो चांदीकी चूड़ियां, आठ सौ रुपयेका अेक चैक और १०० रुपयेका अेक नोट। बाकी सब फुटकर पैसे थे।

प्रार्थनासे लौटकर मंत्रियोंकी सभामें न बैठकर मैंने चंदा गिन लिया। अखबारोंके संवाददाता भी गिनने बैठे। १० बजे बापूजीके सोनेका वक्त हुआ, तब तक मैं भी चंदेका हिसाब लिखकर तैयार हो गयी।

बापूजी यह देखकर खुश हुअे। कहने लगे, "जितना हो सके अुतना काम करें तो कामको भी फायदा हो और हमें भी फायदा हो।" बापूजी १० बजे सोये। मैं बाकीका कामकाज करके और अपनी डायरी लिखकर १०॥ बजे सोयी।

पटना,
११-३-'४७, मंगलवार

नित्यकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीते हुअे कुछ पत्रोंके जवाब मुझसे लिखवाये।

अेक पत्रमें:

तुम्हारा लम्बा पत्र सारा ही सुन लिया। अच्छा लगा। फिर भी खटका। हम अपने प्रति कड़े और तीखे रहें, पर दूसरोंके प्रति अुदार रहें। . . . ये तीनों ही दोषी हैं, अैसा हम न मानें। जहां कोअी भी दोषरहित न हो, वहां कौन किसका दोष निकाले? जो दोष तुम निकाल रहे हो, अुनके बारेमें मैं अुन्हें लिखूं? तुम्हारा धर्म है कि संबंधित व्यक्तियोंसे विनयपूर्वक बात करो। तुम अपनी जांच करो। साधकको भी जब अभिमान हो जाता है, तब अुसकी प्रगति रुक जाती है। यह डर मुझे तुम्हारे पत्रसे लगा है। गहरा विचार करना और मुझे लिखना। अभी तो अितना ही। . . .

दूसरे अुत्तरमें पूज्य कस्तूरबाके बारेमें थोड़ा-सा किन्तु असरकारक ढंगसे लिखवाया:

. . . तुम्हारा प्रेममय पत्र (कार्ड) मिला। अिसमें जितना प्रेम देखता हूं, अुतना ही अधिक यदि ज्ञान भी देखता तो प्रसन्नता होती। बासे हमारा संबंध केवल देहका ही नहीं था। मेरे लिअे तो बा आज भी जीवित है। मेरे पास है। मैं जो करता था अुसे बा जानती थी। बाको जितना मैं जानता हूं, अुतना और कोअी नहीं जानता। . . .

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें पढ़नेवाले अेक विद्यार्थीका लंबा पत्र था। अुसने बापूजीसे निकट परिचय रखनेवाली और वहां पढ़नेवाली अेक लड़कीकी शिकायत लिखी थी। अुस भाअीने अन्तमें लिखा था कि अिस शिकायतसे आपको बुरा तो नहीं लगेगा? वगैरा।

अिसका अुत्तर बापूजीने (हिन्दीमें) दिया :

तुम्हारा खत मिला। सही हकीकत देनेमें क्या बुरा लगना था? और कुछ जानते हो तो लिखो। . . .

अेक दूसरे (हिन्दी) पत्रमें हिन्दुस्तानीके बारेमें लिखा :

मैं तो यहांसे जल्दी निकल सकूं अैसा नहीं देखता। करना है या मरना है।

हिन्दुस्तानीका क्या कर रहे हो? मेरी अुम्मीद है कि अिस बातमें सरकारी नीति स्पष्ट की जायगी। आज हम गिर रहे हैं। अिस हालतमें कोअी तो दृढ़ रहें। . . .

अेक अन्य अुत्तरमें :

मैं तो नित्य भगवानसे यही मांगता हूं कि असत्यमें से सत्यमें ले जा। यही भाव 'Kindly Light' में है न? भंगीका काम करते रहो। आंखोंकी अब रक्षा करना। अग्रवालकी पुस्तकें पढ़ना। जानते हो न?

. . . को लिखा :

तुम्हारा पत्र मिला। पंचगनीकी चिन्ता तो अब तुम्हें और शान्तिलालको करनी होगी। मेरा तो यहांसे जल्दी छुटकारा होता दिखता नहीं। करूंगा या मरूंगा। अन्तकी भगवान जाने। भंगीकी बात समझा। ग्रामोद्योगकी बातका विचार तो भाअी कुमारप्पाके साथ करना।

आज सुबह ही सुबह बापूजीने काफी पत्र लिखवाये और लिखे। सबमें विविधता है और सब ज्ञानसे भरपूर हैं। पत्र लिखवानेके बाद फलोंका रस लिया। रस पीते हुअे मुझे संस्कृतका पाठ पढ़ाया। अकारान्त शब्दोंके रूप और संधिके नियम बताये। मेरी यह नोटबुक पूरी हो रही है, अिसलिअे मैंने अिसे महुआ भेजनेकी बापूजीसे बात की। वे बोले, "मैं चाहता हूं कि यह डायरी पहले तुम नोआखाली प्यारेलालजीको भेज दो, क्योंकि अिसमें लिखी हुअी बातें बहुत ही महत्त्वकी हैं। अिसलिअे वे अेक बार सब जान लें तो अच्छा है। अुन्हें भी संतोष होगा। बादमें भले वे सीधी जयसुखलालको भेज दें, ताकि वहां सुरक्षित रहे। रजिस्ट्रीसे भेजना, जिससे अिधर-

अुधर होनेका डर न रहे। तुम्हारी अिस डायरीका महत्त्व आज शायद तुम्हारी समझमें न आये, परन्तु मेरी दृष्टिसे अुसमें कीमती जानकारीका और यात्राका अितिहास भरा हुआ है। अलवत्ता, तुम्हारी भाषा अभी जैसी चाहिये वैसी नहीं बनी है। परन्तु धीरे धीरे अच्छी हो जायगी। अिसलिअे अिस बातकी सावधानी रखना है कि यह डायरी कहीं गुम न हो जाय। तुम यह काम न कर सको, तो निर्मलबाबू या देवसे कहना। अिस पर कितने पैसेके टिकट लगाना चाहिये और रजिस्ट्री करनेकी क्या विधि होती है, यह वे तुम्हें बता देंगे।

हमारी बातें हो रही थीं, अितनेमें निर्मलदा डाक लेकर आये। थोड़ी डाक सुनी अितनेमें साढ़े सात बज गये। अिसलिअे घूमने निकल गये। खानसाहबको आजसे रोज सनायकी पत्तियां रातको भिगोकर सुबह देनेके लिअे बापूजीने सूचना की थी। अुसके अनुसार घूमने जानेके पहले दीं। बापूजीने हंसते-हंसते अुनसे पूछ लिया कि मैं अुनकी बराबर सेवा करती हूं, या भूखा रखती हूं। घूमते-घूमते अुनके साथ बिहारके गांवोंमें दौरा करनेके बारेमें बातें कीं। लौटकर बापूजीको आधा चम्मच अिसबगोल दिया। अितनेमें विनोदानन्द झा, स्थानीय स्वायत्त शासनवाले वासुदेवप्रसादजी और अुनके साथी आये।

मालिश और स्नानके बाद भोजनमें अेक खाखरा, अेक सेब और आठ औंस दूध लिया। आज भोजनके समय डॉ० सैयद महमूद साहबकी लड़कियां और बेगम साहिबा आअीं।

भोजनके बाद आध घंटे आराम किया। मैंने पैरोंमें घी मला। मैं दुपहरको नहीं सोती, यह बापूजीको अच्छा नहीं लगता। अिसलिअे अुन्होंने पैर मलनेके बाद सब कामकाज छोड़कर अपने पैरोंके पास सो जानेका हुक्म दिया। अतः सोना पड़ा। साढ़े बारह बजे बापूजी अुठे तब मुझे अुठाया।

खानसाहबने साढ़े बारह बजे लौकीका हलवा खाया जो मैंने अुनके लिअे बनाया था और दो रोटी, अुबला हुआ और कच्चा शाक और आठ औंस दही लिया। अुन्हें साढ़े दस बजे भोजन करना अनुकूल नहीं पड़ता, अिसलिअे आजसे रोज साढ़े बारह बजे भोजन करेंगे।

खानसाहबको भोजन करानेके बाद मैं नहाअी। बापूजीके और अपने कपड़े धोये और खाना खाया। बापूजीका सूत अुतारा। मिट्टीकी पट्टी और

चरखा तैयार किया। अिसमें सहज ही छह बज गये। समय कहां जाता है, अिसका पता ही नहीं चलता। मुसलमान भाअियोंके साथ बापूजी बातें कर रहे थे। अिन भाअियोंके नाम थे मुहम्मद जुमेद और मौलवी हसन। फिर कांग्रेसके नवलकिशोर प्रसाद और अुनकी मंडली आअी। अुसके बाद जमीयतुल अुलमाके मौलवी सैयद अिजा हुसैन। ३–३० से ४–० तक जालेश्वरप्रसाद, शमसुद्दीन साहब और लीगके लोगोंके साथ बातें कीं। लीगवालोंसे बापूजीने साफ कह दिया कि, "अगर आप अपना भला चाहते हों तो अतिशयोक्ति न कीजिये। यहां जो कुछ हुआ वह बहुत बुरा हुआ, यह मैं मानता हूं। परन्तु नोआखालीमें अभी तक लोगोंका डर नहीं निकला है। आपमें से स्वयंसेवकोंको वहां जाकर धूनी रमाकर बैठना चाहिये; और लोगोंको समझाना चाहिये कि अभी तो पूरी आजादी भी नहीं मिली है, फिर आप भाअी भाअी किसलिअे लड़ते हैं। और हिन्दुओंसे कहना चाहिये कि आप तो क्या आपकी छोटी-सी बच्ची या बच्चा भी हमारे ही लड़के-लड़की हैं। आप बेफिकर रहिये। अगर आप अितना कर लेंगे तो फिर यहां या पंजाबमें तो अपने-आप शान्ति स्थापित हो जायगी और दुनियामें आपका नाम अुज्ज्वल रहेगा। भूल तो सभीसे हो जाती है। परन्तु अगर भूलको समय पर सच्चे दिलसे सुधार लिया जाय, तो लोग अेक क्षणमें अुसे भूल जाते हैं।"

चार बजे बापूजीको मिट्टीकी पट्टी देकर मैं अुनके लिअे और खानसाहबके लिअे शामका खाना और कलके लिअे खाखरे बनाने चली गअी।

बापूजी प्रार्थनाके बाद जो प्रवचन करते हैं, अुन्हें गांवों तक पहुंचानेके लिअे 'बिहार समाचार' नामका अेक पत्र निकलेगा और रोज हवाअी जहाज द्वारा सरकारकी ओरसे देहातमें पर्चोंके रूपमें फेंका जायगा, अैसा श्रीबाबूने तय किया है। कलसे अिसका अमल होगा। हमारी यात्रा भी कलसे शुरू होगी। अिसलिअे आसपासके गांवोंमें प्रार्थना होगी और रात फिर घर आकर ही बितानी होगी। आगे चलकर दूर दूरके गांवोंमें रहनेके लिअे भी जाना होगा।

शामकी प्रार्थना-सभा आज तो नियमानुसार बांकीपुर मैदानमें ही हुअी। प्रार्थनासे पहले बापूजीने कुछ नहीं खाया। आकर अेक अुबला हुआ सेब और आठ औंस दूध लिया।

आजके प्रवचनमें बापूजीने कहा, "आज मेरी यहां आखिरी प्रार्थना है, क्योंकि कलसे मैं भीतरके गांवोंकी यात्रा पर जानेवाला हूं। मैं रातको

यहीं रहकर देहातमें घूमूंगा। फिर भी आप जो अेक सुन्दर काम कर रहे हैं और जिस भावनासे कल आपने मुस्लिम-सहायता-कोषमें मदद दी है, अुसे जारी रखेंगे अैसी आशा रखता हूं। कलका चंदा लगभग दो हजार रुपये हुआ और बहनोंने अपने गहने तक दे दिये। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि बहनोंको गहने कितने प्यारे होते हैं। अिसीलिअे मैं कहता हूं कि आप मुझे अेक भव्य सहायता दे रहे हैं। अलबत्ता, बहनोंका सच्चा शृंगार तो स्वच्छ और पवित्र हृदय ही है। और वह शरीरके किसी भी कीमती आभूषणसे कअी गुना अधिक मूल्यवान है।

"अभी अेक चिट्ठी मिली है। अुसका जवाब यह है कि कोअी मनुष्य मुझे गाली दे तो जवाबमें मुझे अुसे गाली नहीं देनी चाहिये। वैसा करनेसे अुलटे वातावरण बिगड़ता है। हिंसा तो अहिंसासे ही शान्त होती है। अप्रतिकारकी भावनाके सच्चे अर्थके विषयमें लोगोंमें बड़ी गलतफहमी है। परन्तु सच्चा अर्थ यह है कि हिंसाके जवाबमें हिंसा न करते हुअे भी सामनेवालेकी अनुचित अथवा अन्यायपूर्ण मांगके आगे हम कभी न झुकें। मौतका खतरा अुठाकर भी अुसके सामने कभी न झुकें। अुदाहरणार्थ, कोअी मुझे जबरन् कहे कि पाकिस्तानका मेरा दावा स्वीकार करो, तो अुस धमकीके सामने सीधा हिंसात्मक कदम न अुठाकर नम्रता और विवेकसे मैं अुससे पूछूंगा कि आपके दावेका क्या अर्थ है? अगर मेरा समाधान हो जाय, तो मैं अुसे स्वीकार करूंगा; और मुझे अैसा लगे कि यह केवल अुसकी जबरदस्ती ही है, तो मैं अुसके प्रति अप्रतिकारकी भावना रखूंगा। भले ही वह मुझे मार डाले। अहिंसाके व्रतका पालन करनेवाला मनुष्य हिंसाका जवाब हिंसासे नहीं देगा। परन्तु अपना हाथ रोककर और सामनेवालेकी मांगके अधीन न होकर अुसकी हिंसाको शान्त कर देगा और बेकार बना देगा। जगत्का व्यवहार आगे चलानेका यही अेक सुमार्ग है। अणुबम जैसे महा भयंकर साधनोंके अुपयोगसे किसका भला होगा? अिसलिअे हिंसाके खिलाफ हिंसा ही करेंगे, तो अपने-आप अिस भयंकर शस्त्रका अुपयोग होगा और संसारका विनाश होगा।

"हिंसक लड़ाअीमें जिस प्रकारकी बहादुरी और शौर्यकी जरूरत होती है, अुससे मेरे बताये हुअे अहिंसक प्रतिकारमें अधिक अूंचे शौर्यकी आवश्यकता पड़ती है। संस्कृतका अेक सूत्र है 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। क्षमा सचमुच ही वीरोंका भूषण है, कायरोंका नहीं।

"अहिंसाका अुपदेश प्रत्येक धर्ममें किया गया है। परन्तु भारतकी भूमि पर अहिंसाका शास्त्र रचकर तथा कठोर तप करके अनेकानेक अृषि-मुनियों और साधु-संतों द्वारा अपना जीवन अर्पण कर देनेके अुदाहरण हमारे देखनेमें आते हैं। अिसलिअे कवियोंने हिमालयके विषयमें कहा है कि हिमालय भी अपने त्यागसे अपनी अशुद्धियोंको धोकर हिमके श्वेत आच्छादनसे शोभायमान बना है। परन्तु आज तो अहिंसाके अिस सारे आचरणका केवल नाम ही रह गया है। अिसीलिअे आज द्वेषका प्रेमसे और हिंसाका अहिंसासे जवाब देनेके सनातन नियमका पुनरुद्धार करनेकी आवश्यकता पैदा हो गअी है। और अिस सनातन नियमकी स्थापना पुनः जनक विदेही और सियावर रामचंद्रकी अिस पुण्यभूमिमें न हो तो और कहां हो सकती है?"

आज प्रवचन करनेमें पूरा अेक घण्टा लगा। परन्तु हिंसा और अहिंसाका जो तात्त्विक भेद बापूजीने समझाया वह अद्भुत था। प्रार्थनाके बाद कलकी तरह चन्दा अिकट्ठा किया। लौटकर दूध और सेब लिया। फिर प्रवचन देखा और मंत्रियोंसे मिले। बीचमें मैंने खानसाहबको खाना खिलाया। अुन्होंने साग, रोटी, थोड़ीसी दाल और दही तथा दो सन्तरे लिये। अितनेमें साढ़े आठ बज गये। बापूजीका बिछौना किया और थोड़ा-सा फुटकर कामकाज निबटाया, अितनेमें नौ बज गये। बापूजी टहलनेके लिअे अुठे। बीस मिनट टहले। टहलकर पैर धोकर पौने दस बजे बिस्तर पर गये। मैंने बापूजीके सिरमें तेल मलकर तथा पैर दबाकर चन्दा गिननेका काम शुरू किया। आज सवा दस बजे चन्दा गिनने बैठी, अिसलिअे कोअी मददगार नहीं था।

आजका चन्दा बिलकुल गरीब लोगोंने दिया होगा, क्योंकि रुपयेके नोट सिर्फ ५० ही थे। बाकी पाअी, पैसे, आने, दो आने, चार आने ही थे। १०० रुपयेका नोट अेक भी नहीं था। दस दसके नोट पांच और पांच पांचके बीस थे। कुल चन्दा १००० रुपये हुआ। और गहनोंमें पैरोंमें पहननेकी चांदीकी कड़ियां तथा 'अनोखे' थे। सामान्य स्थितिके लोग पहनते हैं वैसे चांदीके ५ हाथकड़े थे। तीन सोनेकी लौंगें थीं और अेक जोड़ी मीनाकारीके बुन्दे और दो अंगूठियां थीं। चन्दा गिन चुकने पर घड़ीमें अेक बज रहा है और मैं अपना सारा काम पूरा करके सोने जा रही हूं।

आज देवभाअी यहांके सेन्ट्रल बैंकमें रु० ३३५७–११–६ जमा करा आये।

पटना,
१२–३–'४७, बुधवार

हमेशाकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बापूजीने पूछा कि मैं कब सोअी थी। मैंने कहा, लगभग अेक बजे। बापूजी कहने लगे, "शायद अब मैं तुम पर जुल्म कर रहा हूं। बारह बजे मैं पेशाबका बरतन लेनेके लिअे बिस्तरसे अुठा तब तुम्हारी मच्छरदानी खोलकर देखा तो तुम वहां नहीं थी। मुझे गुस्सा भी आया कि अब अिस लड़कीका क्या किया जाय? आस-पास देखा। कोअी नहीं था। अिसलिअे फिर सो गया। नींद नहीं आअी तो माला हाथमें ली। फिर कब सो गया, अिसका पता नहीं चला। फिर तुम्हें साढ़े तीन बजे जगानेका जी नहीं हो रहा था, परन्तु प्रार्थना छुड़वाना ठीक न लगनेसे जगा दिया। परन्तु अब अिस नींदको तुम दुपहरमें पूरी कर लोगी तभी मुझे संतोष होगा। यह ध्यानमें रखना।"

कल रातका चंदा १००० रुपये हुआ। अुसमें मुख्यत: रेजगी ही थी। नोट बहुत कम थे। अुसे गिननेवाली मैं अकेली ही थी। अखबारी प्रतिनिधियोंने आध घण्टे गिननेमें मदद की थी, परन्तु भूल हो जानेसे दुबारा गिनना पड़ा।

सवा छह बजे बापूजीने मेरा गीतापाठ देखा। ताराबहनका खूब लंबा पत्र आया था, अिसलिअे घूमनेका समय होने तक वह पत्र पढ़ा। ६–२० पर कलकत्तेसे कुलरंजनबाबू आये। अुन्हें अजीज साहबके अिलाज और देखभालके लिअे, जो लकवेसे बीमार हैं, बापूजीने खास तौर पर तार देकर बुलाया है। अुनके साथ बातें करनेमें काफी वक्त गया। मेरी भी डॉक्टरी जांच करनेको कहा।

बाहर कुहरा होनेके कारण मालिश अन्दर की। खानसाहबके साथ बापूजीने निराश्रितोंके बारेमें बातें कीं। सरहदमें भी साम्प्रदायिक आग फैल जानेका डर है।

मालिशमें खानसाहबके बारेमें बापूजी मुझसे कहने लगे, "मैंने जब यह बात कही कि सरहदकी आग शांत करने जाअूंगा तो यहांका काम बिगड़ जायगा, परन्तु यदि अपने घरको — जहांसे यह चिनगारी शुरू हुअी है — ठंडा कर लूं तो आग आगे नहीं बढ़ने पायेगी बल्कि बुझ जायगी, तब तुमने देखा कि खानसाहबने अिसके विरुद्ध जरा भी बहस नहीं की। अुनका

तो हमेशा यही सुर रहा है कि 'हुक्म दीजिये।' वे हुक्मके तावेदार हैं। पांच ही मिनटमें मामला निवट गया।"

मालिशमें वापूजी आध घंटे सोये। भोजनमें दो खाखरे, साग, दूध, दो ग्रेपफ्रूट तथा दो लीचियां लीं। शैलेनभाअी खाते समय अखवार सुनाने आये। वापूजी 'डॉन' अखवार खास तौर पर सुनते हैं। मैंने कहा, विरोधी अखबार क्यों पढ़ते हैं? वह आपको और कांग्रेसको केवल गालियां ही देता है। गालियोंके सिवा अिस अखवारमें और कुछ भी नहीं होता।

वापूजी वोले, "यहीं हम भूलते हैं। कभी कभी हम अपने विरोधीके द्वारा ही अूपर चढ़ते हैं। हमारे गुणगान करनेवाले अखवार पढ़नेसे हमारी प्रगति हरगिज नहीं हो सकती। विरोधी अखबार पढ़कर अुसकी टीकामें कुछ भी तथ्य हो तो हम सुधरें, और यदि विलकुल झूठ हो तो अुसका खंडन करें। अुसके विरोधमें सार्वजनिक वक्तव्य दें। रामायणके पात्रोंमें यदि कैकेयीका पात्र न होता, तो अुस ग्रंथका वहुत मूल्य नहीं रहता। रामजी कैसे अेकवचनी और त्यागी थे, यह वतानेके लिअे कविने अुसको रामकी मां वनाया। अैसे तो अनेक अुदाहरण रामायणमें हैं। अिसलिअे संक्षेपमें मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूं कि अपना गुणगान हमें कम सुनना चाहिये। और सुन लिया हो तो 'यह मैंने किया है' अैसा मानकर फूलकर कुप्पा न हो जाना चाहिये, परन्तु अुसे अीश्वरकी कृपा मानना चाहिये। विरोधी वातें सुननी चाहिये। अुनमें कुछ तथ्य हो तो सुधरना चाहिये। गुस्सा तो आना ही नहीं चाहिये। अिससे मनुष्य वहुत अूंचा अुठता है।"

वापूजी अैसी छोटी छोटी वातोंसे भी अपने सिद्धान्त समझाते हैं। अितना ही नहीं, प्रत्यक्ष कार्यमें — आचरणमें — लाकर वताते हैं। अुस समय मानो गीताके कर्मयोगका साक्षात्कार होता है। मुझे सचमुच अपने प्रश्न पर आज वहुत शरम आअी। परन्तु अैसे समय जीवनको अुज्ज्वल वनानेवाले अमूल्य सिद्धान्तोंका पाठ अकस्मात् मिल जानेसे सच्चे वापूके दर्शन होते हैं, जिससे वहुत संतोष और आनन्द होता है।

दौलतभाअी अखवार सुनाने लगे, अिसलिअे वापूजीने मुझे नहाकर कपड़े धो डालनेको कहा। मैं निवटकर आअी तव वापूजीने खाना समाप्त किया। अिसलिअे मैं घी मलने लगी। अेक पैरमें मला कि वापूजीने मुझसे पूछा, "तुमने खाना खाया?" मैंने कहा, "नहीं, मैं घी मलकर खाने जाअूंगी।"

बापूजीने घी मलना बन्द कराया और कहा, "दूसरा पैर आकर मलना। पहले खाना खा आओ।" अिसलिअे दूसरा पैर छोड़कर खानेके लिअे जाना पड़ा। हरअेक बातकी अुन्हें अितनी अधिक चिन्ता होती है।

खाकर आअी तब तक बापूजी सो गये थे। परन्तु धीरेसे पैरमें घी मला। अिसके बाद खानसाहबको खाना खिलाया। अुनके पास बैठ कर अपनी डायरी लिखी। खानसाहबको खिलाकर आअी अितनेमें बापूजी अुठ गये। अुन्हें गरम पानी देकर चरखा तैयार किया। फिर बापूजीके बरतन मले। अिसके बाद आध घंटे मैं भी सोअी। ढाअी बजे अुठी। बापूजीके पेड़ू पर मिट्टी रखकर थोड़ी-सी गुड़पपड़ी बनाअी। बापूजी मिट्टी लेते लेते पन्द्रह मिनट सो लिये। अुठे तब रामानन्द मिश्र आये। ३–४० को महमुद्दीन तथा सरदार ज्ञानसिंहजी आये, ४–० को राम मुकरजी, श्रीमती सुन्दरीदेवी, अेस० अेम० शेर और अुनकी मण्डली आयी। फिर अनुग्रहबाबू आये। प्रार्थनामें जानेसे पहले बापूजीने अेक ग्रेपफ्रूट लिया। आज प्रार्थनाके लिअे कुमुराहटमें मंगलेशके तालाब पर जाना है। आजसे बिहारकी यात्रा शुरू होती है।

४–२० पर रवाना हुअे। हमारे साथ मंत्रियोंमें अनुग्रहबाबू थे। मृदुलाबहन, खानसाहब, मैं और बापूजी पीछेकी सीट पर थे। बापूजी पंद्रह मिनट मोटरमें मेरी गोदमें सिर रखकर सो लिये। रास्तेमें मृदुलाबहनने कहा, "१२ मार्च, १९३० का दांडीकूच याद आता है।" खानसाहब खूब प्रेमसे बापूजीके पैर दबा रहे थे। खानसाहबकी नम्रता अद्भुत है और भापा भी बहुत मीठी है। लगता है कि सुनते ही रहें। वे सादगीके अवतार हैं। अिन दो महात्माओंके बीच रहनेका मुझे अनोखा लाभ मिल रहा है।

रास्तेमें मुहम्मद मुस्तफाखांका घर देखा। पूरा गिरा दिया गया था। खिड़की-दरवाजे लोग ले गये थे। भस्मीभूत हुअी अेक मस्जिद भी देखी।

प्रार्थनामें काफी भीड़ थी। मुसलमान बहनें भी बहुत थीं। रामधुन शुरू की, तब कुछ शांति हुअी। फिर कुमुराहटमें जो कुछ देखा था अुसका वर्णन प्रार्थना-प्रवचनमें बड़े द्रवित हृदयसे करते हुअे बापूजीने कहा :

"अेक खुशहाल कुटुम्बका घरबार और साज-सामान खतम हो गया। सारा परिवार पामाल हो गया। आप सब जानते हैं कि अब अंग्रेज तो जानेकी तैयारीमें हैं। अैसे समय हमारा क्या फर्ज हो सकता है, यह हमें सोचना चाहिये। कोड़ेके बदलेमें दूसरा कोड़ा मारनेकी नीति अपनाकर

क्या हम स्थायी गुलामी मोल लेना चाहते हैं? अैसा करके हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ब्राह्मणिस्तान, अछूतिस्तान वगैरा विभाग करके हम अपनी माताके टुकड़े करेंगे, तो दुनिया हम पर थूकेगी। मान लीजिये कि किसी मनुष्यने मंदिरमें जाकर पागलपन करके मूर्तिको तोड़नेका काम किया, तो क्या हम मस्जिद तोड़ें? अिससे किसी भी तरह हिन्दूधर्मकी रक्षा नहीं होती। आप मानें या न मानें, मगर अितना निश्चित है कि हम सब किसी न किसी रूपमें मूर्ति-पूजक ही हैं। मेरी तो हिन्दू, मुसलमान, पारसी वगैरा सभी जातियोंको सलाह है कि जहां कहीं जबरदस्ती देखो वहां जरा भी अुसके अधीन न होकर नम्रतासे अुसका सामना करो। अीश्वरको पूजनेकी मेरी अपनी रीति — भले वह पागलों जैसी ही हो — पर कोअी अंकुश लगाने आये, तो अपनी मूर्तिकी रक्षाके लिअे मैं अपने प्राण दे देना बेहतर समझूंगा। तभी हम सच्चे भक्त माने जायेंगे।

"यहां खानसाहब बैठे हैं। अुन्हींकी बात कहूं कि वे हिंसाके रास्तेसे अूबकर किस तरह अहिंसाके रास्ते पर मुड़े। अुनका जन्म अैसे जनूनी कुटुम्बमें हुआ है, जो लातका जवाब लातसे देनेमें विश्वास रखता था। अुसमें बापके द्वारा बेटेको मारनेके अुदाहरण मौजूद थे। यह वैर मिटता ही नहीं था। अिसलिअे बादशाह खानसाहबको लगा कि अिस हिंसासे तो वैर बढ़ता है। अिसलिअे अुन्होंने अहिंसाका रास्ता लिया। अिससे पठानोंमें अैसा परिवर्तन हुआ कि देखकर आश्चर्य होता है। वे प्रेमसे, सेवासे सबके दिलोंको वशमें करते हैं। अिसलिअे सब अुन्हें फकीर कहकर पुकारते हैं। वे तो दिन प्रतिदिन सत्य और अहिंसाके अधिक नजदीक पहुंच रहे हैं, क्योंकि अहिंसा और सत्यका मर्म वे समझ गये हैं। यहां अिकट्ठे हुअे सभी लोग अैसे शौर्यपूर्ण मार्ग पर चलें, ताकि दुनिया अुसका अनुकरण करे।

"यहां आते हुअे जो बरबादी देखी और बंगालमें भी जो करुण घटनायें देखीं, अुनसे मेरा दिल फट रहा है। जब आजादी हमारे पैरोंमें लोट रही है, तब हम क्या कर रहे हैं, अिसका जरा तो खयाल करें?"

बापूजीका प्रवचन पूरा होनेके बाद मैंने बहनोंमें जाकर चन्दा अिकट्ठा करना शुरू किया। बहनें मुझे पकड़ पकड़ कर चन्दा देती थीं। कितनी ही गरीब बहनोंने चांदीके गहने दिये। अव्यवस्था बहुत हो गअी थी, फिर भी चन्दा काफी अिकट्ठा हुआ।

घर पहुंचते पहुंचते ठीक साढ़े आठ वज गये। देवभाअी शीत फूल आनेसे प्रार्थनामें नहीं आये थे। अिसलिअे घर आकर तुरन्त ही मैंने अपनी नोटवुकमें जो प्रवचन लिखा था, अुसे साफ अक्षरोंमें लिखकर वापूजीको दिया। अुस परसे अंग्रेजी किया गया। अिसलिअे अुसीमें दस वज गये। फिर वापूजी थोड़ा-सा टहले और साढ़े दस बजे विस्तर पर लेटे। शामको कुछ नहीं खाया। शाहनवाज साहव आये। वे भी अव हमारे साथ रहेंगे। अुन्होंने रातको चन्दा गिननेमें थोड़ी मदद देते हुअे नेताजीकी वातें सुनाअीं। आज रु० १८३४–१५–० सेन्ट्रल वैंकमें जमा कराये।

वापूजीके सूतके १०५ तार हुअे। मैं भी आज साढ़े ग्यारह वजे जल्दी सोने जा रही हूं। यह तय हुआ है कि तीन दिन आसपासके गांवोंमें प्रार्थना रखी जाय और अेक दिन वांकीपुरके मैदानमें। वापूजी खूव थक गये हैं। गरमी अभीसे सख्त पड़ने लगी है। रास्तेमें काफी दचके लग रहे थे। रास्ता वहुत अच्छा तो था ही नहीं। खानसाहवने शामको सिर्फ दही लिया। वे भी थक गये हैं।

पटना,
१३–३–'४७, गुरुवार

हम रोजकी भांति गंगाके घाट पर सो रहे थे। परन्तु रातको अितनी तेज हवा चली कि हमारी मच्छरदानी हाथमें न रही और ओढ़नेके कपड़े भी अुड़ने लगे। अन्तमें असह्य पवनके कारण मैं और वापूजी अेक वजे अन्दर आये। तीन वजे देवभाअीने प्रार्थनाका समय हो गया मानकर फिरसे अुठा दिया। वापूजीने घड़ी देखी तो अभी तीन ही वजे थे। अिसलिअे फिर सव सो गये। अिस प्रकार रातमें नींद विगड़ जानेसे वापूजीको दिनमें थोड़ी थकावट-सी मालूम हुअी।

प्रार्थनाके वाद गरम पानी पीते हुअे नियमानुसार मुझे गीताका पाठ पढ़ाया। और मेरे लिखे हुअे श्लोकों पर हस्ताक्षर किये। परसों अर्थात् १५ तारीख़को सुवह वापूजी मुझे श्लोक जवानी लिखनेको कहेंगे (श्लोकोंकी परीक्षा लेंगे)। अिसलिअे अुसकी तैयारी करनेके लिअे मुझे १५ मिनट दिये।

फिर मेरी डायरी देखी। वापूजीने कहा, "अव क्या लिखना और किस तरह लिखना, यह तुम्हें काफी समझमें आ गया है। अिसलिअे वह समय

बचाकर श्लोकोंके अुच्चारणमें और खास तौर पर अुनके अर्थ समझानेमें देना है।"

दूसरे दस मिनटमें बापूजीने अपना बंगाली पाठ पढ़नेके बाद फलोंका रस लिया। कुलरंजनबाबूने बापूजीकी डॉक्टरी जांच की। आराम लेनेके लिअे खास तौर पर कहा। खानसाहबकी भी जांच की। अन्तमें मेरी भी बारी आअी। मेरी जांच बापूजीने अपनी देखरेखमें कराअी। फिर घूमने गये।

घूमते घूमते खानसाहबके साथ अुनके स्वास्थ्यके बारेमें बातें कीं। लौटने पर पैर धोकर सीधे मालिशके लिअे गये। कुलरंजनबाबू मेरी जांच कर रहे थे तब खुद क्यों मौजूद रहे, अिसका अुल्लेख करते हुअे बापूजीने मालिशके समय कहा :

> "जब कुलरंजनबाबू तुम्हारी जांच कर रहे थे, तब तुमने मुझे मना कर दिया था, क्योंकि तुम्हारे मनमें शायद यह खयाल होगा कि अितने समयमें मैं अपना कुछ और काम कर लूंगा। परन्तु जितने महत्त्वका मेरा दूसरा काम है, अुतने ही महत्त्वका तुम्हारी देखरेख रखनेका काम है। मुझ पर तो अिस समय मांका कर्तव्य है। अिसलिअे मैंने मृदुलाको या और किसीको तुम्हारा केस नहीं सौंपा। तुम्हारी नाकमें से गरमीका मौसम न होने पर भी असाधारण खून गिरता है। अुससे तुम्हें जो नुकसान हो रहा है, वह तुम बिना संकोचके अुन्हें कह सकोगी, अिसका मुझे अभी तक विश्वास नहीं था। तुम्हें अपना शरमीलापन और संकोच छोड़ना ही चाहिये। मुझसे तो कुछ छिपानेकी बात हो ही नहीं सकती न?"

बापूजी ये बातें कह रहे थे कि अितनेमें मेरी नाकमें से अेकदम खूनकी धार बह निकली। बापूजीने तुरन्त ही मुझे बैठा दिया। प्रेमसे पीठ सहलाअी। बापूजीसे मुझे सेवा करानी पड़े, अिसका मुझे बहुत दुःख हुआ। मेरी आंखोंमें पानी आ गया। बापूजीने मुझे अत्यन्त वात्सल्यभावसे सांत्वना दी :

> "अैसा लगता है कि मैं कुछ कह दूं अुसका भी तुम्हारे दिमाग पर असर होता होगा। तुम बहुत ही 'सेन्सिटिव' हो, और अिसलिअे मस्तिष्कके दबावके कारण भी नाकसे खून बह सकता है। मेरा यह नियम मैं तुम्हें बताता हूं : तमाम शारीरिक रोगोंका

आधार हमारी मानसिक स्थिति पर है। अितना सूत्र तुम समझ लोगी, रट लोगी और दिमागमें बैठा लोगी, तो यह नकसीरका रोग अपने-आप चला जायगा, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं। परन्तु तुम्हारे चेहरे परसे अैसा लगता है कि जो कुछ मैं कहता हूं अुसे तुम गंभीरतापूर्वक कुछ भाररूप मानकर मस्तिष्कको थकाती हो। क्योंकि जब कभी मैं तुम्हें कुछ कहता हूं तब तुम गम्भीर बन जाती हो। अलबत्ता, गम्भीरतासे प्रौढ़ता आयेगी। परन्तु गम्भीरता कब होनी चाहिये और कब नहीं, अिसका विचार तुम्हें करना चाहिये। कभी कभी मैं तुम्हें अितनी गम्भीर पाता हूं कि १७ वर्षकी होने पर भी तुम ७० वर्षकी लगती हो। यह दृश्य देखना मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता। अिस अुम्रमें तो हंसना, खेलना, कूदना, खाना-पीना और कमर कसकर काम करना चाहिये। वैसे काम तो तुम खूब करती हो। दूसरेके काममें तुम्हें आलस्य नहीं आता, परन्तु अपने प्रति तुम आलस्य रखती हो। यह बिलकुल ठीक नहीं। गांभीर्यकी मर्यादा समझना सीखो। विवेकपूर्ण व्यावहारिक गांभीर्य जब तुममें आयेगा, तब कितने ही जटिल प्रश्न हों तो भी चेहरा और मन स्मितपूर्वक अुनका जवाब जरूर देंगे। अैसी मुस्कराहटके दो अर्थ होते हैं। अेक तो बेहयाओकी मुस्कराहट और दूसरी अपनी भूल समझ जाने और दुबारा वह भूल न करनेके आनन्दकी मुस्कराहट।" फिर मुझे वात्सल्यपूर्वक छातीसे लगाकर कहने लगे, "अब अगर तुम अपने मनको दृढ़ कर लोगी, तो आगे कभी नकसीर नहीं फूटेगी। साथ ही राम-रटन दिलसे होना चाहिये। मनकी प्रफुल्लताके साथ यह मुख्य शर्त जरूर होनी चाहिये।"

कोअी पांच मिनटके आरामके बाद मैंने बापूजीकी अधूरी रही मालिश पूरी की। पीठ और सिर मलना था सो बापूजीने जल्दीसे मलवाये। स्नानके बाद बापूजीने आजके अपने कपड़े हुनरभाअीको धोनेके लिअे देनेको कहा। अुन्होंने अिस कामका सहर्ष स्वागत किया।

भोजनके समय दौलतभाअीने अखबार सुनाया। खानेके बाद मुन्शीजी तथा औरोंको पत्र लिखे। साढ़े बारह बजे खानसाहबको खिलाकर बापूजीके पैरोंमें घी मला। २।। बजेसे मुलाकातें शुरू हुअीं। २–३० को द्वारकानाथ

तिवारी, फिर सिक्ख-मण्डली। वादमें २–४० को शाहनवाज साहव, अेस० अेम० मजूमदार, महामायाप्रसादजी, अनुग्रहवावू और भालचन्द्र शर्मा वगैरा आये। प्रार्थनामें जानेसे पहले दो ग्रेपफ्रूट लिये। फिर प्रार्थनामें जानेके लिअे रवाना हुअे। रास्तेमें सिपारा गांवके लोगोंने हमारी मोटर रोक कर रुपयोंकी थैली भेंट की। अिस थैलीको मैंने रास्तेमें ही खोला। अुसमें से अेक पत्र मिला, जिसमें लिखा था:

"हमारे किये हुअे अपराधको अव क्षमा कर दीजिये। हमारे हाथों मुसलमानोंके जानमालकी जो हानि हुअी है, अुसके लिअे हम वड़े शरमिन्दा हैं। और अुसके वदलेमें पत्रपुष्पके रूपमें यह थैली हम आपको अर्पण करते हैं, जिसका अुपयोग पीड़ित भाअी-वहनोंके लिअे किया जाय। हम माफी मांगते हैं। आअिन्दा कभी अैसा नहीं करेंगे।"

पारसा गांवमें जलाये हुअे मकान देखे। पक्के मकानोंको खंडहर वना दिया गया था।

प्रार्थनामें वापूजीने कहा: "विहारी लोग ज्यादातर शान्त प्रकृतिके हैं। परन्तु थोड़े समयके लिअे फैली हुअी अराजकताके परिणामस्वरूप आज मैंने रास्तेमें मुसलमानोंके नष्ट हुअे मकान देखे। मुझे आश्चर्य होता है कि शान्त प्रकृतिके माने जानेवाले लोगोंमें अैसा पागलपन कैसे आया होगा? यदि कोअी यह मानते हों कि विहारने नोआखालीका वैर लिया है, तो अुन सवसे मैं कहता हूं कि वैर लेनेका भी यह सही रास्ता नहीं है। हिन्दुस्तानके अेक ही भागके लोग अपने देशके दूसरे भागके लोगोंको, जो भाअीके समान हैं दुश्मन समझें तो यह वृत्ति आत्म-घातक है। और अिस वृत्तिके परिणामस्व[रूप] हिन्दुस्तानकी गुलामीकी दशाकी अवधि लम्वी होगी। और कुछ न हो भी अन्तमें यह वृत्ति मनुष्यको अितनी संकीर्ण मनोवृत्तिकी तरफ जायगी कि वह अपने जिलेसे अपने गांवकी आजादीको ज्यादा कीम[त] समझेगा। परन्तु अिस तरह कोअी अेक गांव थोड़े ही स्वतंत्र हो सकता है मैं तो चाहता हूं कि प्रत्येक भारतवासी अपने भीतर अैसी भावना पैदा क[रे] जिससे अुसे यह भान हो कि भारतके किसी भी भागमें, किसी भी कोने जो भी वुरा काम होता है अुसके साथ अुसका सम्वन्ध है; और अुस[की] जिम्मेदारी दूसरोंके वरावर ही अुसकी भी है। अिसलिअे अन्यायको दूर करा[ने] प्रत्येकको भरसक सेवा करनी ही चाहिये। विहारका मामला जनताके नेताओं

सौंपकर मैं पंजाब जाअूं, अैसे सन्देश मेरे पास आया करते हैं। परन्तु सभी स्थानों पर सेवा करनेमें मैं समर्थ हूं, अैसा मान बैठने जितना मैं घमण्डी नहीं हूं। मैं अपनेको केवल अीश्वरके हाथका अेक साधन समझता हूं। बिहार और बंगालकी सगी बहनों जैसी दो जातियोंमें सुलह-शान्ति होनी चाहिये और अिसके लिअे या तो मैं करूंगा या मरूंगा। अिसके बिना मैं दूसरी जगह नहीं जा सकता। अिसलिअे मुझे दूसरी जगह भेजना हो तो यह स्नेह-सम्बन्ध दुबारा स्थापित करनेके लिअे सब लोग मेहनत करें। मुझे विश्वास हो जाय कि अब मेरी यहां कोअी जरूरत नहीं है, तो मैं आज ही पंजाब चला जाअूं।

"ग्रामवासियोंसे मैं विनती करता हूं कि वे मुसलमानोंके घरोंमें से जो माल-असबाब ले आये हों, वह मेरे या सरकारके सिपुर्द कर दें। अिसके अलावा, आपके दुष्कृत्योंके परिणामस्वरूप कचरे और मलबेका जो ढेर पड़ा है, अुसे साफ करके अैसा वातावरण फैलाअिये जिससे आपके बन्धु फिर अपने घर आ सकें। सब ग्रामवासी स्वेच्छासे स्वयंसेवक बन जाअिये। अपने रास्ते सीधे और समान कीजिये। खड्डे भर दीजिये और अुनकी जगह गांवके लोगोंके मनोरंजनके लिअे बगीचे बनाअिये। संक्षेपमें, अपने घूरे जैसे गांवोंको सुलह, शान्ति और सुखका धाम बनाअिये। मेरी तो आपको सलाह है कि और कुछ न हो, तो अपने अन्धे और मूर्खतापूर्ण रोषमें जिन गांवोंको आपने बरबाद कर दिया है, अुन्हीं गांवोंसे मेरे बताये हुअे कामका प्रारंभ कीजिये।"

प्रार्थनाके बाद आकर बापूजीने अंगूर, दूध और अेक खाखरा लिया। प्रार्थना करने गांवमें जाते हैं और वापस आते हैं, अिसमें पांच-छह घण्टे चले जाते हैं। साढ़े नौके बाद प्रवचन देखा। बापूजी बहुत थक गये हैं। फिर आंख बन्द करके थोड़े टहले। साढ़े दसके बाद बापूजी सो गये। सोनेसे पहले बापूजीकी फाअिलमें से जो कागज अिधर-अुधर हो गया था अुसे ढूंढ़नेमें देर लगी। वह कागज . . . भाअीने लिया था। परन्तु बापूजी मुझसे कहने लगे:

"यह कागज अिस फाअिलमें से अिधर-अुधर चला गया अिसकी कोअी बात नहीं। . . .ने लिया था, परन्तु मैं अिसे तुम्हारी ही भूल मानूंगा। मैं जितनी भूल तुम्हारी देखूंगा, अुतनी और किसीकी नहीं देखूंगा। आफिसके काममें, व्यक्तिगत काममें, घरके काममें अथवा

व्यावहारिक कार्योंमें किसीकी भी भूल होगी, तो अुसे मैं तुम्हारी ही भूल मानूंगा। तुम्हें तो यही मानना चाहिये कि तुम नोआखालीकी तरह यहां भी अकेली ही हो। वहां अैसी भूल कभी नहीं होती थी, क्योंकि वहां अकेले तुम्हींको सब काम संभालना होता था। परन्तु अकेलेमें जो परीक्षा होती है, अुससे ज्यादा कड़ी परीक्षा समूहमें होती है। अिसलिअे समूहमें रहनेसे अक्सर बहुत अमूल्य लाभ मिलता है। जब समूहमें रहते हुअे भी तुम दृढ़ और जाग्रत रहोगी, तो कुशल बन जाओगी।" सोते सोते बापूजीने मुझे अपनी जिम्मेदारीका भान कराया।

आजका चन्दा अिकट्ठा करनेको बापूजी नहीं ठहरे। फिर भी रु० ३४६–१५–६ हो गया।

नाथजी और स्वामी आनन्दके आनेकी खबर आओी। मेरा सब काम पूरा हो गया है। साढ़े ग्यारह हो गये हैं। मैं सोने जा रही हूं।

पटना,
१४–३–'४७, शुक्रवार

प्रार्थनाके बाद नित्यकी भांति गरम पानी पीते हुअे बापूजीने बंगाली पाठ पढ़ा और मुझे गीताका पाठ पढ़ाया। कल बापूजी मेरी परीक्षा लेनेवाले हैं। जो हो जाय सो ठीक। दिनमें पढ़नेका समय नहीं रहता। बापूजी बोले, "तुममें बुद्धि है और मैं पढ़ाता हूं। अिसके बाद भी यदि यह पाठ पढ़नेमें घंटों गंवाने पड़ें, तो मैं अपने आपको शिक्षक होनेके योग्य नहीं मानूंगा। क्योंकि अिसका अर्थ यह होगा कि मैं तुम्हें अितना अच्छा नहीं पढ़ाता कि पढ़ाते समय ही तुम्हारे दिमागमें पाठ अितना अुतर जाय कि कभी भूल हो ही नहीं। अिसलिअे कल तुम्हारी परीक्षा नहीं होगी, परन्तु मेरी होगी। यदि शिक्षकके नाते मुझमें पढ़ानेकी कला हो, तो बादमें तुम्हें पढ़नेकी जरूरत ही क्यों पड़े? अिसलिअे कल मेरी योग्यताका प्रदर्शन होगा।" यह कहकर खूब हंसे।

रस पीकर नोआखालीमें सतीशबाबू, प्यारेलालजी, अमतुस्सलाम बहन और सुशीलाबहन पैको पत्र लिखे। फिर राजाजी और पेरिनबहन कैप्टनको पत्र लिखे। घूमना, मालिश और स्नान नियमानुसार। स्नानके बाद खाना खाया तब तक अेकान्तमें . . . के साथ बातें हुओीं। अुन लोगोंके भोजनकी व्यवस्था करनेका काम बापूजीने मुझे सौंपा। मैंने कहा, ". . . से तो

मैं कभी मिली नहीं और . . . मुझे जानते हैं परन्तु मेरे सामने देखते तक नहीं, मानो मैंने ही सब कुछ बिगाड़ा हो। मेरे प्रति . . . का पूर्वग्रह हो, असा मुझे लगा है। फिर भी आप कहते हैं तो सारी व्यवस्था देख लूंगी। परन्तु यह काम आप निर्मलदा या देवभाओीको सौंपें तो अच्छा हो।" बापूजीको मेरी बात जंची और वह काम देवभाओीको सौंपा। फिर भी मुझसे कहने लगे, "जिसे सेवा करनी है असे किसका मुंह किसके प्रति कैसा है, यह देखनेकी जिज्ञासा ही न रखनी चाहिये।"

बापूजी थोड़ी देर आंख बन्द करके लेटे रहे, सोये नहीं। सवा बजे अुठे। कातते समय अेक मुसलमान बहन आओीं। फिर के० के० रामलक्ष्मण शर्मा और बादमें लीगवाले बशहरुद्दीन अहमद आये। अुन्होंने बड़ी समझदारीकी बातें कीं। तीनसे साढ़े तीन तक मिट्टी लेते हुअे अखबार सुने। चार बजे प्रार्थनाके लिअे गांव जानेको रवाना हुअे। मोटरमें बापूजीने . . . के बारेमें बातें करते हुअे कहा :

". . . तो . . . के पन्थके हैं। अुस पंथके लोग किसी स्त्रीका स्पर्श तक नहीं कर सकते। स्त्रीने यदि यह दीक्षा ली हो तो अपने पांच वर्षके सगे पुत्रको तो क्या, परन्तु पौत्रको भी वह नहीं छू सकती। परन्तु मेरा ब्रह्मचर्यका सिद्धान्त दूसरा है। जिसके मनमें काम-क्रोध भरे हों वह अैसी दीक्षा लेने पर भी व्यभिचारी है; और अुसमें मैं महापाप देखता हूं।"

आज तो प्रातःकाल चार बजेसे ही बापूजी काममें लगे हुअे हैं। शामके चार बजे तक जरा भी आराम नहीं लिया। गांव जाते हुअे मोटरमें मेरी गोदमें सिर रखा और खानसाहबकी गोदमें पैर रखे। खानसाहब बड़े प्रेमसे बापूजीके पैर दबाते रहे। खुसरूपुर (प्रार्थना-स्थल) जाते हुअे जटली और शफीपुरमें रुके। शफीपुरमें दरगाह देखी और दो जलाये हुअे मकान देखे। वहांके कुअेंमें बहनोंके कपड़े तैर रहे थे। खूनके दाग पड़े हुअे थे। यह दृश्य बहुत ही करुण था। बापूजी अत्यन्त गम्भीर बन गये। खुसरूपुर अेक छोटा-सा कस्बा है। प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने कहा :

"मेरी अिच्छा बिहारी हिन्दुओं और मुसलमानोंमें पहले जो प्रेम-सम्बन्ध था वह फिरसे पैदा करनेकी है। आज मैंने यहां आकर जो दुःखद दृश्य देखा, अुसका वर्णन करना मुझे कठिन लगता है। आपसे मैं अितना ही

चाहता हूं कि पिछली घटनाओंको भूल जाअिये और यह जानकर कि अब हमारा क्या फर्ज है अुसे पूरा कीजिये।

"देशके सामने दो ही रास्ते हैं। अेक जो हालमें पंजाबने अपनाया है अर्थात् हिंसाके बदले हिंसा करना। दूसरा बिलकुल अहिंसाका है। हिंसाके रास्ते शायद जबरन् अेक प्रकारकी शांति स्थापित की जा सकती है। १८५७ की पुनरावृत्ति फिरसे नहीं होगी, अिसका भरोसा आज तो नहीं है। अैसी ही घटनायें गदरके समय हुअी थीं। अुसे अधिक अच्छे शस्त्रोंसे दबा दिया गया था। बाहरसे सब ठंडा हो गया दीखता था, परन्तु भीतर बलप्रयोग द्वारा लादी गअी राज्य-व्यवस्थाके बारेमें गहरा तिरस्कार रह गया। और अुस समय बोये हुअे बीजके बुरे फल हम आज भी चख रहे हैं। हिंसासे — कभी भी प्रतिहिंसा करनेसे — हिंसाका अंत हरगिज नहीं आयेगा। अिसका विश्वास मुझे बड़े अनुभवके बाद हुआ है। अिस अनुभवके आधार पर ही मैं यह कहता हूं। और अिसका विश्वास पहले-पहल अिसी बिहारमें चम्पारनकी लड़ाअीके समय हुआ। आपको अब शुद्ध हृदयसे विचार कर कहना है कि आप हिंसाके रास्ते जाना चाहते हैं या अहिंसाके। सच्ची बात सुननेसे मेरा दिल नहीं दुखेगा। परन्तु अिस तरह अहिंसाकी पराजयका दिन देखनेके लिअे मैं जिन्दा नहीं रहना चाहता। मेरे हृदयमें भरी हुअी आशाओंको पूरा करनेमें मेरा शरीर कहां गिरेगा, अिसकी मुझे परवाह नहीं। क्योंकि हिन्दुस्तानके किसी भी भागमें मेरी हड्डियां पड़ें, तो भी मेरी दृष्टिमें तो वह मेरा हिन्दुस्तान ही होगा। अितना होते हुअे भी मैंने अभी तक यह आशा नहीं छोड़ी है कि अन्तमें विजय तो निश्चित रूपसे अहिंसाकी ही होगी।"

खुसरूपुरसे सवा आठ बजे हम लौटे। मैंने आकर बापूजीके लिअे दूध गरम किया और बापूजी अपने काममें लग गये। शामके खानेमें आठ औंस दूध और आठ दाने खजूरके लिये। दूध पीते पीते खानसाहब और मृदुलाबहनके साथ बातें कीं।

डॉ० सैयद महमूद साहबके लड़के महबूबभाअीकी शादी कल होनेवाली है। रातको बारात जायेगी। महबूबभाअी बापूजीको प्रणाम करने आये। मैंने बहनके नाते तिलक किया। अुन्होंने १०० रुपयेका नोट भाअीके नाते मुझे जबरदस्ती दे दिया। बापूजीके हाथकी दो गुण्डियां वर-कन्याके लिअे दीं। अेक तो बापूजीने ही वरराजाको पहना दी। मैंने १०० रुपयेका नोट

मुस्लिम-सहायता-कोपमें दे दिया। वापूजी वोले: "हां, पसीना वहाकर तो कमाती नहीं हो। परन्तु अिस तरहसे मिल जाता है, क्यों?"

हंसते हंसते डॉ० साहवसे कहने लगे, "दूसरोंके जोर पर वाहवाही लूटना अिसीका नाम है। अिस लड़कीको आपने मुफ्तमें पुण्य दिला दिया न?"

थोड़ी देर अिस प्रकार विनोद होता रहा। आजका चन्दा ३०५ रुपये हुआ। अेक हजारका अेक चैक अलग मिला।

वापूजी लगभग पौने ग्यारह वजे सोये। मैं सवा ग्यारह वजे सोने गअी।

पटना,
१५-३-'४७, शनिवार

प्रार्थनाके वाद नित्यकी भांति कार्यक्रम चला। आज मेरी परीक्षा ली। अेकसे तीन अध्यायके श्लोकोंमें से अमुक श्लोक लिखना था और अेकसे पांच अध्यायके श्लोकोंमें से मौखिक परीक्षा होनेवाली थी। मौखिक परीक्षा दस मिनट चली। अकारान्त और ओकारान्त शब्दोंके रूप पूछे। तीसरे अध्यायमें से अेकसे दस श्लोक तक जवानी वुलवाये और अुनमें से कुछका अर्थ पूछा। दूसरे अध्यायमें से अेकसे दस श्लोक तक लिखनेको दिये। लिखनेके लिअे भी दस ही मिनटका समय दिया। मौखिकमें तो खास भूलें नहीं हुअीं। परन्तु लेखनमें तीसरे श्लोकके वाद 'अर्जुन अुवाच' तथा आठवें श्लोकके वाद 'संजय अुवाच' नहीं लिखा था। अिसलिअे ये दो भूलें वापूजीने सुधारीं और हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु कुल मिलाकर सव सही निकला, अिसलिअे अितने जोरकी धप वापूजीने लगाअी कि मेरी पीठ दुखने लगी। मैं पास हुअी, अिसके अिनामके तौर पर वापूजीने गोरखपुरकी वड़ी अर्थवाली गीताजी मुझे भेंट की और गीताजीके पहले पन्ने पर लिख दिया:

चि० मनुको

ता० १५-३-'४७, पटना, वापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार प्रातःकालकी प्रार्थनाके वादका मेरा पहला घंटा वड़ा नाजुक था। परन्तु भगवानने सफलतापूर्वक नावको पार लगा दिया। प्रार्थनाके वाद जव गरम पानी पीते समय वापूजीने मुझे परीक्षाके लिअे वैठाया,

तव वड़ी चिन्ता हो रही थी कि क्या होगा। मैंने वापूजीसे कहा, आपको कल्पना भी नहीं हो सकती कि आज सुवहकी प्रार्थना मैंने भगवानसे कितनी याचनापूर्वक की थी। और आज शनिवारकी प्रार्थनामें वोले जानेवाले अध्याय ३, ४, ५ भी वड़े ध्यानसे पढ़े थे।

वापूजीकी सुवहकी प्रार्थनामें गीतापाठका क्रम अिस प्रकार रहता है:

शुक्रवार अ० १–२, शनिवार अ० ३–४–५, रविवार अ० ६–७–८, सोमवार अ० ९–१०–११–१२, मंगलवार अ० १३–१४–१५, वुधवार अ० १६–१७ और गुरुवार अ० १८। अिस प्रकार हर सप्ताह गीता-पारायण पूरा होता है।

वापूजी कहने लगे: "तुमसे ज्यादा सन्तोष तो मुझे हुआ कि मैं परीक्षामें सफल हुआ।"

मैंने कहा: "पढ़नेकी मेहनत मैंने की और यश आप ले रहे हैं!"

वापूजी हंसते हंसते वोले: "परन्तु मेरी तैयारी अपयश लेनेकी भी तो थी न? तुम्हारी तो यह तैयारी नहीं थी।"

अिस प्रकार आजका प्रातःकाल खूव आनन्द-विनोदमें गया। वापूजी जव पढ़ाने वैठते हैं तव ठीक पाठशालाके शिक्षककी तरह पढ़ाने लगते हैं। और मैं कुछ समयके लिअे भूल जाती हूं कि वे 'वापू' हैं। मेरी परीक्षा लेनेके वाद तुरन्त ही वंगाली पाठ लिखने वैठ गये और लिखकर निर्मलदाको वताया। घड़ीभर पहले वापूजी 'परीक्षक' थे और घड़ीभर वाद खुद 'विद्यार्थी' वन गये! अैसा आनन्दमय वातावरण था सवेरेका।

घूमने जानेसे पहले वापूजीने अपनी विचारमाला लिखी। रातको . . . के साथ वातें की थीं। अुनका अुल्लेख किया कि:

> ". . . के साथ अेक घण्टे वातें कीं। . . . का पत्र वहुत प्रेमपूर्ण होते हुअे भी वह मुझे हिला क्यों नहीं सका, यह समझानेमें समय गया। अिसलिअे ग्यारह वजे सो सका। ढाअी वजे पेशाव करने अुठा। वादका समय अिस विचारमें गया कि अुनको अपनी वात कैसे समझाअूं। अैसा होते हुअे भी थकावट नहीं लगती।"

यह लिखकर निर्मलदाके साथ वातें कीं। वादमें . . . के साथ साढ़े सात तक वातें कीं। घूमते समय शाहनवाज़ साहव और खानसाहव साथमें थे। अुन्होंने आज तो मेरी ही वातें कीं। मैं रिश्तेमें वापूजीकी कौन होती

हूं, यह पूछा। बापूजीने मेरे दादासे लेकर ठेठ आज तकका कौटुम्बिक अितिहास बताया। फिर दोनोंको आजकलके वातावरणसे पूरी तरह परिचित किया।

मालिशमें बापूजीने मुझसे कहा कि, "खानसाहब और शाहनवाजको हरअेक बातकी जानकारी देना मेरा धर्म है। परन्तु तुमने देख लिया न कि ये तो महाश्रद्धालु मनुष्य हैं। मेरी बुराअी देखना ही नहीं चाहते। परन्तु तुम अुनके साथ समय समय पर बातें करती रहना। तुम्हें भी बहुत कुछ जाननेको मिलेगा। अत्यन्त श्रद्धालु मनुष्यकी अपेक्षा मेरा दोष देखनेवाले लोग मुझे अधिक पसन्द होते हैं, क्योंकि अिसमें मेरी रक्षा रहती है। यह सोचनेका मौका मिलता है कि मैं कहीं भूलभरे रास्ते पर तो नहीं हूं?"

बापूजीकी नम्रताकी भी हद है। 'अहं' जैसी चीज ही अुनमें नहीं है। अेक छोटे-से बालककी बात भी समझने लायक हो तो पूरे ध्यानसे सुनते हैं।

मैंने कहा, "आप रातके ढाअी बजेसे जाग रहे हैं, अिसलिअे अिस समय सो जायं तो अच्छा हो। मैंने तो आजकी आपकी नोंध परसे ही जाना कि आप ढाअी बजेसे जाग रहे हैं। और फिर मुझे सारी बातें समझानेकी तकलीफ कर रहे हैं। यह सब पाप मेरे सिर पर है। अिसलिअे आप थोड़ी देर सो जायें तो मुझे सन्तोष होगा।"

बापूजी मान गये और बीस मिनट सोये। अुठकर कहने लगे, "देखो, तुम्हारी सलाह मानी तो मैं सचमुच ताजा हो गया। (विनोदमें) बोलो, मैं कितना आज्ञाकारी हूं?"

स्नान करते समय बापूजीने . . . के साथ हुअी बातें कहते कहते अपने मनमें चल रहे सैद्धान्तिक विचार बताये। और मैंने जो यह कहा था कि मुझे समझानेमें आपकी तकलीफ बढ़ती है और अुसका निमित्त मैं बनती हूं, अुस परसे बोले :

> "तुम्हारे मनमें जो दुःख है, वह बिलकुल गलत है। तुम 'मनु' हो। परन्तु क, ख, ग कोअी भी निमित्त तो बनता ही है। अिसलिअे तुम्हें 'अपने आपको' भूल जाना चाहिये। अिस यज्ञमें मुझे अपने सभी आदर्शों और अेकादश व्रतोंका प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहिये। अिसमें तुम निमित्त बनी हो। मैंने तुम्हें अिसीलिअे अिस महायज्ञमें भागीदार बनाया है। तुम्हारे लिअे तो अिसमें जरा भी दुःख माननेका कारण

नहीं हो सकता। परन्तु अीश्वरको करना होगा तो अिसमें से कुछ न कुछ नअी बातें पैदा होंगी। . . . मुझे छोड़नेको तैयार हो गये हैं। . . . ने मेरा त्याग कर दिया है। फिर भी मेरे मनमें जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती। अिसमें जरूर कोअी न कोअी अीश्वरीय संकेत है। नअी नअी शक्तियां और साहस अंतःकरणमें से मिलते ही जा रहे हैं। और मुझ पर जैसे जैसे प्रहार होते जाते हैं, वैसे वैसे मेरा मन दृढ़ होता जाता है कि नहीं, अिन सबमें मैं ही सच्चा हूं। अिन लोगोंके साथ बातें करनेमें मेरा मन फूल जैसा हलका होता जा रहा है। जैसे लड़ाअीमें लोहेके बख्तरसे रक्षा होती है, वैसे ही मुझे महसूस होता है कि रामजी (अीश्वर) मानो मुझे अिन दोनोंके प्रहारोंसे अपनी रक्षा करनेके लिअे बख्तर दे रहे हैं। मैं नहीं जानता था कि मुझमें अितनी शक्ति है; और यह भी नहीं जानता था कि मैं अिन लोगोंके सामने टिक सकूंगा, या मुझे ये लोग छोड़ देंगे तो भी मैं अिस तरह आनन्दपूर्वक रह सकूंगा। सारा प्रताप रामनामका है। वैसे आश्वासन मिलता है गुरुदेवके भजन 'अेकला चलो रे' में। और अुस 'थाके न थाके छतांये हो मानवी न लेजे विसामो'[१] वाले (गुजराती) गीतमें यह पद तो बड़ा सुन्दर है:

झांखा जगतमां अेकलो प्रकाशजे,
आवे अंधार तेने अेकलो विदारजे,
छोने आ आयखुं हणाये,
हो मानवी, न लेजे विसामो![२]

"अिसलिअे तुम्हें तो चिन्ता करनी ही नहीं चाहिये। क्योंकि अिस यज्ञमें मैं साक्षात् सत्य-अहिंसाके दर्शन करना चाहता हूं; और वह दर्शन अिन अेकादश व्रतोंके पालनसे ही होगा।"

स्नानके बाद भोजन। भोजनमें आज खाखरे नहीं लिये। दूध, शाक और गुड़पपड़ीका अेक छोटा-सा टुकड़ा, ३ बादाम और ३ काजू ही लिये।

१. हे मानव, तू थके या न थके, परन्तु बीचमें कभी विश्राम न लेना।

२. अिस धुंधले जगतमें तू अकेले ही अपना प्रकाश फैलाना। सामने अंधेरा आये अुसे अकेले ही चीरना और दूर करना। हे मानव, अिस प्रयत्नमें भले तेरे जीवनका नाश हो जाय, परन्तु तू कभी विश्राम न लेना।

खाते समय निर्मलदाने डाक सुनाअी। साढ़े बारह बजे बापूजी आराम करनेके लिअे थोड़ी देर लेटे। २० मिनट सोये। अुठकर सन्तरेका रस लिया। १–५५ से मुलाकातें शुरू हुअीं: पंचायनलाल दास, सुनील मुकरजी, मसुड़ीके मुसलमान भाअी, जगतनारायणसिंह, रामलक्ष्मण शर्मा और सरस्वती देवी। ४–२५ से मुसलमान भाअी, स्टुडेन्ट्स फेडरेशन, सैयद अजीज साहब और अुनके साथी।

मुस्लिम लीग रिलीफ कमेटीने थोड़ेसे सवाल पूछे।

सवाल — आजकी परिस्थितिमें क्या आप मुसलमानोंको यह सलाह देंगे कि वे अपने गांवमें वापस चले जायें?

बापूजी — हां, यदि आपमें अितनी हिम्मत हो और खुदा पर भरोसा हो, तो मैं जरूर कहूंगा कि सब अपनी-अपनी जगह लौट जायं।

सवाल — बहुमतवालोंका दिल न बदले तो अल्पमतवाले क्या करें? कोअी कौल-करार करें या हमेशाके लिअे प्रान्तसे बाहर चले जायं?

बापूजी — अगर आप वापस न जायं तो चूंकि यहां भूल हिन्दुओंने की है, अिसलिअे सरकारको आपकी रक्षा तो करनी ही पड़ेगी। परन्तु यदि आप यह कहें कि सरकार किसी दूसरी जगह आपको जमीन दे, तो अिस बातको मैं नहीं समझ सकता। हां, आपसमें मिलजुल कर आप जमीनकी अदला-बदली कर लें, तो आपको कौन रोक सकता है? परन्तु सरकार अैसा नहीं कर सकती। जिन गांवोंमें मुसलमानोंकी आबादी ज्यादा है, वहांके लोग आप लोगोंको बसानेके लिअे बुलायें, तो वहां जानेसे आपको कौन रोक सकता है? मैं तो अपनी तरफसे मित्रके नाते आपकी भरसक सेवा करूंगा। फिर भी यदि आप प्रान्तसे बाहर जाना चाहें, तो आपको कोअी रोक नहीं सकता। अमरीकामें अैसा रिवाज है कि अपने देशमें से किसीको विदेशमें जाकर बसना हो तो सरकारसे मंजूरी लेनी पड़ती है। परन्तु मैं अुस विचारसे सहमत नहीं हूं।

सवाल — जो अपराधी हैं, जिन्होंने हत्यायें की हैं और बहुत खराब काम किये हैं, अुन्हें सजा देनी चाहिये या नहीं? अुन्हें कैद करके दण्ड देना चाहिये या नहीं? और यदि आप अैसा समझते हों तो बिहार सरकारको क्या सलाह देंगे?

बापूजी — अलबत्ता, जिन्होंने हैवानियतका काम किया है अुन्हें जरूर सजा होगी। बिहार सरकार कोअी अैसी सरकार तो है नहीं, जिसका सजामें

विश्वास न हो। अैसी हुकूमत आज दुनियामें कहीं भी नहीं है। और जब अैसा होगा तब जरूर वे बातें सुननेको मैं तैयार रहूंगा। परन्तु जो सरकार अपराध और सजामें विश्वास करते हुअे भी अपराधीको सजा नहीं देती, वह सरकार हुकूमत कहलाने लायक ही नहीं रहती।

सवाल — क्या बिहार सरकारको निर्वासितोंका अुचित प्रबंध करना चाहिये? और अगर कोअी पार्टी निर्वासितोंकी सहायता करे, तो आप बिहार सरकारको क्या सलाह देंगे?

बापूजी — निर्वासितोंकी जिम्मेदारी तो हुकूमत पर आती है। परन्तु कोअी पार्टी अपने ढंगसे काम करना चाहे और फिर भी सरकारसे मदद की आशा रखे तो वह ठीक नहीं होगा। यह काम तो सरकारकी तरफसे हुकूमतके ढंगसे ही हो सकता है। कोअी पार्टी मनचाहे ढंगसे काम करे और सरकारी मदद मांगे, तो मदद नहीं मिल सकती।

सवाल — बहुमतके पागलपनसे हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक हानि हुअी है। अुसकी क्षतिपूर्ति कैसे होगी?

बापूजी — यह अेक बहुत ही करुण घटना हुअी है। अैसी अुथल-पुथल दुनियामें पहले भी हुअी है और भविष्यमें भी होगी — जब तक हममें मनुष्यता नहीं आती, जब तक हम अितना भी समझनेकी कोशिश नहीं करते कि धर्मका संबंध तो अेक ही अीश्वर या खुदाके साथ है। फर्क अितना ही है कि मानव अुसे अलग अलग नामोंसे पूजते हैं। यदि हम यह सीधी-सादी बात समझ जायं, तब तो दुनिया आज ही बदल जाय। और जब तक दुनियामें अैसी हैवानियत होगी, तब तक अुससे होनेवाला नुकसान भी अुतना ही बड़ा होगा। अैसी हानियोंकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती।

सवाल — जिन अफसरोंने अिस दंगेमें खुला भाग लेकर अेकतरफा बरताव किया है, अुनके लिअे आपका क्या कहना है?

बापूजी — जिनके बारेमें अैसा साबित हो जाय, अुनके लिअे सरकारमें स्थान नहीं हो सकता।

सवाल — जहां हुल्लड़से मुसलमानोंको नुकसान हुआ है वहां दुबारा अैसा न हो, अिसके लिअे आप क्या करना चाहते हैं?

बापूजी — अैसा फिरसे न हो, अिसके लिअे मैं पूरा प्रयत्नशील हूं। जब तक अिस प्रयत्नमें मैं सफल नहीं हो जाअूंगा, तब तक यहीं पड़ा रहूंगा।

और मैंने तो यह कह दिया है कि करूंगा या मरूंगा। या तो ओश्वर मुझे सफलता देगा या अुठा लेगा। मेरे विचारमें अिस कार्यके लिअे हृदयकी सफाओी ही होनी चाहिये। फौज या पुलिसकी मददसे यह काम नहीं हो सकता। आप बहादुर बन जाअिये और अेक खुदाका ही भरोसा कीजिये।

सवाल — हम पर यहां जबरदस्ती हुओी है, अिसलिअे आपका यहां रहना बहुत ही जरूरी है। आप यहां कब तक रह सकेंगे?

बापूजी — अिसकी आप चिन्ता न करें। जब तक यहांके हिन्दू और मुसलमान भाओी मिलकर यह नहीं कहेंगे कि अब हम यहां भाओी-भाओीकी तरह ही रहेंगे, आप जाअिये, तब तक मैं यहीं रहनेवाला हूं।

सवाल — जो अपनेको कांग्रेसी कहते हैं और अिसके बावजूद जिन्होंने अिस दंगेमें भाग लिया है, अुन्हें आप कांग्रेसी मानेंगे? और न मानें तो अुनके विरुद्ध क्या प्रचार करेंगे?

बापूजी — जिन्होंने निरपराधों, निर्दोषोंको मारनेमें सहायता दी है, अुन्हें कांग्रेसी तो कैसे कहा जाय? लेकिन अुनके विरुद्ध कुछ कहनेसे पहले मुझे अुनकी बातें भी सुननी-समझनी ही चाहिये। क्योंकि मैं तो सत्यका पुजारी हूं। सत्यके लिअे ही मरूंगा। अेक पक्षकी बातें सुनकर तो कोओी परिणाम मैं बता ही नहीं सकता।

यह सभा पूरी हुओी कि तुरन्त बापूजी ५ बजे गवर्नमेन्ट हाअुसमें गवर्नरसे मिलने गये। निर्मलदा साथ गये। मैं नहीं गओी, क्योंकि प्रार्थनाका समय हो जाने पर मुझे प्रार्थना करने जाना था।

बापूजी प्रार्थनाका समय हो गया तब तक आ नहीं सके थे। अिस-लिअे मैं प्रार्थनाके स्थान पर गओी। आज प्रार्थना यहांके बांकीपुर मैदानमें ही थी। 'ओशावास्य' का श्लोक शुरू ही किया था कि बापूजी पहुंच गये। अुन्हें ५ ही मिनटकी देर हुओी। प्रार्थनामें बहुत भीड़ थी।

प्रवचनमें बापूजीने कहा:

"अभी प्रार्थनामें आनेसे पहले मैं यहांके गवर्नरसे मुलाकात कर आया। वहांसे सीधा ही यहां आया हूं। मुझे पांच मिनटकी देर हो गओी है, अिसलिअे माफी मांगता हूं।

"मैं गवर्नरके पास क्यों गया, यह जाननेकी सबकी अिच्छा होगी। यह मुलाकात शिष्टाचारके खातिर ही थी। अब पहलेकी तरह अुनकी कृपा

चाहने या सेवाकी अपेक्षा रखनेकी बात तो रही ही नहीं। अब तो जिम्मेदार सरकारका राज्य है और जनताका प्रतिनिधित्व करनेवाले सरकारके मंत्रियोंसे ही कृपा चाहनेकी बात है। गवर्नरके हाथमें अल्पसंख्यक जातियोंके हितोंकी रक्षासे संबंध रखनेवाली सत्ता अभी तक है। परन्तु अब वह मर्यादित है।

"जो लोग शासन चलानेके लिअे जनताके प्रति जिम्मेदार हैं, अुन्हें जनतासे जो कुछ कराना हो अुसमें स्वयं पहल करनी चाहिये। यदि वे अपने व्यक्तिगत जीवनमें अिस प्रकार पहल न करें और तुलनामें अपना जीवन-व्यवहार संपूर्ण न बनायें, तो वे लोग अर्थात् मंत्रीगण सच्चे सुधारक अथवा अपनी जनताके सच्चे सेवक नहीं बन सकते।

"और हम यह भी न मानें कि हम लोगोंने अंग्रेजोंसे सत्ता छीन ली है। अहिंसक असहयोगमें अिस तरह सोचा या माना ही नहीं जाता। हमने केवल अपना फर्ज अदा किया है। अुसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि अुन लोगोंने स्वेच्छासे अपनी सत्ता छोड़ दी है। अिसलिअे अब हम यदि जनताके हितके लिअे जनताकी सत्ता स्थापित करना चाहते हों, तो हमें अपने सिर पर आनेवाला कर्तव्य अहिंसाके मार्ग पर चलकर पालन करना होगा।

"मुसलमान भाअियोंको सहायता देनेके लिअे मैंने जो कोष अिकट्ठा करना शुरू किया है, अुसमें लोगोंने अपूर्व अुत्साह दिखाया है। और दो आने चार आनेकी रेजगी तो अितनी अिकट्ठी हो रही है कि अुसे गिननेमें अिस लड़कीको रातका अेक या डेढ़ बज जाता है। बांकीपुरके रहनेवालोंने अिस कोषमें जो रकम दी है, अुससे ग्रामवासियोंकी रकम छोटी होगी। परन्तु रकमके आंकड़ेकी कमी अुन्होंने चन्दा देते समय अपने हृदयोंमें रही भावनाके गुणसे पूरी कर दी है।

"जिन मुसलमान भाअियोंको दंगेके दिनोंमें कष्ट सहन करना पड़ा था, वे आज मेरे पास आये थे। आपकी तरफसे मैंने अुन्हें जो वचन दिया है, वह मैं आपसे कह दूं। आपकी तरफसे मैंने अुन सबको विश्वास दिलाया है कि बिहारमें हालमें ही हुअी करुण घटनाओंकी पुनरावृत्ति होना असंभव है। और मुझे विश्वास है कि बिहारी हिन्दू अपना वचन पालन किये बिना नहीं रहेंगे।"

प्रार्थना-सभामें आज काफी चंदा अिकट्ठा हुआ। प्रार्थनासे आकर बापूजीने अंगूर खाये। . . . के साथ आज साढ़े दस बजे तक बातें चलीं। बातें पूरी करनेके बाद बापूजी टहले और फिर सोये।

आजका चन्दा रु० ९२२–११–० हुआ। अेक सोनेकी चूड़ी, चार चांदीकी चूड़ियां, अेक अंगूठी, अेक नाककी लौंग, और अेक बटन-सेट (सोनेका) मिला।

साढ़े ग्यारह बजे बाद बापूजी सोये। मैं भी बापूजीके सिरमें तेल मल कर और पैर दबा कर तुरन्त सो गअी। गंगाके किनारे ही फिर सोने लगे हैं।

पटना,
१६–३–'४७, रविवार

आज रातको मुझे खयाल हुआ कि प्रार्थनामें देर हो गअी है या शायद कोअी स्वप्न आया और मैं 'प्रातःस्मरामि' के श्लोक बोलने लगी। बापूजीने मुझे जगाकर कहा: "अभी तो दो ही बजे हैं, फिर सो जाओ।" यह बात बापूजीने सुबहकी प्रार्थनाके समय कही।

नित्यकी भांति प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। गीतापाठमें जुड़े हुअे शब्दों पर जोर देनेकी सूचना की। बंगाली पाठके बाद निर्मलदा द्वारा . . . को लिखा हुआ पत्र बताया।

बापूजीने आजकी अपनी नोंधमें अिस बातका अुल्लेख किया कि मैं दो बजे जागी थी, और . . . के साथकी बातोंका सार लिखा:

> आज दो बजते ही बिलकुल जाग्रत हो गया था। नींद आ नहीं रही थी। अुसी समय चि० मनुड़ीको प्रातःस्मरणके श्लोक बोलते सुना। मैं चौंका। दो आवाजें दीं। वह चुप हो गअी। कुछ बोली नहीं। परन्तु घबराहटमें थी। अुसने मेरी मच्छरदानी खोलकर मेरा हाथ पकड़ा। दो-तीन मिनट मैंने अुसे थपथपाया और शान्त होनेको कहा। वह जाग्रत हुअी और अुसी क्षण अुसने अपना हाथ खींच लिया। मैंने निश्चिन्त होकर सो जानेको कहा। और कहा, प्रार्थनाकी चिन्ता न करो, मैं जगा दूंगा। यह लड़की मेरी कितनी अधिक चिन्ता रखती है! बिलकुल निर्दोष बालक जैसी है। अिस गुणके कारण ही वह मेरे पास अैसे यज्ञमें टिकी हुअी है। अिस पर मैं विचार करने लगा।

अुसे नकसीर छूटा करती है, यह अच्छा नहीं लगता। गरदन पर पीछेकी ओर मिट्टी रखनेको कहा है। . . . के विषयमें विचार करने लगा। . . . के प्रश्नोंका ढंग और चेहरेकी मुस्कराहट मुझे पसन्द नहीं आअी। अपना धर्म सोचने लगा। अितनेमें ही साढ़े तीन बज गये। फिर मैंने दातुन शुरू किया। दातुनके बाद मनुड़ीको जगाया। ३–५५ पर प्रार्थना शुरू कराअी।

साढ़े ६ बजे बापूजी घूमने निकले। साढ़े सातसे साढ़े नौ तक. . . के साथ बातें कीं और अुसके संबंधमें मुझसे नोंध लिखवायी:

> ७॥ से ९॥ तक बातें कीं। मेरा मानस अुन्हें समझाया। ब्रह्मचर्यकी मेरी व्याख्याके अनुसार आजके अुनके ब्रह्मचर्य-संबंधी विचार दूषित अथवा अधूरे प्रतीत हुअे। अुनमें मेरे मार्गके अनुसार सुधार करनेकी बड़ी आवश्यकता है। मैंने विकारोंको पोषित करनेके लिअे जान-बूझकर कभी स्त्रीसंगका सेवन नहीं किया। अेक अपवाद बताया। अपने आचरणसे मैं आगे बढ़ा हूं और अभी और भी आगे बढ़नेकी आशा रखता हूं। . . . के बारेमें मैं किसी तरह बंधा नहीं हूं। वे पत्र लिखते रहें। मैं जवाब देनेकी कोशिश करूंगा। अेक ही भाअी लिखें तो अधिक अच्छा।

अितना लिखाकर मालिशके लिअे गये। साढ़े नौसे दसके भीतर मालिश और स्नान दोनों निबटाये। मालिशमें बापूजी बिलकुल नहीं सोये। परन्तु थकावटके कारण मौन रखा। स्नानके समय आंखें बन्द कर ली थीं।

बकरीके दूधकी वृद्धि होनेके कारण मैंने खानसाहबके लिअे लौकीका जो हलुवा बनाया था, अुसमें से थोड़ा बापूजीने लिया। बापूजीको दो खाखरे और तीन सन्तरे खानेके लिअे देकर बापूजीकी आज्ञासे तुरन्त ही खानसाहबको भी खाना देने गअी। शामको वे जल्दी खा सकें, अिसके लिअे आजसे सुबह साढ़े दस बजे भोजन करेंगे। अुनकी परोसी थाली बापूजीको दिखाकर ले जानी पड़ती है। अिस प्रकार बापूजी सबकी देखरेख रखते हैं। चार खाखरे, कच्चा और अुबाला हुआ साग और मलाअीमें फ्रूट-सलाद बनाकर दिया। जरा-सा लौकीका हलुवा। मांस-मच्छी बिलकुल बन्द करा दी है।

खानसाहब खाते खाते मुझसे कहने लगे: "मनु, तुम्हें अितनी जल्दी मुझको खाना देनेमें बड़ी दिक्कत रहती होगी न? तुम्हारा कुछ काम मुझको

दे दो। तुम्हारी सेवा देखकर मुझे बड़ा संतोष होता है। तुम्हें कोअी कुछ भी कहे, मगर महात्माजीकी सेवा खुदाके हजारों गरीब और दीन-दुखियोंके लिअे भी तुम नहीं छोड़ना। क्योंकि मुझे पूरा यक़ीन है कि महात्माजी ही हम सबोंके और गरीबोंके नुमाअिन्दा (प्रतिनिधि) हैं। तुम्हें और महात्माजीको सरहद ले जाना है। देखें, खुदा कब वह मौका देता है। बेटी! तुम हंसती-खेलती अितना काम करती हो, यह देखकर मुझे अपनी लड़की याद आती है।"

खानसाहबकी बापूजीके प्रति अैसी असीम भक्ति और श्रद्धा है। अुन्हें मेरे साथ बात करके ही संतोष नहीं हुआ। परन्तु खाना खाकर वे बापूजीके पास आये और मेरे बारेमें कुछ बातें कहते हुअे अुनसे भी यह सिफारिश की कि अिस लड़कीको आप अब कभी न छोड़िये। बापूजी बोले: "हां, जब तक मैं जिन्दा हूं या वह जिन्दी है, तब तक तो मैंने अुसे अभय-दान दिया है। अगर वह चाहे तो मुझे कभी भी छोड़ सकती है। मैं बंधनमें रहता हूं, अुसे नहीं रखा है। आपको भूखा तो नहीं रखती है न?"

बापूजीने खानसाहबको यह बात कही और मुझे अपने साथ रखनेका अैसा वचन दिया, यह जानकर मुझे अपार संतोष हुआ। मेरी तरफ देखकर खानसाहब कहने लगे, "देखो मनु, महात्माजी क्या कह रहे हैं?"

यह कहते हुअे अुनके चेहरे पर अेक प्रकारका आनन्द दिखाअी दिया।

आज बापूके पैरोंमें घी मलनेकी खानसाहबकी अिच्छा थी। परन्तु बापूजीने कहा, "आप तो रातको पैर दबाते ही हैं। अब आपको आराम करना ही चाहिये। यह लड़की खाना खाकर मल देगी।"

बापूजी और खानसाहबके बीचमें अैसा मीठा संबंध है। मैं खाना खाने गअी अुस बीच बापूजीने थोड़ा-सा लिखा।

राजकोटके अेक व्यापारीने ५००१ रुपयेका चैक नोआखालीकी सहायताके लिअे भेजा है। वह चैक और दूसरे पत्र नोआखाली भेजे।

दो बजेसे मुलाकातें शुरू हुअीं। कातते-कातते डॉ० सैयद साहबसे बातें हुअीं। सवा दो बजे मुस्लिम लीग कैम्पके आश्रित तथा अुनके साथ अेस० अेन० मौलवी, डॉक्टर अजदर हुसेन और हकीम तसद्दुक हुसेन आये। बापूजीने अुनसे कहा कि:

"आपके दुःखमें मुझे सहानुभूति है। जो हुआ वह नहीं होना चाहिये था। परन्तु मैं तो यही मानता हूं कि अगर दिल साफ न हों तो सब बेकार है। मैं आपसे कहूंगा कि आप नोआखाली जाअिये। वहां देख आअिये कि हिन्दुओं पर जुल्म हुआ है या नहीं। अगर आपको लगे कि जुल्म हुआ है, तो आप वहां कष्ट-निवारणमें और सेवामें लग जाअिये। और अल्पसंख्यकोंसे कहिये कि तुम हमारे भाअी-बहन हो। तुम अिस देशको छोड़कर नहीं जा सकते। पहले हम मरेंगे, फिर तुम्हें जाना हो तो चले जाना। और जो लोग जुल्म करते हैं—मुझे कहने दीजिये कि वे लीगके ही आदमी हैं—अुनसे भी कहिये कि आपकी पार्टीका न तो अिसमें भला है और न रक्षा है। और अितने पर भी यदि अत्याचारी जुल्म करें, तो आप अपने भाअियोंकी रक्षाके लिअे जान कुर्बान कर दीजिये। आप साहसके साथ अत्याचारियोंसे कहिये कि पहले हमें मारो, फिर अिन निर्दोषोंको मारना। अैसा अेकाध आदमी भी आपमें से निकल आयेगा, तो दुनियामें आपकी अपूर्व कीर्ति होगी। खुदा आप पर फूल बरसायेगा और अुसकी सुगन्ध सारे देशमें फैलेगी। मैं तो आपको आपका धर्म बता रहा हूं। आप सलाह मांगने आये हैं अिसलिअे। और आपको अूंचा अुठा हुआ देखूंगा, पाकिस्तानको 'पाक' होता हुआ देखूंगा, तो सबसे अधिक आनन्द मुझे होगा। आप अैसा करेंगे तो अहिंसा और प्रेमके पाठ पढ़नेके लिअे लोग आपके पास आयेंगे।"

अिन लोगोंको बापूजीने बहुत खरी खरी बातें कहीं। बेचारे सुनते ही रहे। क्या बोलते? परन्तु बापूजीके लिअे तो सभी समान हैं, अिसलिअे सबको सीधा रास्ता ही बताते हैं।

अुनके जानेके बाद मुस्लिम स्त्रियां आअीं। पहले तो वे परदेमें थीं। परंतु अेक बूढ़ी महिलाके कहनेसे और बापूजीके यह कहने पर कि 'मुझसे क्या परदा रखा जाय? बहनें मुझसे परदा रखतीं ही नहीं। सच्चा परदा हृदयमें रखिये।' सब स्त्रियोंने बुरका अुठा लिया। बहनें दर्शनके लिअे आअी थीं। और दंगोंमें अुनका सब कुछ लुट गया था, अुसकी दर्दभरी कहानी सुना रही थीं। बापूजीने कहा, "आप खुदा पर भरोसा रखिये। सबको पालनेवाला वही है। मैं तो सिर्फ मेहनत कर रहा हूं।" और कुछ समय पहले मोहब्बत बढ़ानेवाला जो रास्ता भाअियोंको बताया था वही बहनोंको बताते हुअे कहा:

"आप हिन्दू वहनोंके साथ मेलजोल वढ़ाअिये। मोहव्वत कैसे वढ़े, अिसकी वातें अपने कुटुम्वमें वच्चोंके सामने कीजिये। आप जितना कर सकेंगी, अुतना मर्द नहीं कर सकते। आप अपने पति, पुत्र या पिता जो भी हों अुनसे कहिये कि देशमें जहां कहीं भी हिन्दुओं पर मुसलमानोंकी तरफसे जुल्म होता हो, वहां हिन्दुओंको वचाने दौड़ जाअिये। आप हिन्दू स्त्रियोंको वचाअिये और अुन्हें विश्वास दिलाअिये कि हम सव सगी वहनें हैं। स्त्रियोंको मैंने अहिंसाकी साक्षात् मूर्ति कहा है। स्त्रियोंमें भगवानने अेक अैसा प्रेम-पूर्ण हृदय रख दिया है जो पुरुषोंमें नहीं है। अुसका आप सदुपयोग कीजिये। स्त्रियां जव तक संस्कारी और अपना कर्तव्य समझनेवाली नहीं वनतीं, तव तक देशकी अुन्नति नहीं होगी। मुझे तो यह दियेकी तरह स्पष्ट दिखाअी देता है। मेरे पास अैसे कितने ही मुस्लिम खानदानोंकी स्त्रियां आअी हैं। मेरी कितनी ही लड़कियां हैं। अेक तो नोआखालीमें ही मौजूद है। अमतुस्सलाम मुट्ठीभर हड्डियोंवाली है, परन्तु वहांके अत्याचरोंसे जूझ रही है। अुसने कितने ही अुपवास किये हैं। अव्वास साहव तैयवजीके कुटुम्वकी रैहाना भी अैसी ही वहादुर लड़की है। वह कृष्णकी भक्त है। गीता और कुरान साथ साथ पढ़ती है। गीताका अर्थ अुतना ही समझती है — जितना कुरान-शरीफका। मैं मानता हूं कि अुसके मित्र भी मुसलमानोंकी अपेक्षा हिन्दू अधिक होंगे। अैसी कितनी ही लड़कियां हैं, जो स्वयं जातपांतका भेद भूल गअी हैं। मैं आपसे कहता हूं कि आपको सुखी होना हो, तो जातपांतके भेद या कौमके भेदोंको भूल जाअिये। अेक खुदाने हमें मनुष्यका अवतार दिया है। हम सव मनुष्य हैं। सव देशभाअी या देशभगिनियां हैं। अिस प्रकार आचरण करके हम अपना मानव-धर्म सार्थक करें।"

चार वजे मिट्टीकी पट्टी ली। मिट्टीकी पट्टी लेते ही वापूजी कोअी पांच मिनटके लिअे सो गये। वहुत वोलना पड़ा और लगातार दो वार वोलना पड़ा, अिसलिअे थक गये हैं।

स्वामी आनंद और नाथजी वम्वअी गये। जानेसे पहले कोअी पांच मिनटके लिअे वापूजीसे विदा लेने आ गये थे। साढ़े पांच वजे मंत्रीगण

आये : श्रीकृष्णसिंह, अनुग्रहबाबू, कृष्णवल्लभ सहाय, अब्दुलबारी साहब, आचार्य बद्रीनाथ, रामचरितसिंह और डॉ० सैयद महमूद साहब।

आज प्रार्थनासे पहले मौन शुरू किया। प्रार्थनामें खानसाहबने भाषण दिया। बापूजी आज बहुत ही काममें रहे। थके हुअे थे अिसलिअे प्रवचन लिख न सके और मौन शुरू हो जानेका समय हो गया। खानसाहबने बहुत ही दर्दभरी आवाजमें जो कहा वह अुन्हींके शब्दोंमें यहां देती हूं :

"महात्माजी चाहते हैं कि मैं आपसे कुछ कहूं। पर मेरी समझमें नहीं आता कि क्या कहूं? मेरे अिर्दगिर्द अंधेरा छाया हुआ है! मैं हिन्दुस्तानके बारेमें जितना ही सोचता हूं अुतना अंधेरा बढ़ता ही मालूम होता है। बहुत कोशिश करने पर भी मुझे रोशनी नहीं मिलती। आज तमाम हिन्दुस्तान जल रहा है। हिन्दुस्तानमें रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी सबको सोचना चाहिये कि अगर हिन्दुस्तान जलेगा तो नुकसान किसका होगा?

"मैं खुदाअी खिदमतगार हूं। मेरा काम सेवा करना है। मैंने कअी धर्मोंके बारेमें पढ़ा है और अपना मजहब भी मैं अच्छी तरह जानता हूं। मेरे मजहब और पैगम्बर साहबने कहा है कि अच्छा अिन्सान वही है जो खुदाके बन्देको फायदा पहुंचाये। फिर यह कैसे हो सकता है कि खुदाअी खिदमतगार और अेक मुसलमान होते हुअे भी मैं दूसरोंकी सेवा करनेके लिअे न रहूं? लेकिन फिर भी मैं अपनेको कमजोर समझता हूं और सोचता हूं कि नोआखाली जाकर मैं कुछ नहीं कर सकता था।

"मुझे आपसे दूसरी यह बात कहनी है कि अंग्रेजोंने कह दिया है कि वे १५ अगस्तके बाद हिन्दुस्तान छोड़कर चले जायेंगे। अब तो हमारे फर्ज और भी ज्यादा बढ़ जाते हैं। अिस थोड़ी-सी मुद्दतमें हमें अपना मुल्क संभालनेकी कोशिश करनी चाहिये। नहीं तो हमारा बहुत बड़ा नुकसान होगा।

"आपको अेक बात और समझनी है। वह यह है कि जो काम मुहब्बतसे हो सकता है, वह नफरत और जबरदस्तीसे नहीं हो सकता। मुहब्बतसे जो काम होते हैं वे पायेदार होते हैं और नफरतसे होनेवाले काम पायेदार नहीं होते। मुहब्बतके कामसे हम मुल्कको फायदा पहुंचाते हैं, नफरतके कामसे नुकसान। महात्माजी भी यही बात कहते आ रहे हैं। अहिंसा मुहब्बत है, और हिंसा नफरत। और जोर-जबरदस्तीसे कोअी चीज हासिल

भी कर लें, तो अिससे हिन्दुस्तानको फायदा न होगा। युरोपकी मिसाल हमारे सामने है। वहां १९१४ में पहली लड़ाअी और १९३९ में दूसरी लड़ाअी हुअी। अब तीसरी लड़ाअी हुअी तो दुनिया बरबाद हो जायगी।

"आप लोगोंको यह बात समझनी चाहिये। यह बात महात्माजी या मेरे फायदेकी नहीं, बल्कि आप सभी लोगोंके फायदेकी है। पाकिस्तान भी अगर बनता है, तो मुहब्बतसे ही बन सकता है। जोर-जबरदस्तीसे बना हुआ पाकिस्तान कायम न रह सकेगा।

"मैं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सबसे अपील करता हूं कि वे अपना फर्ज समझें। आज हिन्दुस्तान जल रहा है। बंगालसे जो आग बिहार पहुंची, वह अब पंजाब और सरहदमें भी पहुंच गअी है। हमें अिस आगको बुझानेकी कोशिश करनी चाहिये। हमें तमाम हिन्दुस्तान और यहांके सभी लोगोंकी भलाअीके लिअे सोचना चाहिये।"

खानसाहबका भाषण लगभग शब्दशः लिखा जा सकता था। खूब धीरे-धीरे बोलते थे। सभामें अपार शांति थी। मैदान खचाखच भरा था। प्रार्थनासे आकर बापूजीको दूध और खजूर देकर मैंने अपना लिखा हुआ खानसाहबका भाषण अखबारोंमें देनेके लिअे अेक बार बापूजीको और खानसाहबको सुनाया। अक्षर पढ़े जा सकते थे। अिसलिअे दुबारा हिन्दीमें लिखनेकी मेहनत नहीं करनी थी। अुस परसे बापूजीने अंग्रेजी तैयार किया और अखबारोंको दिया।

मृदुलाबहन आगेकी देहाती अिलाकेकी यात्राके सिलसिलेमें बातें कर गअीं। बापूजी संभव हो तो नोआखालीकी तरह पैदल यात्रा ही करना चाहते हैं।

शामके बाद बापूजीका मौन था। और हर रविवारकी रातको सप्ताहमें अेक बार मैं सबके साथ 'टेबल' पर खानेको आअूं तो अच्छा, अैसी डॉक्टर साहबकी अिच्छा है, अिसलिअे आज टेबल पर खाने गअी। डॉक्टर साहब बड़े खुश हुअे और प्रेमसे आग्रह कर-करके मुझे खिलाया।

९-२० पर बापूजी घूमने निकले। बेगम साहिबा भी घूमने आअीं। चार-पांच चक्कर लगाकर बापूजीके पैर धोये। लगभग पौने दस हो गये। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर सूत अुतारा। आज बापूजीके ८० तार हुअे। डायरी लिखी। बापूजीकी बैठक ठीक की, कागजपत्र ठीक किये। अब लगभग साढ़े दस हो गये हैं। अभी तक चन्दा गिनना बाकी

है। रेजगीका खासा ढेर पड़ा है। परन्तु आज न गिनूं तो कल बहुत मेहनत पड़ेगी। अिसलिअे अब गिनने जाती हूं।

पटना,
१७–३–'४७, सोमवार

रातको हवा खूब जोरकी थी। बापूजीकी मच्छरदानी तो कहींकी कहीं अुड़ गअी। परन्तु कोअी आध घण्टेमें फिर शान्ति हो जानेसे सोनेकी जगह बदलनी नहीं पड़ी।

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद मुझे लिखित आज्ञा मिली कि "रातको बहुत देरसे सोअी हो, अिसलिअे अब सो जाओ। टहलते समय अुठा दूंगा।" अिसलिअे बापूजीको गरम पानी देकर और गीतापाठ करके मैं बापूजीके पास ही सो गअी। अिस बीच बापूजीने बंगाली पाठ लिखा। आज लगभग सभी शब्द संयुक्त अक्षरोंवाले ही लिखे। सुन्दर अक्षर लिखे। . . . . को पत्रमें लिखा:

> आप अैसा मानते मालूम होते हैं कि हजारों वर्षके बाद मैं अेक पैदा हुआ हूं (अवतारी पुरुषके रूपमें)। मैं स्वयं यह नहीं मानता। मेरा दावा है कि मैं जो कुछ करता हूं, अुसे अितनी ही लगनसे दूसरे जो करेंगे, वे सब मेरे जितना ही कर सकते हैं। सतत प्रयत्न करना, जाग्रत रहना तो सबके लिअे संभव होना चाहिये। परन्तु यदि आपका मानना ठीक हो, तो क्या मुझमें भरे हुअे स्थूल विकारोंको भी मैं नहीं देख सकता?
>
> हमारी ब्रह्मचर्यकी व्याख्या अधूरी है। अुसे पूरा बनानेकी कोशिश मैं कर रहा हूं। . . . की तीक्ष्ण बुद्धि भी ब्रह्मचर्यको समझनेके लिअे असमर्थ है। जो संवाद हमारे बीच यहां हुआ, अुस परसे लगा कि . . . भी ब्रह्मचर्यको नहीं पहचानते। यह वाक्य लिखते हुअे मुझे जो दुःख होता है, अुसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता। हृदयको लोहा बनाकर लिख रहा हूं। . . . मैंने अेक अवसरके सिवा विकारोंका सेवन नहीं किया। यह मेरा दावा है, अिसीलिअे अूपरका कठोर वाक्य लिख रहा हूं।

घूमने जाते समय बापूजीने मुझे अुठाया। मालिशमें बापूजी २० मिनट सोये। फिर स्नान, भोजन वगैरा नित्यकी भांति हुआ।

मौनवार होनेके कारण छुट्टी जैसी लगती है। मैंने आलमारियां और अपना कमरा साफ किया। गांव ले जानेका सामान तैयार किया। २–३ बजे महबूबभाओको (डॉक्टर सैयद महमूद साहबके लड़के), जो शादी करके नओ दुलहनके साथ यहां आये हैं, आशीर्वाद देने बापूजी अूपर आये। महबूबभाओकी बहूने पांव पड़कर १०० रुपये बापूजीके हाथमें दिये। मैंने मजाक किया कि बापूजी, आपको ही भाभीको देना चाहिये! रिवाज तो अैसा है कि ब्याह करके आनेवाली बहू सब बड़ोंको प्रणाम करे और अुसे सब दें। परन्तु यह तो अुलटा हो रहा है! यह बेचारी आपको देती हैं; और आपको १०० रुपये कम पड़ते हैं।

बापूजी कहने लगे, "हमारे रीति-रिवाज रद्दी हैं। असलमें लड़केको अब तक मां-बापने पाल-पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया, अुसकी शादी की, अिस-लिअे अुसीको मां-बापको देना चाहिये।" सारा कमरा हंसीसे गूंज अुठा। वहांसे आकर बापूजी हाथ-मुंह धोने गये। मैंने सामान ट्रकमें भरवाया। और ठीक ३–२५ पर हम रेलमें मसूड़ी जानेके लिअे रवाना हो गये।

रास्तेमें बापूजीने डाक लिखी, अंगूर खाये और बीस मिनट आराम किया। मैं भी सो गओ। खानसाहबने बापूजीके पैर दबाये। ५–१० बजे हम मसूड़ी पहुंचे। यहां अेक पाठशालामें हमारा मुकाम है। स्टेशन पर बेशुमार भीड़ थी। बापूजी, मृदुलाबहन और मैं मुश्किलसे मोटर तक पहुंच सके।

मैंने आते ही सारा सामान मिलाया। अेक कमरेमें गादी-तकिया बिछाया हुआ था। गरम पानी भी तैयार रखा गया था। बकरीका दूध भी तैयार था। खजूर नहीं भिगोये थे, अिसलिअे दूधमें छुहारेका चूरा डाला।

बापूजी तो अपने काममें लग गये थे। मृदुलाबहन लोगोंसे मिलनेमें व्यस्त थीं। अनेक मनुष्यों और प्रवृत्तियोंसे पाठशाला और गांवमें धूम मची हुओ थी।

साढ़े छह बजे प्रार्थना-सभामें गये। सभा नजदीकमें ही थी। पटनासे कहीं अधिक जनसमूह था। आसपासके गांवोंसे लोग आये थे। प्रार्थनामें सात्त्विक वातावरण दिखाओ पड़ता था। पटनामें शहरकी शिक्षित जनता होने पर भी रामधुन शुरू करने पर ताल देनेकी तालीम देनी पड़ती थी। लेकिन यहां देहातियोंने तालबद्ध रामधुन अेक ही आवाज पर अपना ली। और मुझे रामधुन करानेकी धुन लग गओ या क्या हुआ, रामधुनमें कुछ मिनट ज्यादा लग गये।

प्रार्थना-सभामें बापूजीने कहा कि: "आपको मैं बधाओी देता हूं कि आपने ताल बहुत अच्छी तरह दी और सभी भाओी-बहनोंने रामधुनमें भाग लिया। मेरी यह यात्रा मौज अुड़ाने और आनन्द करनेके लिअे नहीं है। परन्तु दुःखसे भरी है और मेरे लिअे तो प्रायश्चित्त-स्वरूप है। जहां तहां बरबादी ही बरबादी दिखाओी देती है। मुझे अैसा प्रतीत होता है कि यह अपराध मैंने ही किया है, क्योंकि मेरे भाअियोंने यह अपराध किया है। अैसे समय आप जयघोष करें या मुझे पुष्पहार पहनायें यह अच्छा नहीं लगता। अुलटा मुझे अिससे दुःख होता है। जिन लोगोंने अपराध किया हो वे मेरे पास आकर भी स्वीकार कर लेंगे तो वे अूंचे अुठेंगे। और यदि हृदयसे स्वीकार कर लेंगे और अुसका प्रायश्चित्त करेंगे, तो सरकार अुन्हें परेशान न करे, अैसी कोशिश मैं करूंगा। असल बात यह है कि मनुष्यसे भूल तो हो जाती है; परन्तु यदि वह स्वीकार करके दुबारा वैसी भूल न करे और सारा जीवन बदल ले, तो अुसे जेलमें भेजने या पुलिसके हवाले करनेकी जरूरत ही नहीं रहती। बल्कि अैसा आदर्श अहिंसक राज्य कायम हो जाय, तो देशको जो अितना भारी पुलिसका खर्च अुठाना पड़ता है वह न अुठाना पड़े। मेरी चले तो मैं पुलिसवालोंके हाथोंमें बन्दूकके बजाय फावड़ा, कुदाली, हल वगैरा दे दूं, जिससे वे गांवोंको सुधारें और खेती करें।"

अिसके बाद चन्दा भी खूब अिकट्ठा हो गया। डेढ़ घंटेसे ज्यादा समय गया। अन्तमें अधिक चन्दा खानसाहबके हाथमें देनेको कह कर बापूजी और मैं मुकाम पर चले आये।

प्रार्थनाके बाद हम घर आये। बापूजी बहुत ही थक गये थे, अिस-लिअे लेट गये। वहां मुझे . . . भाओीने कहा, मुझे गांधीजीसे मिलना है और अपना अपराध स्वीकार करना है। मैंने बापूजीसे बात की। बापूजीने अुस भाओीको अपने पास बुलाया। बापूजीको देखते ही वे बेचारे अत्यंत गद्‌गद हो गये। वह दृश्य कितना पवित्र था! प्रार्थनामें बापूजीने जो बात घोषित की, अुसका अुत्तर प्रार्थना-स्थलसे घर आते ही मिल गया। कैसी अद्‌भुत विजय है!

अुन भाओीको बापूजीने प्रेमसे शान्त किया। मुझे पानी ले आनेको कहा। अुन भाओीको बापूजीने पानी पीनेको दिया। जिन अपराधियोंके लिअे

विहार सरकारने अिनाम निकाले और पकड़नेके लिअे असंख्य पुलिस और सी० आओी० डी० के आदमी रखे और फिर भी जो न पकड़े गये, अुन्हें वापूजी अिस प्रकार प्रेमसे वशीभूत करते हैं। आज प्रार्थनामें मैंने यह भजन गाया था। मुझे अैसा लग रहा था मानो यह अुसीका साक्षात्कार है:

सबसे अूंची प्रेम-सगाअी।
दुर्योधनको मेवा त्यागो, साग विदुर घर खाअी।
जूठे फल शवरीके खाये, वहु विधि प्रेम लगाअी।
प्रेमके वस नृप सेवा कीनी, आप वने हरि नाअी।
राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो, तामें जूठ अुठाअी।
प्रेमके वस अर्जुन-रथ हांक्यो, भूल गये ठकुराअी।
अैसी प्रीति वढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाअी।
-सूर क्रूर अिस लायक नाहीं, कहं लगि करौं वड़ाअी।

और वापूजीको अिसमें न तो अचरज लगता था और न अभिमान। वापूजीके लिअे तो यह सहज वात थी। अिसलिअे अुन भाअीके साथ वार्तालाप पूरा हो जानेके वाद और कुछ अुल्लेख किये बिना मुझसे कहने लगे, "मैं दक्षिण अफ्रीकासे यह काम करता आया हूं और मेरे जीवनमें अैसा होता ही रहा है। अैसे काम अीश्वरकी सहायताके बिना नहीं होते। मैं तो रामजीका नचाया नाचता हूं।" यह कह कर अपने काममें लग गये।

आज सुवह ही गीताके पांचवें अध्यायके तेरहवें श्लोकका अर्थ वापूजीके पास सीख रही थी।

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्॥

संयमी पुरुष मनसे सव कर्मोंका त्याग करके नवद्वारवाले शरीरमें रहकर भी खुद कुछ नहीं करता है, न कुछ कराता है। फिर भी सुखमें — आनन्दमें रहता है। वापूजीके प्रेमसे वह भाअी अपना अपराध मंजूर कर गये। परन्तु मैंने कुछ किया है या मैं अिसमें भागीदार हूं, अैसा लेशमात्र भी भाव न तो वापूजीकी वाणीमें था और न चेहरे पर था। अिसीलिअे तो वापूजी अैसी असह्य परेशानियोंमें भी शांतिका आनन्द लूट रहे हैं, और मुस्कराकर ही सारी चिन्ता भगवानको अर्पण करके अपने हिस्सेमें आया हुआ काम करते रहते हैं। वापू निष्काम कर्मयोगी हैं।

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥

बापूजी साढ़े नौ बजे थोड़ा घूमे। बाहर बरामदेमें बिस्तर किया। दस बजे मैंने अुनके पैर धोये और वे सोये। अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर प्रणाम करके मैं खाने गअी। खाकर डायरी लिखी। अिस समय ग्यारह बज गये हैं। अभी चन्दा गिनना है। गिनकर सोअूंगी। जुकाम सख्त है। शायद बुखार आ जाय।

मसूरी,
१८-३-'४७

कल रातको चन्दा गिनकर साढ़े बारह बजे सोअी थी। चन्दा गिननेमें मदद देनेवाले बहुत थे, अिसलिअे जल्दी काम पूरा हो गया। पाठशालाके शिक्षकोंने भी अच्छी सहायता दी, नहीं तो आज प्रार्थनाके समय तक मुश्किलसे गिन पाती अितना चन्दा था। मृदुलाबहनने अिन लोगोंको मेरी सहायताके लिअे भेजा था। वे मेरी बहुत चिन्ता रखती हैं। चन्देके अलावा कनुभाअीने फोटो बेचनेके भेजे हैं। अुनका हिसाब अलग रखना है। अिसलिअे दो रकमें अलग अलग गिननी होती हैं।

सवेरे अुठी तब सख्त जुकाम होनेके कारण प्रार्थनामें आवाज बिलकुल बैठ गअी थी। भजन नहीं गाया जा सका। गीता मुश्किलसे पूरी हुअी। बापूजीने अुलाहना दिया, "यदि तुम्हारा शरीर चौबीस घण्टे लगातार काम दे, तो मैं अितना निर्दय हो सकता हूं कि पच्चीस घण्टे तुमसे काम लूं। परन्तु अैसा लोहे जैसा मजबूत शरीर तुम्हारा नहीं है। अिसलिअे हमें अपनी मर्यादा समझ लेनी चाहिये। जागरणके कारण बार बार जुकाम हो जाता है।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीको पानी देकर तुरन्त ही सो गअी। आज गीता-पाठ नहीं हुआ। छह बजे बापूजीने अुठाया। मुझसे कहा, "लालटेन बुझ गअी, अिसलिअे मुझे भी सो जाना पड़ा।" अिस प्रकार बापूजी भी कोअी तीस मिनट सोये।

९-१० पर हम गांवमें जहां जहां नुकसान हुआ है वे स्थान देखने गये। बड़ा भयंकर दृश्य था। बीचमें अेक बहुत ही बड़ी और रमणीय अमराअी है। लीचीके बहुतसे पेड़ काट दिये गये हैं। ये सारे दृश्य मनुष्यकी क्रूरताके दृश्य हैं। मनुष्य जब क्रूरताके मार्ग पर जाता है तब जिन जंगली पशुओंको हम सदा क्रूर कहते हैं अुन सिंह, चीते वगैरा जैसे पशुओंसे भी वह

अेक कदम आगे बढ़ जाता है, यह कहनेमें अतिशयोक्ति मालूम नहीं होती। क्योंकि भगवानने मनुष्यको विवेक-बुद्धिका अेक अमूल्य खजाना दिया है। वह विवेक-बुद्धि पशुओंमें नहीं है। अिसका प्रत्यक्ष दर्शन अिन दिनों हमें होता है। अैसी स्थितिमें मुट्ठीभर हड्डियोंवाले, नंगे शरीर, कछनीधारी बापूजीकी शान्तियात्रा चल रही है! अिस प्रकार दो विरुद्ध तत्त्वोंके वातावरणमें मुझे तो अिस समय अनोखा लाभ मिल रहा है।

शुद्धता-अशुद्धता, विनय-अविनय, क्रूरता-सौम्यता, दण्ड-क्षमा, भव्यता-भयंकरता, क्रोध-शान्ति, मिठास-कड़वाहट, रोना और दुःख होने पर भी धैर्यसे काम लेना, डर और हिम्मत — निडर होकर साफ बातें सामने रखना, झूठ-सत्य, अतिशयोक्ति-अल्पोक्ति, आशा-निराशा, मृदुता-कर्कशता, साथियोंके साथ मीठी लड़ाओी, साथियोंका छोड़कर चले जाना, पिता-पुत्र जैसे सम्बन्धोंका अन्त — अिस प्रकारके द्वन्द्वोंवाले अनोखे वातावरणमें से आजकल बापूजी गुजर रहे हैं।

गांवकी सारी बरबादी देखकर लौटनेमें लगभग साढ़े सात हो गये। आकर बापूजीके पैर धोये। मालिशके समय अुन्होंने निर्मलदाके साथ बातें कीं। वे शायद कलकत्ता जायेंगे।

मालिश और स्नानके बाद बापूजीने भोजनमें शाक, दूध और पांच काजू लिये। खाखरे बनानेका मुझे समय नहीं मिला। अिसलिअे नहीं बना सकी। सुबह सो जानेकी वजहसे दोपहरको बनाये। हुनरभाओीको भी काफी काम रहता है। मुसलमान भाअियोंसे वे निबट लेते हैं। बापूजीके पैरोंमें घी मलकर मैं नहाने-धोने गअी। दोपहरको ३ बजे बीर गांव जाना है, अिसलिअे वहां ले जानेका सामान तैयार किया। बाकी मसूड़ीमें रखा। दो बजे निर्मलदा कलकत्ता जानेको रवाना हुअे। अुनके जानेसे बहुत सूना सूना लगता है। जो संवाददाता हमारे साथ नोआखालीसे रहते आये हैं, अुन्हें भी निर्मलदाके जानेसे दुःख हुआ। अिस प्रकार कोअी पांच महीनेसे हमारा यह परिवार अेक-दूसरेमें अत्यन्त ओतप्रोत था और सब अेक-दूसरेका काम संभाल लेते थे। बापूजीके पास तो कुछ पूछना जरूरी हो तब आखिरी रायके लिअे ही जाते थे। मुख्यतः निर्मलदा सबका काम पूरा कर देते थे। ये लोग काम करनेकी भी गजबकी शक्ति रखते हैं। रात रात भर जागरण करने पर भी अिन पांच महीनोंमें मैंने अिनमें से किसीको जुकाम होते भी नहीं देखा।

(वीर पहुंचनेके बाद रातको डायरी लिखी।)

३-४५ पर हम मोटरमें वीरके लिअे रवाना हुअे। खानसाहव, वापूजी और मैं पिछली सीट पर थे। मृदुलाबहन और डी० अेस० पी० अगले भागमें बैठे। रास्ता अूबड़-खाबड़ होनेसे दचके बहुत लगते थे। वापूजी मेरी गोदमें सिर रखकर और खानसाहवकी गोदमें पैर रखकर आधे घंटे सो लिये। खानसाहव धीरे धीरे पगचम्पी करते रहे। मोटर खड़ी रखवानेको लोग रास्तेमें आड़े लेट जाते। अुनके जयनादोंकी आवाजसे कान फटने लगते। जब मोटर खड़ी रहती, वे वापूजीको रुपयोंकी थैली भेंट करते। ग्रामीण लोग दर्शन करते, अुसके बाद ही मोटर आगे जाने पाती। ५-१० पर हम बीर पहुंचे। थोड़ी देर आराम लेकर प्रार्थनामें जानेको अुठे। श्रीकृष्ण बाबू आये हुअे थे। १५,००० से अधिक लोगोंकी भीड़ थी। वीर हाअीस्कूलके पासके मैदानमें प्रार्थना हुअी।

प्रार्थनाके बाद वापूजीने कहा, "मैं यहां किसलिअे आया हूं, यह तो आप सब जानते ही हैं। जब कोअी साधु या फकीर खुदा या अीश्वरकी बातें करते हैं, तब लोगोंको अुनकी बातों पर पूरा भरोसा नहीं होता। क्योंकि वे खुदा या अीश्वरको बता नहीं सकते। लोगोंको स्वाभाविक विचार होता है कि अीश्वर कैसा होगा? अिसी तरह जब मसूड़ी जिलेकी रिपोर्ट मेरे पास मुस्लिम लीगकी तरफसे आअी, तब मुझे लगा कि मैं जरा आंखोंसे तो देख लूं। क्योंकि अुनकी रिपोर्ट पर मुझे पूरा विश्वास नहीं हुआ। मैं यह मान ही नहीं सकता था कि मनुष्य अितनी पशुता कर सकता है और अुसमें भी बिहारी लोग! आज प्रातःकाल मैंने जो दृश्य देखा और अुसे देखनेके बाद मेरा जो हाल हुआ है, वह आपको बताता हूं। यदि मैं अुस चित्रको पूरी तरह शब्दोंमें खींचूं, तो शायद मेरा दिल मेरे हाथमें न रहे। मैं रोने लग जाअूंगा। परन्तु मैंने अपना दिल पत्थर जैसा सख्त बना लिया है। अिसलिअे थोड़ासा वर्णन आपको सुना सकूंगा। और बाकी पर विचार करके और अुसकी वेदना सहन करके प्रायश्चित्त करूंगा।

"मैं तो अीश्वरका सेवक हूं। अिसलिअे सबकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझता हूं। अेक आदमी पागल बने, तो क्या दूसरेको भी पागल बनना चाहिये? मैं मानता हूं कि कलकत्तेमें और नोआखालीमें मुसलमानोंने बहुत ही बुरा काम किया है। परन्तु अुसका बदला बिहारमें क्यों लिया जाय? यहां 'नोआखाली-दिवस' मनानेका बहुत ही खराब निश्चय किया गया।

मुझे अिसका अपार दुःख होता है कि जिस बातको मैं धिक्कारता हूं अुस बदला लेनेकी बातमें झूठमूठ मेरा नाम जोड़ दिया गया और मुझे बदनाम किया गया। जब नअी दिल्लीमें केन्द्रीय सरकार स्थापित हुअी, तब लोग सारे देशमें अुत्सव मनाना चाहते थे। अुसमें पंडितजीके साथी — सरदार, राजेन्द्रबाबू, मौलाना साहब, आसफअली वगैरा शामिल हुअे। परन्तु लीगवाले अुसमें शामिल नहीं हुअे। जब मैंने सुना कि वे लोग दिवाली जैसा अुत्सव मनाना चाहते हैं, तब मैंने कहा था कि आप किस मुंहसे अुत्सव मनाना चाहते हैं? नोआखालीमें अिस समय जो दुःखद घटनाअें हो रही हैं, अुन्हें देखते हुअे भी यह खुशी मनानेका अवसर नहीं है। जो लोग मंत्रि-मंडलमें शरीक हुअे हैं अुन्होंने तो आजसे कांटोंका ताज पहना है। परन्तु कहावत है कि 'आप भला तो जग भला, आप बुरा तो जग बुरा'! अिसके अनुसार मेरे कहनेका अनर्थ करके घोषणा की गअी कि गांधी कहता है कि 'नोआखाली-दिन' मनाओ। मैं तो सपनेमें भी अिसकी कल्पना नहीं कर सकता। परन्तु जिसे झूठ ही फैलाना है अुसे क्या कहें? २३ तारीखको 'पंजाब-दिन' मनानेकी अफवाह अुड़ रही है। मैं आशा तो रखता हूं कि यह बात गलत होगी। अैसा करेंगे तो अुसका परिणाम भयंकर होगा। हमारे देशकी आजादी स्वप्नवत् हो जायगी। मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि अैसे भयंकर दिन आवें अुससे पहले मुझे वह अुठा ले। मैं आपके द्वारा सारे बिहारको जाग्रत करना चाहता हूं। बहुतसे मुसलमान भाअी मेरे मित्र हैं। मेरी बातें वे सुनते तो हैं, लेकिन मानते हैं या नहीं, अिसका दावा मैं आज नहीं कर सकता। अेक दिन यह दावा मैं करता था। मनुष्यके भाग्यमें अच्छा-बुरा सभी देखना लिखा होता है। मनुष्य अमृत पी सकता है और जहर भी पी सकता है। मेरे भाग्यमें अिस समय तो जहर पीना ही लिखा है। मैं अिन लोगोंकी सच्चे भावसे सेवा कर रहा हूं। फिर भी अेक दिन तो सबको मरना ही है। और अगर मैं अपने भाअियोंके हाथसे ही मारा जाअूं, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है? मैं अंग्रेजोंको भी अपना दुश्मन नहीं मानता, तब मुसलमान तो मेरे देशभाअी हैं। अुन्हें मैं दुश्मन मान ही कैसे सकता हूं?

"अभी-अभी मैं मसूड़ीसे यहां आ रहा था। रास्तेमें ग्रामवासियोंने मुझे रोककर दो पत्र और ५५ रुपये पीड़ित मुस्लिम भाअियोंके लिअे दिये हैं। पहला पत्र हिन्दू और मुसलमान भाअियोंने मिलकर मुझे दिया है। अुसमें लिखा है:

'हम साओींके निवासी आपसे निवेदन करते हैं कि आप हमारे लिअे अिस समय जो कष्ट अुठा रहे हैं अुससे हम दुःखी हैं। हम यहां भाअी-भाअीकी तरह रह रहे हैं। और आगे भी अुसी तरह रहेंगे। आसपास अशांति होने पर भी हमारे यहां पूरी शांति कायम रही थी। आप हमें आशीर्वाद दीजिये कि हम अिसी तरह प्रेमसे रह सकें।'

दूसरे पत्रमें लिखा है :

'जब हमारे गांवके आसपास दंगा मच रहा था, तब हम लोगोंने अिकट्ठे होकर ग्राम-शान्ति-समिति बनाअी थी। और अब भी हम अिस ध्येयके लिअे काम कर रहे हैं। हम जिस तरह आज तक मिल-जुलकर रहते आये हैं, अुसी तरह आगे भी हमेशा रहा करेंगे।'

"मुझे खुशी है कि यद्यपि अिन दोनों गांवोंमें अेकता बनी हुअी है, फिर भी अुनके आसपासके गांवोंमें जो दुःखद घटना हुअी है अुसके कारण वे अफसोस कर रहे हैं। अुन्होंने ५५ रुपयेके दानके द्वारा अपने हृदयका भाव व्यक्त किया है।

"अब आप मुस्लिम-सहायता-कोषके लिअे अिन स्वयंसेवकोंको पैसा दीजिये। मुझे खुद ही यह पैसा जमा करना पसन्द है। परन्तु मैं रातको बहुत थक जाता हूं और आज तो बहुत ज्यादा थक गया हूं। फिर रातको काम भी करना है। आप ज्यादासे ज्यादा पैसा दीजिये और साबित कीजिये कि भले हमसे भूल हो गअी है, परन्तु हम अुसका प्रायश्चित भी करना जानते हैं।"

प्रार्थनासे आकर बापूजीने श्रीबाबूके साथ अेकान्तमें बातें कीं। अिस बीच मैंने थोड़े और खाखरे बनाये। फिर बापूजीका हिन्दी-प्रवचन साफ अक्षरोंमें लिखकर दिया। अुस परसे बापूजीने अंग्रेजी प्रवचन तैयार किया। यह काम रोज निर्मलदा करते थे, अिसलिअे बापूजीको जरा भी देखना नहीं पड़ता था। अिस समय हम सबको निर्मलदा याद आये। वे अब गाड़ीमें बैठे होंगे। कब आयेंगे यह निश्चित नहीं है। बापूजीने तो कहा है, "मैं चाहूंगा कि तुम जल्दीसे जल्दी लौट आओ।"

साढ़े नौ बजे बाद थोड़ा घूमे। सोनेका अिन्तजाम बाहरके भागमें है। शोर बहुत है। मच्छर भी बेशुमार हैं। दस बजे बापूजी सोये। चन्दा गिननेका काम कल पर रखा है। आज बहुत चन्दा अिकट्ठा हुआ है। साढ़े दस हो गये हैं। मैं भी सोने जा रही हूं।

दिनभर मुझे बुखार रहा। थोड़ा जहरीला जुकाम हो गया है। मेरी छूत बापूजीको न लगे, अिसलिअे दूर ही रहती हूं। परन्तु कामकाजके प्रसंगसे तो बापूजीके पास जाना ही पड़ता है। बापूजीको पता चले कि अिसीलिअे दूर-दूर रहती हूं तो भी अुन्हें अच्छा न लगे। अिसलिअे बापूजीको कोअी चीज देने या अुनसे लेनेका काम भी दूसरोंके मार्फत नहीं कराया जा सकता।

वीर,
१९–३–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजीने मदनभाअी (स्वयं-सेवक कार्यकर्ता)को अपनी सुविधाके लिअे अितनी दौड़धूप करनेकी मनाही कर दी। बापूजीने यह भी कहा कि "जो चीज मिल जाय अुसीसे काम चलाना है। मेरी बैठकके लिअे कहीं भी गादी-तकिया नहीं रखना है। मैं जहां जैसी बैठक मिलेगी वहां अुसी पर बैठना पसंद करूंगा।" फिर मुझे भी यह सूचना दी। बिलकुल जमीन पर (सख्त जगह पर) घण्टों बापूजी नहीं बैठ सकते, अिसलिअे अेक तकिया साथ लेनेको कहा। दूसरा कुछ नहीं।

बादमें बापूजी लिखनेमें लग गये। मैंने चन्दा गिना। निर्मलदाको और दूसरे लोगोंको पत्र लिखे। निर्मलदाकी गैरहाजिरी बहुत ही खटकती है। खानसाहब पेशावर जाना चाहते हैं। परन्तु बापूजीने यह कहकर अभी रोक लिया है कि यदि यहां कुछ भी हो सकेगा तो अुसकी परछांअी देशभरमें पड़ेगी। और यहां कुछ नहीं हो सका तो कहीं भी भाग-दौड़ करनेसे कुछ नहीं होगा।"

दर्शनार्थियोंकी भीड़ सतत बनी रहती है। दस मिनट मुश्किलसे घूम सके। मालिशके बाद बापूजीको अेकाअेक पसलीमें दर्द होने लगा, सांस लेना कठिन हो गया। कुछ बोल नहीं सकते थे, अिशारेसे पसली दबानेको कहा। मैंने तुरन्त सुलाकर मेरे पासका 'लिनिमेंट' लगाया। कोअी दस मिनट आंखें बन्द करके पड़े रहे। ये बड़े नाजुक क्षण थे। अैसा कभी हुआ नहीं था। स्नानागारमें अुन्हें अकेला छोड़कर जाना भी नहीं हो सकता था। और हमारे साथ खास तौर पर कोअी मददके लिअे था भी नहीं। मृदुलाबहन अपने कामके सिलसिलेमें कार्यकर्ताओंके साथ गअी थीं। मैं मनमें राम राम बोलने लगी और पसली पर तेल मलने तथा दबाने लगी। कोअी दस मिनटमें बापूजीको जरा आराम हुआ और सांस अच्छी तरहसे

ले सके। पीनेका पानी मांगा, तब मैं निश्चिन्त हुअी। अेक-दो घूंट पानी पीनेके बाद बोले, "विलायतमें अेक बार अैसा ही दर्द हुआ था। परन्तु आज तो मैं रामनाम ले रहा था, मानो रामजीके दर्शन कर रहा था। मैं जानता था कि मनमें तुम भी रामनाम ले रही हो। अिसलिअे यह सोचकर बड़ा खुश हुआ कि अब तुम्हें सचमुच सूझ-बूझ आने लगी है। आज थकानके कारण खूनका दबाव बढ़ गया हो तो कहा नहीं जा सकता। रामनाम लेते हुअे तुम्हारी गोदमें चला जाअूं तो कैसा अच्छा?" यह कहकर मेरी आंखोंमें आये हुअे आंसू देखकर मेरी पीठ पर अेक थप लगाअी और जरा हंसे। "मृत्यु तो अेक सिक्केका दूसरा पहलू है। सच्चा मित्र मृत्यु ही है। अुससे डरना क्या? और तुम क्या यह मानती हो कि मर जाअूंगा तो तुम्हें मैं छोड़ दूंगा? तब तो तुम्हें जो गीतापाठ पढ़ाता हूं वह व्यर्थ ही जायगा न? मेरी आत्मा तो तुम जहां रहोगी वहां सदा तुम्हारे साथ ही रहेगी। और तुम पर पहरा रखेगी कि तुम कहीं गलत रास्ते तो नहीं जा रही हो?"

जब बापूजीको तेल मल रही थी तब तो पूरी हिम्मत रखी थी। परन्तु जरा ठीक हुअे और अिस तरह मेरी गोदमें मरनेकी बात कही, तब आंखोंमें आंसू आ गये। मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि बापूजी मेरे सामने चले जायेंगे। परन्तु आजका यह करुण प्रसंग दिनभर आंखोंके सामने तैरता रहा और मन अत्यन्त अुद्विग्न रहा। फिर भी बापूजीको फिरसे भलाचंगा देख सकी अिसे मैंने अीश्वरकी अपार कृपा माना। वर्ना अुस समय मैं और बापूजी दो ही जन थे। कुछ हो जाता तो क्या होता?*

ग्यारह बजे बापूजी नहाकर बाहर आये। कांग्रेसके कार्यकर्ताओंके साथ बातें कीं। बापूजीने अुन्हें बारीकीसे वर्तमान परिस्थितिके बारेमें समझाया और बिलकुल शुद्ध रहनेको कहा। यह भी कहा कि "मेरी अिच्छा नोआखालीकी तरह पैदल यात्रा करनेकी है।"

जोरकी आंधी चलनेके कारण बीर १२-३० को छोड़नेके बजाय १-३० पर छोड़ा। और खंडहर बनी हुअी गुरुपांखड़ी देखने निकले। बड़ा भयंकर दृश्य था।

---

* आज मैं यह बात लिख रही हूं और वह जहरीली गोली मेरी नजरके आगे तैर रही है। कैसी करुणता है!

प्रार्थनामें ४–३० को पहुंचे। समयसे पहले पहुंचे, अिसलिअे चंदा अिकट्ठा करना शुरू कर दिया। अिस अिलाकेका नाम गरियाधारी है। अंडार गांवमें प्रार्थना हुअी। (यह फतुवा थानेका गांव है।) चन्देमें खूब रेजगारी अिकट्ठी हुअी। अेक वार तो रेजगारीके भारसे मेरी ओढ़नी फट गयी और पैसे सब नीचे गिर गये। अपार भीड़में बड़ी मुश्किलसे गिरे हुअे पैसे अुठाये जा सके। अुठाकर दूसरी तरफके छोरमें बांधे। बहनें मुझे पकड़ पकड़ कर पैसे देती थीं। बहनोंमें पैसे अिकट्ठे करने मैं गअी थी।

प्रार्थनासे सीधे वीर आये। आकर प्रार्थना-प्रवचन लिखा। शामको बापूजीने केवल गरम पानी और शहद ही लिया। अनुग्रहबाबूके साथ बातें कीं। यहांकी शासन-व्यवस्थामें भी बड़ी गड़बड़ी होनेकी शिकायत बापूजीके पास आअी थी। अिसलिअे अिन सब बातोंसे भी बापूजीने अुन्हें परिचित किया। बहुत ही थके हुअे थे। अिसलिअे १०॥ बजे सो गये।

आज भी फंड गिनते गिनते अेक बज गया। आज सब संवाददाताओंका मुकाम दूर है और निर्मलदा भी नहीं हैं, अिसलिअे बहुत देर लगी। अेक-दो बार तो नींदके झोंके आ जानेसे आंखें बन्द होने लगीं। आंखों पर खूब पानी छिड़का तब कहीं नींद अुड़ी। मृदुलाबहन लालटेन देखकर अेक बार मेरे पास आ गअीं। वे भी गिनने बैठ रही थीं, परन्तु मैंने आग्रहपूर्वक मना कर दिया। क्योंकि अुन्हें दूसरा काम बहुत रहता है। कुल चंदा १००० रु० हुआ। आजके अिस चंदेमें अेक भी पूरा रुपया नहीं था। अिसी तरह अेक भी रुपयेका नोट नहीं था। आठ आने, दो आने, अेक आने और पैसे ही ज्यादा थे। अुसके बाद गीताजीके जो श्लोक बापूजीने लिखनेको दिये थे वे लिखे। सवेरे जल्दी मसूढ़ी जाना था, अिसलिअे सामान भी बांधा। ठीक सवा दो बजे मैं बिस्तर पर लेटी। बापूजीने कहा, "डेढ़ बजे तुम्हारे बिस्तरमें देखा तो तुम नहीं थीं।" परन्तु तीन बजे दुबारा अुठे तब भी मैं जागती ही थी। नींद अुड़ गअी थी। अिसलिअे मैंने पूछा, "प्रार्थनाका समय हो गया?" बापूजीने प्रेमसे थपथपाकर कहा, "क्यों, अभी तक पैसे गिन रही थी?" मैंने कहा, "लगभग डेढ़ बजे गिनना पूरा हुआ। अुसके बाद श्लोक लिखे और सामान बांधा। अिसमें सवा दो हो गये।"

बापूजी कहने लगे, "मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा। परन्तु अब और बातें करके तुम्हारी नींद नहीं बिगाड़नी है। अिसलिअे अेक घंटे सो लो।"

मसूड़ी,
२०–३–'४७

४–३० पर प्रार्थनाके लिअे जागे। दातुन-कुल्लीके वाद प्रार्थना। प्रार्थनाके वाद मुझे सो जानेको कहा। वापूजीने अपनी विचारमाला लिखी:

"रातको पैसे गिनते गिनते चि० मनुड़ीको अेक वज गया। चंदा गिनकर तुरन्त ही सो जाना चाहिये था। श्लोक दूसरे समय लिखने चाहिये थे। अथवा मेरे किसी कामसे अुसे मुक्त करना चाहिये। अुसे नींद पूरी नहीं मिलती, यह वहुत खटकता है। मैं सोचता हूं कि क्या किया जाय? अुसे कुछ सूझे तो कहे। वह चाहे तो अिस मामलेमें वड़ी मदद कर सकती है। परन्तु वह अेक भी कामसे मुक्त नहीं होना चाहती। चंदा अेक हजारका हुआ।"

मुझे वापूजीने ५–३० के वाद अुठाया। और आज अपनी लिखी हुअी वात मुझे पढ़ जानेको कहा। ठीक ६ वजे वीरसे निकले। हमारी मोटरमें वापूजी, डी० अेस० पी०, मृदुलावहन, खानसाहव और मैं थी। रास्तेमें गांववाले मोटर रोकते रहते थे। मसूड़ी ९–३० पर पहुंचे। आकर नहाने और मालिशकी तैयारी करनेमें दस वज गये। वापूजी नहाकर वाहर निकले तव पूरे वारह वज गये।

दक्षिण अफ्रीकासे डॉ० दादू और डॉ० नायर आये थे। अुनके साथ वातें करनेमें ही वापूजीका ज्यादातर समय गया।

खानसाहवने आज हम सवके साथ खाना खाया। अुनकी रुचिका खाना तो मैंने तैयार किया ही था, परन्तु शिक्षक भाअियोंके आग्रहके वश होकर अुनके साथ अुन्होंने भोजन किया।

आज शामको हरला गांवमें गये। प्रार्थना मसूड़ीमें हुअी। प्रार्थनामें वापूजीने हरला गांवका वर्णन करते हुअे कहा, "मैं अेक दो दिनसे यहां आया हूं। आज भी अेक गांव देखकर आया। मैं अुसका वर्णन नहीं कर सकता। अुसका वर्णन करते हुअे कंपकंपी छूटती है। अभी अभी आपने भजन सुना कि सुख-दु:ख दोनोंको समान समझें, कोअी प्रशंसा करे तो अुसे भूल जायें, कोअी निन्दा करे तो अुसे भी भूल जायं। अेक अीश्वरको याद रखें, क्योंकि वही सच्चा तारनहार है। जव हमारी आजादी आकर हमारे पैरोंमें गिर रही

है, अैसे समय हम मनुष्य न रहकर हैवान वन रहे हैं, यह हमारी कैसी करुण दशा है, अिसका तो कोअी विचार कीजिये!

"आज मुझे समाचार मिले हैं कि पूर्व वंगालमें 'पाकिस्तान-दिवस' मनाया जायगा। अगर मेरी आवाज सुहरावर्दी साहवके कानों तक पहुंच सके, तो मैं अुन्हें विनयपूर्वक कहता हूं कि आप गलत रास्ते पर हैं। अिस प्रकार पाकिस्तान नहीं टिक सकता। मेरा दावा है कि मैं अिस्लाम धर्मका भी सच्चा अभ्यासी हूं। कुरानशरीफको समझनेका मैंने अच्छी तरह प्रयत्न किया है। अुसमें कहीं भी यह नहीं लिखा है कि वेगुनाह आदमी और निर्दोष वालकोंको मारा जाय। अिस तरह किसीका भी भला नहीं होगा। जवरदस्तीसे आप कोअी चीज नहीं ले सकते, आपको पाकिस्तान वनाना हो तो भले ही शान्तिसे वना लीजिये। 'पाक' वनाअिये, प्रेमसे वनाअिये। परन्तु अिस तरह मारकाट करवाकर वनायेंगे तो आपका अिस्लाम मिट जायगा। अल्पमतमें घवराहट हो, अल्पमत व्याकुल हो, तो आप 'पाकिस्तान-दिवस' नहीं मना सकते। अितनी खून-खरावी हुअी है, अुससे आप चेतिये।

"अव तीसरी वात यह कहनी है कि मेरे पास वहुतसे हिन्दू भाअियोंके पत्र आये हैं, और अुन्होंने माफी मांगी है। अिसी तरह मुसलमान भाअियोंके भी पत्र आये हैं कि अुन्हें हिन्दुओंने वचाया है। कल अेक हजारका चन्दा सिर्फ रेजगारीमें ही हुआ है। और अुसे गिननेमें अिस लड़कीको किसी किसी दिन अेक या डेढ़ वज जाता है। अिसके लिअे आप सवको वधाअी देना चाहिये।

"परन्तु मैं तो तभी खुश होअूंगा, जव लोग पैसा देनेके लिअे जिस तरह होड़ करते हैं अुसी तरह कुदाली और फावड़ा लेकर गांवोंमें जो मलवा पड़ा है अुसे हटायें, सफाअी करके रहने लायक झोंपड़े वनानेके लिअे सहकारी पद्धति पर मेहनत करें और वरवाद हुअे परिवारोंको फिरसे वसायें।"

प्रार्थनासे आकर सुहरावर्दी साहवको 'पाकिस्तान-दिवस' न मनानेके लिअे लम्वा तार दिया। सतीशवावूको भी तार दिया। शायद दो-चार दिनमें विसेनभाअी आयेंगे।

मंत्रियोंके साथ वातें करते हुअे वापूजीने साफ कह दिया कि "जव तक मूल ही सड़ा हुआ रहेगा, तव तक यह पेड़ अुगेगा नहीं। और कहीं अुग भी जाय तो अुसकी डालियां और पत्ते सड़े हुअे ही होंगे। अुसमें

फलोंकी आशा तो रखी ही कैसे जा सकती है? अिसलिअे स्वतंत्रतामें जितने जिम्मेदार मनुष्य हैं वे यदि शुद्ध रहेंगे तो ही आजादीके फल चखनेको मिलेंगे। नहीं तो आअी हुअी आजादी अुस सड़े हुअे पेड़की तरह बिना फलकी रहकर शायद मुरझा भी जाय। अिसलिअे सब अपने-अपने अंतःकरणकी जांच करें और आनेवाली आजादीको मजबूत बनानेका प्रयत्न करें।"

बापूजी साढ़े दस बजे बाद सोये। कामका पार नहीं है। डाकका ढेर आता है और अुसे निबटाया नहीं जा सकता।

गांवोंके रास्ते अितने अधिक खराब हैं कि मोटरमें आते-जाते दचके लगनेसे बापूजी बहुत थक जाते हैं।

हांसोटी,
२१-३-'४७

रात मसूड़ीमें बिताअी। नित्यकी भांति प्रार्थना और अन्य कार्यक्रम। प्रार्थनाके बाद बापूजी अपने लिखनेके कामकाजमें लग गये।

प्रातः साढ़े पांच बजते बजते खबर मिली कि जिन मनुष्योंने अपराध किया था और जिन्हें पुलिस ढूंढ़ रही थी, वे पचास मनुष्य अपने-आप पुलिस थाने पर हाजिर हो गये हैं। बापूजीकी यह अहिंसक सफलता कोअी अैसी वैसी नहीं कही जायगी।

छह बजे हांसोटीके लिअे रवाना हुअे। बापूजी पौन घण्टे पैदल चलनेके बाद मोटरमें बैठे। रास्तेमें डॉ० अब्दुलहकने अपने गांवमें जबरदस्ती अुतार लिया। वहां जले हुअे घर देखे। वे जमींदार हैं, अिसलिअे अपनी जमीनका अमुक भाग देनेकी बातें करते हैं। अिनके गांवका नाम मुहियुद्दीन-पुर है।

यहां (हांसोटी) लगभग नौ बजे पहुंचे। यह स्थान रमणीय है। पाठशालाका मकान है। अन्दर बगीचे जैसा है। बापूजी और खानसाहबने थोड़ी देर बातें कीं। अुनका सार यह था। खानसाहबने कहा, "मुझे आपमें पूरा विश्वास है। आप अेक योगीकी कोटिको पहुंच गये हैं। मैं तो आपके यहांके रातदिनके समागमसे अिसी प्रकारका अनुभव कर रहा हूं। परंतु अिससे अुलटे . . . का कितना दुर्भाग्य है कि वे आपको समझ नहीं सकते, और वाहियात दलीलें करते हैं। . . . लोग अितने समझदार होने पर भी आपको क्यों नहीं समझ सकते, मैं तो यही सोचता रहता हूं।

आपने अैसी जागृति पैदा की है कि आज तक देशमें किसीने अैसा नया काम नहीं किया। अुदाहरणके लिअे, अस्पृश्यता-निवारणमें, अहिंसामें, अर्थ-नीतिमें और अैसी अनेक प्रवृत्तियोंमें आप जैसी सफलता अभी तक किसीने प्राप्त नहीं की है। परन्तु कोअी यह कहे कि हम नहीं कर सकते अिसलिअे आप भी न करें, तो अिसे मैं मूर्खता मानता हूं। वे लोग आपको समझ नहीं सकेंगे, चाहे वे कितने ही पढ़े-लिखे हों। मुझे तो यह पता नहीं था कि पटनामें . . . दोनों आपकी बातें समझने आये थे, वर्ना मैं भी वे चाहते तो अुनसे बातें करता, अुन्हें समझाता अथवा अुन्हें समझता और बेधड़क कहता।"

खानसाहबकी भाषा बहुत ही मीठी है। वे अुर्दूमय हिन्दी शब्दोंमें संस्कृत शब्द अिस्तेमाल करनेकी कोशिश करते हैं और बहुत ही मीठी हिन्दुस्तानी बनाकर बोलते हैं। अुसमें भी बापूजीके प्रति अितनी अपार भक्ति रखते हैं, अिसलिअे अुनकी भक्तिमय हिन्दुस्तानी सुननेमें बड़ा आनन्द आता है।

बाकी भोजन आदि कार्यक्रम सारा नियमानुसार।

तीन बजे हम गौरव्हा और थालपुर गांव देखने गये। गौरव्हामें कात लिया। थालपुरमें प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें अूपरके दोनों गांवोंमें जो हैवानियतके काम हुअे हैं अुन पर शोक प्रकट करनेसे पहले कुछ मिनट शांतिसे सबने खड़े रहकर बिताये। फिर बापूजीने कहा, "निर्दोष स्त्रियों और बच्चोंकी हत्यामें कौनसे धर्मकी रक्षा समाअी हुअी है, अिसका सब लोग गहरा विचार तो कीजिये। अपने पड़ोसियोंको बिना अपराधके मारना किसी धर्ममें लिखा हो ही नहीं सकता।

"जिन घरोंमें कुछ ही समय पहले भरेपूरे परिवार आनन्द करते थे, वे घर आज खंडहर बने हुअे हैं। यह कैसी करुण घटना है! परन्तु अब हम क्या करें? हमारे समाजमें यह मान्यता है कि गंगाजीमें स्नान करनेसे काया पवित्र हो जाती है और जन्म-जन्मके पाप नष्ट हो जाते हैं। अब हमें सोचना चाहिये कि अिन पापोंसे हमारा अुद्धार किस तरह हो।"

सुबह जो पचास भाअी स्वेच्छासे पुलिसके थाने पर गये थे, अुन्हें बापूजीने बधाअी दी। और साथ ही साथ अुन्हें निर्भय करनेके लिअे यह भी कहा कि, "जिन्हें अफसरोंके सामने हाजिर होनेमें डर लगता है, वे

मेरे पास, खानसाहबके पास या जनरल शाहनवाज साहबके पास जब चाहें आकर बातें कर सकते हैं।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने भोजनमें कुछ नहीं लिया। खूब थके हुअे हैं, अिसलिअे साढ़े आठ बजे ही सोनेको तैयार हो गये।

पटना,
२२–३–'४७

हांसोटीमें कल शामको बापूजीकी तबीयत जरा बिगड़ गअी थी। रातको १०।। बजे पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखवाअी।

आज भी रातको चन्दा गिननेमें अेक बज गया। ठीक साढ़े दस बजे हमने हांसोटीसे पैदल यात्रा शुरू की। पीछे बड़ी भीड़ चल रही थी। गांवकी सीमा तक सब चले और फिर मोटरमें बैठे। खरांट गांव देखकर पीपलवा गये। अिस गांवमें विराट सभा हुअी। बापूजीने चन्द मिनट अेकताका अनुरोध करनेवाला भाषण दिया। बाकीका काम शाहनवाज साहबने पूरा किया। बादमें सीधे पटनाके लिअे रवाना हुअे। पटना खरांट गांवसे २२ मील दूर है। अनुग्रहबाबू हमारे साथ थे। यहां पहुंचते-पहुंचते दस बज गये। आते ही मालिशकी तैयारी की। कुकर रखा। बीचमें समय मिलने पर सिर्फ बापूजीके लिअे दो खाखरे बना लिये। पिछले कुछ दिनोंसे हम बाहर थे, अिसलिअे हमारे कमरेमें धूलका तो कोअी पार ही नहीं था।

बारह बजे बाद बापूजी भोजन करने बैठे। मैं तीन बजे कपड़े वगैरा धोकर निबटी। नोआखालीसे यह यात्रा — मोटरमें होते हुअे भी — कठिन लगती है। कपड़े और बिस्तर खूब गन्दे हो जाते हैं।

सवा तीन बजे मेरे कमरेमें कुछ खानेकी चीजें पड़ी हुअी थीं वे मैं खा रही थी। खोपरा और लीची थे। और कुछ भी खानेको नहीं था। जल्दी जल्दी खा रही थी। बापूजीने स्नानघरसे मुझे खाते देख लिया। मुझे तो अिसका पता नहीं था। परन्तु बापूजी अेकदम बोले, "जड़भरतकी तरह खाती हो। सुबहसे कुछ भी नहीं खाया और अिस समय खोपरा जल्दी जल्दी खा रही हो। अिस तरह तुम कब तक टिकोगी?"

मैं तो भौंचक्की रह गअी। कसूर था अिसलिअे क्या बोलती? "अेक साथ अितने अधिक कपड़े धोनेकी क्या जरूरत थी? मेरा खयाल है कि

तुम अब मेरी सेवा बहुत समय तक नहीं कर सकोगी।" मैं मुश्किलसे अितना बोल सकी, "अब आराम लेकर स्वस्थ हो जाअूंगी।" परन्तु बापूजी शाम तक मुझसे न बोले। मेरी आंखोंमें आंसू आ गये।

शामको बांकीपुर मैदानमें प्रार्थना हुआी। प्रार्थना-सभामें बापूजीने गांवोंकी यात्राकी सब बातें सुनाअीं। अुन्होंने कहा कि:

"देहाती लोगोंके सत्कारसे तो मुझे सन्तोष ही हुआ है। परन्तु यह यात्रा शौकके लिअे नहीं थी। गांवके लोगोंमें घूमकर अेक बात जानी जा सकती है कि जो घटनाअें हुआी हैं अुनके लिअे अुन्हें हार्दिक पश्चात्ताप हो रहा है। लोगोंने मेरी मोटर रोककर मुझे रुपयेकी थैलियां भेंट की हैं। क्षमापत्र लिखकर दिये हैं। बहनोंकी निराधार स्थिति देखकर मेरा जी भर आया था। मैंने अुन्हें भरसक सान्त्वना दी है।

"२३ मार्चके दिन 'पंजाब-दिवस' या 'पाकिस्तान-दिवस' मनानेकी बिहार सरकारने मनाही कर दी है। अिस मनाही हुक्मका प्रान्तभरमें कड़ाअीसे अमल किया जायगा। देशमें आज अैसी हवा फैल गअी है कि किसी भी प्रकारके जुलूसोंमें कुछ न कुछ बखेड़े हो ही जाते हैं। अिसलिअे यह मनाही हुक्म मुझे तो अुचित मालूम होता है। अक्सर कर्ममें अकर्म और अकर्ममें कर्म रहता है। अिसलिअे हिन्दू और मुसलमान दोनोंसे मैं आग्रह करता हूं कि वे यह दिन मनानेकी हलचल न करें।

"लोग अपने अपराधोंको स्वेच्छासे कबूल करने आते हैं, यह बहुत ही अच्छा चिह्न है। अिससे और भी बहुतसे लोगोंकी हिम्मत बढ़ेगी। अुस हिम्मतके लिअे जनताके मनमें अुनके लिअे आदर भी जरूर पैदा होगा। अिससे सारे प्रान्तकी प्रतिष्ठा तो बढ़ेगी ही, परन्तु देशमें भी अुसकी छूत फैलेगी।"

मैं तो प्रार्थनासे आकर तुरन्त ही बापूजीको दूध और हिन्दी प्रवचन देकर सो गअी। खूब थक गअी थी। साढ़े नौ बजे बापूजीने अुठाया। मुझे सोअी हुअी देखकर वे बहुत खुश हो गये। अिस तरह 'अबोला' छूट गया!

फिर बापूजीका बिस्तर करके नियमानुसार दूसरा कामकाज निबटाया। साढ़े दस बजे सब सो गये।

पटना,
२३–३–'४७

वापूजीकी पेन्सिल वहुत छोटी हो गअी थी, अिसलिअे कल रातको मैंने वह ले ली थी। अुसे मैंने वापूजीके हाथसे लेकर रख दिया और अुसकी जगह नअी पेन्सिल धर दी। रातको साढ़े वारह वजे वापूजीने मुझे अुठाया और कहने लगे, "मेरा वह पेन्सिलका टुकड़ा ले आओ तो!" पेन्सिलके टुकड़ेके नामसे मैं भरी नींदमें होने पर भी जरा घवरा गअी। विचार किया कि अिस समय वापूजी अुसका क्या करेंगे? परन्तु वापूजीने वहुत ही शांतिसे टुकड़ा ले आनेको कहा है, अिसलिअे जरूर कोअी न कोअी वात होगी। यह सोच कर मैं रातको वापूजीके कमरेमें गअी। (हम गंगाके घाट पर जहां सोते हैं वहांसे रहनेका कमरा जरा दूर है।) अन्दर जाकर लालटेन जलाअी और टुकड़ा ढूंढ़ने लगी। मैंने याद रखकर और संभाल कर तो वह टुकड़ा रखा ही नहीं था। मुश्किलसे दो अिंचकी पेन्सिल होगी। अिसलिअे कितना ही अिधर-अुधर ढूंढ़ने पर भी क्षणभरमें तो पता कैसे लगता? ढूंढ़नेमें सवा वज गया। वापूजी स्वयं अकेले अन्दर आये और पूछा, "क्यों, नहीं मिलती?" मैंने कहा, "वापूजी, कहीं न कहीं रखकर मैं भूल गअी हूं।" वे वोले, "ठीक, सवेरे ढूंढ़ लेना। अव सो जाओ।" मैं चुपचाप सोने चली गअी। परन्तु नींद नहीं आ रही थी। वापूजी तो तुरन्त सो गये। नियमानुसार साढ़े तीन वजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद फिर वापूजीने पेन्सिलकी याद दिलाअी। मेरी पूछनेकी हिम्मत नहीं हुअी कि "अिस समय अुस टुकड़ेका क्या करेंगे?" अिसलिअे फिर ढूंढ़ने लगी। वापूजीका वगलझोला ही रातको नहीं देखा था। वाकी तो हर चीज — सन्दूक, कितावें सभी चीजें ढूंढ़ डाली थीं। अुस वगलझोलेको अुलटाने पर अन्दरकी अेक छोटीसी जेवसे पेन्सिल टपक पड़ी। मिलते ही मैंने अीश्वरका अपार अुपकार माना। तुरन्त वापूजीको दे दी। परन्तु कुछ भी कहे वगैर या अुस पेन्सिलके मिलने पर आनंद या शोक प्रकट किये विना अुतनी ही नरमीसे वापूजीने कहा, "ठीक है, मिल गअी तो अव रख दो। अभी जरूरत नहीं है।"

मुझे ये वाक्य सुनकर वापूजी पर वड़ा गुस्सा आया। अितनी छोटीसी पेन्सिलके लिअे रातभर खुद भी परेशान हुअे और मुझे भी परेशान किया। और जव मिली तो कहते हैं अव नहीं चाहिये। अिसका क्या मतलव?

परन्तु अिस वार यह सोचकर वहुत संभाल कर रख दी कि कहीं फिरसे अचानक अिसकी मांग न कर वैठें।*

* यह वात मैं विलकुल भूल गअी थी। परन्तु अिसके अनुसंधानमें अिससे आगेकी अेक वात अिसके साथ ही वता देती हूं। ता० ६–४–'४७ को हम नअी दिल्लीमें थे और हमारा मुकाम भंगी-निवासमें था। अुस समय लॉर्ड माअुन्टवेटनके साथ देशके भविष्यके विकट प्रश्नोंकी चर्चा हो रही थी। अिसलिअे वापूजीको अेक मिनटकी भी फुरसत नहीं रहती होगी, अिसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। अैसे विकट प्रश्नोंमें लगे होने पर भी बापूजीका दिमाग कैसा काम करता था? मुझे अुस दिन फिर रातको १२ वजे अुठाकर कहा, "पटनामें मैंने तुम्हें जो काली पेन्सिलका टुकड़ा दिया था वह लाना तो।" मैं तुरन्त दौड़ी और पांच ही मिनटमें वगलझोलेमें रखी डिव्वीमें से पेन्सिलका टुकड़ा ले आअी।

वापूजी कहने लगे, "हां, अव तुम मेरी परीक्षामें अुत्तीर्ण हुअी हो। तुम जानती हो कि हमारा देश कितना गरीव है? हजारों गरीव वालकोंको पेन्सिलका अितना छोटा टुकड़ा भी लिखनेको नहीं मिलता। तव हमें क्या अधिकार है कि अिस प्रकार जहां-तहां पेन्सिलका टुकड़ा रख दें अथवा वेकार समझ कर फेंक दें? अभी तो वह वहुत काम दे सकता है। हमारे देशमें अितना-सा पेन्सिलका टुकड़ा सोनेके टुकड़ेके वरावर है। यह जानकर तुम्हें पहले ही दिन अुसे संभालकर रखना चाहिये था। परन्तु तुमने लापरवाहीसे अुसे रख दिया था। क्योंकि तुम्हारा खयाल होगा कि वापूके पास वहुतेरी पेन्सिलें आती हैं। आज तुम तुरंत ले आओीं, अिसलिअे तुम परीक्षामें पास हो गअी हो। और मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारे हाथमें अव चीजें सौंपी जा सकती हैं, क्योंकि अव तुम जिम्मेदारीके साथ संभालकर अुन्हें रख सकती हो।"

आज भी पेन्सिलका वह टुकड़ा मेरे अनेक पाठोंके खजानेमें अेक प्रत्यक्ष पाठके रूपमें प्रसादीकी तरह मेरे पास सुरक्षित है। अिस प्रसंगसे पता चलता है कि वापूजी छोटी-छोटी वातों पर भी कितना गहरा विचार करते थे। अुनकी अिस वारीकीको शब्दोंमें व्यक्त करना वड़ा कठिन है। परन्तु पेन्सिलके टुकड़ेकी अिस आदर्श चिन्ताकी वात मेरे अनेक भव्य संस्मरणोंमें से अेक हो गअी है। वापूजी देशकी गरीवी पर कितनी गहराअीमें जाकर सोचते थे?

प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीते हुअे बापूजीने मुझे गीताके श्लोक सिखाये और लिखवाये। रातको श्री बिसेनभाअी आ गये हैं।

घूमते समय ग्लेडीस और खानसाहब साथ थे। डॉ० सैयद महमूदके साथ भी यात्रा-संबंधी बातें कीं। मालूम होता है कि अिस महीनेके आखिरमें दिल्ली जाना होगा। नये वाअिसरॉय लार्ड माअुन्टबेटनका बहुत आग्रह है। चार बजे कस्तूरबा स्मारक फंडकी बहनोंकी सभा थी। बहनोंने कुछ प्रश्न पूछे।

प्रश्न — कस्तूरबा स्मारक फंडमें काम करनेवाली बहनें राजनीतिक बातोंमें भाग ले सकती हैं या नहीं?

बापूजी — अिस सवालके दो जवाब हैं: भाग ले भी सकती हैं और नहीं भी ले सकती हैं। अगर सेवा करनी हो तो राजनीतिक मामलोंमें भाग नहीं लेना चाहिये। परन्तु मान लीजिये कि आज कांग्रेसका राज्य है, (आगे समाजवाद या साम्यवाद भी आ सकता है।) अुसमें गांवोंमें प्रचारके लिअे चरखा या खादी बेचनी पड़ सकती है। तो अैसे कामोंमें भाग लिया जा सकता है। परन्तु मान लीजिये कि कांग्रेसकी नीयत बिगड़े और खादीके बजाय वह देहातमें शराब बेचे, तो अैसे काममें सेविकाअें हरगिज भाग नहीं ले सकतीं। बल्कि जरूरत पड़ने पर अुसके विरुद्ध सत्याग्रह करेंगी। देशको लाभ हो अैसे काममें तो, भले राज्य किसी भी 'वाद' का हो, वे जरूर भाग ले सकती हैं।

प्रश्न — देहातमें नारे लगाते हैं तो मुसलमान नहीं आते। तब क्या करें?

बापूजी — खामोश रहें और अुन्हें समझायें। अितने पर भी न आयें तो नारे लगाना छोड़ दें। मेरी दृष्टिमें नारोंकी अब बहुत कीमत नहीं रही। 'भारतमाताकी जय', 'गांधीकी जय' कहकर लोगोंको छुरे भोंके गये हैं, अिसलिअे नारे अप्रिय हो गये हैं। यह सहज ही समझमें आने लायक बात है।

प्रश्न — परदा और छुआछूतकी भावना बहनोंमें से नहीं निकलती। अिसके लिअे क्या करें?

अुत्तर — न निकले तो अुन्हें समझाना चाहिये। काम करते रहना चाहिये। हम परिणामवादी न बनें। जिसे सेवा ही करनी है, अुसे अुत्तरोत्तर काम करते रहना चाहिये। और जो सही बात है अुसे मजबूतीसे पकड़े रहना चाहिये।

अेक हरिजन वहन — मेरे पास आकर कोअी वैठता नहीं। तव क्या किया जाय?

वापूजी — (हंसकर) अितनी सारी वहनें तो वैठी हैं। तुम्हें अपने मनसे यह चीज निकाल देनी चाहिये कि मैं हरिजन हूं। अिससे अपने आप सव ठीक हो जायगा।

अन्य सव कार्यक्रम नियमानुसार चला। वापूजीका मौन होनेके कारण प्रार्थनाके लिअे अुन्होंने प्रवचन लिखा। अुसमें कहा कि:

"जीवनका हेतु क्या है, यह हम समझ लें तो हमारा जीना सार्थक है। जीवनका सच्चा ध्येय जीवनकी सार्थकता है। जिसने हमें पैदा किया है और जिस शक्तिकी दयासे हम श्वासोच्छ्‌वास ले सकते है, अुस शक्तिकी सेवा अुसकी पैदा की हुअी सृष्टिकी सच्ची सेवामें समाअी हुअी है। मनुष्यमात्रकी ही नहीं, परन्तु जीवमात्रकी हमें सेवा करनी चाहिये। सवसे प्रेम रखना चाहिये। आज तो हम अिस ध्येयको भूल गये हैं, अिसलिअे आपसकी लड़ाअीमें फंस गये हैं। यदि हम यह मान लें कि अंग्रेजोंके चले जानेसे हमें स्वराज्य मिल जायगा तो हम वड़ी भूलमें हैं। अगर हम अिस तरह आपसमें लड़ेंगे, तो कोअी अेक सत्ता या दूसरी दो-चार सत्ताअें मिलकर हमें कुचल डालेंगी। अहिंसाका मार्ग अपनानेसे जो सच्चा साहस प्राप्त होता है, वह साहस जव तक न वताया जायगा, तव तक सच्ची शांति कभी स्थापित नहीं होगी।"

सभासे आकर वापूजीने दूध-खारिक और अंगूर लिये।

विसेनभाअीने आकर खूव मदद देना शुरू कर दिया है। चन्दा तो आज अुन्होंने गिना। अिसलिअे मैं भी लगभग वापूजीके समय पर ही सोनेको तैयार हो सकी। अभी दस वजे हैं।

पटना,
२४–३–'४७

रोजके अनुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके वाद वापूजीने डाक वगैराका काम किया और नियमानुसार सारा कार्यक्रम चला। मौन होनेके कारण लिखनेका काम वापूजीने अधिक मात्रामें किया। शामको डॉ० प्रकाशवहन आअीं। मेरी जांच की। शामको चार वजे हम प्रार्थना करने वरहावन गये।

यहां हिन्दुओं पर जुल्म हुआ है। यह कैसे हुआ होगा, यह जरा आश्चर्यकी बात है। वहांसे प्रार्थना करनेके लिअे राजघाट पर गये। बहुत कोलाहल था, अिसलिअे बापूजीने बहुत ही छोटा भाषण दिया। सबसे अेकता और शांतिका अनुरोध किया।

लौटते हुअे बापूजीने शाहनवाज साहबके बारेमें बातें कीं: "अिन्हें नहीं छोड़ा जा सकता। अेक दिन जो आओ० अेन० अे० में रहकर सेनामें भरती हुअे थे, वही आज मानव-सेवा करनेके लिअे अितनी सादगी अपनाये हुअे हैं। अिनके जीवनमें परिवर्तन हुआ, यह कोअी अैसी वैसी बात नहीं कही जा सकती। अुन्हें पूर्ण स्वतंत्रतासे काम करने देना चाहिये। तभी अुनका अधिक विकास होगा।"

सात बजे मुकाम पर आये। आकर डाक लिखी। बारी साहब (प्रोफेसर अब्दुलबारी, अध्यक्ष, बिहार प्रांतीय कांग्रेस) की लड़कियां आअी थीं। बापूजीसे मिलकर मेरे पास आअीं। मैं आध घण्टे तक अुनके साथ रही, अिसलिअे बारी साहब मुझ पर नाराज हुअे। क्योंकि बापूजी दूध पी रहे थे और मैं अिन बहनोंके साथ बातें करती थी। कहने लगे, "मेरी लड़कियोंके साथ बातें करनेसे तुम्हारा वक्त खराब होता है। ये तो फुरसतमें हैं। मेरी लड़कियां तो क्या, तुम्हारी सगी बहन आये, तो भी बापूजीका काम हो अुस समय तुम्हें अुसके पास नहीं ठहरना चाहिये।"

मैंने कहा, "परन्तु, यह मैं बापूजीका ही काम तो कर रही हूं। बापूजीने मुस्लिम बहनोंमें घुलने-मिलनेको कहा है। अिसलिअे अेक तरहसे मैं अेकताका ही काम कर रही हूं।" वे हंस पड़े। परन्तु अिन शब्दोंमें बापूजीके प्रति अुनकी अटूट भक्ति दिखाअी देती थी।

साढ़े नौ बजेके बाद सोनेकी तैयारी। बापूजीने आज कोकटी रुअीकी पूनियां कातीं और आध घंटेमें १६० तार निकाले। पूनियां बहुत अच्छी थीं। आजके अेक पत्रमें बापूजीने लिखा:

> तुमने . . . को जो पत्र लिखा है, अुसे मैंने नहीं पढ़ा। परन्तु अुन्होंने जो जवाब भेजा है वह मैंने पढ़ा है। मुझे वह ठीक लगता है। और जब तक वे मुझ पर विश्वास रखते हैं तब तक दूसरा लिखा भी क्या जाय? अिसके सिवा, अब तो आचरणका सवाल नहीं रहा। परन्तु जहां दंभ नहीं है, वहां मुख्य वस्तु विचार ही है न? और तुम सबके

सोचनेकी बात तो अिस समय यह रह गअी है कि मेरे विचार अनजाने भी भ्रष्ट हों, तो मेरा संग किया जा सकता है या नहीं? अगर मेरे विचार भ्रष्ट हों, तो तुम सबको — जिन्होंने आग्रहपूर्वक मेरा साथ दिया है — अपना वह साथ हटा लेना चाहिये। जहां तक मैंने समझा है, . . . यह बात स्वीकार करते हैं। अैसी मुझे आशा तो है। जो पत्र . . . को लिखे हैं, अुनकी नकलें तुम सबको भेजी होंगी। नहीं तो मंगवा लेना। मुझे जो लिखना हो निःसंकोच लिखना। . . . बड़े धर्म-संकटमें पड़ गये हैं। मैंने पत्र तो लिखा है। अुसे बन्द करनेके लिअे . . . को दिया है। . . . को बहुत दुःख होता है। अुनसे भी तुम मिलो और चर्चा करो, यह वांछनीय है। यह प्रश्न अैसा बन गया है कि कोअी भी तटस्थ नहीं रह सकता। जहां धर्माधर्मका निर्णय करना हो, वहां बीचकी स्थितिके लिअे शायद ही गुंजाअिश हो सकती है।

पटना,
२५–३–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद देवभाअीके साथ बातें कीं। . . . के बारेमें कहा जाता है कि वे लीगमें भी कुछ कुछ भाग लेते हैं। अुनके साथ बापूजीने टहलते टहलते बातें कीं। "आपको साम्प्रदायिक अेकतामें बहुत महत्त्वका भाग लेना चाहिये। सबके साथ साफ बातें करनी चाहिये। फिर भी यदि लीगके साथ अन्याय होता हो, तो कांग्रेस कमेटीके सामने अुसे रखनेमें संकोच नहीं करना चाहिये। और यदि भीतर-भीतर लीगवाले कोअी अुलटा प्रचार करते हों, तो आपको अेक मुस्लिमके नाते अपने भाअियोंको साफ कह देना चाहिये कि सच्चा मजहब क्या होता है, किसे कहा जाय तथा अुनकी भूल कहां है।"

आज बापूजी मालिशमें पंद्रह मिनट सोये। भोजनमें नियमानुसार ३ खाखरे, शाक, दूध और ग्रेपफ्रूट लिया। दो बजेसे बापूजीकी मुलाकातके लिअे आनेवालोंका तांता शुरू हुआ।

प्रार्थना बांकीपुर मैदानमें हुअी। आजकी प्रार्थनामें काफी शांति थी। प्रार्थनामें बापूजीने कहा, "मेरे सुननेमें यह आया है कि हिन्दू लोग मुसलमानोंका बहिष्कार कर रहे हैं। यह बात सच हो तो बहुत दुःखद है।

आज लीगके कुछ मित्र मुझसे मिलने आये थे। जिस मैत्रीका आधार सेनाके सिपाहियोंकी संगीन नहीं परन्तु आपसकी सद्भावना है, वह मैत्री मुस्लिम लीगी मित्रोंके सहयोगके बिना बिहारमें कभी स्थापित नहीं की जा सकती। आज नोआखालीसे आये हुओ अेक मित्र मिलने आये थे। अुन्होंने खबर दी कि वहांकी हालत खराब होती जा रही है। लेकिन मैंने जवाब दिया कि यहां मैं जो काम कर रहा हूं, अुसका असर नोआखालीमें पड़े बिना नहीं रहेगा। और अगर यहां मैं असफल सिद्ध हुआ, तो वहां मेरे आनेसे भी कोओ लाभ नहीं होगा। बाकी सबके सच्चे सहायक तो अेक भगवान ही हैं; अुन पर ही भरोसा रखना चाहिये।

"यहांके डोम भाअियोंकी हालत भी खराब है। अिस जातिके लोगोंको अपने भाओ समझ कर हमें अुनके साथ प्रेम और सहानुभूतिका बरताव करना चाहिये। यदि हिन्दू धर्मका नाश न होने देना हो, तो हिन्दुओंको यह कलंक जल्दीसे जल्दी मिटा ही देना चाहिये।"

जहानाबाद,
२६–३–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना। फिर बापूजीने हुनरभाओके साथ बातें कीं। कुछ पत्र लिखनेके बाद मुझे गीताजीका अर्थ समझाया। साढ़े छह बजे घूमने निकले। घूमते वक्त मेरी नाकमें से अचानक खूनकी धार छूटी। बापूजीने तुरन्त ही मुझे पकड़ लिया और पानी मंगाकर खुद ही मेरे सिर पर डाला। थोड़ी देर अन्दर जाकर सो जानेको कहा। बापूजी अकेले घूमे। मालिशमें मुझसे कहने लगे, "तुम्हारी नकसीर छूटनेकी शिकायत दूर नहीं हो रही है। अिससे मुझे बड़ी चिन्ता रहती है। आज प्रकाशकी सूचनाके अनुसार 'कोटेराअिज़' कराना है। देखें, अुससे क्या फायदा होता है।"

मैं सवा दस बजे दवाखाने गअी थी। आकर बापूजी और खान-साहबको भोजन कराया और सामान तैयार किया। १–४५ को यहां आनेके लिअे पटना स्टेशन पर गये। दो बजे हमारी गाड़ी छूटी। बापूजीने गाड़ीमें काता। मैं तो सो गअी थी। सवा तीन बजे यहां पहुंचे। यहांसे दस मील दूर काको नामक गांवमें गये। आजकी प्रार्थनामें जानेसे पहले कुछ निराश्रित मुसलमान भाअियोंसे थोड़ी-सी बातें कीं। बापूजीने कहा, जहां तक मुझसे हो सकता है वहां तक तो मैं नोआखालीकी चर्चा करता ही नहीं। और जब

कभी बोलना पड़ा है, तब अपने पर और अपनी जबान पर मुझे कड़ा अंकुश रखना पड़ा है। क्या मुसलमान भाअी मुझसे अैसी आशा रखते हैं कि मुसलमानोंके किये हुअे पापोंके बारेमें मैं अेक शब्द भी न कहूं? केवल हिन्दुओंके अपराधकी ही बात करूं? अगर अैसा करूं तो मैं कायर सिद्ध होअूंगा। दोनोंके पाप अेकसे हैं और दोनोंकी करनी अेकसी घृणित है।"

अिन लोगोंने अपनी शिकायतोंमें अेक बात यह भी कही कि आप अपने भाषणोंमें नोआखालीकी घटनाओंका अुल्लेख करते हैं, अुससे यहांके हिन्दुओंकी मुसलमानोंके विरुद्ध भावना दबती नहीं, अुलटी अधिक भड़कती है।

जवाबमें बापूजीने बताया कि, "आमतौर पर मुसलमान मुझे अपना दुश्मन समझने लगे हैं, अिसलिअे मुझे अपनी जबान पर बहुत ज्यादा काबू रखना पड़ता है। अुदाहरणके लिअे, पंजाबमें तो आजकल यहांसे ज्यादा करुण घटनाअें हो रही हैं। फिर भी मैंने शुरू शुरूमें अखबारोंमें आनेवाली बातोंकी परवाह नहीं की। बादमें मुझे पता चला कि अखबारोंमें जो समाचार आते हैं अुनसे भी बुरे अत्याचार वहां हुअे हैं। तो क्या आप मुझसे यह कहेंगे कि अमुक अेक जातिकी यह करनी होनेके कारण मैं अुसके बारेमें कोअी बात ही नहीं कर सकता? अिस तरह मेरे मनमें अुठनेवाली बातोंको यदि मैं दबाअूं, तो मैंने अैक्यका जो यज्ञ रचा है वह अपवित्र हो जायगा और यह सुलह-शांतिका काम हो ही नहीं सकेगा।"

अेक और शिकायत यह की गअी कि बिहारकी मौजूदा सरकारमें हमारा विश्वास नहीं है। अिसका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा, "नोआखालीके हिन्दू भी अिसी तरह कहते थे कि हमें शहीद सुहरावर्दी साहब पर विश्वास नहीं है। अुस समय मैंने कहा था कि आज आप शहीद साहबको मंत्रि-मंडलसे तुरन्त हटा नहीं सकते, क्योंकि विधान-सभामें जानेके लिअे अुनका चुनाव पृथक् साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धतिसे हुआ है। अिसलिअे सुहरावर्दी साहब जिस जातिके प्रतिनिधिके रूपमें विधान-सभा और सरकारमें हैं, अुस जातिका जब तक अुन पर विश्वास है तब तक अुन्हें कोअी हटा नहीं सकता। अुसी तरह आप अिस प्रान्तके हिन्दू मतदाताओंके चुने हुअे मंत्रियोंको कैसे अलग कर सकेंगे? पृथक् साम्प्रदायिक निर्वाचनकी प्रथासे अैसी दुर्भाग्यपूर्ण और अवांछनीय स्थिति पैदा हो गअी है। अिस प्रथाकी मैं पहलेसे ही निन्दा करता रहा हूं। मान लीजिये कि अिस सरकारको

निकाल दें। तो फिर क्या होगा? फिरसे नौकरशाहीका पहले जैसा शासन शुरू हो जायगा और अुस शासनमें जनताको किसी तरहका न्याय नहीं मिलेगा। अिस बातको छोड़ दीजिये। परन्तु आज अिन मंत्रियोंके साथ मेरा अत्यंत मित्रतापूर्ण संबंध होनेके कारण मैं अुनसे जो काम ले सकता हूं, वह गवर्नरोंके नियुक्त किये हुअे सलाहकारोंसे कैसे ले सकूंगा?"

प्रश्न — जो नये पुलिस थाने कायम किये जायं, अुनमें पुलिसके सिपाही आधे मुसलमान जातिके रखे जायं।

बापूजी — नोआखालीके हिन्दुओंकी भी यही मांग थी। मैंने अुसके लिअे अनुमति नहीं दी। आपकी मांग और नोआखालीके हिन्दुओंकी मांग, दोनों मेरे शांति-स्थापनाके कार्यको जड़से ही काट डालती हैं। यह मांग स्वीकार करनेका अर्थ यही होता है कि बिहारके टुकड़े करके अुसमें छोटे छोटे पाकिस्तान कायम किये जायं। आप जहां रहेंगे अथवा जायेंगे, वहां आपके पड़ोसी तो होंगे ही। अुनके साथ प्रीति और भाअी-भाअीकी भावनासे ही आपको रहना होगा। जिन्ना साहबने खुद भी यही कहा है कि पाकिस्तानी अिलाकेमें अल्पसंख्यक जातिके लोग अिस तरहसे रहें कि बहुसंख्यक जातिके लोगोंको अुन पर भरोसा हो। अिसी तरह आप सबका विश्वास संपादन करनेके लिअे मैं यहांके हिन्दुओंसे आग्रह कर रहा हूं। हिन्दुस्तान हो या पाकिस्तान हो, दोनों राज्योंकी बुनियाद तो आखिर लोगोंके प्रति समान न्याय और व्यवहारकी ही होगी।

प्रश्न — बिहारका थोड़ा-सा हिस्सा अलग करके अुसमें अकेले मुसलमानोंको बसाया जाय।

बापूजी — थोड़ा-सा भाग अलग निकालकर आपको (मुसलमानोंको) अलग बसानेके लिअे सरकारको मजबूर नहीं किया जा सकता। क्या नोआखालीके हिन्दुओंको अिसी तरह बंगालमें अलग बसानेके लिअे मैं बंगालके मुख्यमंत्री सुहरावर्दी साहबसे कह सकूंगा? नोआखालीके हिन्दुओंको अैसा आन्दोलन करनेके लिअे मैंने कभी प्रोत्साहन नहीं दिया। नोआखालीके हिन्दुओंसे मैंने कहा था कि आपको यहां रहनेमें डर लगता हो तो आप बंगाल छोड़ दीजिये और माल-जायदादका मुआवजा मिल जाय तो आप अन्यत्र कहीं जाकर बस जाअिये। और सरकारको जायदाद मिलती हो तब वह मुआवजा क्यों न दे? यही मैं आपसे भी कहता हूं। यदि आपकी संपत्तिका पूरा मुआवजा मिलता हो, तो आप बिहार छोड़कर जी चाहे वहां जा सकते

हैं। परन्तु मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिये कि यह बात मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। मैं तो यह मानता हूं कि अिस प्रकार अपना अपना वतन और घरबार छोड़ना बिलकुल नामर्दी है। मुझे यह भी कहना चाहिये कि सरकार यदि मुआवजा देनेको तैयार न हो, तो सरकारके लिअे यह बात अुचित नहीं कही जायगी। सरकार अिस व्यावहारिक बातमें अिनकार कर ही नहीं सकती। अिसके अलावा, हिन्दू जातिके मतसे चुने हुअे मंत्री यदि यह कहें कि यहांके हिन्दू अब काबूसे बाहर हो गये हैं, तो अुनके लिअे अपने मंत्रीपद पर बने रहनेकी अपेक्षा हिन्दुओंके अंधे क्रोधकी आगमें जल मरना बेहतर होगा। सरकारका धर्म अपनी प्रजाके सभी लोगोंको न्याय प्रदान करना है। किसीके साथ भी अन्याय करना अुसके हितमें नहीं है।

प्रश्न — बिहारके दंगोंकी जांच-कमेटीमें न्यायाधीश रूबेनकी नियुक्ति की गअी है। अिसके विरुद्ध हमारी (मुसलमानोंकी) आपत्ति है।

बापूजी — मुसलमान भाअियोंका रूबेन पर विश्वास नहीं हो, तो आप जिस आदमीको पसन्द करना चाहें कर सकते हैं। लेकिन यह आपने कभी कहा नहीं। हमें न्यायाधीश रूबेन जैसे किसी गैरमुस्लिमका भरोसा तो करना ही पड़ेगा। और अेक आदमीकी जांच-कमेटीसे कुछ भी नुकसान नहीं होगा। फिर भी आप चाहें अुन आदमियोंके नामोंकी सूची दीजिये। मैं अिसके लिअे अुचित व्यवस्था करानेकी कोशिश कर देखूंगा।

प्रश्न — जिन स्त्रियोंके अपहरण हुअे हैं, अुन्हें वापिस दिलाना चाहिये।

बापूजी — मैं जबसे बिहार आया हूं तभीसे मुझे यह बात कही गअी है; और मैंने अुनसे कहा भी है कि अैसी बहनोंके सगे-संबंधियोंके नाम मुझे दें। वे जीवित होंगी तो मैं अुन्हें ढूंढ़ निकालनेके लिअे जरूर कोशिश करूंगा।

अिस सभामें विधान-सभाके अेक सदस्य श्री . . . . मौजूद थे। अुनके विरुद्ध भी मुसलमान भाअियोंने आरोप लगाते हुअे कहा कि दंगेके दिनोंमें आपकी तरफसे हिन्दुओंको प्रोत्साहन दिया गया था। यह सुनकर वे भाअी तुरन्त खड़े हुअे और बोले, "मैं बिलकुल निर्दोष हूं। फिर भी यदि अिस सिलसिलेमें मेरे सामने अेक भी सबूत पेश किया जाय, तो मैं अिन सब भाअियोंका आभार मानूंगा। मुसलमान भाअी अपनी ही जांच-कमेटी बनायें और अगर मैं दोषी पाया जाअूं, तो कोअी भी सजा भोगनेको तैयार हूं। अिसकी प्रतिज्ञा मैं गांधीजीके सामने ही करता हूं।"

अिस सभामें काफी जानने योग्य प्रश्नोत्तर हुअे।

वहांसे प्रार्थनामें गये। प्रार्थना-सभामें बापूजीने कहा कि, "मनुष्योंमें अेक दोष यह पाया जाता है कि वे ज्यादातर अपने विरोधियोंके बारेमें खुद ही कल्पना करके गलतफहमी पैदा कर लेते हैं और अुन पर सिद्ध न हो सकनेवाले आक्षेप लगाते हैं। अिस प्रकारके व्यवहारसे कअी बार भयंकर परिणाम आ सकते हैं। कांग्रेस और लीगके बीचके मतभेद अिसी प्रकारके व्यवहारके परिणाम हैं।"

आज यहांके शरणार्थियोंका शिविर देखने गये। स्त्री और पुरुष बातें करते करते रो पड़े। बापूजीने कहा, "अिस तरह भावनाके आवेशमें नहीं आ जाना चाहिये। प्रत्येक धर्म सिखाता है कि मनुष्यमात्रको दुःख और शोकका बहादुरीसे सामना करना चाहिये। यहां आते हुअे रास्तेमें मेरी मोटर खड़ी करवाकर जब लोग जोरसे 'महात्मा गांधीकी जय' बोल रहे थे, तब मुझे सहज ही कल्पना आअी कि जैसे मेरी मोटर खड़ी करानेके लिअे लोगोंके झुंडके झुंड आ रहे हैं, अुसी तरह मुसलमानोंको मारनेके लिअे भी आये होंगे। हिन्दुओंको सचमुच शरम आनी चाहिये, और अब अैसा पागलपन न करनेकी प्रतिज्ञा लेनी चाहिये। बिहारमें यदि हिन्दू फिरसे पागल बनेंगे, तो सबसे पहले मैं अपना नाश करूंगा। मैं तो अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि हे प्रभो, सच्ची हिम्मत कैसी होती है, यह मुझे अपने अुदाहरणसे अिन लोगोंको दिखा देनेकी तू मुझे शक्ति दे। कभी कोअी मेरी हत्या करने आयें, तो भी मैं भगवानका नाम लेता हुआ अुससे प्रार्थना करूंगा कि मेरी हत्या करनेवाले वधिकोंको माफ करनेकी मुझे शक्ति दे, और अुन्हें सद्बुद्धि दे, सन्मार्ग पर ले जा।"

आज बापूजीके चेहरे पर मानसिक और शारीरिक थकावट बहुत ज्यादा दिखाअी देती थी। फिर भी पलभर आराम लिये बिना वे काम करते रहे।

खानसाहबने सबके साथ ही भोजन किया। थकावटके कारण बापूजी आज घूमे नहीं। वाअिसरॉय और सरदार दादा (वल्लभभाअी पटेल) का तार आया। बहुत करके दिल्ली जाना ही पड़ेगा। बापूजीने कहा कि मैं अकेला ही दिल्ली जाना चाहता हूं। अिसलिअे खानसाहब शायद पेशावर जायेंगे। मैं और बापूजी दिल्ली जायंगे। मृदुलाबहन, देवभाअी, हुनरभाअी यहीं बापूजीके प्रतिनिधियोंके तौर पर काम करेंगे। मुख्य संचालन मृदुलाबहन

करेंगी। परन्तु विहारका वड़ा प्रश्न है। वापूजी कहने लगे, "अिस बार तो मेरा दिल कहता है कि जाना चाहिये। जव जव मेरे मनने अिनकार किया, तव तव मैंने अैसे निमंत्रण स्वीकार नहीं किये। लार्ड वेवेलके मंत्री मेरे पास दो वार आये, फिर भी मैंने अुनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया।"

मोटरके दचकोंसे वापूजीकी कमर दुख रही थी। नोआखालीकी अपेक्षा यहांकी यात्रा मोटरके दचकोंके कारण ज्यादा कठिन सावित हो रही है। और लोगोंके वड़े वड़े समूह अेक मिनटकी भी शांति नहीं लेने देते। वापूजी ११ वजे वाद सोये।

जहानावाद,
२७–३–'४७

रोज रातको चन्दा गिननेके कारण मुझे सोनेमें वहुत देर हो जाती है। अिसलिअे वापूजीने अुठकर दातुन करते हुअे कहा कि यह काम देवभाअी संभालें। परन्तु अुनके लिअे यह काम मुश्किल होनेसे अन्तमें यह तय हुआ कि हुनरभाअी और मैं मिलकर यह काम करें। प्रार्थनाके वाद गीतापाठ करके मैंने सामान वांधा। आज तो सुवह सामान बांधते हुअे मुझे नींदके खूव झोंके आ रहे थे।

छह वजे हम मोटरमें वैठकर देहातमें घूमने निकले। वापूजीने रास्तेमें दस मिनट नींद ले ली। मेरी गोदमें सिर और खानसाहवकी गोदमें पैर रखनेका रिवाज हो गया है। मैंने आज वापूजीसे कहा, "मेरी गोदमें आप पैरं रखिये और खानसाहवकी गोदमें सिर।" परन्तु खानसाहवने अैसा करनेसे मना कर दिया। खानसाहव मुझसे कहने लगे, "मेरी गोदमें वापूजीके पैर रहते हैं, अिसलिअे मुझे पैर दवानेका सौभाग्य मिलता है। तुम तो अुनकी वहुत सेवा करती हो। मुझे अैसे वक्त सिर्फ पैर दवानेका ही मौका मिलता है। अिसे मैं अनोखा लाभ मानता हूं। यह लाभ छोड़नेकी मेरी अिच्छा नहीं है। मेरा यह अहोभाग्य कहां कि महात्माजीके पैर मेरी गोदमें हों और अुनके पैर दवानेका अनोखा मौका मुझे मिले!!"

खानसाहवके अिन भक्तिमय शब्दोंके सामने और कुछ कहनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। परन्तु अिन दोनों महापुरुषोंके वीच रहकर अैसा पवित्र दर्शन करके मैं अपनेको धन्य मानती हूं।

८॥। बजे हम धोसी पहुंचे। रास्तेमें आमाथूआ और बेलटीमें थोड़ी थोड़ी देर ठहरे। यहां पहुंचकर बापूजीने कुछ समय तक डाक देखी। मैंने सामान खोलकर नहाने-धोनेकी तैयारी की।

मालिशमें बापूजीने मुझे खानसाहबकी काफी चिन्ता रखनेको कहा: "तुम्हारे दूसरे कामोंके कारण अुनके खाने-पीनेमें कोअी बाधा न पड़नी चाहिये। दूसरा काम अगर ज्यादा हो जाता हो, तो अुसे छोड़नेमें संकोच न रखना। तुम स्वयं ही खानसाहबको खाना बनाकर खिलाती हो, यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। कारण, अुनका वजन बहुत घट गया था। वे प्रति सप्ताह अेक अेक पौंड पुनः प्राप्त कर रहे हैं। पौष्टिक और रुचिकर वानगियां बनाकर नियमपूर्वक दोनों समय भावनाके साथ खिलानेका यह परिणाम है। अतः अुनके लिअे खाना पकाने और खिलानेका काम तुम्हींको करना है। यह काम मैं और किसीको नहीं सौंपूंगा। मेरा कोअी भी अतिरिक्त काम तुम दूसरेको सौंप सकती हो।"

थोड़ी देर पहले बापूजीके पैर दबाते हुअे खानसाहबने बापूजीके बारेमें जो शब्द कहे थे और मालिशके वक्त बापूजीने खानसाहबके स्वास्थ्यके लिअे चिन्ता दिखाते हुअे अुनके खानपानकी सावधानी रखनेके बारेमें मुझसे जो शब्द कहे, अुनसे सहज ही मेरे मनमें यह विचार अुठा: अिन दोनोंमें से कौन किसका भक्त है?

भोजन आदिका क्रम नियमानुसार रहा। भोजनके समय बापूजीने अखबार सुने। १॥ बजे आराम किया। २ बजे अुठकर सन्तरेका रस लिया और कातते समय मुलाकातें शुरू हुअीं। ३ बजे फिर यात्रा पर निकले। अब्दुल्लाचक, जुल्फीपुर, अब्दुल्लापुर और ओखरी गांव देखे। ओखरीमें प्रार्थना हुअी।

अपने प्रवचनमें बापूजीने कहा: "हिन्दुओंने पागल बनकर जो बरबादी की है, वैसी ही मुसलमानोंने की है। अिसलिअे पूर्ण स्वराज्यका मीठा फल वे चख नहीं पायेंगे। मैं यह चेतावनी आपको देता हूं। नये वाअिसरॉय साहबने जो घोषणा की है, वह आप सबने देखी होगी। अुन्होंने बताया है कि 'मैं तो अब आखिरी वाअिसरॉयके रूपमें ही आया हूं।' यद्यपि अंग्रेजोंकी तरफसे की जानेवाली अैसी घोषणाओं पर हमें शंका जरूर होती है। अुसके कारण भी हैं। फिर भी मैं सबसे विनती करता हूं कि अिस घोषणाके प्रति कोअी पूर्वग्रह न बना लीजिये। अिसका सीधा ही अर्थ कीजिये और अुस पर

विश्वास रखिये। मेरा अनुभव है कि दगा किसीका सगा नहीं होता। अिसलिअे यदि अिसमें दगा हो, तो भी हम कुछ खोयेंगे नहीं। परन्तु मुझे बड़ा डर तो अिस बातका है कि देशमें जो घटनाअें हो गअी हैं, अुनके कारण हम बड़े परिश्रमसे प्राप्त किये हुअे फलको मजबूत हाथोंसे पकड़ कर रख भी सकेंगे या नहीं? मेरी बुद्धि मुझे कहती है कि वाअिसरॉयने अैसे नाजुक और गम्भीर अवसर पर जो गम्भीर घोषणा की है, अुसे वापस निगल जानेके लिअे हमीं अुन्हें लालचमें फंसायेंगे। भगवान करे अैसा बुरा अवसर हमें न देखना पड़े। परन्तु मान लीजिये कि अैसा प्रसंग आ जाय, तो अुस समये सारे देशमें यदि मैं अकेला ही हूंगा और मेरी बात सुननेको कोअी तैयार नहीं होगा, तो भी मैं पुकार पुकार कर यह कहूंगा कि वाअिसरॉयको दृढ़ता और सत्यतासे अपना वचन पालना चाहिये और ब्रिटिश हुकूमतको हिन्दुस्तानसे समेट लेना चाहिये।

"आजकल पुलिसके आदमियोंने हड़ताल कर दी है। मैं कहता हूं कि पुलिस और भंगी कर्मचारी हड़ताल कर ही नहीं सकते। वे दोनों समाज-जीवनके लिअे बुनियादी काम करते हैं। अिसलिअे अिन दोनोंको वेतनके झगड़ेके लिअे अपना काम कभी नहीं छोड़ना चाहिये। अिन लोगोंके पास अपनी शिकायतें दूर कराने और न्याय प्राप्त करनेके लिअे अनेक अुपाय मौजूद हैं। अगर मैं मंत्री होअूं तो हड़तालकी धमकीसे दबकर हड़तालियोंके सामने कोअी प्रस्ताव न रखूं। क्योंकि अिस प्रकारकी हड़तालकी धमकीमें जबरदस्ती है। और अुससे मैं कभी नहीं दबूंगा। मैं किसी भी प्रकारकी शर्तें रखे बिना केवल निष्पक्ष जांच-कमेटीका प्रस्ताव पेश करूंगा।

"अिसलिअे पुलिसवालोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे अपना मौजूदा अनुचित रवैया छोड़ दें और हड़ताल वापस लेकर जांच-कमेटीसे न्याय मांगें। पुलिस दलका अेक अेक आदमी जनताका सेवक है। और अुन सबको सीमाप्रान्तके खुदाअी खिदमतगारों जैसा व्यवहार सीखना चाहिये। जनताका प्रत्येक बालक, स्त्री, पुरुष अपना अपना फर्ज समझनेकी कोशिश करे। समाजमें चोरी न हो, डाका न पड़े, तो पुलिसकी जरूरत ही न रहेगी। और प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपना पुलिस बनकर अेक-दूसरेको सहायता देगा।

"अिन हड़तालियोंके खिलाफ कार्रवाअी करनेके लिअे बिहार सरकारने ब्रिटिश सैनिकोंका अुपयोग किया, अिससे मुझे बड़ा अफसोस होता है। चाहे

जैसा कारण हो और चाहे जिस भागमें जरूरत पड़े, तो भी हिन्दुस्तानमें शासन करनेवाली सरकारोंको अैसे मामलेमें झगड़ेको शान्त करनेके लिअे भी अंग्रेज सैनिकोंकी सेवा हरगिज नहीं मांगनी चाहिये। क्योंकि अिसका अर्थ यह होगा कि अंग्रेज लोगोंके शस्त्रबलके विना हिन्दुस्तानमें शासन करनेवाली सरकारें असहाय होकर लाचार बन जाती हैं। जिस दिन पुलिसके साथ सेनाके आदमियोंके हाथमें हिन्दुस्तानका राज्य चला जायगा, वह दिन हिन्दुस्तानके लिअे बहुत अभागा होगा।"

तीन गांवोंमें काफी चन्दा अिकट्ठा हुआ। साढ़े आठ बजे यहां (जहानाबाद) आये। आकर बापूजीने केवल गरम पानी और शहद ही लिया। फिर बापूजीने मेरी नोंध परसे भाषणका अंग्रेजी अनुवाद किया। मैं आज थक गअी थी, अिसलिअे सब कामकाज करके साढ़े दस बजे सो गअी।

पटना,
२८-३-'४७

(जहानाबादमें) रोजकी तरह प्रार्थना वगैराका कार्यक्रम रहा। बापूजीने रस पीते पीते मुझे गीतापाठ पढ़ाया। ६-४५ बजे गांव देखने गये। सारा गांव पैदल ही देखा। बापूजीने स्थानीय मुस्लिम लीगके मंत्रीके साथ अेक घण्टे तक बातें कीं। अुन्हें बापूजीने सच्ची बातोंसे अच्छी तरह परिचित किया। साथ ही नोआखालीका हत्याकाण्ड अेक बार वहां जाकर देख आनेकी सिफारिश की और कहा, "मेरा दावा है कि लीगके पथ-प्रदर्शनके बिना वहांके लोगोंकी यह हिम्मत हो ही नहीं सकती थी। परन्तु लीगवालोंने तो अेक ही सिद्धान्तको पकड़ लिया है कि 'अेक नन्ना छत्तीस रोग दूर करता है'। वे किसी बातको मानने ही क्यों लगे?" परन्तु बापूजीके सामने अुनकी युक्ति चली नहीं। अन्तमें अुन्हें जो कहना हो वह लिखित रूपमें देनेके लिअे बापूजीने अुनसे कहा। वे बड़ी मुश्किलसे रजामन्द हुअे।

१०-३० पर नहा-धोकर निबटे। भोजनमें बापूजीने केवल अेक खाखरा और जरा-सा साग लिया। दूध नहीं लिया। १२-३५ से १ तक आराम किया। अुठकर गरम पानी पीकर आग्रहपूर्वक मुझे सो जानेको कहा। १-१५ बजे पुलिस दल, जिसने हड़ताल कर रखी है, मिलने आया। परन्तु मैं सो रही थी, अिसलिअे बापूजी दूसरे कमरेमें चले गये और वहां सभा की। मैं जब अुठी तो देखा कि बापूजी अपनी गद्दी पर नहीं हैं। दूसरे कमरेमें

शतरंजी पर बैठे हैं। पीछे अेक छोटा-सा तकिया ही था। खाली शतरंजी पर आध घण्टे बैठना बापूजीके लिअे कठिन है। फिर भी मैं जाग न जाअूं अिसलिअे अुन्होंने यह सब किया। मुझे बड़ा दुःख हुआ। बापूजी पर न जाने किस जनमका मेरा लेना निकलता है कि अुन्हें अैसी असुविधाअें भुगताकर भी मैं वह लेना वसूल कर रही हूं।

३॥ बजे बापूजी हिन्दू-मुसलमानोंकी सभामें गये। मृदुलाबहनने कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी सभा बुलाअी थी। बापूजीने अुसमें अपने हृदयकी वेदना अुंड़ेली। कहा जाता है कि कांग्रेसियोंने अिन दंगोंमें महत्त्वपूर्ण भाग लिया है; और अब कार्यकर्ताओंमें काफी मात्रामें रिश्वत लेनेकी वृत्ति आ गअी है। बापूजी बोले, "मैं नहीं जानता कि मैं किस पर भार डालूंगा। परन्तु अिससे अीश्वरके प्रति मेरी श्रद्धा जरा भी विचलित नहीं होती, अुलटी बढ़ती है। अिन घटनाओंने मुझे यह भी दिखा दिया कि जिन पर मैं आधार रखता हूं वे खरे सिक्के हैं कि खोटे? खोटे हों तो भी मैं कुछ नहीं खोअूंगा। जिस दुकान पर वे जायेंगे वहांसे अपने-आप लौटा दिये जायेंगे। मैं किसीका सरदार नहीं हूं। मैं तो अेक छोटा-सा सेवक हूं। जब हमारे स्वराज्यका अरुणोदय हो रहा है, अुस समय लोगोंको यह पागलपन सूझा है।"

मलाड़ी और गंगासागर जाकर ५-३० को अल्लाहगंजमें प्रार्थना करनेके लिअे रवाना हुअे। आजकी प्रार्थनामें बहुत शोर हो रहा था। बापूजीने संक्षिप्त प्रवचन किया। अपराधियोंसे अपराध स्वीकार करनेकी अपील की और अेकता रखने पर जोर दिया।

शाहनवाज साहब पटना जाते हुअे रेलमें मिले। पटना स्टेशन पर डॉ० सैयद महमूद साहब लेने आये थे। अुन्होंने यह बुरी खबर दी कि किसीने बारी साहबका खून कर दिया। और वे तुरन्त मर गये। (अब्दुलबारी साहब बापूजीके परम भक्त थे और अुन्होंने देशके लिअे फकीरीका जीवन बिताया था। वे वर्षोंसे बिहार प्रान्तीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष थे।)

अिस अकल्पित समाचारसे सब अेकदम कांप अुठे। घर पर १० बजे पहुंचे। वहां यह बात सुनी कि किसी गुरखा सिपाहीने बारी साहबकी मोटरको रोका। वह पहरे पर तैनात था। परन्तु बारी साहबके मोटर न रोकनेसे गुरखा सिपाहीको शंका हुअी। अिसलिअे अुसने गोली चला दी। फिर भी बारी साहबने मोटरसे बाहर निकलकर अुसकी पिस्तौल छीन ली। परन्तु छातीमें गोली लगनेसे वे वहीं मर गये।

अिस सारी घटनाकी जांच कराने और 'पोस्ट मार्टम' करानेके लिअे बापूजीने श्रीबाबू (मुख्यमंत्रीको) पत्र लिखा।

रातके १२॥ बजे बापूजी सोये। बापूजीने बारी साहबके बारेमें कहा कि, "वे बड़े भले थे, लेकिन अुतने ही जिद्दी भी थे। अगर अूपरका वृत्तांत सही हो तो कहना पड़ेगा कि पहरे पर खड़े पुलिसको शंका होने पर और मोटरमें कौन जा रहा है यह देखनेके लिअे अुसके रोकने पर बारी साहबको मोटर रोकनी ही चाहिये थी। वे फकीर आदमी थे। बाल-बच्चोंके लिअे तांबेका अेक पैसा भी अुन्होंने नहीं कमाया। अुन्होंने प्रेमपूर्वक कांग्रेसकी अद्भुत और मूक सेवा की है। कांग्रेसको अुनके परिवारके निर्वाहके लिअे जरूर विचार करना चाहिये।"

पटना,
२९-३-'४७

नियमानुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें बापूजीने आज बारी साहबकी आत्माकी शान्तिके लिअे ही प्रार्थना करनेका सुझाव दिया और 'मंगल मन्दिर खोलो दयामय' भजन गानेको कहा। गीताके बारहवें अध्यायका भी खास तौर पर अुनके लिअे पाठ कराया।

प्रार्थनाके बाद तिवारीजीने अुनकी मृत्युकी हकीकतें कहीं। टहलते समय शाहनवाज साहब और बारी साहबके लड़के आये। वे बहुत अशान्त थे। अुन्हें बापूजीने खूब आश्वासन देकर कुछ शान्त किया।

११ बजे बारी साहबका शव पुलिस लाअिनमें आया तब बापूजी, मृदुलाबहन, खानसाहब और मैं वहां गये। अुनके लड़के बुरी तरह रो रहे थे और लोग कुरानकी आयतें पढ़ रहे थे।

वहांसे पूज्य बापूजी, खानसाहब और मैं बारी साहबके घर गये। वहां करुण क्रन्दन मचा हुआ था। अुनकी लड़कियां जोर जोरसे पुकार रही थीं, "बापूजी, हमारे अब्बाजान कहां चले गये?" बड़ा करुण वातावरण था। प्रभु अैसा समय किसीको न दिखाये! अुनका रोना मुझसे देखा नहीं जाता था। अुनकी लड़कियोंको आश्वासन देनेके बजाय मैं खुद रो पड़ी। अिसलिअे लौटते समय बापूजीने मुझसे कहा, "तुममें अभी तक हिम्मत नहीं आअी। गीताजीके पाठ केवल पढ़नेके लिअे ही नहीं पढ़ना चाहिये। मृत्यु

तो अेक ही सिक्केका दूसरा पहलू है। मैं तुम्हें अिसलिअे वेगम साहिवा और लड़कियोंके पास ले गया था कि वे सब तुम्हें कुटुम्वकी लड़की जैसी मानते हैं, लड़कियां तुम्हारी मित्र हैं, अिसलिअे तुम अुन्हें आश्वासन दे सकोगी। परन्तु अिसके वजाय मुझे अुन लड़कियोंके साथ तुम्हें भी समझाना पड़ा। गीताजीके पाठोंकी अैसे ही समय सच्ची परीक्षा होती है।"

वहांसे हम लगभग १२॥ वजे लौटे। आकर वापूजीके पैरोंमें घी मला। वापूजी सो रहे थे, अिस वीच मैंने सामान वांधनेकी तैयारी की। कल दिल्ली जाना है।

वापूजी १ वजे अुठे। मैं दोपहरको नहीं सोअी, अिसलिअे वे नाराज हुअे और मुझे चरखा तैयार करके सो जानेको कहा। मैं सो गअी। क्योंकि अैसा न करूं और आखिरी वक्त मुझे दिल्ली न ले जायं तो? अिसलिअे जानेकी अितनी भागदौड़ होने पर भी चुपचाप सो गअी।

३। वजे अनुग्रहवावू और कृष्णवल्लभ सहाय आये। जार्ज केटलीको और अेशियाअी सम्मेलनको तार दिये। जयप्रकाशजी और तिवारीजी आये थे। कातते कातते अुनसे वातें कीं। ५ वजे प्रार्थनाके लिअे रवाना हुअे। प्रार्थनामें जाते समय वापूजीने कर्नल शाहनवाज साहवकी वातें करते हुअे कहा: "पश्चिम आज अणुवमके पीछे पागल वना हुआ है, और अुसकी अन्तिमसे अन्तिम खोज करनेके लिअे करोड़ों रुपयोंका पानी किया जा रहा है। अुससे विलकुल अुलटे तरीके पर या अेक भी पाअी खर्च किये विना, परन्तु जानको खतरेमें डालकर, प्रेमसे लोगोंको जीतनेमें सच्चा सुख, सच्ची शान्ति और सच्ची हिम्मत है, यह दुनियाके सामने हमें रखना है। . . . जैसे शाहनवाज आअी० अेन० अे० के कैप्टन थे, वैसे ही आज वे शांतिसेनाके मोर्चे पर यहां सत्य और अहिंसाके कैप्टन हैं। अुन पर मेरी वड़ी आशा लगी हुअी है। वहुतसे यह भी कहते हैं कि शाहनवाज कहीं धोखा न दें। परन्तु दगा किसीका सगा नहीं होता। और मुझे दगा देकर नुकसान किसका होगा? मेरा तो विलकुल नहीं होगा। मृदुलावहन भी अुन पर खुश हैं।"

प्रार्थनामें वापूजीने वारी साहवको भव्य श्रद्धांजलि दी: "प्रो० अब्दुल वारी साहव वरसोंसे राजेन्द्रवावूके साथी कार्यकर्ता थे। अुन्होंने जमशेदपुर और दूसरे अिलाकोंके मजदूरोंकी अपने त्याग द्वारा अद्‌भुत सेवा की। लोगोंने अिसीलिअे अुन्हें प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षका सम्मानपूर्ण स्थान दिया।

वे बहादुर अहिंसक योद्धा थे। स्वतंत्रताकी अनेक लड़ाअियोंमें अलग अलग रंग आये, फिर भी वे कांग्रेसके ही साथ रहे।

"आज मैं अुनके बच्चोंको, अुनकी पत्नीको और परिवारको दिलासा देनेके लिअे अुनके घर गया था। बच्चे अभी कच्ची अुमरके हैं। अुनके घरमें पैर रखते ही मैं अुनके घरकी सादगीसे यह देख सका कि बारी साहब अेक प्रोफेसरके दरजेके आदमी होते हुअे भी कैसा सादा जीवन बिताते थे। अुनका घर शहरकी अेक अत्यंत तंग गलीमें है। अुन्हें रुपया कमानेके अनेक अवसर मिले, फिर भी अुन्होंने अुनसे कोअी लाभ नहीं अुठाया। सार्वजनिक धनकी वे अीमानदारी और चिन्ताके साथ रक्षा करते थे। अुनके हाथोंमें करोड़ों रुपयेका कामकाज होने पर भी वे कितने प्रामाणिक थे, यह अुनके रहन-सहनको देखकर मालूम हुअे बिना नहीं रहता। अध्यापक बारी साहब जैसे अीमानदार आदमी हमारे देशमें बहुत कम हैं।

"मैं आज पटनाके लिअे रवाना हुआ, तभी मैंने मनमें सोचा था कि पटना जाकर बारी साहबको सलाह दूंगा कि आपके अितने सम्मानपूर्ण पद और अनेक अुम्दा गुणोंके साथ आपमें जरा जरा-सी बात पर गुस्सा करनेका जो स्वभाव है अुसे काबूमें रखनेकी कोशिश कीजिये। मुझे विश्वास था कि वे मेरी सलाह मान लेते। परन्तु पटना पहुंचने पर यह बात सुनी कि वे अिस दुनियाको सदाके लिअे छोड़कर चले गये! अीश्वरने सोचा वही हुआ। परन्तु अैसे बहादुर आदमी कभी मरते नहीं हैं। वे अमर हैं। अुन्होंने जो विरासत हमें सौंपी है, अुसे हम कायम रखें।

"मैं आपको बता देता हूं कि बारी साहबकी हत्याकी तहमें कोअी राजनीतिक कारण नहीं है। बारी साहब मोटरमें बैठकर पटना आ रहे थे। आजकल चुंगीकी चोरी बहुत होनेके कारण अुसे रोकनेके लिअे सरकारने गुरखा पुलिस तैनात की है। अुसके और बारी साहबके बीच मोटर खड़ी न रखनेके कारण झगड़ा हो गया और अिस बोलचालमें अुस सिपाहीने बारी साहबको गोलियोंसे छेद दिया।"

प्रार्थनासे आनेके बाद मंत्रियोंसे बातें कीं। कल सुबह दिल्ली जाना होगा, अिसलिअे बापूजीके लिअे तीसरे दरजेके डिब्बेकी सुविधा करवाअी। मैंने दो छोटे खानोंवाला डिब्बा फिनाअिलसे धुलाकर रखवानेके लिअे श्रीबाबू (मुख्यमंत्री) से कहा।

१० वजे वाद वापूजीने प्रार्थना-प्रवचनका अंग्रेजी अनुवाद किया और सोये। मैंने सारा सामान तैयार किया। रास्तेके लिअे खाखरे वनाये। अिस समय रातके १२॥ वजे हैं। सवेरे वापूजीका अेक विस्तर ही वांधना वाकी रहेगा। वाकी सव तैयार हो गया है। खानसाहवका सामान भी तैयार कर दिया। वसे अुनका खास तौर पर तैयार करनेको कुछ है भी नहीं।

पटना, (गाड़ीमें)
३०–३–'४७, रविवार

नित्यकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठे। प्रार्थनाके वाद वंगाली पाठ पूरा करके मुझे गीताके श्लोक लिखवाये। मृदुलाबहनके साथ ६ वजे तक वातें कीं। ७ वजे जयप्रकाशजी और प्रभावतीवहन आये। वापूजी घूमने गये तव आखिरी कागजात वगैरा जो समेटने थे मैंने समेटे। अिसलिअे मैं घूमने नहीं जा सकी। ९। वजे हम स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। स्टेशन पर अपार भीड़ थी। ९॥ वजे हमारी गाड़ी चली।

अेक वढ़अी वापूजीके लिअे लकड़ीका चम्मच, खड़ाअूं और पत्थरका कांटा वनाकर दे गया था। अुसी चम्मचसे वापूजीने खाना खाया।

आज अनेक पाठोंमें अेक अकल्पित पाठ मिला। ९॥ वजे रेल चलनेके वाद मैंने वापूजीको खाना दिया: साग, दूध और खाखरे। सारा सामान पासके छोटे खंडमें रखा था। मैं वापूजीके लिअे भोजन तैयार करने गअी, तव वे खिड़कीमें से देख रहे थे। मैं खाना लेकर आअी तव वापूजीने मुझसे पूछा, "तुम कहां थीं?" मैंने कहा, "मैं आपके लिअे दूध गरम कर रही थी।" वापूजीने वाहर देखनेको कहा, परन्तु मैं समझी नहीं। वापूजीने मुझसे पूछा, "अिस दूसरे खंडके लिअे किसीसे तुमने कुछ कहा था?" मैंने कहा, "हां, वापूजी, अेक ही खंडमें सव कुछ रखा जाय तो आपको तकलीफ हो, अैसा सोचकर मैंने श्रीवावूसे कहा था कि दो खंड हों तो ज्यादा अच्छा।" अिससे वापूजी और भी नाराज हुअे। "कैसा लूला वचाव है तुम्हारा? अन्धा प्रेम अिसीका नाम है। तुम्हें पता है कि वाअिसरॉयने मुझसे हवाअी जहाजमें आनेको आग्रहपूर्वक कहा था और मैंने अिनकार कर दिया था? अिस पर वेचारी मृदुलाने स्पेशल गाड़ी लगवानेके लिअे मुझसे हां करानेको अपनी कअी युक्तियां आजमाअीं और अनुनय-विनय किया। परन्तु मैंने समझाया कि अिसमें मेरी अेक गाड़ीके लिअे कितनी

गाड़ियोंको ठहराना पड़ेगा और कितने खर्चके खड्डेमें अुतरना होगा! हिन्दुस्तानके हजारों-लाखों गरीब वायुयानमें न बैठें, तो मैं कैसे बैठ सकता हूं?

"अिसलिअे स्पेशल गाड़ीके लिअे तो मैंने मना ही कर दिया। तुमने जैसे आज अेक खंड अधिक मांगा, वैसे अगर मेरे लिअे सलून मांगा होता तो वह भी मिल जाता। परन्तु क्या वह तुम्हें और मुझे शोभा देता? मैं जानता हूं कि तुम प्रेमके वश होकर मेरी अितनी संभाल और चिन्ता रखती हो। परन्तु मुझे तो तुम्हें अूंचा अुठाना है, नीचे नहीं गिराना है।

बापूजी अत्यन्त दुःखी होकर — व्यथित मनसे अेक सांसमें अितना बोल गये। मेरी आंखोंसे आंसुओंकी धार बह चली। मैंने मनको खूब दृढ़ रखनेका प्रयत्न किया, परन्तु वह वशमें न रहा।

बापूजी कहने लगे, "अगर तुम मेरी बात समझ गअी होतीं तो रोना न आता।"

मुझे डर था कि कहीं मेरी अिस भूलके लिअे बापूजी कोअी कड़ा कदम न अुठा लें; अुपवास न कर बैठें। कारण, बापूजी हमेशा दूसरेकी गलतीको अपनी ही गलती मानते थे और अुसका प्रायश्चित्त भी खुद ही करते थे।

अितनेमें मिरजापुर स्टेशन आया। बापूजीने स्टेशन मास्टरको बुलाया। मेरी सारी बात कही, "यह मेरी पोती है। बेचारी भोलीभाली है। मुझ पर प्रेम और भक्ति रखती है, अिसलिअे यही सोचनेमें अपनी अकल दौड़ाया करती है कि मुझे कैसे कम तकलीफ हो। परन्तु अिसे पता नहीं कि अिससे मुझे अधिक कष्ट होता है। अब अिस सामानको हटवाकर अिस खंडका अुपयोग आप दूसरे मुसाफिरोंके लिअे कीजिये।"

परन्तु स्टेशन मास्टरने विनती की, "आप कहें तो मैं दूसरा डिब्बा लगवा दूं।"

बापूजी बोले, "दूसरा डिब्बा तो लगवा ही दीजिये, परन्तु जरूरतसे ज्यादा चीजें अिस्तेमाल करना भी हिंसा है, चोरी है, परिग्रह है। आप क्या मिलनेवाली चीजोंका दुरुपयोग करवाकर अिस लड़कीको बिगाड़ना चाहते हैं?" अन्तमें बेचारे स्टेशन मास्टर शरमा गये और मैंने चुपचाप सामान हटा लिया। हमारे डिब्बेमें भीड़ हो गअी, परन्तु यह बापूजीको अच्छा लगा। मुझसे कहने लगे, "मैंने तुम्हें आज कितना बड़ा पाठ सिखाया है? तुम अुसे स्वीकार करनेके बजाय रो पड़ीं। यह मुझे अच्छा नहीं लगा।"

मैंने कहा, "मुझे डर यह लगा कि मेरे कसूरको आप अपने अूपर लेकर अुपवास या और कोअी अिसी तरहका कदम न अुठा लें।"

मुझे प्रेमसे थपथपा कर वोले, "क्या मैं पागल हूं ?"

मिरजापुरमें श्यामकुमारी वहन नेहरूने फल दिये। वापूजीने मृदुला-वहनके लिअे अेक पत्र भिजवाया। ३॥ वजे मिट्टी रखी। ४॥ तक वापूजीने काता। मालिश और स्नानके सिवा और सव काम नियमानुसार हुआ। दोपहरको खानसाहव वापूजीको पंखा करते हुअे पैर दवा रहे थे।

अलाहावादमें तो अितनी अधिक भीड़ थी कि अुसे कावूमें रखनेके लिअे रामधुन शुरू कराअी। चन्दा भी वहुत अिकट्ठा हुआ। हरिजन-कोषके लिअे सोनेकी तीन अंगूठियां आअीं। यहां अखवार मिले। आनन्द हिंगोरानी और गंगीवहन आये थे। . . .ने कानका अिलाज करानेके लिअे अमेरिका जानेकी अिच्छा प्रगट की। वापूजीसे अिजाजत मांगी।

वापूजीने लिखा, "अगर करोड़ों वहरोंको अमेरिकाका अिलाज मयस्सर नहीं हो सकता, तो अुनमें से हमारे जैसा कोअी अेक (तुम अुनमें से अेक हो) विदेश कैसे जा सकता है? रामनामके आधार पर जो कुछ सम्भव हो वह अिलाज यहीं (देशमें) कराओ। वहां जाकर अच्छे ही हो जाओगे अिसकी कोअी गारण्टी है?"

शामको प्रार्थना हुअी। चलती गाड़ीमें प्रार्थना करनेमें बड़ा आनन्द आया। फिर वापूजीने दूध वगैरा लिया। ८। आठ वजे बापूजी लेटे। मैंने सिरमें तेल मला; खानसाहवने पैर दवाये।

१० वजे कानपुर स्टेशन आया। खानसाहवके तथा हमारे लिअे खाना श्री गुप्ताजीकी तरफसे आया। गुप्ताजी खुद भी हमारे साथ थे। वहुत भले आदमी हैं। वापूजीके वड़े भक्त हैं।

रातको काफी शान्ति रही। हर स्टेशन पर लोग बापूजीके दर्शन करने तो आते ही थे, परन्तु शान्ति रखते थे। फिर भी जागरण तो हुआ ही।

मैं तो ३॥ वजे वापूजीको दातुन कराकर, प्रार्थना करके तथा रस देकर वापस सो गअी। ४। वजे अुठी। सामान तैयार किया। वापूजीने वंगाली पाठ लिखा। मैं डायरी पूरी कर रही हूं। अव दिल्ली पहुंचनेमें २० मिनटकी ही देर है।

भंगीवस्ती, नओी दिल्ली,
३१-३-'४७

५-३० वजे हमें शहादरा स्टेशन पर अुतरना था। स्टेशन पर भाओी साहव (व्रजकिशनजी चांदीवाला), सरदार दादा, देवदास काका, अरुणा वहन आसफअली, कृपालानीजी, सुचेतावहन वगैरा आये थे। मैं तो जरूरी सामान लेकर अुतर गओी (वाकीका सामान दिल्ली स्टेशन पर अुतारनेका अिन्तजाम किया गया था।) और पहली ही मोटरमें भंगीवस्ती चली गओी। वापूजी अिन सवके साथ थोड़ा टहलनेके लिअे तालकटोरा वागमें गये। ६।।। वजे वापूजी आये। अिस वीच मैंने सव तैयारी कर ली। नहाकर निवटनमें दस वज गये। यहां तो अेक मिनटकी फुरसत नहीं रहती। वापूजी नहाकर आये कि पंडितजी तथा अिन्दिरावहन मिलने आये। मैं वापूजीके लिअे भोजनकी थाली लाओी। अुसमें से अुन्होंने दो खाखरे अिन्दिरावहनको दिये। अितनेमें ही लक्ष्मी काकी, देवदास काका और अुनके वच्चे गोपू और तारा आये। गोपूको वापूजीने गुड़पपड़ीका अेक टुकड़ा दिया। अुसने कितनी ही वार दादाजीको प्रणाम किया। वड़ा खिलाड़ी लड़का है।

नोआखाली जानेके वाद वापूजी पहली ही वार दिल्ली आये हैं। नोआखालीसे वे सही-सलामत लौटेंगे या नहीं, अिसमें सभीको शंका थी। १ वजे वापूजी आराम करने लेटे। परन्तु राजाजी, सुचेतावहन, घनश्यामदास विड़ला, रामेश्वरजी विड़ला, सरदार दादा, मणिवहन वगैरा अेकके वाद अेक आते ही रहे। भंगीवस्तीका नाम सव लोगोंके मुंह पर चढ़ गया है।

४।। वजे पंडितजी चीनसे अेशियाओी सम्मेलनमें आओी हुओी दो छोटी लड़कियोंको लेकर आये। और ५-४५ को वाअिसरॉयसे मिलने जानेका समय निश्चित होनेके कारण पंडितजी तथा वापूजी वहां गये। प्रार्थनाके समय वापूजी नहीं पहुंच सके, अिसलिअे समय पर मैं, प्रभुदासभाओी वगैरा जाकर प्रार्थना कर आये। हरिजन-कोषके लिअे चन्दा भी अिकट्ठा किया। १६३ रुपये हुआ। वापूजी ७।। वजे लौटे। मैंने प्रार्थना करा ली यह जानकर वापूजी वहुत खुश हुअे।

फिर सीधे घूमने चले गये। लौटने पर मैंने वापूजीसे पूछा कि वाअिसरॉय लार्ड माअुण्टवेटनकी आप पर कैसी छाप पड़ी।

बापूजी कहने लगे, "मुझे कहना चाहिये कि अिन वाअिसरॉयने, अुनकी पत्नीने और पुत्रीने मुझ पर अच्छा असर डाला है। सब मुझ पर हार्दिक प्रेम बरसा रहे थे। शरीफ खानदानके हैं और अुत्तराधिकारमें जो अच्छे संस्कार मिले हैं, वे छिपते थोड़े ही हैं? आज तो मैं कहां पढ़ा, मेरे साथ कौन कौन हैं, वगैरा बातें हुअीं। अिसी तरह तुम्हारे बारेमें भी अुनकी लड़कीसे बातें हुअीं। कल सवेरे मेरा खाना लेकर तुम्हें वहां आना है। तब अुनसे तुम्हारी पहचान कराअूंगा।"

श्रीमती सरोजिनी नायडू और जुगलकिशोरजी बिड़ला बीमार हैं। अिसलिअे रातमें बापूजी अुनसे मिलने गये। श्रीमती नायडूने (आगाखां महलसे हम अुन्हें अम्माजान कहने लगे थे।) अपने स्वभावके अनुसार खूब विनोद किया और मैंने प्रणाम किया तो कहने लगीं, "बेटी, बाकी सच्ची सेवा तुमने की है। अिसलिअे ही मुझे लगता है कि अैसे वक्त तुम बापूकी सेवा करनेको भाग्यशाली बनी हो। बेटी! मेरा आशीर्वाद है कि तुम जहां तक जिन्दी हो, और बापू तो १२५ साल तक जीनेवाले हैं, वहां तक तुम खूब अच्छी तरह बापूकी सेवा करो।"

१२५ सालकी बात सुनकर बापूजी खिल-खिलाकर हंस पड़े। घर आते आते ९।। बज गये। राजकुमारी बहन आअी थीं। अुनके साथ बापूजीने बातें कीं। खानसाहबने आज अपने मित्रके यहां खाना खाया।

शान्तिकुमारभाअी भी आये हैं।

११ बजे पैर धोकर बापूजी बिस्तर पर लेटे। खानसाहबने बापूजीके पैर दबाये। मैंने सिरमें तेल मला। मैं भी आखिरी कामकाज निबटाकर ११।। बजे सो गअी।

भंगीबस्ती, नअी दिल्ली,
१–४–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी बाहर ही पिया। राजकुमारी बहन ५ बजेके करीब आ गअीं। फिर भी बापूजीने मुझे १० मिनट तक गीतापाठ तो पढ़ाया ही।

६।। बजे मौलाना साहब आये। रातको रांचीमें दंगा हो जानेकी खबर मृदुलाबहनने टेलिफोनसे दी। बापूजीने अुन्हें रांची जानेको कहलवाया।

मृदुलावहनके वारेमें वापूजीने कहा, "यह लड़की अैसी है कि अपनी जानको खतरेमें डालकर भी वहां जरूर जायगी। अिसलिअे मैं मना करता तो भी अुसका कोअी अर्थ न होता। और मुझे अिनकार करना भी नहीं था। अुसके जैसी अेकाध लड़की भी अिस तूफानमें वहादुरीके साथ खप जाय, तो मुझे जरा भी दुःख नहीं होगा; अुलटे मैं यह मानता हूं कि अुससे जल्दी शान्ति होगी।"

७॥ वजे वापूजी घूमने निकले। वापूजीने खानसाहवको सनायके पत्ते रोज भिगोकर अुनका काढ़ा दोनों वक्त देनेके लिअे कहा था। आजसे काढ़ा शुरू कर दिया है। वापूजी घूमे अिस वीच मैंने खाखरे वनाये और मालिश, नहाने-धोने वगैराकी तैयारी की।

मालिशके समय जवाहरलालजी आये। मालिश कराते कराते वातें कीं। आज १५ मिनटमें मालिश पूरी कराअी। मौलाना साहवके साथ वातें करनेके कारण मालिशमें देर हो गअी थी, अिसलिअे मुझसे कहा, "मेरे हर कामके समयका पालन तुम्हें करना ही होगा, वर्ना यहां मैं वीमार हो जाअूंगा। तुम तो मेरी नर्स हो। अिसलिअे समय हो जाय कि तुम मुझे तुरन्त टोक ही दिया करो।"

वापूजी स्नानगृहमें थे कि राजाजी आये। आज वापूजीको अेक क्षण भरको भी चैन नहीं मिला। अेकके वाद अेक मिलनेवाले आते ही रहे। स्नानगृहमें राजाजीके लिअे कुर्सी लगवाअी। वापूजी गरम पानीके टवमें लेटे हुअे थे। राजाजीके साथ वातें करनी थीं, अिसलिअे वापूजीने मुझे अपनी हजामत वनानेको कहा। मैंने कहा, "आज तो राजाजी वैठे हैं। मेरा हाथ कांप जाय और अुस्तरा लग जाय तो? कलसे करूंगी।"

वापूजीने राजाजीसे विनोदमें कहा, "आप वैठे हैं अिसलिअे यह लड़की मेरी हजामत वनानेमें शरमाती है।"

राजाजी वोले, "मूर्ख जो है। आजकल तो नाअी रोजके पांच पांच रुपये कमाते हैं। वढ़ियासे वढ़िया धन्धा हजामतका है। और अगर वापूजी वगैर फीसके सिखलाते हों तो सीख लेने जैसा धन्धा है। तुम्हें कोअी काम-धन्धा न आता हो तो हेअर कटिंग सलून खोलकर अूपर लिख देना: 'सर्टिफाअिड वाय महात्मा गांधी'। फिर तुम्हारा धन्धा धड़ल्लेसे चलेगा,

और भूखों मरनेकी नौवत नहीं आयेगी। वापूजीकी 'नाअिन' वनना भी वड़े सौभाग्यकी वात है। समझीं!!"

(वापूजी और राजाजी खिल-खिलाकर हंस पड़े। अन्तमें कांपते हाथोंसे मैंने वापूजीकी हजामत वना दी। सौभाग्यसे कहीं अुस्तरा लगा नहीं और पहले ही दिन राजाजीने पीठ थप-थपाकर 'शावाशी' का प्रमाणपत्र दे दिया!)

नहाकर वाहर निकले कि राजेन्द्रवावू वाहर वैठे ही थे। अुनके साथ वातें करते हुअे दूध और सेव लिया। दूसरा कुछ खानेको नहीं लिया।

९ वजे वापूजी वाअिसरॉयसे मिलने जानेको रवाना हुअे। मैंने वापूजीका कमरा साफ किया। डाक छांटी और कपड़े धोये। फिर वापूजीके लिअे साग और अेक खाखरेका चूरा करके वाअिसरॉय-भवनमें ले जाना था, अिसलिअे १० वजे भाअीसाहव और मैं वहां गये।

(हमारी मोटर पोर्चमें खड़ी हुअी कि चपरासीने वाअिसरॉयके मंत्रीको खवर दी। वे आकर हमें वैठनेके कमरेमें ले गये। वहांसे अेकके वाद अेक आलीशान कमरे लांघते हुअे हम मैदानमें गये। वागमें हरे रंगकी वेतकी कुरसियों पर माअुण्टवेटन साहव और वापूजी दोनों वैठे थे। वादली धूप थी। मन्द मन्द हवा चल रही थी। सामने हरी मुलायम घास अैसी लगती थी, मानो मखमलका हरा गलीचा विछा हुआ हो। अन्दर रंग-विरंगे आकर्षक फूल अपनी सुगन्ध फैला रहे थे। अेक पेड़ पर कोयल कूक रही थी। दूसरे पक्षी भी प्रकृतिकी गोदमें वैठकर कल्लोल कर रहे थे, मानो देशके भावी प्रश्नोंके वारेमें मधुर वाणीमें शकुनके स्वर अलाप रहे हों। मालीने मेंहदीके पौधोंकी कटिंग करके आकर्षक मोर वगैरा वनानेमें अपनी सारी कला अुंड़ेल दी थी। चारों तरफ फव्वारे अुड़ रहे थे।

अन्दरकी सुन्दर कुर्सियां, सोफे, पंखे वगैरा छोड़कर दोनों कुदरतकी गोदमें वैठे थे। सूर्यदेव भी वादलोंसे कभी वाहर निकलकर अपनी सुनहली किरणें फैलाते थे, तो कभी वादलोंमें छिप जाते थे। सारा दृश्य वड़ा सुन्दर था। मुझे खयाल आया कि कैमेरा साथ लाये होते तो कितना अच्छा होता!)

हमारे पहुंचते ही लार्ड माअुण्टवेटन खड़े हुअे। भाअीसाहवसे और मुझसे हाथ मिलाया। भाअीसाहवका परिचय करानेके वाद वापूजीने मेरा परिचय कराया।

माअुन्टवेटन साहव मुझे कहने लगे, "नोआखालीके और गांधीजीके साथ आपके अनेक फोटो पत्रोंमें देखकर मेरी लड़की कहती थी कि यह कितनी सौभाग्यशाली लड़की है। आपसे मिलकर मुझे वड़ा आनन्द हुआ है। मैं अपनी पुत्रीको आपकी प्रार्थना सुननेके लिअे भेजनेवाला हूं।"

वापूजीने वाअिसरॉय साहवसे पूछा, "आपको आपत्ति न हो तो जव तक मैं खाना खाअूं तव तक यह लड़की अिस वागमें टहले, ताकि यह वरतन लेकर लौट जाय और हम वातें करें।"

माअुन्टवेटन साहव मेरी तरफ देखकर वोले, "जरूर जरूर। मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? यह सव तो आपका ही है। मैं तो अव केवल अिसका ट्रस्टी हूं। हम लोग यह सव आपको सौंपनेके लिअे ही यहां आये हैं।"

अितनेमें माअुण्टवेटन साहवके लिअे चाय और विस्कुट आये। वे चाय पी रहे थे और वापूजी खाना खा रहे थे। अिस वीच वाअिसरॉय साहवके अे० डी० सी० ने अेक फ़ोटो खींचा।

वापूजीने हंसते हंसते कहा, "आपको देखना हो तो देख लीजिये कि अिस लड़कीके पास भी हथियार हैं या नहीं?"

वाअिसरॉय साहव वोले, "आपकी सेविकाके पास अैसी कोअी चीज हो ही नहीं सकती, अिसका मुझे पूरा विश्वास है।" माअुण्टवेटन साहव सचमुच अत्यन्त विवेकी, संस्कारी और भद्र पुरुष हैं, वापूजीका कलका यह कथन विलकुल सच है।

वापूजीके खाना खा लेने पर हम लोग घर चले आये। वापूजी ११-४० को आये। आकर अुन्होंने मिट्टी ली।

१ वजे मुंशीजी आये। १-३० को सिन्धके कार्यकर्ता और चोअिथरामजी आये। अुन्होंने देशका विभाजन न करनेकी अपनी अिच्छा प्रकट की। मीरावहनने अपना चरखा कातनेके लिअे वापूजीको दिया। अुससे अुन्होंने काता। ४ वजे पंडितजी आये। अेशियाअी सम्मेलन हो रहा है, अुसमें वापूजीको आग्रहपूर्वक ले गये। खानसाहव साथमें गये। मुझे दूसरी वार ले जानेको कहा। वहांसे वापूजी प्रार्थनाके पहले आ गये। प्रार्थनामें ज्यों ही मैंने 'औजअविल्ला'— अुर्दू प्रार्थना (कुरान शरीफकी आयत) वोलना शुरू की कि हिन्दू महासभाके लड़कोंने तूफान मचाया। कहने लगे कि यहां हिन्दुओंका मन्दिर है, हम यह

आयत यहां नहीं गाने देंगे। कुछ लोगोंने अुन्हें निकाल देनेके लिअे धक्के मारे, परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा। अुन्होंने कहा, "जब तक अेक भी मनुष्यका विरोध प्रार्थनाके लिअे होगा, तब तक मैं प्रार्थना नहीं करूंगा। क्योंकि मैं अल्पमतकी पूरी रक्षा करना चाहता हूं।"

विरोध करनेवाला भाअी, जिसकी अुम्र २५–२६ वर्षकी होगी, बापूजीके पास आने लगा। बापूजी अपनी जगहसे अुठकर बिलकुल मंचके किनारे पहुंच गये। मुझे डर लग रहा था कि कहीं वह हमला तो नहीं करेगा? अेक बहन बापूजीको पीछेसे पकड़ रखनेका प्रयत्न करने लगीं। यह बापूजीको पसन्द नहीं आया। वे बोले कि मेरे और अिस भाअीके बीचमें कोअी न आये। परन्तु अितना अधिक कोलाहल मचा कि बापूजी थक गये। अन्तमें लोगोंने जबरदस्ती अुस भाअीको सभासे निकाल दिया। बापूजीने बड़े करुण स्वरमें हृदयका दुःख प्रकट करते हुअे जो कहा वह अक्षरशः अुन्हींके शब्दोंमें (हिन्दीमें) यहां देती हूं:

"यह आपने ठीक नहीं किया। अिस लड़केको आपने जबरदस्तीसे निकाल दिया। अैसा नहीं करना चाहिये था। अब वह यही कहेगा कि मैंने विजय पाअी है। वह गुस्सेमें था। प्रार्थना नहीं सुनना चाहता था। पर मैं जानता हूं कि आप सब तो प्रार्थना सुनना चाहते हैं। मैं किसीका विरोध करके प्रार्थना नहीं करना चाहता। अब आगेकी प्रार्थना मैं छोड़ देना चाहता हूं। जो प्रार्थना मैं करता हूं वह आप सब जानते हैं। नोआखाली आनेके पहले भी आपने सुनी थी। अुसमें अिस मुसलमान प्रार्थनाके बाद पारसी प्रार्थना है। फिर यह लड़की आपको मधुर भजन सुनाती और फिर रामधुन होती। मैं अब रामधुन भी छोड़ता हूं। 'औजअबिल्ला' अरबी भाषामें कुरानके अेक मंत्रका पहला शब्द है। अिसे कहनेसे आप यह समझते हैं कि हिन्दू धर्मका अपमान होता है, पर मैं अेक सच्चा सनातनी हिन्दू हूं। मेरा हिन्दू धर्म बताता है कि मैं हिन्दू प्रार्थनाके साथ साथ मुसलमान प्रार्थना भी करूं तथा अीसाअी प्रार्थना भी करूं। सभी प्रार्थना करनेमें मेरा हिन्दूपन है। क्योंकि वही अच्छा हिन्दू है जो अच्छा मुसलमान भी है और अच्छा पारसी भी है। वह लड़का जो कह रहा था कि यह हिन्दू मन्दिर है, यहां अैसी प्रार्थना नहीं की जा सकती, तो यह वहशियाना बात है। यह मंदिर तो भंगियोंका मंदिर है। अगर चाहे तो अेक अकेला भंगी मुझे यहांसे अुठाकर फेंक दे सकता है। लेकिन वे मुझसे प्रेम करते हैं। वे जानते हैं कि मैं हिन्दू ही हूं। अुधर जुगल-

किशोर बिड़ला मेरा भाअी है। पैसेमें वह बड़ा है, पर वह मुझे अपना बड़ा मानता है। अुसने मुझे अेक अच्छा हिन्दू समझकर यहां टिकाया है। अुसने जो बड़ा भारी मंदिर बनवाया है अुसमें भी मुझे ले जाता है। अितने पर भी यह लड़का कहता है कि तुम यहांसे चले जाओ, तुम यहां प्रार्थना नहीं कर सकते तो वह घमण्ड है। लेकिन आप लोगोंको अुसे प्रेमसे जीतना चाहिये था। आपने तो अुसे जबरदस्ती निकाल दिया। अैसी जबरदस्तीसे प्रार्थना करनेमें क्या फायदा? वह लड़का तो गुस्सेमें था। यह गुस्सा ही दीवानेपनका आरंभ है!

"अभी अिस लड़कीने जो श्लोक सुनाये, अुनमें यह बात कही गअी है कि जब आदमी विषयोंका ध्यान करता है—विषय माने अेक ही बात नहीं, पर पांचों अिन्द्रियोंके स्वादोंका ध्यान धरता है—तो वह काममें फंसता है। फिर वह क्रोध करता है, और तब अुसे सम्मोह यानी दीवानापन घेर लेता है। अैसे ही दीवानेपनसे देहातियोंने विहारमें अैसी बात कर डाली कि मेरा सिर शरमसे झुक गया। . . ."

अितनी बात अुस भाअीके बरतावके दुःखसे कही।

फिर बापूजीसे पंजाब जानेको कहा गया। बापूजीने कहा, "मुझे मेरा अन्तरात्मा कहेगा तब पंजाब तुरन्त चला जाअूंगा। नोआखाली गया तब किसीके कहनेसे नहीं गया था। अिसलिअे जब मुझे अैसा प्रतीत होगा कि मुझे पंजाब जाना चाहिये तो मैं तुरन्त चला जाअूंगा।

"अंग्रेज तो अब जा रहे हैं। वाअिसरॉय साहबने मुझसे कहा कि आज तक तो हम यहांसे नहीं हटे, परन्तु अब आपकी अहिंसाकी जीत हो गअी है। हम आपकी अहिंसक लड़ाअीसे जा रहे हैं। आप कहेंगे कि वे बनावटी बात कर रहे हैं; परन्तु मैं कहता हूं कि हमें सदा सीधा अर्थ लगाना चाहिये, और जब तक कड़वा अनुभव न हो, तब तक गलत पूर्वग्रह नहीं बनाने चाहिये।

जवाहरलालजीके बारेमें बापूजीने कहा :

"ये लोग जो अेशियाके सभी मुल्कोंसे यहां बात करने आये हैं, जवाहरलालसे कितने प्रेमसे बातें करते हैं? सब अुस पर फिदा हैं। अीश्वरकी कृपासे हमारे पास जवाहर पड़ा है, जो सारी दुनियाको अपनाना चाहता है। क्या अुसको शोभानेके लिअे भी हमें शांतिसे नहीं रहना चाहिये?

वाअिसरॉयके वारेमें वोलते हुअे वापूजीने कहा :

"अव मैं थोड़ी वाअिसरॉयकी वात वता दूं। कल मैं अुनके पास दो घंटेसे ज्यादा रहा। और आपकी प्रार्थनामें न आ सका। यह अच्छा हुआ जो अिस लड़कीने प्रार्थना शुरू करा दी, क्योंकि मैं कह गया था। आज दो घंटे तक वाअिसरॉयने वातें कीं। अुन्होंने कहा कि मैं सचमुच कोशिश कर रहा हूं। अुन्होंने यकीन दिलाया कि 'मैं आखिरी वाअिसरॉय हूं। मैं हिन्दुस्तान आना नहीं चाहता था। समुद्रमें ही रहना चाहता था। पर मजवूर कर दिया तव आया हूं।' वे काफी कोशिश कर रहे हैं कि हम शांत हो जायं। वे शराफतसे चलते हैं। यदि हम भी शराफतसे चलेंगे तो दुनियामें जो कभी नहीं हुआ वह होनेवाला है।"

आजकी अिस घटना पर वापूजीके मनमें भारी मंथन चल रहा है। मुझसे वोले, "मेरी अहिंसाकी सच्ची कसौटी यहां होनेवाली है। परन्तु तुम प्रार्थना करानेवाली हो। जितनी शुद्धतासे तुम हृदयपूर्वक प्रार्थना कराओगी, अुतना असर आम लोगों पर अुसका जरूर पड़ेगा। और अिससे जनता अेक नया पाठ सीखेगी। अिसमें तुम्हारी जिम्मेदारी कुछ कम नहीं है। रामनाम हृदयपूर्वक लिया जायगा तो रामजी अपने आप ही सवको सद्वुद्धि देंगे। अिसमें मुझे लेशमात्र भी शंका नहीं है।"

७।। वजे कांग्रेस कार्य-समितिकी वैठक हुअी। वहुत गरमागरम चर्चा हुअी। वापूजी पाकिस्तान वनानेके विलकुल विरुद्ध हैं, परन्तु जिन्ना साहव अपनी जिद नहीं छोड़ेंगे। अभी तक कहीं भी जैसी चाहिये वैसी शांति कायम नहीं हुअी है; दंगे जारी ही हैं। जहां शांति हुअी है वहां कानूनसे अर्थात् फौजके कारण हुअी है, हृदयसे नहीं। जनताका मन अस्वस्थ हो गया है। सिन्धियोंका प्रश्न वड़ा मुश्किल है। पाकिस्तान होने पर वातावरण और भी अुग्र वनेगा, अैसा वापूजी मानते हैं। अन्तरिम सरकारमें भी मतभेद है। लियाकतअली साहव जैसा चाहिये वैसा सहयोग नहीं देते। देखें, क्या होता है?

गरमी अभीसे सख्त पड़ने लगी है। कुदरती गरमी है और देशके भविष्यके विषयमें लोगोंके मन अुवल रहे हैं। भगवान अुसमें शीतलता अुत्पन्न करे और अिस महायज्ञको सफल वनावे, यही हार्दिक प्रार्थना है।

९॥ वजे टहलते हुअे वापूजीने मीरावहनके साथ वातें कीं। . . . के साथ वातें कीं और अुन्होंने सारा हाल जाननेके वाद स्वीकार किया कि, "मेरा जो खयाल था वह गलत था। आप जो कर रहे हैं अुसे मैं समझी नहीं थी। मुझे कुछ भी अनुचित नहीं लगता।" पैर धोते समय वापूजीने मुझसे कहा, "तुमने देखा न? वे अितनी सरल हैं कि अपने सब विचार वापस ले लिये। अंग्रेजोंमें अैसी सरलता वहुत पाअी जाती है। वे प्रत्येक वस्तुका वारीकीसे अध्ययन करते हैं। अुन लोगोंकी यह सबसे बड़ी खूबी है।"

ठीक १० वजे वापूजी विस्तर पर लेटे। मेरा और वापूजीका विछौना चौकमें किया। खानसाहव भी चौकमें वाहर ही सोये।

मैंने वापूजीके सिरमें तेल मला। खानसाहवने पैर दवाये। रातको गरमी वहुत रही। वापूजी पर थोड़ी देर मैंने पंखा झला। अुनके सो जानेके वाद अपना वाकीका काम पूरा किया।

आज वापूजीके १३८ तार हुअे। यहां भाअीसाहव (व्रजकिशनजी चांदीवाला) साथ हैं, अिसलिअे काफी राहत रहती है। वे वापूजीके अनन्य भक्त हैं और वड़े सात्त्विक हैं। अुतने ही प्रेमी और मूक सेवक भी हैं। सब लोग लगभग ११ वजे सोये।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
२–४–'४७

३॥ वजे रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके वाद वापूजीको गरम पानी और फलोंका रस देकर मैं थोड़ी देरके लिअे सो गअी।

वापूजीने मुझसे कहा कि, "तुम्हें रातको वुखार था। लगभग साढ़े वारह वजे मैं अुठा तब तुम नींदमें कराह रही थीं। शरीर पर हाथ रखा तो तप रहा था। परन्तु विलकुल मुर्देकी तरह तुम गहरी नींदमें थीं। मैंने तुम्हें हिलाया और सीधा सुलाया। पेट पर रखी मिट्टी गरम हो जानेसे हटा दी। परन्तु प्रार्थनाके समय वुखार अुतर गया था, अिसलिअे तुम्हें अुठाया। अुठानेका मन तो नहीं था, परन्तु प्रार्थनामें वाधा डालनेकी अिच्छा भी नहीं थी।"

अिस सारी वातका मुझे तो कुछ पता ही नहीं था। जब सवेरे अुठी तो जरा कमजोरी मालूम हुअी। परन्तु मैंने मान लिया था कि थकावटके

कारण होगी। फिर भी बापूजीने कहा असलिअे रातमें बुखार होगा ही। मेरे लिअे बापूजीकी चिन्ता चरम सीमाको पहुंच गअी है।

बापूजीने . . . को लंबा पत्र लिखवाया। अुससे मालूम होता है कि सरदार दादा पर आजकल कामका कितना असह्य भार रहता है, अुन्हें समयकी कितनी तंगी रहती है और बापूजी अुनके समयकी कितनी साव-धानीसे रक्षा करते हैं। बापूजीने लिखवाया :

> यहां आया हूं, परन्तु सरदारसे दो-चार मिनटके लिअे मिल लेता हूं। अुनके कामका विस्तार अितना अधिक हो गया है कि अुन्हें बात करनेमें लगाना भी मुझे अच्छा नहीं लगता। अपने बारेमें और 'हरिजन' के बारेमें अुनके विचार जाननेके लिअे भी अुनका समय लेना मुझे पसन्द नहीं। सारे मंत्रि-मण्डलका कामकाज देखता हूं, तब मुझे लगता है कि समय तो केवल मेरे पास ही है, अिन लोगोंके पास नहीं है। यह बात विचित्र है, फिर भी सच है।

साढ़े छह बजे राजेन्द्रबाबू आये। बापूजीको ब्लड प्रेशरके कारण थकान-सी लगती थी। मालिशमें २० मिनट सोये। अेशियाअी सम्मेलन हो रहा है, अिसलिअे बाहरके लोग भी बड़ी संख्यामें मिलने आते रहते हैं। ११–३० पर कपूरथलाके महाराजा मिलने आये। अुन्होंने बापूजीसे संदेश मांगा। बापूजीने कहा, "आप राजा न रहकर प्रजाके सेवक बन जाअिये, यही मेरा सन्देश है। मैं और कुछ नहीं कह सकता।"

१२–३० पर आराम करनेको लेटे। घी मलवाते हुअे मुझसे कहने लगे, "अिस समय कामका कोअी पार नहीं है। अिसलिअे तुम्हें संभालना है।" कुछ पत्रोंका अुत्तर देनेकी सूचना की। कुछ भाअी-बहनोंने अपने नये कामोंमें बापूजीके आशीर्वाद मांगे थे। बापूजीने लिखवाया :

'प्रत्येक शुभ कार्यमें मेरे आशीर्वाद ही हैं।'

२॥ बजे बापूजी वाअिसरॉय साहबसे मिलने गये और साढ़े चार बजे लौटे।

आकर काता। प्रार्थना-सभामें बापूजीने प्रार्थनासे पहले ही कहा, "यदि किसीका कोअी विरोध हो तो अभी कह दे।"

दो युवकोंने कहा, "प्रार्थना करनी हो तो बाहर जाकर कीजिये, यहां नहीं।"

वापूजी — यह मंदिर तो भंगियोंका है और मैं भी भंगी ही हूं। ट्रस्टी आकर मुझे मना करें तो दूसरी वात है। आप मुझे नहीं रोक सकते। परन्तु करने दें तो मुझे प्रार्थना यहीं करनी हैं।

युवक — यह मंदिर सार्वजनिक है। हम यहां प्रार्थना हरगिज नहीं करने देंगे।

वापूजी — मैं वहस नहीं करना चाहता। परन्तु वहुत ही नम्रतापूर्वक कहता हूं कि आप लोग भंगियोंकी तरफसे — आपको वोलनेका अधिकार नहीं दिया गया हो तो नहीं वोल सकते। मैं भंगी हूं। मैंने पाखाना-सफाअी की है और अव भी गंदगी अुठानेको तैयार ही हूं। अगर मैं आपसे कहूं कि आप भी यह काम कीजिये तो कोअी नहीं करेगा। फिर भी आप मुझे प्रार्थना करनेसे रोकेंगे तो रुक जाअूंगा।"

अितनेमें दूसरे लोग अेकदम वोल अुठे, "हमें प्रार्थना करनी है। अेक-दो आदमियोंके लिअे आप हम सवका नुकसान क्यों करते हैं?"

वापूजीने सवको शान्त करते हुअे अुनमें से अेक युवकको संवोवन करके कहा कि, "ये हजारों आदमी प्रार्थना करना चाहते हैं, भगवानका स्मरण करनेकी अुनमें लगन है। तव तुम अेक ही अिसमें विघ्न डाल रहे हो, यह शोभास्पद नहीं है।"

दोमें से अेक युवक वैठ गया, परन्तु दूसरेने जोरसे आवेशमें आकर कहा, "आप मस्जिदमें जाकर गीताके श्लोक वोलिये न?"

वापूजी — आवेशमें आनेकी जरूरत नहीं। अिस तरह तुम हिन्दू वर्मकी रक्षा नहीं करते, परन्तु अुसके नाशका अुपाय कर रहे हो। मैं किसीसे डरकर प्रार्थना नहीं छोड़ रहा हूं। तुम मेरी हत्या भी करने क्यों न आओ, तो भी डरकर मैं प्रार्थना कभी नहीं छोड़ूंगा। तुम मेरी हत्या करो तो भी मुझे विश्वास है कि अुस समय आखिरी सांस लेते लेते तुम मेरे मुंहसे राम, रहीम, कृष्ण, करीमका जप सुनोगे। मैंने तो कह ही दिया है कि मेरे पास सव धर्मोंका निचोड़ है। अिसीलिअे मैं अपनेको हिन्दू, पारसी, सिक्ख, यहूदी और मुसलमान कहता हूं। मेरे साथ यहीं वादशाह खान जैसे महापुरुष वैठे हैं। तुम अिनकी साधुताके दर्शन तो करो। परन्तु मुझे अेक छोटा-सा वच्चा भी कहेगा कि प्रार्थना न कीजिये तो मैं नहीं करूंगा।"

युवक — आप पंजाव जाअिये।

वापूजी — वहां जाकर क्या करूं? मुझमें जितनी ताकत है वह पंजाव, विहार, नोआखालीके लिअे यहां वैठा वैठा मैं खर्च कर ही रहा हूं।

अितनेमें फिर अुस युवकको धक्के देकर निकाल देनेके लिअे कोलाहल मचा, "तुम यहांसे हटो, हमें प्रार्थना सुनने दो।"

वापूजी — अिसे धक्के न मारिये। शान्तिसे काम लीजिये।

युवक — मुझे और दो-चार मिनट दीजिये। मुझे आपसे वातें करनी हैं।

वापूजी — मेरे पास यहां समय नहीं है। मुझे हां या ना कह दो।

युवक — मैं आपको प्रार्थना नहीं करने दूंगा।

वापूजी — सव शान्तिसे वैठे रहें। मैं जा रहा हूं। कृपा करके अिस भाअीको न कोअी छेड़े, न तंग करे। अितनी मैं आप सवसे प्रार्थना करता हूं। यह भाअी भले ही अिसमें अपनी विजय माने और खुश हो। परन्तु मैं कहता हूं कि ये लोग हिन्दू धर्मका वध कर रहे हैं। आप सव समझें और अिस पर विचार करें। कल भी मैं अिसी जगह, अिसी समय, यही प्रश्न पूछूंगा और यदि अेक छोटी लड़की भी प्रार्थना करनेसे अिनकार करेगी तो मैं चला जाअूंगा।"

अंदर जाकर कमरेमें प्रार्थना करवाअी। प्रार्थना हो रही थी, तभी पंडितजी आये। वे भी चुपचाप प्रार्थनामें वैठ गये।

कल अेशियाअी सम्मेलनमें आये हुअे अलग अलग देशोंके प्रतिनिधियोंने जो प्रश्न किये, अुनके अुत्तर वापूजीने दिये।

प्रश्न — आप यह चाहते हैं कि सारी दुनिया अेक हो जाय? और वह प्रयोग सफल भी होगा?

वापूजी — आप सव अलग अलग देशोंके प्रतिनिधि यहां आये हैं। आप यदि विचार करें कि सत्य और अहिंसा क्या चीज है और अुसका क्या परिणाम हो सकता है तथा हिंसा क्या चीज है और अुसका क्या परिणाम आ सकता है, और अिन दोनोंकी तुलना करने पर यदि सत्य और अहिंसा आपको जंच जाय और अुसके लिअे निश्चय करके आप प्रयत्न करें, तो मेरा विश्वास है कि दुनियामें रहनेवाला मानव-समाज अेक हो जायगा। मेरा तो स्वप्न है ही कि दुनिया अेक वने। हमारे प्रयत्नोंकी गति धीमी हो तो

संभव है अपने जीते-जी मैं अिन आंखोंसे वह स्वप्न पूरा होते न देख सकूं। परन्तु यदि प्रयत्न पूरी तरह किया जाय, तो दुनियाकी अेकताके दर्शन हम सब अिसी जीवनमें अपनी आंखोंसे कर सकते हैं।

चीनके अेक प्रतिनिधिने पूछा, "सारे अेशियाकी अेक संस्था स्थापित करनेकी हमारी अिच्छा है। अिस बारेमें आपका क्या मत है?"

बापूजी — मुझे अिस प्रश्नके बारेमें बहुत जानकारी नहीं है, अिसलिअे मैं माफी चाहता हूं। परन्तु यह प्रश्न मुझे पसन्द आया है। अिस परिषद्के समय मैं अुपस्थित हो सकूंगा या नहीं, यह भी मैं नहीं जानता था। पंडितजीने मुझे निमंत्रण दिया तब मैंने अिनकार ही किया था। परन्तु हमारे नये वाअिसरॉय साहबने मुझे मिलनेके लिअे बुलाया, अिसलिअे आना मेरा फर्ज हो गया। अुन्होंने मुझे हंसीमें कहा, "अेशियाअी सम्मेलनके समय ही हम आपको यहां ला सके, अिसका श्रेय मुझे है।" मैंने कहा, "मैं तो आपका और पंडित नेहरूका कैदी हूं।"

"अब मूल बात पर आअूं। पत्र-व्यवहारसे तो दुनियाके हर भागके साथ मेरा संबंध है, अिसलिअे अेशियाके साथ भी है ही। परन्तु व्यक्तिगत परिचय मेरा बहुत कम हुआ होगा। अितिहासमें पहली ही बार अैसी सुन्दर पारिवारिक भावनासे यह परिषद् अिस समय भारतमें हो रही है। परन्तु मुझे दुःख है कि अिसी समय हम भारतवासी यहां आपसमें लड़ रहे हैं। अिसका अुल्लेख मुझे करना पड़ता है, परन्तु सच्ची बात हो तो अुसे स्वीकार करना ही चाहिये। झूठा आडंबर दिखानेमे क्या फायदा? हमारी यह कमजोरी आप अपने देशमें न ले जाअिये। आप हमारे दोषोंकी ओर न देखिये, गुणोंकी ओर ही देखिये।

"हिन्दुस्तान खूनकी अेक भी बूंद गिराये बिना, स्वेच्छासे आत्म-बलिदान करके स्वतंत्रता-प्राप्तिके किनारे आ पहुंचा है। हमें अेक मालिकके जाने पर दूसरे मालिककी जरूरत नहीं है। हमारी भूमि पर हमें ही मालिक बनकर रहना है। अैसा कहा जाता है कि मनुष्य अपना भावी बनानेमें समर्थ है। यह बात कुछ ही अंशमें सच है, पूरी तरह नहीं। हमारी महत्त्वाकांक्षाको सफल बनानेवाली सर्व-शक्तिमान सत्ता ही वह शक्ति दे तो ही अैसा होना संभव है। यह सर्व-शक्तिमान सत्ता 'सत्य' है। सत्य ही परमेश्वर है, अल्लाह है, या 'गॉड' है। यह बात मुझे बचपनसे ही समझाअी गअी थी।

"आप सब भिन्न भिन्न देशोंसे यहां आकर अुत्साहपूर्वक अिकट्ठे हुअे हैं। आपको अैसी परिषद् प्रतिवर्ष या दो-चार वर्षोंमें करनेका निश्चय जरूर करना चाहिये। सबको परिषद्के अच्छे, मीठे और सच्चे संस्मरणोंको अपने अपने देशोंमें ले जाकर तथा 'सत्य' की बातका प्रचार करके मानव-अेकताका यह भव्य स्वप्न सिद्ध करनेका प्रयत्न करना चाहिये।

"आप यहां किसी देशके लोगोंके विरुद्ध युद्धकी योजना तैयार करनेके लिअे अिकट्ठे नहीं हुअे हैं। और भारत तो हिंसात्मक प्रवृत्तिमें कहीं भाग लेगा ही नहीं।

"मुझे यहां अेक बात स्वीकार करनी चाहिये कि युरोपके देशोंने मिल कर हमारे अेशियाके अितने बड़े खंडके अलग अलग भाग करके वहांके लोगोंको अपने स्वार्थके लिअे अब तक लूटा और चूसा है। अब वह समय चला गया। अब तो हम सब यदि विदेशी लोगोंकी तरह स्वतंत्र जीवन बितानेका निश्चय किये बिना यहांसे बिखर जायेंगे, तो यह दुःखकी बात होगी। अैसी परिषदें नियमित रूपसे होती ही रहनी चाहिये। अिसके लिअे अुचित स्थान भारत ही है, यह भी मुझे कहना चाहिये।"

बापूजी जब हमारे देशकी कमजोरीका पहलू परिषद्में बता रहे थे, तब अुनका चेहरा अितना अधिक गंभीर और करुण हो गया था, जैसा किसी अपराधीका अपना अपराध स्वीकार करते समय होता है। वे किसीको जरा भी अंधेरेमें नहीं रखना चाहते। अिस प्रकार सत्य-अहिंसाकी पद्धति बापूजीके जीवनमें ओतप्रोत हो गअी है।

आज रातको अेशियाअी सम्मेलनकी पूर्णाहुति होनेवाली है। वहां जानेके पहले पण्डितजी बापूजीको लेने आये। मुझे भी पण्डितजीने कहा, "आज तुम्हें भी ले जाना है।"

बापूजी बोले, "पासके बिना अिसे नहीं ले जा सकते।"

पण्डितजीने विनोदमें कहा, "बापूजीकी लड़कीको तो सब जगह जानेकी अिजाजत है ही।" फिर मेरी ओढ़नी पर खुद ही बिल्ला लगाते हुअे कहने लगे, "फिर भी 'डिसिप्लिन' (अनुशासन) के लिअे पास रखना जरूरी है।"

सारी परिषद् बहुत ही अैतिहासिक थी। प्रत्येक देशका झण्डा, प्रतीक और भौगोलिक रंग-बिरंगे नकशे आकर्षक ढंगसे लगाये गये थे। देश देशके

स्त्री-पुरुष अपनी अपनी पोशाकमें मौजूद थे। अुन सवके वीच वापूजी आये। वापूजी ही सवमें वूढ़े थे। यह लाल किला भी अैतिहासिक है। महाभारतका स्मरण मानो फिरसे ताजा हो रहा था। हजारोंकी भीड़ हस्तिनापुरके अिस पुराने किलेमें अिकट्ठी हुअी थी। अुनके वीच खुले शरीर, घुटनोंसे अूपरकी धोती पहने, वापूजी जव मंच पर आये, तव सवने खड़े होकर तालियोंकी गड़गड़ाहटसे अुनका स्वगात किया। वापूजीके चेहरे पर अैसी तेजस्विता फैली हुअी थी, जिसे देखकर क्षणभरके लिअे रोमांच हो आता था। और तुरन्त ही अम्माजान (श्रीमती नायडू) ने अपने वुलवुल जैसे मीठे स्वरमें घोषणा की, "हमारे राष्ट्रपिता पधारे हैं।"

राजकुमारी वहन तथा मीरावहन भी हमारे साथ ही थीं। परंतु वापूजीका अलौकिक दर्शन करानेके लिअे वे मुझे सामने दर्शकोंके वीचमें ले गअीं और वोलीं: "वापूजीके पास वैठनेकी अपेक्षा तुम दर्शकोंके वीचसे वापूजीको देखो। हम तीनों हो सामने वैठीं, अिसीलिअे अैसा अद्‌भुत दृश्य देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

श्रीमती नायडूको जो पुतलियां भेंट की गअी थीं, वे अुन्होंने वापूजीको भेंट कर दीं। और हजारोंकी संख्यामें सारा मण्डप हास्यसे गूंज अुठा।

वापूजीने हिन्दीमें भाषण देना शुरू किया। पण्डितजीका चपल स्वभाव ठहरा। वे अेक जगहसे दूसरी जगह जाते थे और लोगोंके कानमें महत्त्वकी वातें कह आते थे। मंच पर हिन्दुस्तानके तमाम नेता वैठे थे। खानसाहव, पंडितजी, वापूजी, सरदार दादा तथा श्रीमती नायडू वगैरा अनेक नेताओंसे वह अैतिहासिक मंच सुशोभित हो रहा था।

वापूजीने हिन्दीमें भाषण शुरू करते हुअे कहा:

"मैं विदेशी भाषामें आपके सामने वोलता हूं, तव मेरे जीमें यह कहनेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती कि मैं आप लोगोंसे माफी मांगता हूं। अैसा कहकर मैं आपका अपमान नहीं करना चाहता। आप मेरी राष्ट्रभाषा नहीं समझ सकते; परन्तु प्रयत्न कीजिये। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी है। दुनियाके देश देशके व्यवहारको चलानेके लिअे आज अंग्रेजी भाषाका पहला स्थान है, यह वात सच है। और अुस दरजे पर पहुंचनेमें हमारी राष्ट्रभाषाको देर भी लगेगी। हां, जव मैं छोटा था, तव यह सुनकर कि फ्रेंच भाषाका अधिक प्रचार है मैंने वह भाषा सीख ली थी।

आजकल फ्रेंच और अंग्रेजी भाषामें स्पर्धा हो रही है। परन्तु मुख्यतः अंग्रेजी ही बोली जाती है।

"आपके सामने क्या बोलूं, अिस बारेमें मैं विचार कर रहा था। परन्तु समयके अभावमें विचारोंको व्यवस्थित नहीं बना सका। अभी अभी मैंने आपसे कहनेके लिअे थोड़ी-सी बात नोट करनेको खानसाहबसे कागज-पेंसिल मांगे। कागज तो मिल गया, मगर अिस जमानेमें पेंसिल कोअी नहीं रखता, अिसलिअे फाअुण्टेनपेन मिला। परन्तु समयके अभावके कारण अुससे भी मैं कुछ लिख नहीं सका।

"अब मुख्य बात पर आता हूं। आप सब दूर दूरसे यहां अुत्साहपूर्वक आये हैं और हमारा देश कैसा है, यह देखने आये हैं। परन्तु मुझे स्वीकार करना चाहिये कि हमारे दिल्ली, लाहौर, कलकत्ता, बंबअी, मद्रास अित्यादि बड़े शहर पश्चिमके प्रभावमें बह गये हैं। वहां न तो आपको भारतकी पोशाकका पता चलेगा और न सामाजिक रीति-रिवाजका हाल मालूम होगा। न वहां आपको हमारी सच्ची गरीबीकी कल्पना होगी और न हमारे याता-यात, धर्म वगैराका अंदाज होगा। आपको सच्चे भारतके प्राणके दर्शन करने हों, तो गांवोंमें स्थित भंगियोंके झोंपड़ोंमें जाना पड़ेगा। हिन्दुस्तान सात लाख गांवोंमें समाया हुआ है और अुन्हींमें हमारी सैंतीस करोड़की आबादी बसी हुअी है। अुन गांवोंमें आप जायेंगे तो अुन्हें देखकर आप जरा भी आकर्षित नहीं होंगे। और अुनके भीतर जाकर देखेंगे तो ही आपको सच्चा भारत दिखाअी देगा। यह सब मैं अितिहासके पृष्ठ पढ़कर नहीं कहता, परन्तु अनेक बार मैं भारतके अैसे गांवोंमें खुद गया हूं। मुझे अेक तत्त्वज्ञानीने फ्रांसकी अेक बात सुनाअी थी। वह आपके सामने पेश करता हूं। फ्रांससे सत्यकी खोज करनेके लिअे तीन वैज्ञानिक निकल पड़े और तीनों ही अेशियाके अलग अलग भागोंमें गये। अुच्चवर्णके लोगोंसे मिलने पर भी अुन्हें जो चाहिये था सो नहीं मिला। अन्तमें अेक गरीब भंगीके झोंपड़ेमें पहुंचे। और वहां अुन्हें जिस सत्यकी खोज करनी थी वह मिल गया।

"मैंने अंग्रेज अितिहासकारोंकी लिखी हुअी पुस्तकें पढ़ी हैं। अंग्रेजों द्वारा लिखा हुआ हमारा ही अितिहास शिक्षण-संस्थाओंमें हमें पाठ्यपुस्तकके रूपमें अनिवार्य रूपमें पढ़ना पड़ता है। परन्तु अपनी मातृभाषा या राष्ट्र-भाषामें हम खुद नहीं लिखते। और पाठ्यपुस्तकके रूपमें कदाचित् हमारी

भाषामें कोअी अितिहास लिखा गया हो तो वह मान्य नहीं होता। मूलतः हमारे ही साधनोंसे ज्ञान प्राप्त करनेके वजाय विदेशियोंने पराअी भाषामें हमारा जो अितिहास लिखा है, अुससे हमें ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। संस्कार और संस्कृतिके संवंधमें हमें अैसी अधोगतिका शिकार होना पड़ा है।

"ज्ञान तो पूर्वसे पश्चिमको मिला है, यह वात परभाषामें लिखा हुआ होने पर भी अितिहास सिद्ध करता है। अुदाहरणार्थ, पूर्वमें अनेक ज्ञानी पुरुष हो गये, अुनमें पहले जरथुष्ट्र भगवान हैं। वे पूर्वके देशमें पैदा हुअे और अपने ज्ञानका प्रचार अुन्होंने पूर्वसे शुरू किया। वादमें वुद्धदेव हुअे। वे तो पूर्वमें और अिस भारतभूमिमें ही अुत्पन्न हुअे। भगवान अीसा-मसीह भी पूर्वके ही थे। अीसासे पहले मूसा मिस्रमें हुअे। मुहम्मद पैगम्वर, राम और कृष्ण सभी ज्ञानी पुरुष अेशियामें हुअे। और अैसे दूसरे कअी नाम हैं, जिनका अुल्लेख यहां मैं नहीं करता। कुछ भी हो, परन्तु अेशियाके अैसे महात्माओंकी तुलनामें आनेवाले दूसरे पुरुष हों तो अुन्हें मैं नहीं जानता। अीसाका अुपदेश पश्चिममें पहुंचा और वहां विकृत हुआ। यह वताते हुअे मुझे अफसोस होता है, परन्तु अिस वातमें मैं आज नहीं पड़ूंगा।

"परन्तु मैंने आपको फ्रांसकी जो वात कही वह अिसीलिअे कि मैं आपके मन पर यह वात जमा देना चाहता हूं कि असली भारत दिल्लीमें नहीं है। आज यहां भाअी भाअीके गले काटे जा रहे हैं, जो हमारे लिअे शरमकी वात है। परन्तु हमारे अिन अवगुणोंको आप यहीं दफना जाअिये।

"अेशियाका संदेश सत्य और अहिंसाका है। आप पश्चिमका चश्मा अुतार कर देखेंगे, तभी यह सन्देश आपकी समझमें आयेगा।

"अणुवमकी नकल करके यह सन्देश आप नहीं समझ सकेंगे। मुझे तो आपके हृदयमें पहुंचना है; आपकी वुद्धि नहीं वदलनी है। हृदय जीत लूंगा तो वुद्धि अपने-आप वदल जायगी। हमारा सत्य, प्रेम और अहिंसाका सन्देश आप पश्चिममें फैलाअिये। हमारे मुल्कोंको पश्चिमवालोंने चूसा और लूटा, अिसीलिअे अुनसे वैर रखकर अुनके प्रति क्रोधका भाव न रखिये, वल्कि अुनसे प्रेम कीजिये। और अुन्हींको अपनी भूल समझने दीजिये। अिससे पश्चिम पर आपकी पूर्ण विजय हुअी कही जायगी।

"हमारे देशोंमें पैदा हुअे ज्ञानी पुरुषोंने अुत्तराधिकारमें हमें जो संदेश दिया है, अुसे हम सुशोभित करें। आज पश्चिम सच्चे ज्ञानके लिअे तड़प

रहा है। वह अणुबम बनाकर हार गया है, क्योंकि अुसने समझ लिया है कि अणुबम विनाशके मार्ग पर ले जानेवाला है। अणुबम अकेले पश्चिमको ही नहीं, परन्तु सारी दुनियाको विनाशके मार्ग पर ले जायगा। बाअिबलमें भविष्यवाणी की गअी है कि दुनियाका प्रलय होगा। यह सच साबित होगा, अगर हम जाग्रत न रहे। अिसलिअे आज पश्चिमको अुसके पापका परिचय कराअिये और सत्य, प्रेम, अहिंसा द्वारा अुसे अुद्धारका मार्ग बताअिये। प्रभुसे यही प्रार्थना है कि हमारे पूर्वजोंके दिये हुअे अिस अुत्तराधिकारको हम चारों ओर फैलायें, अैसी शक्ति हमें प्राप्त हो।"

बापूजीका अेक अेक शब्द स्पष्ट सुनाअी देता था। जिन्हें परभाषा समझमें नहीं आती थी, वे भी पूरी शान्तिसे अपने खंडके (अेशियाके) अिस महापुरुषकी वाणी सुननेको अेकाग्र हो गये थे और भक्तिपूर्वक सुन रहे थे। परिषद्‌में पूरी शांति थी। बापूजी अेक अेक वाक्य तौल कर बोल रहे थे। अुनका अेक अेक शब्द लिखा जा सकता था।

बापूजीका भाषण पूरा होते ही वे अुठे और मैं भी अुनके साथ गअी। बापूजीने मुझसे कहा कि देखनेके लिअे बैठना हो तो बैठो, परन्तु मुझे अुन्हें दूध देना था, अिसलिअे देखनेका लोभ छोड़ दिया।

बापूजीने पुराने किलेसे घर आते हुअे मुझे अेक बात कही, जिसकी तरफ शायद बहुत ही कम लोगोंका ध्यान गया होगा। मेरा तो ध्यान गया ही नहीं था। अुन्होंने मुझसे पूछा, तुम्हें कैसा लगा ? मैंने सारा वर्णन सुनाया। फिर बापूजी बोले, "तुम्हारी आंखोंने जो नहीं देखा वह करुण दृश्य मैंने अपनी आंखसे देखा। वहां काम करनेवाली स्वयंसेविकाअें तरह तरहके रेशमी विलायती कपड़े पहनकर मेहमानोंको पानी वगैरा दे रही थीं। मैंने देखा कि अधिकांश लड़कियोंके होंठ और चेहरे पफ-पाअुडरसे पुते हुअे थे। दूसरी तरफ जितने प्रतिनिधि स्त्री, पुरुष, लड़कियां अथवा लड़के थे, वे अपनी अपनी पोशाक पहने हुअे थे। अिसका बहुत असर पड़ सकता है। यदि यही लड़कियां खादीकी पोशाक (वर्दी)में बिलकुल सादे ढंगसे सज्ज होतीं, तो मेहमानों पर अुसका भव्य प्रभाव पड़ा होता। कांग्रेसके अधिवेशनोंमें जैसी स्वयंसेविकाअें होती हैं, वैसी ही अिसमें होनी चाहिये।"

मुझे लगा कि बापूजीकी आंखें कितनी पैनी हैं। दूर बैठे बैठे दर्शकोंमें काम करनेवाली बहनोंकी विदेशी पोशाक पर अुनका ध्यान गये बिना नहीं रहा।

वहांसे आकर बापूजी दूध वगैरा लेकर लिखने बैठे। ११ बजे तक काम किया। ११ बजे बिस्तरमें लेटे। घूमना १० बजे बाद हुआ। खान-साहब ११ बजे बापूजीके पैर दबा कर सोये।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
३-४-'४७

प्रार्थनाके बाद दातुन करते हुअे . . . के हमारे राजदूतके बारेमें बातें हुअीं। वे वहां अनाप-शनाप खर्च करते हैं। शराब वगैराका पीना भी बढ़ गया है। अिन समाचारोंसे बापूजी बहुत दुखी हुअे। अुन्होंने कहा:

"विदेशोंमें जाकर हमें अपनी ज्योति अधिक ज्वलंत करनी चाहिये। विदेशी लोग हमारी ओर अध्ययनकी दृष्टिसे देखते हैं। अुसके बजाय हम अुनके रंगमें रंग जाते हैं। दरअसल हमें अुन्हें अपने रंगमें रंगना चाहिये। अुदाहरणके लिअे, वहां खादी पहननेका आग्रह रखना चाहिये, नियमित कातना चाहिये, प्रार्थना करनी चाहिये, शराब और सिगार, चाय वगैरा नहीं पीना चाहिये और संभव हो तो शाकाहारी ही रहना चाहिये। जितनी सादगीसे रहा जा सके अुतनी सादगीसे भारतीय ढंगसे रहना चाहिये। अगर हम यह सब करेंगे तो वहांके लोगों पर अपनी छाप डाल सकेंगे और हमारे देशका गौरव बढ़ा सकेंगे। वहांके लोगोंको हमारे अैसे रहन-सहनके लाभ बताने चाहिये। हमारे देशके राजदूत या प्रतिनिधि वहां नियुक्त किये जायं या वहांके प्रतिनिधि यहां आवें, लेकिन अिन प्रतिनिधियोंका सच्चा अर्थ क्या है? सच्चा अर्थ यह है कि अिन प्रतिनिधियोंके द्वारा रहन-सहनमें, अुनके वर्तनमें, अुनकी पोशाकमें, अुनके खान-पानमें अुनके देशकी संस्कृतिका दर्शन दूसरे देशको हो और वह अुससे लाभ अुठाये। अिस प्रकार परस्पर लाभ अुठायें तो मैत्री होगी और मैत्रीके द्वारा विश्व-शान्ति होगी। और अिससे मानव मात्र सुख-शान्ति और प्रगतिका जीवन बितायेंगे। प्रत्येक देशमें अपना प्रतिनिधि रखनेका मूल हेतु यही है। वैसे प्रतिनिधि द्वारा व्यापार-सम्बन्धी और आर्थिक तथा आन्तर-राष्ट्रीय जो लाभ देशको होते हैं वे तो होंगे ही, परन्तु महत्त्वकी मुख्य बात तो पहली ही है। अिसलिअे हमें यह ध्यान रखना ही चाहिये कि हमारे प्रतिनिधियोंमें कहीं भी किसी प्रकारकी बुराअी न आने पाये। तभी हमारी शोभा बढ़ेगी और आज सारी दुनियामें हम पिछड़े हुअे माने जाते हैं अुसके बजाय हमें प्रमुख स्थान मिल जायगा। अंग्रेजीमें अेक

कहावत है कि संपत्ति गंवा देंगे तो फिर प्राप्त कर लेंगे, जिसने शरीर गंवाया अुसने थोड़ा गंवाया, परन्तु जिसने अिज्जत गंवाअी अुसने सर्वस्व गंवा दिया अैसा समझना चाहिये।"

वापूजीका वाकीका कार्यक्रम नियमानुसार चला। घूमते समय मौलाना साहव, राजेन्द्रवावू और राजकुमारी वहन साथ थीं। अेशियाअी सम्मेलनमें जवाहरलालजीको अपूर्व सफलता मिली है। सभी प्रतिनिधि अुनकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते हैं।

स्नानादिसे निवटनेके वाद तिव्वतके प्रतिनिधि वापूजीसे मिलने आये। प्रो० केटलीन भी थे। थेओजी शाकुने सुन्दर गलीचे, वुद्ध देवकी मूर्तियां और रेशमी वस्त्र वापूजीको भेंट किये। दलाअी लामाके पत्र भी दिये।

जापानके प्रतिनिधि आये थे। अुनमें छोटी छोटी लड़कियां भी थीं। अेक वालिका १३–१४ वर्षकी होगी। अुसके मनमें भी वापूजीको कुछ देनेका विचार आया। अुसने अपने रूमालकी अेक थैली वनाअी और अुस पर अुसी समय वहीं (वापूजीके कमरेके अेक कोनेमें) वैठकर सुन्दर कसीदेका काम किया और वापूजीको अर्पण करने लायी। परन्तु वापूजीने दुभाषिये द्वारा कहा, "मेरे पास तो अिसमें रखनेको फूटी कौड़ी भी नहीं है।" अुस लड़कीने मेहनत की थी अिसलिअे वह जरा हताश हुअी, परन्तु तुरन्त ही किसीके पाससे १०० रुपये लेकर अुसने अन्दर रखे और थैली वापूजीके सामने रख दी। वापूजी खिलखिला कर हंस पड़े और वोले, "मित्र, अिन रुपयोंका हमारे देशकी तुम्हारे जैसी छोटी छोटी गरीव लड़कियोंके अुत्कर्षमें मैं अुपयोग करूंगा। ठीक है न?"

वह अत्यन्त खुश हो गअी।

जापानी लड़कोंने वापूजीकी धोतीके नापके हाथ-कते, हाथ-वुने शुद्ध रेशमी खादीके दो टुकड़े वापूजीको भेंट किये। वापूजी सवसे हाथ मिलाते थे। अिन लड़कोंको अपना चरखा वतानेके लिअे वापूजीने मुझसे कहा।

वालकोंको वापूजीने खाखरोंके टुकड़े करके आधा आधा खाखरा खानेके लिअे दिया। काजू और किशमिश भी दिये। (वापूजीका खानेका समय हो जानेसे मैं थाली परोस कर लाअी थी। अुसीमें से यह सव दिया।)

वालक वड़े प्रसन्न हो गये। अुन्होंने प्रेमसे नमस्कार करके वापूजीके हाथकी प्रसादी ली।

ब्रह्मदेशके बालकोंने अेक सुन्दर संदूक दिया और अेक छोटा-सा बैठनेका गलीचा दिया। अेक बालकने चरखेके प्रतीकके रूपमें अेक खिलौना बापूजीको दिया और कहने लगा, "ये हिन्दुस्तानके राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कात रहे हैं।" सारा कमरा हंसीसे गूंज अुठा। ये टूटी-फूटी भाषा बोलकर प्रेमपूर्वक दी हुअी बालकोंकी अैतिहासिक प्रसादियां थीं, जो बड़ी बड़ी प्रसादियोंसे बढ़कर थीं। अिसलिअे बड़े बड़े गलीचे और दूसरी सब चीजें बापूजीने बिड़लाजीको सौंप दीं। परन्तु बापूजीके पास मैं भी अेक बालक ही हूं और मुझे भी अैसी अैतिहासिक चीजोंका संग्रह करनेका शौक है, अिसलिअे अिन सब विदेशी बालकोंके साथ मेरा परिचय कराते समय बापूजीने मुझे ये चीजें देनेको कह दिया था। अतः बादमें यह सारी बाल-प्रसादी मुझे दे दी।*

भोजन नियमानुसार चल रहा है। १ बजे आराम करके बापूजीने फलोंका रस लिया। २–२० पर अरुणाबहन आसफअलीके साथ वाअिसरॉयसे मिलने गये। गरमी बहुत बढ़ रही है।

४ बजे बापूजीके आनेसे कोअी ५ मिनट पहले जवाहरलालजी आये। कूदनेकी रस्सी कोनेमें रखी देखकर पंडितजी अुस पर स्वयं कूदने लगे। मुझसे बोले, "तुम्हें रोज सवेरे सौ बार कूदना चाहिये और अूपरसे दूध पी लेना चाहिये। अिससे तुम पहलवान बन जाओगी। फिर बुखार कैसे आ सकता है? और तुम्हारे अैसी जवान लड़कीको जुकाम भी क्यों हो?" अितनेमें बापूजीने कमरेमें पैर रखा। जवाहरलालजीके हाथमें रस्सी देखकर बोले, "क्या दोनों कूदनेकी होड़ लगा रहे हो?" सब हंस पड़े।

जवाहरलालजीने हंसते हंसते कहा, "अिस लड़कीको रस्सी कूदनेके लाभ बता रहा था। वह अिस प्रकार करे तो जुकाम और बुखार, जो बार बार आते हैं, भाग जायं। आसन भी करने चाहिये।"

बापूजी कहने लगे, "बिलकुल सच बात है।" फिर अिग्लैंडके अपने अनुभवकी बात सुनाने लगे कि "वहां बड़ी सख्त सरदी थी। मेरे पास अितने गरम कपड़े भी नहीं थे। नहाये बिना अच्छा नहीं लगता था। अिसलिअे मैं खूब दौड़ता था, जिससे शरीरमें गरमी आ जाती थी। मैं अिंग्लैंडमें अपना स्वास्थ्य बढ़िया रख सका तो केवल कसरतके प्रतापसे ही। लोगोंका यह खयाल था कि मैं मांसाहारी नहीं बनूंगा, तो काम ही नहीं चलेगा।"

---

* वह चिरस्मरणीय प्रसादी आज भी मेरे पास सुरक्षित है।

दो-चार मिनट अिस तरह आनन्दकी बातें हुअीं। फ़िर बापूजीके गादी पर बैठते ही राजनीतिक समस्याओंकी चर्चा शुरू हो गअी। क्षणभर पहले शरीरके आरोग्यकी बातें हो रही थीं, तो अब देशके आरोग्यकी बातें चलीं।

पंडितजी प्रार्थनाके समय तक बैठे। प्रार्थनामें जानेसे पहले मेहतर-संघके अध्यक्षका पत्र मिला कि बापूजी यहां न रहें। अिस संबंधमें जांच कराअी तो पता चला कि लिखनेवाले भाअी कोअी अलग ही व्यक्ति हैं और 'अध्यक्ष' कोअी दूसरे ही हैं। अध्यक्षको अिस मामलेकी कोअी खबर भी न थी।

बापूजीने जाते ही श्रोताओंको संबोधन करके अिस पत्रके बारेमें कहा, "आप देखिये तो सही कि मेरे जैसे बूढ़े आदमी पर क्या बीत रही है!

"अब मुझे आपसे थोड़ी-सी बातें कहनी हैं। फिर आप मना कर देंगे तो मैं प्रार्थना नहीं करूंगा। मुझसे कहा गया है कि मैं प्रार्थना भले ही करूं, परन्तु कुरानकी आयत न पढ़ूं। परन्तु मैं अिस तरहका नहीं बना हूं। क्या मैं अपनी जीभ काट कर प्रार्थना करूंगा? भले ही मेरा सिर धड़से अलग कर दिया जाय, परन्तु मैं प्रार्थना नहीं छोड़ूंगा। जिसे प्रार्थना न सुननी हो वह यहां न आये।

"मेरे सुननेमें अेक बात आअी है। मैं नहीं जानता कि वह सच है या झूठ। आशा तो रखता हूं कि वह झूठ होगी। कहा जाता है कि जो लोग यहां विघ्न डालते हैं वे हिन्दू महासभावाले हैं। यहां जितने जवान भाअी रहते हैं, वे सुबह व्यायाम करते हैं, मीठी प्रार्थना करते हैं, मेरे साथ मुहब्बत रखते हैं और आज अुनके नेताके साथ भी मेरी बातें हुअीं। अुन्होंने कहा कि, "हम आपकी अहिंसाको नहीं मानते। परन्तु किसीके साथ शत्रुता करनेके लिअे यह संघ नहीं बनाया गया है। हम तो कांग्रेसके कैदी हैं। जब तक कांग्रेस अहिंसाका आदेश देगी तब तक हम अहिंसक ही रहेंगे।" यह बात संघके नेताने मुझसे कही है। और मैं प्रसन्न हुआ हूं। फिर भी मैं आपके साथ झगड़ा करके यहां अीश्वरका नाम लूं तो अीश्वरका जप तो होगा, मगर वह काम शैतानका होगा। हां, आपमें से सभी (बहुमत) यह कहते कि प्रार्थना न करो तो मैं जरूर प्रार्थना करता और कहता कि आप चाहें तो मेरा वध कर सकते हैं। परन्तु हजारों मनुष्योंके बीच दो-चार आदमी ही मुझे प्रार्थना करनेसे मना करें, अुन्हें आप दबायें और मैं प्रार्थना करूं, तो वह शैतानका काम होगा।

"मेरी प्रार्थना जगतको दिखानेके लिअे नहीं है, मेरी प्रार्थना शान्तिके लिअे है। मनमें क्रोध भरा हो और मुंहसे प्रार्थना की जाय, तो अुससे कुछ लाभ नहीं होता।"

वापूजीने अितना कहकर पूछा कि आप सव खुशीसे कहें कि प्रार्थना कीजिये तो ही मैं करूंगा, परन्तु अेक छोटा वच्चा भी मना करेगा तो नहीं करूंगा। अिसके विपरीत, आप सव (वहुमत) मना करेंगे तो मैं जरूर करूंगा।

लगभग तीस आदमियोंने मना किया। हम अुठने लगे तो सभामें शोरगुल मचा। "वापू हमें प्रार्थना सुननी है। प्रार्थना होने दीजिये। सव मुखालिफ नहीं हैं। आप जरूर प्रार्थना कीजिये।"

वापूजी: "मना करनेवाले वड़े हैं। परन्तु आज तो मैं प्रार्थना नहीं करूंगा। क्योंकि मुझे अभी मरना नहीं है, काम करना है।"

शोर अितना ज्यादा वढ़ा कि वापूजीका वहांसे निकलना मुश्किल हो गया।

वापूजीने कहा: "नोआखालीमें किसी दिन भी प्रार्थना और रामधुन वन्द नहीं रहती थी। जिन्हें पसंद न होता वे चले जाते थे। अव पुलिस अिन भाअियोंको परेशान न करे, अिसका ध्यान आपको रखना है।"

दूसरे लोग वापूजीसे कहने लगे, "आप प्रार्थना कीजिये। हम आपके साथ मरेंगे, परन्तु हमें प्रार्थना सुननी है।"

वापूजी: "आप मरनेको तैयार होते हैं तो आपको मेरी शर्तके अनुसार मरना होगा, न कि आपकी शर्तके अनुसार। मरनेका ढंग मैं सिखाता आ रहा हूं और सीख रहा हूं। अभी मरनेका समय नहीं है। गुस्सेसे नहीं मरना चाहिये। समझ-वूझकर मरना चाहिये। यह तो केवल गलतफहमी चल रही है कि मैं ही सव विगाड़ रहा हूं, धर्मनाशक हूं। मैं अितने वर्षोंके धर्मके अध्ययनके वाद कहता हूं कि मेरे हिन्दू धर्ममें सव धर्मोंका निचोड़, सार भरा है। मैं जानता हूं कि पंजावकी घटनाओंसे सवका दिल अुवल रहा है। परन्तु आप क्या यह मानते हैं कि मेरा दिल नहीं अुवलता होगा?"

कुछ पंजावी भाअी वोले, "आप अिन थोड़ेसे लोगोंकी वातें क्यों सुनते हैं? सही वात तो यह है कि अिन लोगोंको झगड़ा ही करना है। अिन लोगोंको पंजावके साथ कोअी वास्ता नहीं, ये लोग पंजावी भी नहीं हैं।

दुःखी तो हम हैं। हम पर असह्य दुःख आ पड़ा है। फिर भी हम आपके दो शब्द सुनकर पवित्र होने और आश्वासन लेने आये हैं। हम कहते हैं कि आप हम पर कृपा करके प्रार्थना कीजिये। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

बापूजी: "आपकी बात सही है, परन्तु अिन लोगोंको समझनेका मौका देना ही चाहिये। सब लोग शान्तिसे मनमें अीश्वरका स्मरण कीजिये कि अीश्वर अिन भाअियोंको सन्मार्ग पर चलाये, सन्मति दे। अीश्वर सबका भला करे।"

हम अन्दर आये। बापूजी खूब थक गये हैं। अिस समय गहरे विचारमें हैं। आज ही मैं बापूजीसे रामायणकी चौपाअी पढ़ रही थी। अुस परसे बापूजीने कहा कि मैं तो रामायणका पुजारी हूं। अिस महाग्रंथमें बड़े बड़े रत्न भरे हैं। अिससे मैं बहुत सीखा हूं, खास तौर पर लड़नेका ढंग। अुसके बल पर ही मैं अितना जूझ सकता हूं। राम और रावणका युद्ध हो रहा था, तब विभीषणने रामसे पूछा कि भगवान आपके पास तो कोअी रथ नहीं है। आप युद्ध कैसे जीतेंगे? अिस प्रसंगका वर्णन करनेवाली रामायणकी चौपाअियां ये हैं:

रावन रथी बिरथ रघुबीरा। देख बिभीषण भयअु अधीरा।।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।।
नाथ, न रथु नहि तनु पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना।।
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होअि सो स्यंदन आना।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल बिवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे।।
अीसभजन सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद बिप्र-गुरु-पूजा। अेहि सम बिजय अुपाय न दूजा।।
महा अजय संसार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर।।

अिन चौपाअियोंको बापूजीने जीवनमें अुतारकर दुनियाके सामने सजीव अुदाहरण पेश किया है। आजकलके वातावरणके प्रति बापूजीका अैसा रुख है।

रातको बापूजी थोड़े घूमे। ९॥ बजे बिस्तर पर लेटे। बहुत थके हुअे हैं। खानसाहबने पैर दबाये, मैंने सिरमें तेल मला। बापूजीने खानसाहबके साथ थोड़ी-सी बातें कीं। "जिन्ना साहबका रवैया अटल मालूम होता है। पंजाबका असर सीमाप्रान्तमें भी पहुंचा है।"

१०॥ बज गये हैं। मैं भी कामकाजसे निवटकर सोने जा रही हूं। अभी अभी भाअी साहबने कहा कि कोअी तीन आदमियोंको गिरफ्तार किया गया है।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
४–४–'४७

३॥ बजे बापूजी अुठे। भाअी साहबने दातुन करा दिया। बादमें बापूजीने मुझे अुठाया (बुखारकी कमजोरी होनेके कारण)। नियमानुसार प्रार्थना वगैरा चला। बापूजी १० मिनट मेरा लिखित गीतापाठ लेते हैं और नीचे अपने हस्ताक्षर कर देते हैं। . . . मालिशके समय मौलाना साहब बापूजीके पास बैठे थे, अिसलिअे मालिशमें बहुत देर हो गअी। बापूजी मालिशमें कहने लगे, "मुझे लगता है कि अीश्वर मुझे बहुत समय जीने नहीं देगा!"

बापूजी गंभीर विचार-मंथनमें थे। लगभग पौन घण्टे मालिशमें सोये। अुठकर बोले, "प्रार्थनामें आजकल जो कुछ हो रहा है अुसमें मेरी शुद्धिका जितना आधार है और जितनी शुद्धि मेरी होगी अुतना मैं सफल होअूंगा। तुम्हारी जिम्मेदारी भी अुतनी ही है। मेरे कार्यका भार तुम्हारे सिर पर है। नोआखाली भले ही छोड़ा, परन्तु 'यज्ञ' तो वही है। मेरी परीक्षा तो है ही, परन्तु तुम्हारी परीक्षा अुससे भी कड़ी है। क्योंकि प्रार्थना करानेवालेका भी असर पड़ता है। अेक अणुके बराबर भी लापरवाही न हो, तो तुम्हें जो नकसीर छूटती रहती है वह जरूर बन्द होनी चाहिये। जितनी संभाल तुम मेरी रखती हो, मेरी चीजोंकी रखती हो, अुतनी ही संभाल तुम्हें स्वयं अपनी रखनी चाहिये। क्योंकि तुम भी अुन्हींमें से अेक हो। तभी तुम सफल होगी।"

रावलपिंडीके कुछ भाअी आये। अुन्होंने कहा, "१००० आदमियोंमें से १६ आदमी छिपे रहे, अिसलिअे वे बच गये। आप बताअिये कि अब हम किस तरह जीयें? खुद होकर मौतके मुंहमें जानेसे कुछ करके मरना क्या

अच्छा नहीं है? आप आयें तो कुछ शान्ति हो। आप कहते हैं कि हथियार काममें न लिये जायं। तो हम किस तरह अपना बचाव करें? वे लोग तो देखते ही मार डालते हैं। अभी तक गांवोंमें भी यही स्थिति है कि हमें देख लें तो मारे बिना न छोड़ें। प्रार्थनामें जो लोग ठहरते हैं वे तो झगड़ा करनेके अिरादेसे ही ठहरते हैं।" पंजाब प्रान्तीय कांग्रेसके अध्यक्ष डॉ० लेनासिंहजी, डॉ० किचलू वगैरा मिलकर १५ भाअी थे।

बापूजी: "पंजाब सारा अगर बगैर सामना किये मर जायगा तो अमर हो जायगा। मरनेमें मारनेसे ज्यादा बहादुरी है। मेरी शर्त तो यही है कि भले हमें मार डालें परन्तु हम हथियार न अुठायें। अिसके बजाय आप हथियार अुठाते हैं, और फिर मुझसे कहते हैं कि चलिये। परन्तु मेरी कौन मानता है? मेरा कहा मानें तो मैं बैठा बैठा आप सबको शान्त कर दूं। १००० आदमी मर गये परन्तु बहादुरीसे नहीं मरे। १६ आदमी जो छिपे रहे वे यदि रणभूमिमें सामने आकर कहते कि हमें भी मार डालो तो मुझे अच्छा लगता। आप अहिंसाकी लड़ाअीके मैदानमें लड़ना शुरू कर दें तो आपकी जीत अवश्य होगी। परन्तु आप कायर बन जाते हैं, यह मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता। कायर बननेकी अपेक्षा तो आप हिंसात्मक ढंगसे अपना बचाव कीजिये।

"अेक दिन अैसा था जब मेरी बात सिर आंखों पर अुठाअी जाती थी। अब अैसा नहीं है। मरना तो मनुष्यको है ही। जन्म मृत्युके लिअे ही है। मृत्यु ही मनुष्यका सच्चा मित्र है। जन्म और मृत्यु अेक सिक्केके दो पहलू हैं।

"बिहारमें हमने क्या किया? मनुष्य जब अपनी भूलको पर्वतके समान मानकर दूसरेकी भूलको अणुके समान समझे तो ही अुसका नाम मनुष्यता है।

"आपको जानना चाहिये कि मैं तो अैसे गांवोंमें गया हूं जहां मरनेके सिवा और कुछ था ही नहीं। और अितने पर भी मेरे मनमें पंजाब जानेकी अिच्छा हुअी तो चला भी जाअूंगा। परन्तु आज मैं यहां बैठा बैठा वही काम कर रहा हूं। मैं मानता हूं कि मैंने बिहारको कुछ ठंडा किया है। अीश्वर-कृपासे ही अैसा हुआ है। अुसकी कृपाके सिवा तो कुछ भी नहीं हो सकता।

मैंने मास्टर तारासिंहसे भी कहा था कि गुरु गोविन्दसिंहका सच्चा वारिस मैं हूं, आप नहीं। . . . अिसे आप शान्तिसे समझें तो ही कुछ होगा।"

अिस वक्त दुपहरके २। बजे हैं। बापूजी राजकुमारी बहनके साथ वाअिसरॉयसे मिलने गये हैं। भोजन, कताअी वगैरा नित्यकी भांति चलते हैं।

सुबह बापूजीने मुझसे कहा, "प्रार्थना नहीं होती अिसका कारण कहीं न कहीं हमारी मलिनता है। परन्तु हम अुसे देख नहीं सकते।" आज शामको अीश्वर करे और प्रार्थना हो तो अच्छा। सारे समय मैं भगवानसे यही प्रार्थना करती हूं कि हे प्रभु, अिस यज्ञमें मैंने तनसे और मनसे यदि बापूजीकी सेवा की हो तो तू लोगोंको सन्मति दे, ताकि शामको प्रार्थना हो सके।

४से ७के बीचका समय भंगीबस्तीमें और यहां वाल्मीकि मंदिरमें बहुत ही सुहावना लगता है। अनेक लोग प्रार्थनाके लिअे आते हैं और जाते हैं। अनेक नये नये आदमियोंसे मिलना होता है। और किसी त्योहारके मौके पर हमारे गांवोंमें जैसा मेला भरता है, वैसा ही वातावरण यहां भी हो जाता है। बापूजी तो वाअिसरॉय साहबके पास चले जाते हैं और श्रद्धालु लोग बेचारे अुनकी बैठकके कमरेको देख कर ही पवित्र होते हैं। अितना ही नहीं, मेरे जैसा दरवाजे पर कोअी खड़ा हो तो यह भी चाहते हैं कि बापूजीकी गादी और तकियेको छूकर और प्रणाम करके चले जायं। परन्तु अैसी अिजाजत देनेमें खतरा रहता है। बापूजीकी बैठकके आसपास अनेक अुपयोगी कागज-पत्र और कअी तरहका दूसरा साहित्य पड़ा रहता है। लोगोंको मना करनेमें भी जी दुखता है। क्षणभर यह खयाल भी होता है कि जिन लोगोंको चौबीसों घण्टे बापूजीका समागम प्राप्त होता है, अुन्हें अैसे लोगोंको देखकर हंसी आती है। वे सोचते है, गादी-तकियेको छूकर भला क्या करते हैं। परन्तु मेरे जैसों पर तो 'बन्दर क्या जाने अदरकका स्वाद' वाली कहावत लागू होती है। अभी थोड़ी देर पहले पंजाबकी दो बूढ़ी स्त्रियां और बालक आये थे। बालक अेक बुढ़ियांके पोता-पोती हैं। अुसके लड़के और बहूका कोअी पता नहीं था। दंगा हुआ और दोनों बूढ़ियां भागीं। दोनोंमें से अेक हिन्दू है और अेक मुसलमान है। बरसोंकी पड़ोसिन हैं। माअुन्टगूमरी (गुजरानवाला जिला) की रहनेवाली हैं। वे कहती थीं कि, "जबसे हमारी शादी हुअी तबसे हम साथ ही हैं।" अिन दोनों बूढ़ियोंके ससुरोंका आपसमें सगे भाअियों जैसा व्यवहार था। अिसलिअे बूढ़ियोंने देवरानी-जेठानीका सम्बन्ध बना लिया है। परन्तु व्यवहारमें

दोनों सगी बहन जैसी हैं। अिन दोनों बूढ़ियोंके पति बहुत समयसे गुजर गये हैं। मुसलमान बुढ़ियाके तो कोअी बच्चा नहीं है। हिन्दू बुढ़ियाके अेक ही लड़का था। और अुस लड़केकी अेक लड़की और अेक लड़का अिस प्रकार दो बालक हैं। ये लोग शरणार्थी शिविरसे बापूजीके दर्शनोंके लिअे आये थे। किसीने अिनसे कहा कि मैं महात्माजीकी पोती हूं और अुनकी सेवामें हूं। 'देवसे पुजारीका माहात्म्य बढ़ जाता है' अिस कहावतके अनुसार बेचारी दोनों बूढ़ियोंने प्रेमसे मुझे छातीसे लगाया और सारी बातें सुनाअीं। मुसलमान बुढ़िया हिन्दू बनकर हिन्दू शिविरमें ही रहती है। घरबार छोड़कर भाग आअी है। हिन्दू बुढ़ियाके बेटे-बहूका पता नहीं है। आंखोंसे सावन-भादों बरस रहा था। हिचकियां लेते हुअे अुसने अपनी दुःखगाथा सुनाअी और कहा कि कोअी न कोअी पाप हुआ होगा जिससे हम पर यह विपत्ति आअी। अब बापूजीके दर्शन करके पवित्र होना है। और कोअी अिच्छा नहीं है। यह बात सुनकर मैं चकित हो गअी। वाह बापूके भक्तो! मैंने कहा, "माजी, बापूजी प्रार्थनामें आयेंगे तब आप अुन्हें देख सकेंगी।

माजी — अैसा नहीं, बेटा! हमें अुनके चरण स्पर्श करने हैं। वे मेरी अिस लड़की और लड़के पर हाथ फेर दें तो अिनका बेड़ा पार हो जायगा। परन्तु गांधीजी कहां बिराजते हैं?

मैंने परदा खोलकर कहा, "सामने गादी-तकिया है न, वहां बैठते हैं।"

"अैसा नहीं, हमें वहां जाने दो, हम वहां पांव पड़कर आयेंगी।"

मैंने कहा, "माजी, आपको जाने दूं तो दूसरोंको कैसे मना कर सकती हूं?" अितना कहना था कि दोनों बूढ़ियोंकी आंखोंमें फिर आंसू भर आये। मुझसे यह दृश्य देखा नहीं गया, अिसलिअे अुन्हें अन्दर जाने दिया। अुनके मनमें अितनी अधिक भक्ति थी कि आंचल फैलाकर गादी-तकियेको प्रणाम करके अुन्होंने पावनता अनुभव की और तुरन्त ही सब बाहर निकल गयीं। मुझे अनेक आशीर्वाद देकर प्रेमसे नहला दिया। मैंने कहा, "माजी, मैंने तो कुछ नहीं किया।" परन्तु दोनों भक्त बूढ़ियां बापूजीकी गादीको प्रणाम करके आनन्दित हो गअीं।

[आधी डायरी तो दुपहरको लिखी थी। बादकी रातको बापूजीके सो जानेके बाद ११ बजे लिख रही हूं।]

वापूजी वाअिसरॉय भवनसे लौट आये। जो दो वूढ़ियां आअी थीं, अुनकी वात मैंने वापूजीको सुनाअी। प्रार्थनामें जानेके लिअे हाथ-मुंह धोकर जव वाहर निकले तव दोनोंसे मिले। वापूजीने अुनके सिर पर हाथ रखा। और वुढ़ियाने वापूजीका हाथ पकड़कर अपने वच्चों पर वार वार घुमाया। लड़का ७ वर्षका था, लड़की ५ वर्षकी। कैसी अनोखी भक्ति थी!

रामायणके अिस दोहेमें किया हुआ वर्णन आज मैंने प्रत्यक्ष देखा:

कर सरोज शिरु परसेअू, कृपासिंधु रघुवीर;
निरखि राम छवि धाम मुख, विगत भअी सव पीर।

और वूढ़ियोंके आशीर्वाद तो मुझे अैसे फले कि आज चार दिनके वाद प्रार्थना हुअी। वापूजीने प्रार्थना-स्थान पर जाते ही नियमानुसार पूछा, तो अेक लड़केने हाथ अुठाया। मैं थरथर कांप रही थी और मनमें 'लज्जा मोरी राखो श्याम हरि' रट रही थी। तुरन्त हिन्दू महासभावाले मूलचन्दजी आर्य खड़े हुअे और अुन्होंने हृदयस्पर्शी प्रवचन किया। अुन्होंने कहा, "महात्माजीने निश्चय किया है कि अेक वच्चेका भी विरोध होगा तो वे प्रार्थना नहीं करेंगे। परन्तु यह चीज हमें शोभा नहीं देती। मैं कहता हूं कि महात्माजी महान पुरुष हैं। हमारे देशमें तो क्या, दुनियामें आज अैसा कोअी पुरुष नहीं है। यह तो सभी अेक स्वरसे स्वीकार करेंगे। हमारे धन्य-भाग्य हैं कि महात्माजी जैसे सन्त पुरुष हमारे यहां आये हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि यह विरोध यहां न कीजिये। हमें लड़ना होगा तो महात्माजीसे हम और कहीं लड़ लेंगे। अीश्वर-प्रार्थनामें दखल न दीजिये। हमारे लिअे यह शर्मकी वात है कि वे तीन तीन दिन तक प्रार्थना नहीं कर सके।"

यह प्रवचन पूरा होनेके वाद वापूजीने फिर पूछा, "अव भी किसीको विरोध करना है?" जो भाअी पहली दफा विरोध करनेको अुठे थे वे तो समझकर वैठ गये। परन्तु अेक और भाअी अुठे। वापूजी कहने लगे, "तो आपकी जीत और मेरी हार है। वाकीके दर्शकोंकी हार नहीं है। अुनकी हार तो वे आपको मारें या गाली दें तो ही होगी।" शास्त्रीजी फिर खड़े हुअे और अुन भाअीको समझाया। अुन भाअीने कह दिया, "हमें कोअी आपत्ति नहीं, आप प्रार्थना कीजिये।"

बस अितना कहना था कि मैंने अनोखे अुत्साहसे बापूजीकी आज्ञासे पहले ही 'नं म्यो हो रें गे क्यो' शुरू कर दिया। और सारी प्रार्थना निर्विघ्न समाप्त की।

हरि! तुम हरो जनकी भीर
द्रौपदीकी लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर। हरि०
भक्त कारन रूप नरहरि, धर्यो आप शरीर। हरि०
हरिनकश्यप मार लीन्हो, धर्यो नाहिन धीर। हरि०
बूड़ते गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर। हरि०
दास मीरां लाल गिरधर, दुख जहां तहां पीर। हरि०

हरिने सचमुच आज मेरा संकट तो दूर कर ही दिया और रामधुन भी बड़ी भक्तिसे सब लोगोंने गाअी। बापूजीने प्रवचनमें कहा, "आज अीश्वरकी कृपासे मैं चौथे दिन प्रार्थना कर सका हूं। पिछले तीन दिनोंसे प्रार्थना नहीं हुअी, अैसा कोअी न समझे। आप सब दूर दूरसे अिस प्रार्थनाके निमित्त आते हैं। मैं भी भगवानका स्मरण करनेके लिअे ही यहां आता हूं। अिस-लिअे हम सबके दिलमें तो प्रार्थना थी ही। भले मुंहसे न हुअी हो। और जिन भाअियोंने विरोध किया था, अुनका मैं हार्दिक आभार मानता हूं। क्योंकि अिससे मुझे अपना अन्तर-निरीक्षण करनेका मौका मिला। मुझे कभी प्रार्थनासे अन्तर-निरीक्षण करनेका अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था। मैं तीन दिनसे सोच रहा था कि मैं कहां हूं? मेरे मनमें भीतर ही भीतर विरोध करनेवाले लोगों पर जरा भी रोष तो नहीं है? अित्यादि अनेक विचार मैं करता था। भगवान अपने भक्तोंकी परीक्षा करता है और अन्तमें हरिजनोंकी पीड़ा हरता है, अैसा अभी आपने भजनमें सुना। भगवानकी अपार कृपा है कि मैं अिस परीक्षामें अुत्तीर्ण हुआ।

"अेक और कसौटीमें भी मैं आज बच गया। अिस लड़कीके प्रार्थना शुरू कर देने पर यदि कोअी बीचमें विरोध करता तो मैं कहता कि अब आप मेरा और अिस लड़कीका गला काट सकते हैं, लेकिन प्रार्थना बन्द नहीं हो सकती। लड़कीको मैंने तालीम दी है और आशा है वह मरनेकी तैयारीसे ही मेरे पास नोआखाली आअी है। अिसलिअे मौका आने पर मरनेसे नहीं डरेगी। और मैं भी राम-रहीम रटता रटता और अभी जैसी धुन आपने सुनी वैसे 'सबको सन्मति दे भगवान' कहता कहता ही मरूंगा।

"नोआखालीकी अेक बात कहूं कि वहां आरम्भसे रामधुन करते करते ही यात्रा की जाती थी। वहांके लोगोंको मैंने समझाया कि राम, रहीम, खुदा, अीश्वर वगैरा अेक ही प्रभुके नाम हैं। अितना ही नहीं, अुस सर्व-शक्तिमानके करोड़ों नाम हैं। जिसे जो नाम अच्छा लगे अुसे वह ले।

"और अिस अरबी प्रार्थनाका अनुवाद सुनाअूं तो पता तक न चले कि यह अरबी प्रार्थना है। तो क्या अपनी भाषाके बजाय अरबी भाषामें प्रार्थना करूं तो मैं अपराधी ठहरता हूं? आप अैसा संकुचित मन रखकर हिन्दू धर्मको निकम्मा न बनाअिये।

"मैं आजकल रोज वाअिसरॉयके पास जाता हूं। वहां गप्पे लगाने नहीं जाता। आपका ही काम करने जाता हूं। वहां बिहार, पंजाब, नोआखाली, दिल्ली सब जगहका काम कर रहा हूं। मेरी नजरमें मेरा छोटेसे छोटा काम बड़ेसे बड़े कामके बराबर ही महत्त्व रखता है। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' — अिस सूत्रको मैं मानता हूं। पंजाब, बिहार या नोआखालीमें ही मेरा हिन्दुस्तान बसा हुआ है। वहांका काम कर सकूंगा तो ही मैं दूसरा काम कर सकूंगा। आपने शान्ति रखी, अिसके लिअे आपको फिरसे बधाअी है।"

प्रार्थनाके बाद अिजिप्टके प्रतिनिधिगण पंडितजीके साथ आये। अुन्होंने प्रश्न किया कि भारतसे अंग्रेज चले जायं तो भी आप अुनकी सैनिक आवश्यकताओंको मंजूर करेंगे? और मान लीजिये कि आपको पूर्ण स्वतंत्रता मिल जाय, तो आप अपनी अहिंसाकी नीतिको राजनीतिमें कहां तक चलायेंगे? आप अमेरिका या और किसी देशकी सहायता लेना चाहते हैं?

बापूजी: "भारतमें अुनकी सेना शासकके नाते नहीं, परन्तु भारतको अपना मित्र बनाकर मित्रके नाते अपना फर्ज अदा करनेको रहे तो ही मैं अुसे सहन करूंगा।

"अलबत्ता, आज तो अहिंसा रही नहीं। परन्तु मुझे आशा है कि विदेशी सत्ताका विघ्न बीचसे निकल जाने पर सब कुछ शान्त हो जायगा। और आजकी विदेशी सत्ताका जुआ अुतारनेके लिअे अन्य किसी देशसे सहायता मांगनेकी मेरी बिलकुल अिच्छा नहीं है। 'अनजाने दुश्मनसे जाना हुआ दुश्मन अच्छा है' अिस सूत्रमें मैं विश्वास रखता हूं।

"राष्ट्रीय सरकार क्या नीति अपनायेगी, यह तो मैं नहीं जानता। आजकी स्थितिको देखते हुअे मुझे नहीं लगता कि मैं तब तक जीअूंगा।

परन्तु अधिकसे अधिक जितनी हद तक अहिंसक नीतिको खींचा जा सकता है अुतना खींचनेको मैं कहूंगा। संसारकी शान्ति और जगतकी नवरचनाकी प्रगतिमें भारतका ठोस हिस्सा हो सकता है। परन्तु साथ साथ यह भी कहूंगा कि हिन्दुस्तानमें कअी लड़ाकू जातियां हैं। हिन्दुस्तानका अितिहास भी अैसा ही है। अिसलिअे राष्ट्रकी नीति किसी न किसी सौम्य प्रकारके युद्ध-वादकी तरफ झुकनेवाली तो होगी ही। फिर भी मैं यह आशा रखकर जरूर मरूंगा कि पिछले ३० वर्षकी मेहनत वेकार कभी नहीं जायगी। और सच्ची अहिंसाका प्रतिनिधित्व करनेवाला अेक शक्तिशाली दल देशमें जरूर होगा। मेरे अुत्तराधिकारी पंडित जवाहरलाल नेहरू और अुनके साथियोंसे तो आप मिले ही हैं। अिसलिअे आपने अुनके साथकी चर्चामें अिस चीजका अध्ययन किया ही होगा। मेरा विश्वास है कि कोअी न कोअी दिन अैसा जरूर आयेगा, जव जगत शांतिकी खोज करता करता भारतमें आयेगा और भारत तथा सारा अेशिया समस्त संसारकी ज्योति वनेगा। मैं तो शायद यह सब देखनेको जिन्दा भी न रहूंगा, क्योंकि आज यहां ज्वाला धधक रही है और अिस आगमें मैं संभवतः खप भी जाअूं। परन्तु आप सब जरूर जिन्दा रहेंगे (क्योंकि जवान हैं)। (सब हंस पड़े) अिसलिअे आप सबसे मैं कहता हूं कि हमारा जवाहर, जिसका अर्थ 'रत्न' होता है, अैसा ही निकलेगा। और वह केवल भारतका ही नहीं, परन्तु यदि आप सब यहां अलग अलग देशोंसे मैत्री पैदा करनेके लिअे आये हैं तो सारे अेशियाका रत्न वन जायगा। परन्तु आपकी सहायताके विना यह संभव नहीं होगा। आप जवाहरके प्रेमके कारण अितनी अितनी दूरसे आये हैं, अिसकी अुसके मनमें गहरी कदर है। मुझे आपसे मिलनेका सौभाग्य मिला, अिसका मुझे वड़ा आनन्द है। मैं आप सवका हार्दिक आभार मानता हूं।"

वापूजीने जवाहरलालजीकी अैसी हार्दिक प्रशंसा की। परन्तु जवाहर-लालजीको अपनी वड़ाअी सुनना जरा भी पसन्द नहीं है। यह अुनके चेहरे परसे स्पष्ट दिखाअी देता था। दो वार तो वे गोपू खेलने आया था अुसे प्यार करनेको खड़े भी हो गये। (गोपू देवदास काकाका पुत्र और वापूजीका सबसे छोटा पौत्र है)। मेहमानोंके जानेके वाद वापूजीने काता। कातकर घूमने निकले। घूमते घूमते वापूजी मुझसे कहने लगे, "प्रवीण, अुर्मिला वगैरा वरावरकी लड़कियां अिकट्ठी हों तव तुम खोखो, सातताली

या अैसा ही कोअी खेल शामको अुनके साथ खेलो, तो कसरत भी हो जाय और आनन्द भी आये। अुन लड़कियोंकी पढ़ाअीकी थकावट मिटे और तुम्हारी कामकी थकावट मिटे।"

यहां भाअी साहब और हरिरामजी हैं, अिसलिअे दूसरा काम बहुत कम रहता है। पटनाके जितना नहीं रहता।

बापूजी १० बजे सोने गये। मैं अपनी डायरी पूरी करके अब सोने जाती हूं। आज प्रार्थना हो सकी, अिसका मनमें बड़ा संतोष है। मेरा खयाल है कि मैं अुस बूढ़ी मांको बापूजीकी बैठकके कमरेमें ले गअी और अुसने प्रेमसे अन्तःकरणपूर्वक मुझे जो आशीर्वाद दिये वे ही आज फले।

नअी दिल्ली,
५–४–'४७

नियमानुसार प्रार्थना आदि चला। सवेरेका कार्यक्रम नियमबद्ध चल रहा है। राजकुमारी बहन, मौलाना साहब तथा राजेन्द्रबाबू ठीक ७ बजे अुपस्थित हो जाते हैं। बापूजीका बंगाली पाठ और मेरा गीतापाठ भी नियमित चल रहा है।

बाथरूममें मैं बापूजीकी हजामत बना रही थी तब वे गहरी नींदमें सो गये। गरम पानीसे भरे लंबे टबमें लंबे लेट गये और सिरके पास तौलिया रखवाया। मैं बापूजीकी हजामत अच्छी तरह बना लेती हूं, अिस-लिअे वे निश्चिन्त होकर सो गये। ठीक पांच मिनट घोरते हुअे सोये। नींद पर बापूजीका अितना अद्भुत अधिकार है। वे जब चाहें, जहां चाहें और जितनी देर चाहें सो सकते हैं। वर्ना अेक नौसिखिया लड़कीके हाथमें अुस्तरा देकर अपनी दाढ़ी बनवाते बनवाते अिस प्रकार कैसे सो सकते हैं?

दोपहरको अिन्डोनेशियाके प्रतिनिधि सहरर और पंडितजी आये। अुनके साथ कुछ और विदेशी सज्जन भी थे। अुन्होंने कुछ सवाल पूछे।

प्रश्न — दुनिया हिंसासे बिलकुल दूर रहे, अिसमें हिन्दुस्तान कितना भाग अदा कर सकता है?

बापूजी — कांग्रेस यदि अहिंसक प्रयत्नमें सफल साबित हो, तो बाकी सब अपने-आप ठिकाने लग जायगा। बिहारके झगड़ेमें तो कितने ही कांग्रेसियोंके भी शरीक होनेके समाचार हैं। बात सही है या गलत, यह अभी मैं नहीं कह सकता। परन्तु अैसी झूठी बात भी क्यों अुड़े?

प्रश्न — स्वतंत्र भारतकी आर्थिक नीति, वस्त्र-अुद्योग वगैराके बारेमें आपके क्या विचार हैं?

बापूजी: "कपड़ेका अुदाहरण लीजिये। भारतके लाभके लिअे किसी और देशको चूसनेका पाप हम नहीं करेंगे, क्योंकि शोषणसे हमारी जो बरबादी हुअी है अुसका हमें पूरा अनुभव है। परन्तु कोअी भी देश स्वतंत्र रूपसे हमारी मदद मांगे तो हम अवश्य देंगे — लेकिन पड़ोसी धर्मके रूपमें, न कि किसीका शोषण करनेके लिअे।

"भारतवर्ष आजकल अमरीकाको कच्चा माल भेजता है। अिससे हमें कितनी हानि अुठानी पड़ती है? हमारे तमाम अुद्योगोंका नाश हो गया है। परन्तु मैं तो यह अपेक्षा रखता हूं कि प्रत्येक देश यह न समझे कि हिन्दुस्तान चूसनेके लिअे है, परन्तु यह समझें कि अहिंसक और निःशस्त्र होने पर भी वह अेक स्वतंत्र देश है। आपसमें अच्छे संबंध बनाये रखना चाहिये। अगर आप मुझसे सभ्यतापूर्ण व्यवहारकी आशा रखते हैं, तो मुझे आपके साथ वैसा ही बरताव करना चाहिये। हम यंत्रकलामें कुशलता नहीं रखते। आप यदि अीसाका अुपदेश मानें तो मुझे आपसे अितनी प्रार्थना करनी है कि हममें कुशलताकी कमी हो तो हमारे लाभके लिअे आप हमें कुशलता सिखा जाअिये, परन्तु अनाप-शनाप कीमत लेकर नहीं।

"आज तो आपने हमें अैसा बना दिया है कि आपकी मोटरके अभावमें और आपकी भोग-विलासकी वस्तुओंके अभावमें हमारा काम नहीं चल सकता। हमें आपने अितना पंगु बना दिया है। आपने हमारे यहां जो अीसाअी धर्म भेजा है वह अितना मिलावटवाला भेजा है। अिसके बजाय आप गांवोंमें जाकर वहांके दुख-सुख समझ कर अुनका ठीक अुपाय ढूंढ़नेका प्रयत्न करते, पाठशालाअें, पुस्तकालय, दवाखाने वगैरा परोपकारके काम करते, तो वे निर्दोष माने जाते। अैसा काम करते तो आपका भगवान अीसाके अुत्तराधिकारी होनेका दावा सच्चा ठहरता। परन्तु मुझे दुःखके साथ कहना पड़ता है कि अिसमें न तो आपको कोअी फायदा है, न हमें कोअी फायदा है।"

अहिंसाका मर्म समझाते हुअे बापूजी बोले, "मैं तो अपने पर हमला करनेवालेसे कहूंगा कि आप मेरे स्थानका, मेरे घरबारका और मेरा भी नाश कर दें, तो भी मेरी आत्माका नाश नहीं कर सकते। मैं किसीके हथियारोंसे अपने देशका बचाव नहीं करूंगा। मेरी बात चलेगी तो पुलिसके

हाथोंमें बन्दूकोंके बजाय मैं कुदाली-फावड़ा दूंगा, जिससे वे खेती करने लग जायं। अहिंसक देशको अिस बातकी चिन्ता ही नहीं होगी कि कोअी अुस पर चढ़ाअी करेगा। क्योंकि देशमें प्रत्येक नागरिककी मरनेकी तैयारी होगी। मैं मानता हूं कि अहिंसा केवल व्यक्तिगत सद्‌गुण नहीं है। व्यक्ति, समाज और देश सबके लिअे वह आध्यात्मिक और राजनीतिक आचरणका अेक सुगम मार्ग है।"

प्रश्नकर्त्ता — गांधीजी, आपसे मिलकर हम धन्यताका अनुभव करते हैं। आपका सत्य और अहिंसाका मार्ग अितना असरकारक मालूम होता है, मानो आप हमारे सामने बाअिबलका सन्देश भगवान अीसाका रूप धारण करके समझा रहे हों। आपने जिस शुद्ध भावसे भारतके प्रति हमारे अुपेक्षा-पूर्ण व्यवहारकी कुछ बातें बताअीं वे भी बड़ी सचोट हैं। हम यह भव्य और प्रेरणात्मक छाप लेकर अपने देशमें जायेंगे। वहांके लोगोंको आपका सन्देश पहुंचायेंगे। गांधीजी, आपके देशमें अिस समय जो अमानुषिक घटनायें हो रही हैं, और आपके जैसे सन्त महात्माको तथा पंडित नेहरू जैसे प्राणवान पुरुषको जिनके कारण रात-दिन चिन्ता और व्यग्रता अनुभव करनी पड़ रही है, अुसके लिअे भी विदेशी हुकूमत जिम्मेदार है। हमें बड़ा दुःख हो रहा है। अिस पृथ्वीके पैगम्बरके समान आपको और पंडित नेहरू जैसे आपके अुत्तराधिकारीको भगवान खूब स्वस्थ रखे और हमें सुमार्ग पर ले जानेके लिअे लंबी आयु दे, यही प्रभुसे हमारी प्रार्थना है। आपने अपना अितना कीमती समय हमें दिया, अिसके लिअे हम सब आपके बेहद अृणी हैं। आपको हमारा हार्दिक प्रणाम है।

अितना कहकर सब मेहमान अुठ गये। मनमें स्वभावतः यह खयाल आता है कि विदेशियोंने हमें जो नुकसान पहुंचाया है, वह बिलकुल स्पष्ट होते हुअे भी सभ्यतासे वे बापूजीको अीसा जैसा मानते हैं और अुनकी प्रत्येक नीति समझनेका प्रयत्न करते हैं, जब कि हमारी करुण स्थिति यह है कि हमने अपने महात्माको अिस अुम्रमें नोआखालीमें अपने पापोंके कारण नंगे पैरों चलाया। हमारे कारण अुन्होंने अनेक कष्ट सहन किये और अब भी कर रहे हैं। यहीं भंगीबस्तीमें प्रभुका स्मरण करानेमें भी हम विघ्न डालते हैं।

आर० अेस० अेस० के श्री वसन्तरावजी मिलने आये थे। अुन्होंने कहा, आप कोअी भी प्रार्थना कीजिये, हमारा अुससे कुछ विरोध नहीं है।

जिन्ना साहबने खानसाहबको मिलने बुलाया है। जायं या नहीं, अिस प्रश्नकी अभी चर्चा हो रही है।

मलायाके प्रतिनिधि भी केवल प्रणाम करनेके लिअे आये। ४ बजे पंडितजी आये। पंजाबमें दंगे खूब बढ़ गये हैं, अिसकी बड़ी चिन्ता है। लोग काबूसे बाहर हो गये हैं। रोजकी तरह आज भी प्रार्थनासे पहले बापूजीने लोगोंसे पूछा। आज सभामें खूब भीड़ थी। शनिवार और रवि-वारकी शामको लाखोंकी संख्यामें जनता अिकट्ठी होती है।

लोगोंने प्रार्थनामें विरोध नहीं किया। प्रार्थनाके बाद बापूजीने प्रवचनमें मौलाना शौकतअली साहब और खिलाफतकी बात करते हुअे कहा, "आज आप सबने खूब शान्ति रखी, अिसके लिअे आपको बधाअी है। शान्तिसे जो काम होता है वह झगड़ा-फसाद करने या गुस्सेसे नहीं होता। दिल्लीकी ही बात कहूं। आज रुद्र साहबके जिस मकानमें बड़ा कॉलेज हो गया है वहीं मैं मौलाना अब्दुलकलाम आजादसे, बारी साहबसे और अनेक विद्वान मुसलमान भाअियोंसे मिला था और अनेक दलीलें हुअी थीं। अुस समय मैंने कहा था कि खिलाफतके मामलेमें यदि शान्तिसे काम लेना हो तो ही कांग्रेस साथ दे सकती है। अुस समय अुन लोगोंने खुदाकी — अीश्वरकी साक्षीमें शपथ ली थी कि खिलाफतके मामलेमें हिंसाका मार्ग नहीं अपनाया जायगा। यह बात मैं अिसलिअे यहां कहता हूं कि कलसे राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होता है। ६ अप्रैल, १९१९ में भारतने अपनेको पहचाना और सारा हिन्दुस्तान जाग अुठा। तब सबको पता चला कि हिन्दुस्तान दिल्ली, बंबअी या कलकत्तेमें नहीं बसा हुआ है, परन्तु ७ लाख गांवोंमें बसा हुआ है।

"५ अप्रैलको जब मैंने घोषणा की थी तब मुझे सपनेमें भी खयाल नहीं था कि सारा हिन्दुस्तान अिस तरह जाग अुठेगा। अुस समय मैं सेलममें राजाजीके घर था। विजयराघवाचार्यजी और अनेक विद्वानोंसे मिला, सारा दिन विचारमें बिताया और अन्तमें मैंने महादेवसे कहा कि राजाजीको बुलाओ। महादेव तो मुझमें समाया हुआ आदमी था। मैं आधी बात कहता तो वह पूरी बात पकड़ लेता था। अितना कुशल, अेकनिष्ठ था। अुसने तुरन्त राजाजीको बुलाया, मैंने बात कही और सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। अुस समय कांग्रेसके पास न तो स्वयंसेवकोंका दल था और न संदेशवाहक

थे। फिर भी सारे देशमें वह सन्देश विजलीकी तरह पहुंचा गया। देश अितना जाग गया था।

"६ अप्रैलको अुपवास और प्रार्थना करना तथा चरखा चलाना है। अुपवास केवल पानी पीकर किया जाय। कोअी मेरे जैसा बूढ़ा या अशक्त हो तो केवल फलोंका रस या फल ले सकता है। परन्तु मेरी मां तो अुपवास या अेकादशीके दिन गुलावजामुन, हलवा, पेड़े आदि अनेक चीजें खिलाती थी और फिर भी अुपवास माना जाता था। अैसा अुपवास न हो! (हंसी)

"शान्तिका मार्ग केवल चरखा है। मैं आपको विश्वाससे कहता हूं कि आप सव केवल अेक ही घंटा कातिये। अगर आपको हृदयमें शान्ति न मिले तो मुझसे कहिये।

"भावनगरके दीवान और मेरे परम मित्र सर प्रभाशंकर पट्टणीको रातमें नींद नहीं आती थी। अनेक तरहकी दवाअियां खाकर वे अुकता गये थे। मैंने अुनसे रातको सोनेसे पहले चरखा चलानेको कहा और अुन्होंने वैसा ही किया। फल यह हुआ कि अुन्हें रातको नींद आने लगी। चरखा कातनेसे पागल आदमियोंके सयाने हो जानेके अुदाहरण भी मेरे पास हैं। अगर हम आपसमें लड़ाओ-झगड़ा करेंगे, भाओ-भाओका गला काटेंगे, तो मेरी यह भविष्यवाणी है कि हिन्दुस्तान आजाद नहीं रह सकेगा।

"हां, मुझमें अितनी शक्ति है कि पाकिस्तानको भी मैं अमृतमय वना सकता हूं। परन्तु अिसमें आपका साथ होना चाहिये। वैरका वदला हिंसासे न लें। सपनेमें भी किसीका बुरा न चाहें। अपने देशभाअियोंकी भरसक सेवा करते हुअे मौत आये तो हंसते हंसते मरें। हिन्दुस्तानमें रहनेका जितना हक हिन्दुओंको है अुतना ही पारसियों, सिक्खों, यहूदियों, अीसाअियों और मुसलमानोंको होना चाहिये। कलके पवित्र दिन यदि हम अितनी प्रतिज्ञा करें, तो मुझे विश्वास है कि पाकिस्तान अपने-आप अमृतमय हो जायगा।

"आज अेण्ड्रूज साहवकी सातवीं पुण्यतिथि है। अुनके गुणोंकी याद करके जो वातें मैंने आज कही हैं अुन पर मनन कीजिये। मैं वार वार कहता हूं कि अिस सारी पवित्र प्रतिज्ञाका मध्यविन्दु चरखा ही है।

"अेण्ड्रूज साहवकी चमड़ी गोरी थी, फिर भी वे हमारे गांवोंमें जाते थे। अुन्होंने वहुतोंकी सेवा की है। अैसे अनेक अंग्रेज हैं जो हिन्दुस्तानकी

तन-मन-धनसे सेवा करते हैं। अुनमें से अेण्ड्रूज साहब अेक थे। अुनका जीवन अत्यन्त सादा था। अुनका दिल सोनेका था। हिन्दुस्तानकी गुलामी और कंगाल दशा पर अुनका हृदय रोता था। अैसे पवित्र महापुरुषको याद करके, अुनके गुणोंका स्मरण करके और अुन्हें अपनाकर हम हृदयपूर्वक अुन्हें श्रद्धांजलि अर्पण करें।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी बहुत थक गये थे। फिर भी थोड़े घूमे। गरमी पड़ना शुरू हो गअी है। आज तो मुझे १०–१२ बार नकसीर छूटी। बापूजी मेरी चिन्तामें पड़ गये हैं। मेरे लिअे वे ९ बजते बजते बिस्तरमें लेट गये। खानसाहबको खाना खिला रही थी तब अचानक नाकसे खूनकी धार छूटी। खानसाहबने खाते खाते पानीका लोटा मेरे सिर पर डाल दिया। रातको मेरे बारेमें अुन्होंने बापूजीसे बात की। कल भाअी साहब किसी हकीमजीको लानेवाले हैं। रोजके बनिस्बत आज नकसीर बहुत ज्यादा चली, अिसलिअे बापूजीके साथ ही मैं भी अुनके सिरमें तेल मलने तथा कामकाज निबटानेके बाद सिर पर मिट्टी रखकर जल्दी ही सोने जा रही हूं। ९–३० हो गये हैं।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
६–४–'४७

आज रातको बारह बजे बापूजीने पटनामें खोअी हुअी पेंसिल मांगी। मैंने तुरंत लाकर दे दी। यह वर्णन पहले दिया जा चुका है (पृ० ७९–८०), अिसलिअे यहां नहीं दोहरा रही हूं। नियमानुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद अलाहाबादसे अेक दंपती बापूजीके पास रहने आये। अुन्हें बापूजीने कहा, "तुम दोनोंको भंगीबस्तीमें जाकर बच्चोंकी पढ़ाअी, सफाअी वगैराका काम हाथमें लेना चाहिये। यहां बेकार नहीं बैठा जा सकता। मेरी अिच्छा तो मनुको भी रोज वहां भेजनेकी है। परन्तु वह बीमार है और मैं अुससे बूतेसे बाहर काम ले रहा हूं। तुम्हारे पति कानसे सुन नहीं सकते, अिसकी क्या चिन्ता है? वे सफाअी तो करा सकते हैं। और तुम पढ़ा सकती हो। अिससे तुम्हें कुछ सीखनेको ही मिलेगा। अिससे ही तुम्हारा और मेरा यहां रहना सार्थक होगा। अिसके साथ प्रार्थनामें जो विरोधाभास चल रहा है अुसमें भी दिलचस्पी लेकर तुम्हें अुसका अध्ययन करना चाहिये। अुसमें बहनें भी हैं, अुन बहनोंको तुम्हें समझाना चाहिये। यह सब तुम्हें या . . . (के पति) को क्यों नहीं सूझा, अिसीका मुझे आश्चर्य

होता है। मुझे कहना पड़े और तुम करो, अिसका कोअी अर्थ नहीं है। मनुष्यको चाहे जहां काम ढूंढ़ लेना चाहिये। यहां कामकी क्या कमी है? मेरे पास तो आदमीकी कमी है, कामकी नहीं।" अिस तरह बापूजीको हरिजन बालकोंकी चिन्ता लगी ही रहती है।

कुछ दिनसे पूर्व बंगालके अेक भाअी आये हुअे हैं। बापूजीने अुन्हें भी अपने स्थानको लौट जानेके लिअे कहा। "अैसे समय कामके बिना अेक मिनट भी बैठना पाप है।"

सबेरे कृपालानीजीने यहां झंडा-वंदन किया। शंकरराव देव, जवाहर-लालजी वगैरा सब अेकके बाद अेक आये। ६ अप्रैल होनेके कारण बापूजीने और हम सबने अुपवास किया। खानसाहबने भी अुपवास किया। अुनके स्वास्थ्यके कारण बापूजीने अुन्हें अुपवास न करनेको कहा, परन्तु वे नहीं माने। वे तो दवा पीनेमें भी आनाकानी कर रहे थे। बापूजी मुझसे बोले, "तुम खानसाहबसे कहो कि आपकी शारीरिक तन्दुरुस्तीसे ही देशमें तन्दु-रुस्ती होगी। और यदि मेरी यह बात अुनके गले अुतरती हो, तो दवा लेना अुनका धर्म हो जाता है। फिर यह दवा विलायती नहीं है। सनायकी पत्तीका काढ़ा ही तो है?" अुन्होंने तुरन्त दवा पी ली।

बापूजी अिस तरह फौरन रास्ता निकाल लेते हैं।

११॥ बजे मेरे लिअे दो वैद्य और अेक हकीमजी आये। यह अच्छा हुआ कि वे बारी बारीसे आये, नहीं तो सबको यह लगता कि अिसकी जांच कैसे करें। सब अपनी अलग अलग राय देकर चले गये। अेक वैद्य-राज कहने लगे, जिगर बढ़ रहा है, तो दूसरे वैद्यने कहा कि अंतड़ियोंमें सूजन है। हकीमजीने अिससे भिन्न बहुतसी बातें कहीं। सबने बापूजीसे कहा, "मैं १५ दिनमें अच्छी कर दूंगा।" अिन सबके जाने पर मैंने बापूजीसे कहा, "मैं बीमारीसे अितनी नहीं अुकताअी हूं, जितनी अिन लोगोंको शरीर दिखा-दिखा कर अुकता गअी हूं। मुझे अब किसीकी दवा नहीं लेनी है।"

बापूजी बोले, "दिखाया भले ही १०० जनोंको जाय, परन्तु दवा तो मैं दूं वही तुम्हें लेनी है।"

मैंने विनोद करते हुअे कहा: "आप अच्छे हैं बगैर डिग्रीके डॉक्टर!"

११-३० पर ख्वाजा साहब आये। बापूजी सो रहे थे, अिसलिअे वे १० मिनट बैठे। बड़े भले और विनोदी मनुष्य हैं।

बापूजी अुठे। ख्वाजा साहबने मुझे हंसीमें पूछा: "तुम्हें हिन्दुस्तान चाहिये या पाकिस्तान? पाकिस्तान रहकर आओी हो न? ये बापूजी हमें अिस अुम्रमें निकालने चले हैं। मगर मैं तो खानसाहबके साथ तुम्हारी सेवा लेने आअूंगा और यथाशक्ति तुम्हारी मदद करूंगा। तुम मेरी रक्षा करना। देखना कोअी हिन्दू मुझे मार न डाले।"

बापूजी बोले, "अगर कोअी आपको मार डाले तो मैं खुशीसे नाचूंगा। दु:ख यही है कि आप जैसे बहादुरीसे मरनेवालोंको कोअी नहीं मारता। वर्ना मेरे सब पांसे सीधे ही पड़ें न? और यदि पांच भी सच्चे अहिंसक मनुष्य बहादुरीके साथ मर सकें, तो यह अशांति अपने-आप मिट जाय।"

दुपहरको अेक घण्टेकी सामूहिक कताअी रखी गअी थी। कअी लोगोंने हमारे भंगीबस्तीके मण्डपके नीचे कातनेमें भाग लिया था। जवाहरलालजी, सुचेताबहन, कृपालानीजी, शंकरराव देव, अरुणाबहन आसफअली, राजेन्द्रबाबू, मौलाना साहब, राजकुमारी बहन वगैरा भी थे। बापूजी सबके बीचमें बैठे थे। खूब लू चल रही थी और असह्य गरमी थी। बापूजीने सिर पर गीला तौलिया रखा था, जो १० मिनटमें गरम हो जाता था। अिसलिअे बार बार तौलिया बदलनेको अुठना पड़ता था। अिस बातका पहलेसे खयाल करके मैंने अिसके पूर्व ही अकेले दो घण्टे कात लिया। सामूहिक कताअीमें नहीं बैठी। बाहर लू चल रही थी और नकसीर छूटती रहती है, अिसलिअे भी बापूजीने बाहर बैठकर कातनेसे रोक दिया। बापूजीके २०० तार हुअे।

कात कर वे अन्दर आये। दो भाअियोंको अंग्रेजीमें बातें करते सुना तो बोले, "हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि दो सगे भाअी अंग्रेजीमें बोलते हैं? अुनमें से अेक तो कहते हैं कि मुझे विचार ही अंग्रेजीमें सूझते हैं! हम अंग्रेजीके अैसे गुलाम हो गये हैं। यह गुलामी हमने खुद ही मोल ली है। मैंने अंग्रेजोंसे यह तो सार्वजनिक रूपमें कहा ही है कि भारतके लोगोंको अंग्रेजी द्वारा शिक्षा देना गलत है। अिससे आपने हमारे देशको अपार हानि पहुंचाअी है। परन्तु हमारे रोजाना व्यवहारमें सगे भाअी अंग्रेजीमें बोलते हैं, अिसके लिअे मैंने अुन्हें दोषी नहीं ठहराया। यह दोष हमारा अपना है। अंग्रेजी बोलना आ जाय तो अुसे हम अपना सौभाग्य समझते हैं। यह हमारी महत्त्वाकांक्षा रहती है और अुसके लिअे हम अपना कितना ही समय बिगाड़

देते हैं। अगर हम विना भूल किये अंग्रेजी वोलें और अुसे सुनकर कोअी अंग्रेज हमारी पीठ ठोक दे तो हम फूलकर कुप्पा हो जाते हैं। परन्तु प्रत्येक मनुष्य अंग्रेजी सीखनेके लिअे जितना समय देता है अुसका यदि जोड़ लगायें, तो हमें पता चले कि देशकी सेवामें जो समय देना चाहिये, और जिसकी खास जरूरत है, वह समय हम नहीं देते और कुल मिलाकर अपने हजारों घंटे हम अिस तरह वरवाद कर देते हैं।

फिर भी हम पूरी अंग्रेजी तो जान ही नहीं सकते। मेरे पास तो वड़ी वड़ी डिग्रियां पाये हुअे लोगोंके कितने ही अैसे पत्र आते हैं जिनकी अंग्रेजी विलकुल रद्दी होती है। अुसे देखकर हमें नफरत हो सकती है। शौकके लिअे अलवत्ता यह भाषा सीखने लायक है। अिस भाषामें भी वहुतसे रहस्य-मय साहित्यका भंडार है। परन्तु अुसका दुरुपयोग न होना चाहिये। अेशियाअी सम्मेलनमें आनेवालोंमें अैसे कितने ही वड़े आदमी थे जो मुझसे मिलने आये थे, परन्तु वे अपनी अपनी जापानी या तुर्की भाषामें ही वात करते थे। वीचमें अेक अंग्रेजी जाननेवाला और अुनकी भाषा जाननेवाला दुभाषिया रहता था। तव मुझे खयाल आया कि अिस समय अैसा मौका है कि हिन्दुस्तानी सारे अेशियाकी राष्ट्रभाषा वन सकती है। अैसी हालतमें दुभाषियेका काम करनेवाला अुस देशकी भाषा भी सीखे और हमारी राष्ट्र-भाषा भी सीखे। अैसा हो तो अिस समय अेशिया जो अलग अलग भागोंमें वंटा हुआ है अुसमें अेक देशका दूसरे देशके साथ कुटुम्व जैसा मीठा संवंध स्थापित किया जा सकता है। यह अेक वहुत ही महत्त्वका काम होगा। परन्तु मैं कहूं किससे? तुम दो सगे भाअी पंजावी और हिन्दी जानते हुअे भी अंग्रेजीमें वोलते हो!"

आजकी प्रार्थनामें असंख्य मनुष्य थे। हम नोआखालीमें जो भजन (वंगालीमें) रोज गाते थे वही आज गाया:

वोलो वोलो वोलो शवे, शत वीना वेनु रवे;
भारत आवार, जगत शभाय, श्रेष्ठ आसन लवे।
धर्मे महान होवे, कर्मे महान होवे, नव दिनमनि;
अुदीवे आवार पुरातन अे पुरवे।

यह भजन तो वड़ा है। परन्तु अुसका सार यह है कि हम चाहें और सव यह वोलें कि हमारा भारत जगतमें अूंचा आसन ग्रहण करे। वह धर्म और

कर्मसे महान बने। असका पुराना अितिहास अैसा ही अुज्ज्वल है। अुसमें हिमालय जैसा गिरिराज है। गंगा, गोदावरी जैसी अमृतमयी नदियां बहती हैं। मैत्रेयी, सीता, सावित्री, अरुन्धती, लीलावती, पन्ना जैसी विदुषी और सती स्त्रियां यहां हो गअी हैं। जिस हिन्दुस्तानका अैसा अुज्ज्वल अितिहास है, वह सूर्यकी तरह चमके और सारे संसारमें अपनी किरणें फैलाकर सबको प्रकाश दे। यह भजन कविवर टागोरका है।

बापूजीने अिस भजनका अुल्लेख करते हुअे कहा, "यह भजन और धुन जब यह मण्डली गा रही थी, तब मेरी आंखोंके सामने नोआखाली यात्राका रमणीय प्रदेश दिखाअी दे रहा था। वहां भी यह मण्डली यह भजन रोज गाती थी।*

"मुझे अपने भाषणमें बात तो अेक ही कहनी है कि हम अपनी भलाअी न छोड़ें। आप सबने महाभारत और रामायण पढ़ी है? न पढ़ी हो तो पढ़नेकी मैं आप लोगोंसे सिफारिश करता हूं; अिन्हें धार्मिक पुस्तकें तो अिसीलिअे बनाया गया है कि हम सब अुन्हें पढ़ें। हमारे पूर्वज यह मानते थे कि धर्मके नाम पर हम कुछ भी कर सकते हैं। परन्तु अुस समय अुन्हें यह कल्पना नहीं होगी कि अिसी धर्मके नाम पर हम आगे चलकर अपने भाअियोंके गले भी काट सकते हैं।

"मेरी दृष्टिसे महाभारतमें जो बातें आती हैं, वे केवल हिन्दुओंके लिअे ही नहीं हैं। अुनमें सबके लिअे सीखने लायक बोधपाठ हैं। अुससे आप देख सकेंगे कि युद्ध करने या मार-काट करनेसे किसीका भी भला नहीं हुआ। पाण्डव रामके पुजारी थे अर्थात् मेरे अर्थमें वे भले थे, भलाअीके पुजारी थे। कौरव रावणके पुजारी थे अर्थात् अुन्होंने बुराअीका मार्ग ग्रहण किया था। भलाअीवालोंने अर्थात् पाण्डवोंने बुराअीवालोंका अर्थात् कौरवोंका नाश किया। परन्तु क्या अिससे पाण्डवोंको शान्ति मिली? सबको मारकर थोड़े लोग बचे, परन्तु पाण्डवोंको मानसिक शान्ति तो नहीं ही मिली। अन्तमें अुनका जीवन भी दूभर हो गया और अुन्हें हिमालय जाकर स्वर्गारोहण करना पड़ा। अिसलिअे हम महाभारतसे सबक सीखें। आज अेक पवित्र दिन

---

* मेरे साथ शैलेन भाअी और बीरेन दा थे। वे अे० पी० आअी० और यू० पी० आअी० के प्रेस-रिपोर्टर थे। वे नोआखालीसे ही हमारे साथ थे। मुझे अुन लोगोंने ही यह भजन सिखाया था। दोनों बंगाली भाअी थे।

है। मैं मानता हूं कि वहुतोंने व्रत रखा होगा, प्रार्थना की होगी, चरखा चलाया होगा। यहां भी पूर्ण शान्तिसे असंख्य भाअी-वहनोंने दुपहरको सामूहिक कताअीमें अेक घण्टे तक भाग लिया।"

ख्वाजा साहवका अुल्लेख करते हुअे वापूजी वोले, "ये अलीगढ़ युनिवर्सिटीके ट्रस्टी हैं। हैं तो पैसेवाले, परन्तु अिनका मन फकीरका है। मैं जव अलीगढ़ जाता था तव अुनके साथ भोजन करता था। अेक समय मेरे साथ स्वामी सत्यदेव (परिव्राजक) रहते थे। वड़े वहादुर और काम करनेवाले आदमी थे। अुन्होंने मुझसे कहा, मुझे आपके साथ सफर करना है। परन्तु आप खाना ख्वाजा अब्दुल मजीद साहवके यहां खाते हैं, मैं नहीं खाअूंगा। यह वात ख्वाजा साहवके कान पर पड़ी तो अुन्होंने मनमें जरा भी संकोच किये विना कहा: 'अुनका धर्म अुन्हें मना करता हो तो मैं अलग अिन्तजाम कर दूंगा।' वे राष्ट्रीय मुसलमानोंके अध्यक्ष हैं। खादीधारी हैं और अैसे अहिंसक हैं कि अुन्हें कोअी मार भी डाले तो मुंहसे अल्लाहके नामके सिवा कुछ न कहेंगे। अैसे वहादुर मुसलमान हमारे यहां मौजूद हैं। वे आज मेरे साथ मीठा झगड़ा करने आये हैं। अुनके भाअी हिन्दुओंको मारते हैं, अिससे अुनकी आंखोंमें पानी भर आया। आज आजादी हमारे पैरोंमें लोट रही है। अिसलिअे हम आपसमें लड़ाअी-झगड़ा न करें। अिस सप्ताहमें मैं जितने दिन यहां हूं अुतने दिन चाहता हूं कि मेरे पास जो भी आध्यात्मिक खुराक है वह आपको दे दूं। हम यदि हंसते हंसते मरना सीखेंगे तो जरूर अेक नया जीवन प्राप्त करेंगे और हिन्दुस्तानका नवनिर्माण करेंगे।"

प्रार्थनाके वाद वापूजीने अुपवास छोड़ा। साग, आठ औंस दूध, अेक खाखरा, तीन सन्तरे और अेक मोसम्वीको छीलकर अुसकी फांकें खाअीं।

रातको ८ वजे वेगम गजनफरअली और वियेनाके प्रतिनिधि आये। अुनसे कांग्रेस-संवंधी विचारोंका आदान-प्रदान करते हुअे वापूजीने कहा, "कांग्रेस यदि खादी, ग्रामोद्योग, शरावबन्दी, अस्पृश्यता-निवारण, साम्प्रदायिक अेकता, स्त्रियोंकी अुन्नति, प्रौढ़-शिक्षा आदि जो रचनात्मक कार्यक्रम मैंने दिया है अुसे मजवूतीसे अपनाये, तो कांग्रेस सचमुच अहिंसक वन जाये और देशको स्वतंत्रता अपने-आप मिल जाय।

"मित्र राज्योंके सत्कार्यमें और दुनियाकी शान्तिमें अहिंसा और सत्यके अनुसरणको और पूर्ण स्वतंत्रता लेनेके ध्येयको जरा भी छोड़े विना भारतका हिस्सा रहेगा।'

"मैं तो मानता हूं कि हमें स्वतंत्रता देनेमें अनुचित देर की जा रही है और गलत सवाल अुठाये जा रहे हैं। दुर्भाग्यसे आजकल जो सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं, अुनका कारण भी अंग्रेजोंकी यह नीति ही है। अिसलिअे मैं विश्वासपूर्वक कहता हूं कि अिससे अंग्रेज खुद ही अपनेको नुकसान पहुंचा रहे हैं। यह समय मेरी कड़ीसे कड़ी परीक्षाका है। मेरे अहिंसाके शस्त्रको सफल कर दिखानेकी घड़ी आ पहुंची है और अिस खोजमें मैं क्षणभर भी चैन नहीं लेता। रात-दिन अिस प्रकाशके लिअे परमेश्वरसे प्रार्थना कर रहा हूं। कांग्रेसवादियोंके हृदयमें हिंसा अच्छी तरह भरी हुअी है और स्वार्थवृत्ति भी खूब है। अिसके मेरे पास काफी प्रमाण हैं। अगर केवल कांग्रेसवादी ही अहिंसा और सत्यके रंगमें रंगे होते, तो आजसे २६ वर्ष पहले अर्थात् १९२१ में ही स्वतंत्रता आ गअी होती और हमारा अितिहास दूसरा ही होता परन्तु अिसकी मुझे शिकायत नहीं करनी है। (मोसम्बी दिखाकर कहते हैं) अिस मोसम्बीको काटनेके लिअे मेरे पास जैसा चाकू हो अुसीसे मुझे काम लेना चाहिये। चाकू न हो तो थालीके किनारेकी भोंटी धारसे भी काटना आना चाहिये। किसीसे मांग कर लाये हुअे चाकूसे कब तक काटा जाय? मैं आज किसीका चाकू ले जाअूं और कल जिसका चाकू लिया हो वह आदमी मेरी कोअी कीमती चीज मांगे, तो मैं देनेसे अिनकार नहीं कर सकता। अिसलिअे मैं अपने देशकी आजादीमें दूसरे किसी देशकी मदद मांगनेसे साफ अिनकार करता हूं।"

बापूजी वियेनाके प्रतिनिधियोंसे लगातार १५ मिनट तक अिस प्रकार बोले। वे लोग बापूजीके विचारोंसे बहुत खुश हो गये। बापूजीके भोजन आदिकी पूछताछ करके वे चले गये।

बादमें बापूजी थोड़ा टहले और ९।। के बाद सोनेकी तैयारी की। असह्य गरमी पड़ रही है।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली
७–४–'४७

नियमानुसार प्रार्थना, मेरा गीतापाठ, बापूजीका बंगाली पाठ वगैरह हुआ। आज सोमवार है, अिसलिअे कोअी खास जानने लायक नअी बात नहीं है।

वापूजीके नाम आयी आजकी डाक वड़ी मजेदार है। कुछ लिफाफोंके पतों पर 'महमूद गांधी' लिखा था। कुछ लोग वापूजीको साम्यवादी मानते हैं और कुछ तो जिन्ना साहबके गुलाम भी कहते हैं। वापूजीको मैंने यह सव डाक सुनाअी। अुन्होंने हंसते हंसते लिखा, "महात्माकी पदवी भी लोगोंने ही दी है, 'वापू' की पदवी भी लोगोंने (परन्तु निजी माने जानेवालोंने) दी है, तो लोगोंकी दी हुअी अिन नअी पदवियोंका भी मुझे स्वागत ही करना चाहिये न?"

आजकल सख्त गरमीके कारण वापूजी सुवह ९ वजेसे पहले ही खा लेते हैं। खुराक तो गरमीके कारण घटा ही दी है।

मुलाकातियोंकी भीड़ वहुत रहती है। अखवारवालोंका और फोटोग्राफरोंका अितना जमघट रहता है, मानो अुन्होंने भंगीवस्तीको अपना हेड-क्वार्टर या हेड ऑफिस वना लिया हो।

यहां वर्षोंसे रहनेवाले लोग भी कहते हैं कि अिस सालकी गरमी असह्य है; हमने अैसी असह्य गरमी कभी देखी ही नहीं। अैसी ही गरमी राजनीतिक वातावरणमें भी है। मनुष्योंके मस्तिष्ककी गरमीके कारण ही कुदरती गरमी शायद अधिक लगती हो। वापूजीको यह दोनों तरहकी गरमी ठंडे दिमागसे सहन करनी पड़ती हैं, यह कितनी कड़ी परीक्षा मानी जायगी? देशकी परिस्थिति देखकर अुनके हृदयमें जो दावानल सुलग रहा है, अुसके सामने अिस वाहरी गरमीकी कुछ भी विसात नहीं। अिसलिअे वे अपने चौवीसों घण्टे आत्म-चिन्तनमें विताते हैं। फिर भी अुनका वही हास्यमय मुखमण्डल है और वही प्रेम हर क्षण लोगों पर वरसता रहता है। अुनके पास छोटा गोपू आये अथवा कोअी देशी या विदेशी विद्वान आये, दोनोंके साथ वे अैसा वरताव करते हैं, जिससे अुन्हें लगे कि वापूजीने अुन्हें वड़ा महत्त्व और सम्मान दिया है। जैसा भी समय हो अुसका अिस तरह सदुपयोग करके वे आनन्द तो दोनों ही स्थितियोंमें प्राप्त करते हैं।

आज शामको प्रार्थनाके वाद अैसा ही हुआ। प्रार्थनामें ही वापूजीका मौन खुल गया था, फिर भी अुन्होंने प्रवचन पढ़वाया। प्रवचनमें वापूजीने आजकी आअी हुअी डाकका अुल्लेख करते हुअे कहा, "मुझ पर जो आरोप लगाये जाते हैं, अुनसे मैं डरता नहीं हूं। क्योंकि मैं तो गीताका, कुरानका, वाअिवलका और अन्य सव धर्मोंका अध्ययन करता हूं। और अिस

दावेसे अैसे सारे आरोप सहन करनेकी शक्ति भगवान मुझे अपने-आप ही देते हैं। मुझे तो प्रत्येक धर्मके गुरु जो कुछ कह गये हैं अुनके वचनामृत पर विश्वास है, श्रद्धा है। अितना ही नहीं, मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि जो मुझ पर आरोप लगाते हैं अुन पर मुझे कभी गुस्सा न आये; वे कदाचित् मुझे गोलियोंसे छेदनेको तैयार हो जायं तो भी मैं हंसते हंसते भगवानका स्मरण करता ही मरूं। मुझे विश्वास है कि यदि मैं अपने निर्णय पर तन-मनसे कायम रहूंगा और सच्चे दिलसे हिन्दू और मुसलमान धर्मोंकी रक्षा करता रहूंगा, तो अीश्वर मेरी प्रार्थना जरूर सुनेगा। आप मेरे ये वचन नोट करके रखिये। मैं आपसे कहता हूं कि यदि मैं अपने मारनेवालेको अंतिम समयमें गाली दूं या अुस पर क्रोध करूं, तो मुझे फटकारना और कहना कि यह तो दंभी महात्मा था। आप जानते हैं कि आजकी दुनियामें अैसे दंभी महात्मा बहुत हैं। परन्तु मैं आज अन्तःकरणसे कहता हूं कि मेरे मनमें किसीका बुरा करनेकी लेशमात्र भी कल्पना नहीं है। अैसा हो तब तो मेरी अहिंसा और सत्य दोनों पर कलंक लगे। परन्तु अिसकी परीक्षा आज नहीं हो सकती। मनुष्यके मरनेके बाद अुसकी कीमत आंकी जा सकती है। सोनेको तेज जलती हुअी आगमें तपाकर जब हथौड़ेसे पीटते हैं, तभी पता चलता है कि वह १०० टंच शुद्ध है या नकली है। अिसलिअे मेरी मृत्युके बाद ही यह समझमें आयेगा कि मैं जिन्ना साहबका गुलाम हूं, महमूद गांधी हूं, हिन्दू धर्मका रक्षक या भक्षक हूं अथवा मुझे किसीका बुरा करना है या भला करना है।

"रावलपिंडीमें आज भयंकर आग जल रही है। अुस रावलपिंडीमें अलीभाअियोंके समयमें तमाम कौमोंने मेरा और अुनका कैसा अद्भुत स्वागत किया था? बदला लेनेकी भावना हम छोड़ दें। किसका बदला लेना है? बदला लेनेवाला और बदला देनेवाला अेक सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे अूपर है, यह श्रद्धा हम न खोयें।

"मुसलमानोंसे भी मैं यही कहूंगा कि वे हिन्दुओं और सिक्खोंको काटकर पाकिस्तान नहीं बना सकते। पाकिस्तानमें तो अमन और शांति होनी चाहिये। कायदे आजम साहबने भी कहा है कि पाकिस्तानमें पूरा अिन्साफ और न्याय होगा। आज वह न्याय और अिन्साफ कहां चला गया है?"

"नोआखालीमें भी फिरसे करुण घटनाअें घटती रहती हैं और पुलिस तथा फौजकी मांग होती है। मैं कहता हूं कि पुलिस और फौजकी मांग करना पामरता और कायरता है। अिससे हम गुलामीको अधिक मजबूत करते हैं। जिन अंग्रेजोंसे हम अेक ओर भारतसे चले जानेको कहते हैं, अुन्हींके पास दूसरी ओर — और वह भी अैसे समय जब हम मर जायं तो बेहतर हो — हमें अपनी रक्षाके लिअे अुनकी सेनाकी मांग हरगिज नहीं करनी चाहिये। यदि हम न रह सकें, अथवा किसी प्रदेशमें हमें खतरा मालूम हो, तो अुस प्रदेशको छोड़ देना चाहिये। अितिहासमें बड़े बड़े आदमियोंने हिजरत की है। मुहम्मद साहबने भी हिजरत की थी। और कोअी भी अुपाय हम आजमायें, परन्तु अंग्रेजोंकी मदद अब न मागें।

"जो भूमि अमर हिमालय द्वारा रक्षित है, जहां गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियां बहती हैं, वहां क्या हिंसासे हम अपना नाश करेंगे? अैसा अभागा दिन देखनेको अीश्वर मुझे कभी जिन्दा न रखे। मैं हृदयसे अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि वह अंग्रेजोंसे सैनिक सहायता मांग कर जीनेका दिन न दिखाये।"

प्रार्थनाके बाद गोपू आ गया। बापूजी सीधे अन्दर आये। बापूजी मौनमें जो अिशारे करते हैं, गोपू अुनकी नकल कर रहा था और बापूजीके सामने मुंह बिगाड़ता था। दादा और सबसे छोटे तीन बरसके पोतेका यह विशुद्ध दृश्य देखकर कमरेमें बैठे हुअे लोग खिलखिला कर हंस पड़े। परन्तु हमारे हास्यकी तरफ ध्यान देनेकी दोनोंमें से किसीको भी फुरसत नहीं थी। दोनों अपने खेलमें मशगूल थे। (और यह खेल कोअी ५ मिनट तक होता रहा।) जैसे बापूजी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर अपनी मस्तिष्क-शक्तिको अेकाग्र करते हैं, वैसे ही अपने छोटेसे पोतेके साथ विनोद करनेमें तल्लीन हो गये।

५ मिनट बाद ही साम्यवादमें विश्वास रखनेवाले दो बंगाली भाअी आ गये। अुन्होंने बापूजीके रचनात्मक कार्योंको समझनेके लिअे कुछ प्रश्न किये। कार्यकर्ता किस प्रकारके होने चाहिये? और अिस कार्यका लोगों पर क्या असर होता है? अथवा अिससे जनताका क्या भला होता है? बापूजीने अुन्हें क्रमवार अुत्तर दिये। ये दोनों भाअी विद्वान थे और शान्तिनिकेतनसे आये थे। गुरुदेव टागोरके शिष्य थे।

साम्प्रदायिक अेकता

बापूजी बोले, "पहले हम साम्प्रदायिक अेकताको लें, क्योंकि अिस समय यही काम करनेकी बड़ी जरूरत है। मैंने जबसे रचनात्मक कार्यक्रमके १८ कार्य बताये हैं, तभीसे यदि देशमें यह कार्यक्रम लगनके साथ पूरे जोरसे अपनाया गया होता, तो आज सारे देशमें जो करुण घटनाअें हो रही हैं वे न हो पातीं। मुझे विश्वास है कि साम्प्रदायिक अेकताके बिना हम अपंग हैं। जैसे शरीरमें कोअी अेक क्रिया न हो तो हम बीमार ही माने जायेंगे, वही हाल हमारे देशका है। अैसा देश स्वतंत्रता कैसे प्राप्त करेगा? और कर भी ले तो अुसे कैसे बचायेगा? हिन्दुस्तानमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिक्ख वगैरा अनेक जातियां हैं। जब तक ये जातियां अेक न होंगी तब तक हम कमजोर और बीमार जैसे ही रहेंगे। (अर्थात् परतंत्र ही रहेंगे।) और कभी स्वतंत्रता आ गअी तो अुसमें सुख नहीं होगा, बल्कि गुलामीसे वह स्वतंत्रता शायद अधिक विडम्बनापूर्ण होगी। मुझे तो आजकी परिस्थितियोंसे अैसा ही लगता है।

खादी

"मेरी यह राय दिन-दिन दृढ़ होती जाती है कि यदि प्रत्येक घर, प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ आध घण्टे ही रोज चरखा चलाने लग जाय, तो अुसे अिंच-भर भी कपड़ा खरीद कर न लेना पड़े। अितना ही नहीं, यह स्वराज्य कायम रखनेकी कुंजी है। करोड़ों मनुष्य यदि अपना अितना ही समय कातनेमें दें, तो अुसका जो हिसाब आये अुसे देखकर सारी दुनिया चकित हो जाय। खादीके सिवा करोड़ोंकी भुखमरीका दूसरा कोअी अिलाज ही नहीं है। खादीके पीछे कितने ही अुद्योगोंका विकास होता है और अुसके पीछे कितने ही कारीगरोंका गुजर होता है। क्योंकि अिसमें बढ़अी, लुहार, किसान, जुलाहे आदिका निर्वाह होता है। चरखेको मैं सूर्यकी अुपमा देकर कहता हूं कि अुसका चक्र चलता है तब सारे देशमें अुजाला होता है। और गांवोंका अुद्धार हो तो ही हिन्दुस्तानका अुद्धार होगा। भारत ७ लाख गांवोंका देश है, न कि बम्बअी, मद्रास, कलकत्ता, लाहौर और कराचीका।

अस्पृश्यता-निवारण

"तीसरा कार्य अस्पृश्यता-निवारणका है। जब तक अस्पृश्यता रहेगी, तब तक हमारे दिल भी अेक-दूसरेके प्रति अस्पृश्य ही रहेंगे। अैसे अस्पृश्योंको

अहिंसक स्वराज्य कैसे मिलेगा? जो अपने देशभाअियोंका मैला अुठानेका काम करते हैं, अुनके प्रति जो असह्य अुदासीनता दिखाअी जाती है वह हमारे देशका काला कलंक है। अगर हम अहिंसा और सत्यमें विश्वास रखते हैं, तो हममें अूंच-नीचके भेद या झूठा बड़प्पन न आना चाहिये। हमें सारे संसारको अपना कुटुम्ब मानना चाहिये और अेक कुटुम्बके भाअियोंकी तरह रहना चाहिये।

शराबबन्दी

"नशीली चीजोंसे हमारी शारीरिक और आर्थिक स्थिति कंगाल हो गअी है। हमारा देश अितना ठंडा भी नहीं है कि हमारे लिअे शराब पीना जरूरी हो। और नशा करनेवाला मनुष्य नीतिको तो जानता ही नहीं। अिससे हमारे देशकी आध्यात्मिकताका लोप हो जायगा। फिर तो गीतामें कहे अनुसार स्मृतिभ्रंशसे ज्ञान नष्ट हो जायगा। और जिनका ज्ञान नष्ट हो गया वे मरे हुअे जैसे ही हैं।"

स्त्रियोंकी अुन्नति

"स्त्रीको हमारे शास्त्रोंमें अर्धांगिनी माना गया है। परन्तु अर्धांगिनी तो क्या, हम अुसे अपना अेक खिलौना समझते हैं। अथवा हमारे देशमें अब भी अुसे दासीकी तरह ही रखा जाता है। लड़कीका जन्म हो तो कुटुम्बमें अुदासी छा जाती है। और लड़केके जन्मको अेक अुत्सवके समान माना जाता है। अिसलिअे जब तक यह रोग जड़से नहीं मिटा दिया जाता, तब तक स्त्री-जाति कभी आगे नहीं आ सकती। जितना अुत्साह लड़केके जन्मका होता है अुतना ही अुत्साह जब लड़कीके जन्मका भी माना जायगा, तभी स्त्री-पुरुष समान समझे जायेंगे। अिसलिअे प्रत्येक कार्यकर्ता स्त्रीको अपनी मां, बहन या लड़कीकी तरह ही आदरके साथ सम्मानित करे। आज स्त्रियोंके प्रति हम जो अनुचित व्यवहार करते हैं और मेरे पास रोज जो अुनकी लाज लूटी जानेकी खबरें आ रही हैं, वह तो हमारी लज्जाकी, हमारी नीचताकी और हमारी पशुताकी पराकाष्ठा है। मैं तो यह मानता हूं कि अिस पापसे हमारा अुद्धार होना मुश्किल है।"

सफाअी

"जब तक गांवोंकी सफाअी पर ध्यान नहीं दिया जायगा, तब तक वहांके लोगोंका हृदय कभी स्वच्छ नहीं होगा और हमारी जनताका मन

गांवके घूरों जैसा ही रहेगा। अिसलिअे ग्रामोद्धारमें ग्राम-सफाअीकी अुतनी ही महत्ता है, जितनी और बातोंकी।

शिक्षा

"मैंने देखा कि तालीम जड़से देनी हो तो बुनियादी शिक्षाकी जरूरत है। और यह नअी तालीमके द्वारा ही हो सकता है। अुसके बिना भारतके करोड़ों बालकोंको शिक्षा नहीं दी जा सकती। अिसमें प्रौढ़-शिक्षा भी अपने-आप आ जायगी। अिसी तरह राष्ट्रभाषाको भी अपनाना पड़ेगा। हम अंग्रेजीके मोहमें बहुत फंस गये हैं। कल ही मैंने अंग्रेजीके बारेमें काफी कहा था। अंग्रेजीके मोहके कारण हमने अपनी भाषाके प्रति जितनी अवहेलना दिखाअी है जो क्षन्तव्य नहीं मानी जा सकती। राष्ट्रभाषा जाननेवाला सेवक फारसीमय अुर्दू बोलने या केवल संस्कृतमय हिन्दी बोलनेके झगड़ेमें नहीं पड़ेगा, परन्तु अैसी भाषा बोलेगा जिसे स्थानीय मनुष्य आसानीसे समझ सकें। और वह जिस गांवमें बैठेगा वहांकी स्थानीय भाषा सीखकर वहांके मनुष्योंमें मातृभाषाके प्रति आदर बढ़ानेका प्रयत्न करेगा। अिसमें भाषा सीखनेवाला कुछ खोता नहीं, अुलटे अुसका ज्ञान बढ़ता है।

"अन्तमें अितना ही कहूंगा कि स्वराज्यमें अितना प्रयत्न तो होना ही चाहिये कि सब मुल्क दाल-रोटी खा सकें और सबको पहनने लायक कपड़ा और रहने लायक मामूली घर मिल सके। आज तो कुछके पास सोने-चांदीके बरतन हैं तो कुछ गरीबोंके पास मिट्टीके भी बरतन नहीं हैं। कुछके पास रेशम और कीनखाबके कपड़े हैं, तो कुछके पास शरीरकी लाज ढंकनेको भी कपड़े नहीं हैं। अैसी असमानता मेरे बताये हुअे रचनात्मक कार्यो द्वारा ही मिटाअी जा सकती है। परन्तु अिसके बजाय हम पिस्तौलके बल पर रूसके साम्यवादकी तरफ झुक रहे हैं। यह हिंसक मार्ग है। अभी तो वहां भी यह मार्ग पूरी तरह सफल नहीं हुआ है। यहां हम यह नीति अपनायेंगे तो हमारे पास जो मुट्ठीभर पूंजीवादी हैं वे भी कंगाल हो जायेंगे और दूसरा तो बहुत बड़ा भाग कंगाल है ही। अिसके बजाय मैंने जो अहिंसक अुपाय बताये अुनके द्वारा हम आर्थिक समानताका प्रचार करेंगे, तो अिन पूंजीवादियोंको खुद ही शर्म आयेगी कि जब हमारे भाअी अन्न-वस्त्रके बिना रहते हैं तब हम अैसे कीनखाबके कपड़े नहीं पहन सकते या लड्डू नहीं

खा सकते। अिससे अपने-आप भाअीचारा और अुसके द्वारा देशसेवा व्यापक बनेगी।"

वापूजीने रचनात्मक कार्योंकी संक्षिप्त व्याख्या समझाअी। अुन बंगाली भाअियोंने अेक भी विरोधी दलील नहीं दी। १५ मिनट पहले (तीन वर्षके बालक) गोपूके साथ खेलनेवाले बापूजीने दूसरे ही क्षण महत्त्वकी होने पर भी अिन विद्वान् भाअियोंके गले अुतरनेवाली सैद्धान्तिक बातें कीं।

अुनके चले जाने पर बापूजी डॉक्टरके रूपमें बदल गये। आज कितनी बार नकसीर चली? क्या खाया? रातको क्या अुपचार करके सोना चाहिये? अिसकी सूचना मुझे दी। सूचना पूरी होने पर बापूजी विद्यार्थीके रूपमें बदल गये। सवेरे बंगालीका अधूरा रहा हुआ पाठ पूरा किया। यह करके शिक्षकका रूप ले लिया। मुझे गीतापाठ लिखाया था, अुसका डिक्टेशन देखकर अुस पर हस्ताक्षर किये। अिससे निबटनेके बाद आदर्श मित्र बन गये। बापूजी और खानसाहब ९ बजे बाद आध घण्टा टहले। ९।। बजे सोनेकी तैयारी की। अितनेमें लक्ष्मी काकी और देवदास काका आये और बापूजी अेक पिताके रूपमें और पितातुल्य ससुरके रूपमें बदल गये। अेक आखिरी रूप और बाकी रह गया था। नोआखालीके लिअे अेक चैक आया था अुस पर हस्ताक्षर करके अुसकी पहुंच लिखी और हिसाब लिखाया। मानो आदर्श मुनीम हों!

रातको बापूजीके सिरमें तेल मलते मलते मैंने कहा, "बापूजी, आप तो बहुरुपिया हैं। आप कितने कितने रूप धारण कर सकते हैं, अिसकी आज मैंने गिनती की। परन्तु अभी वह अधूरी ही है।"

बापूजी हंसे, "अेक यही पदवी बाकी थी, सो तुमने मुझे दे दी।"
सुहरावर्दी साहबको बंगालमें फिरसे दंगे होनेके बारेमें तार दिया।
आज बापूजीके ८४ तार हुअे।

भाअी साहब (ब्रजकिशनजी चांदीवाला) बापूजीका तो बहुत ध्यान रखते ही हैं, लेकिन मेरा भी अुतना ही ध्यान रखते हैं। दोनों वक्त घरसे ही खाना मंगाकर समय मिलने पर यहीं खा लेते हैं। हमें तो अेक मिनटका भी अवकाश नहीं रहता। टेलिफोनकी घण्टियां ही अिन्हें दौड़ाती रहती हैं। जब देखिये तब अुनके कान पर चोंगा ही लगा रहता है और लोग बापूजीके समयकी मांग करते रहते हैं।

भंगीवस्ती, नअी दिल्ली,
८-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना वगैरा हुअी। प्रार्थनाके समय वापूजीने मुझे जगाया। बुखार होनेके कारण प्रार्थनाके वाद बुखार देखा। १०२ डिग्री था। वापूजीको गरम पानी देकर मैंने भी गरम पानी पिया और सो गअी। आज फलोंका रस हरेरामजीने* दिया। और वाकीका काम राजकुमारी वहनने संभाला।

वापूजीकी मालिशके समय अर्थात् ८ वजे मेरा बुखार अुतर गया। अिसलिअे अुन्होंने मुझे मुश्किलसे मालिश करनेकी अिजाजत दी।

वापूजीकी वारीकीसे भरी देखरेखकी तो वात ही क्या कहूं? मैं वापूजीको स्नान करा रही थी। स्नानके समय आज हजामत वनानेकी वारी थी। वापूजी वाथमें सो रहे थे। मैं झुककर हजामत करने लगी। अुसी क्षण वापूजीने कहा, "जाओ, वाहरसे कुर्सी ले आओ। अुस पर वैठकर हजामत करो, जिससे अितने समय तुम्हें आराम मिल जाय। जरा वुखार अुतरा कि तुम तुरन्त काममें लग जाती हो। मैं तुम्हें आराम नहीं दे सकता, यह मुझे खटकता है। परन्तु तुम्हें भी ध्यान रखना चाहिये। जरा भी शक्ति वेकार नहीं जाने देना चाहिये। दो मिनट मिले तो भी लेट कर आराम कर लेना चाहिये। यहां तो दूसरे भी काम करनेवाले हैं। तय करके अुन्हें काम वांट देना चाहिये। तवीयत ठीक न होने पर भी मेरी सेवाका आग्रह रखना ठीक नहीं।"

खाते खाते सर अेम० डर्लिगके साथ वातें कीं। अुन्होंने प्रश्न पूछे।

प्रश्न — अैसा लगता है कि अंग्रेज तो अव जानेकी तैयारीमें हैं। तो क्या देशका विभाजन करेंगे? या कैसी सरकार वनायेंगे? और अुस सरकारमें किन किन दलोंको रखेंगे?

वापूजी: "मेरी सूचना तो निरपेक्ष है कि अंग्रेजोंको हमारी चिन्ता किये विना यहांसे चले ही जाना चाहिये। और यह भी अुनके हितकी वात है। अमेरिका और अिंग्लैंड भले वड़े देश हैं, आगे वढ़े हुअे महान राष्ट्र हैं, महत्त्वाकांक्षी हैं। परन्तु अेशिया और अफ्रीकाकी मूक मानव-प्रजाके मुकावलेमें

* अिन भाअीने वापूजीकी अन्त तक सेवा की थी।

वह महत्ता मिट्टीके समान है। जब तक वे अपने पर लगा हुआ काला कलंक धो न डालें, तब तक अुन्हें बड़ी बड़ी बातें करनेका अधिकार नहीं है। और अब यह प्रजा अुनकी अिन बातोंमें फंसनेवाली भी नहीं है, यह भी अुतना ही सत्य है। अफ्रीका और अेशियाके करोड़ों लोगोंको स्वतंत्रता भोगनेका मानव-अधिकार देकर अुनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे, तो अुन्हींका भला होगा।

"मैं यह भी मानता हूं कि अंग्रेजोंके जाने पर हमारे देशमें अंधाधुंधी बढ़ेगी। अभी ही देखिये न, कितना कलह फैल रहा है? परन्तु आज भी मैं मानता हूं कि वे तन-मन-धनसे हृदयपूर्वक और व्यवस्थित ढंगसे अिस देशको मुक्ति देंगे तो सारे झगड़े मिट जायेंगे और सब दलोंके नेता मिलकर तंत्रको सुव्यवस्थित बना सकेंगे। परन्तु मैं नहीं जानता कि अैसा होगा या नहीं। क्योंकि मैं जानता हूं कि हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेके पक्षमें बहुत बड़ा समर्थन है। आज राष्ट्रकी किसे परवाह है? सिर्फ अपनी महत्त्वाकांक्षाअें पूरी करनी हैं और झगड़े कराकर अपनी सत्ता जमानी है। यह है आजकी परिस्थिति।

"फिर भी मैं आशावादी मनुष्य हूं। अिसलिअे अितनी आशा रखता हूं कि ब्रिटिश सत्ता जितनी अीमानदारीसे हटेगी, अुतना असर अिस राज्य-तंत्रको व्यवस्थित करने पर पड़ेगा। और अिसमें कांग्रेस, मुस्लिम लीग और देशी राज्योंकी मददसे अुनके प्रतिनिधि स्थापित किये जायेंगे।

"विभाजन-सम्बन्धी बातोंसे मेरा हृदय जलता है। अेक शरीरके टुकड़े करें तो शरीरका क्या हाल होगा? अिसी तरह अैसे समृद्ध देशके विभाजनसे अिस देशकी आबादी छिन्न-भिन्न हो जायगी। आज देशके टुकड़े होंगे, कल काश्मीरके, परसों काठियावाड़के अेक कोनेमें पड़े हुअे नवाबी राज्य जूनागढ़के। यह सब कैसे हो सकता है? भले सारा हिन्दुस्तान लीगको सौंप दिया जाय। मुझे अुसकी परवाह नहीं है। अिसलिअे मैं तो मानता हूं कि अंग्रेज सत्ताके बिदा होनेके बाद हिन्दुस्तानकी जनतामें जागृति पैदा नहीं हुअी, तो वह अनेक राजाओंका अखाड़ा बन जायगा और अपनेसे छोटोंको निगल कर बड़े राजा चक्रवर्ती बननेकी कोशिश करेंगे।

"मेरा अहिंसा-धर्म किसीका नाश नहीं करेगा, परन्तु शुद्ध करेगा। अिसीलिअे राजाओंसे भी मैं कहता हूं कि आपको डरनेकी जरा भी जरूरत

नहीं। कांग्रेस तो राजाओंके साथ हमेशासे समझौता ही करनेके पक्षमें है। क्योंकि कांग्रेस अहिंसाके ध्येयको अपनाये हुओ है। राजाओंको प्रजाके हाथमें स्वेच्छापूर्वक सत्ता सौंप देनी है। अिसलिओ कांग्रेस जरूर अुनकी तरफ आदरकी दृष्टिसे देखेगी। हमें राजाओंका कचूमर नहीं निकालना है। राजा भी अन्तमें तो भारतके नागरिक ही हैं न? राजाओंको केवल अपना चरित्र सुधारकर प्रजाके सेवक बनना है। कांग्रेस अुनकी मदद पर ही रहेगी। वे अपनी नीति नहीं सुधारेंगे तो आत्मनाश मोल लेंगे।"

अिन भाओीको बापूजीने मौजूदा परिस्थिति और संपूर्ण स्वतंत्रता मिलनेके बादकी देशी राज्योंकी स्थितिके बारेमें संक्षिप्त जानकारी दी।

अुनके साथ अेक और भाओी अमेरिकासे आये थे। परन्तु अुन्हें बापूजीने दोपहरको आनेकी सूचना की। क्योंकि राजाजी, मौलाना साहब, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी वगैरा आ गये थे।

अिन सबके साथ भी बापूजीने देशकी वर्तमान विकट परिस्थितिके बारेमें बातें कीं। अैसा मालूम होता है कि बापूजी भारतका विभाजन न करनेके अपने मतमें दृढ़ होते जा रहे हैं।

११ बजे कालीप्रसाद मुकर्जी बंगालके विभाजनके बारेमें बातें करने आये थे। परन्तु बहुत लेकर नहीं गये।

सुबह आये हुओ अमेरिकाके दो भाओी और अेक बहन ३ बजे आये। वे अिस देशका अध्ययन करना चाहते हैं। यहां ४ महीने रहकर अलग अलग स्थानोंकी यात्रा करेंगे। (किसी अखबारके प्रतिनिधि थे।)

बापूजीने अुनसे कहा, "अपने देशके लिओ यदि आपको गर्व हो और वह गर्व दूसरे देशमें जाकर आपको बताना हो, तो दूसरे देशमें जाकर आपको अपने देशके अुत्तम गुण, स्वभाव और विशेषता आदि वहांके अपने जीवनमें बताना चाहिये। अिसलिओ अगर आप यहां अध्ययन करने आये हैं और अपने देशकी अच्छाओी यहां छोड़ जाना चाहते हैं, तो आपको अिस ढंगसे यात्रा करनी होगी। नहीं तो आपके बारेमें गलतफहमी पैदा होगी और आपके साथ अनजाने अन्याय होगा। मैं तो विदेशोंमें बसनेवाले भारतीयोंसे भी यही बात कहता हूं। अुदाहरणके लिओ, अहिंसाको और अुद्योगोंमें खादीको लीजिये। हमारे देशमें अैसे बहुतसे गुण हैं। अिसलिओ विदेशोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको मैं पुकार पुकार कर कहता हूं कि यदि आप यहां चरखा

न चलाते हों तो विदेशमें जाकर नियमपूर्वक चरखा चलाना आपका धर्म है। यहां खादी न पहनते हों तो वहां खादी ही पहनिये। परन्तु अिसके बजाय असंख्य भारतवासी वहांके रेशमी कपड़ों या वहांकी वस्तुओंके मोहमें फंस जाते हैं। परिणामस्वरूप भारतवर्षमें नैतिक स्तर अूंचा नहीं होता। वहांकी स्त्रियोंको दिखा दीजिये कि हम ब्रान्डी या सिगरेटके बगैर काम चला सकते हैं। वहांकी स्त्रियोंको समझाअिये कि आर्य नारी किसे कहते हैं। अिसी तरह आप (अमेरिकन बहनको सम्बोधन करके) यहां यह बताअिये कि स्त्री-जाति दुनियामें अेक महत्त्वका अंग है, न कि पुरुषोंका खिलौना। स्त्रियां भी बहादुर होती हैं। अमेरिकाकी सन्नारियोंकी संस्कारिताकी छाप आप यहांकी स्त्रियों पर डालनेकी कोशिश कीजिये।

"आपको अेक सूचना देनेकी अिच्छा होती है। मैं मानता हूं कि वह आपको पसन्द आयेगी। पसन्द आये तो ध्यानमें रखिये और अिस दिशामें काम कीजिये। पसन्द न आये तो अुसे फेंक दीजिये। मेरी अितनी-सी सूचना सुननेके लिअे भी मैं आपका अुपकार नहीं भूलूंगा। मेरी सूचना यह है कि शान्तिकी स्थापनामें स्त्रियां बहुत महत्त्वपूर्ण भाग ले सकती हैं। स्त्रियोंको आजकलके वैज्ञानिक प्रवाहमें न बहकर अहिंसाके विज्ञानमें बहना चाहिये, क्योंकि स्त्रियोंका स्वभाव कुदरती तौर पर क्षमा करनेका है।

"पुरुषोंकी नकलसे आज स्त्रियां न तो पूरी तरह अुनकी नकल कर सकती हैं और न प्रकृतिने अुन्हें जो देन दी है अुसका ही विकास कर सकती हैं।

"लड़ाअीसे सम्बन्ध रखनेवाली किसी भी चीजके साथ न खुद सम्बन्ध रखना चाहिये और न अपने घर या कुटुम्बके लोगोंको रखने देना चाहिये। स्त्रियोंमें अीश्वरने ममतापूर्ण हृदय रख दिया है। अिस देनका अुन्हें सदुपयोग करना चाहिये। यह शक्ति मूक होनेके कारण अधिक कारगर है। मैं तो यह मानता हूं कि अीश्वरने स्त्रियोंको शान्तिकी प्रतिनिधि होनेके लिअे ही पैदा किया है।"

अमरीकी महिला बहुत खुश हो गअीं। अुन्होंने अुठते अुठते बापूसे कहा, "मुझे कहना चाहिये कि स्त्रियोंको अगर आजकी दुनियामें कोअी मार्गदर्शन दे सकता है तो अेक आप ही दे सकते हैं। हमारा यह सौभाग्य है कि स्त्रियोंकी शक्ति और स्त्रियोंका अुद्धार करनेके मार्गसे आप परिचित हैं। और आपको अुसकी लगन है। आपकी ये बातें अपने हृदयमें अंकित करके रखूंगी। मैं मानती हूं कि हिन्दुस्तानकी मेरी यात्रा पूरी तरह सफल

हुअी है। गांधीजी, आप हमारे देशमें आअिये न? आजके अणुबमके जमाने आप स्त्रियोंसे ये बातें कहें अिसकी बड़ी जरूरत है।"

बापूजी — "हां, मुझे आपके देशमें आना तो बहुत अच्छा लगेगा। पर अिस समय मुझे अैसे संयोग दिखाअी नहीं देते। मुझे ले जाना हो मैं आपसे यह मदद जरूर मागूंगा कि आप हमारे देशकी सेवामें ल जाअिये। हमारे यहां आपसमें जो दंगा-फसाद मचा हुआ है अुसे शा कीजिये और स्त्रियों तथा बच्चोंकी हत्याको रोकनेकी कोशिश कीजिये। अ अिसमें सफलता मिल जाय, और भारतमें प्रजासत्ताक राज्य घोषित जाय तथा अपने देशमें जितने आप सुखी हैं अुतने यहांके करोड़ों मान सुखी हो जायं, तो अवश्य मैं मुक्त हो सकता हूं और आपके देशकी या कर सकता हूं। परन्तु यह तो आकाश-कुसुम जैसी बात है।"

वे लोग कोअी १० मिनटमें विदा हो गये। अुन लोगोंकी शिष्ट पराकाष्ठाको पहुंची हुअी है। बापूजीके कमरेमें आते हैं तो जूते बाहर निकाल देते हैं। बापूजी विदेशियोंके लिअे कुरसी रखवाते हैं। परन्तु ज वे देखते हैं कि महात्मा गांधी नीचे बैठे हैं तो वे भी नीचे ही बैठ जा हैं। और बापूजीको पूरे आदर और सम्मानकी भावनासे देखते हैं। कु लोग तो अुठकर बापूजीको पीठ न दिखानेके खयालसे अुलटे पैरों ही चलक कमरेके बाहर निकल जाते हैं। ये तीनों भाअी-बहन भी अुन्हींमें से थे बापूजी अुन्हें दसेक मिनट भी दे देते हैं, तो अुनकी जबानसे कितनी वार कृतज्ञताके शब्द सुनाअी पड़ते हैं।

नियमानुसार शामकी प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें बापूजीने अेकता प जोर दिया और नोआखालीकी परिस्थिति फिरसे कुछ बिगड़नेके सम्बन्ध बातें कहीं। "नोआखालीमें मेरे साथी मौजूद हैं। मुझे अुम्मीद तो यही कि वे करेंगे या मरेंगे। और मरते मरते भी वे किसी पर गुस्सा नहीं करेंग अैसे बहादुर आदमी वहां स्वेच्छासे काम कर रहे हैं।"

अिसके बाद कुछ प्रश्नोत्तर हुअे।

प्रश्न — आपने कहा है कि जिनमें मरनेकी ताकत न हो वे हिजर करें। तो वे कहां जायें?

बापूजी — भारत अितना बड़ा देश है। जहां चाहें जा सकते है और जहां जिस धन्धेका विकास करना हो कर सकते हैं। मुझे अंग्रेजी

प्रश्न पूछे जाते हैं, परन्तु मैं अंग्रेजी अच्छी नहीं जानता (हंसी)। 'अन्धोंमें काना राजा' वाला स्थान अंग्रेजी भाषामें मेरा है।

दूसरा प्रश्न — यहां पुलिस क्यों रहती है?

बापूजी — प्रार्थनामें पुलिस रहती है, अिसका यह अर्थ नहीं है कि अुनसे मैं किसी प्रकारकी रक्षा मांगता हूं। फिर भी पुलिस आती है तो भले रहे। वह भी भगवानका नाम सुनकर यहांसे कोअी चीज लेने लायक होगी तो लेगी। अुससे हम क्यों अीर्ष्या करें? अन्तमें तो पुलिसवाले भी मनुष्य ही हैं। अपनी नौकरी करते करते वे समयका सदुपयोग करें, तो अिसमें क्या बेजा है?

प्रार्थनासे लौटकर बापूजीने काता। अुसके बाद सारा मंत्रि-मण्डल बापूजीसे मिलने आया। अुनके साथ अेक घण्टा अेकान्तमें मंत्रणा हुअी।

अुसके बाद खानसाहब और बापूजीने अकेले बातें कीं। खानसाहब भी विभाजनकी जो बातें चल पड़ी हैं अुनसे बहुत व्यग्र हो गये हैं। बापूजी पटना जाना चाहते हैं। परन्तु जवाहरलालजी, सरदार पटेल और सबका आग्रह है कि अभी तीन-चार दिन बापूजी यहीं ठहरें।

१०–३० के बाद सख्त गरमीके कारण गीले तौलियेसे बापूजीका सारा शरीर मैंने पोंछ दिया। बादमें गीली चादर लपेटकर माथे व पेट पर मिट्टी लेकर वे सो गये। मेरे सिर पर भी मिट्टी रखवाअी। रातको जरूर काफी ठंडक हो जाती है। खानसाहब थोड़े समयमें पेशावर चले जायेंगे। वे सरहदकी चिन्तामें डूब गये हैं। अुदास दिखाअी देते हैं।

भंगीबस्ती, नअी दिल्ली,
९–४–'४७

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थनाके लिअे अुठे। बापूजीने पानी पीकर मुझे १० मिनट गीता पाठ लिखाया। खुदने बंगाली पाठ लिखा और पढ़ा।

अेक विद्यार्थीने पूछा था कि वह छुट्टियोंमें अपना समय किस तरह बिताये। अुसे लिखवाया:

> अपने अपने गांवमें जाकर लोगोंको बताना चाहिये कि बाहरकी दुनियामें क्या हो रहा है, नागरिक रक्षादल खड़े करने चाहिये और यह बात खुद समझकर दूसरोंको समझानी चाहिये कि अनाज और

कपड़ेकी तंगीके बारेमें हमारा कितना अज्ञान है और हम चाहें तो वह तंगी दूर कर सकते हैं। कपासकी खेतीसे लेकर कपड़ेकी बुनाअी तककी लोगोंको यथासंभव कल्पना करानी चाहिये और ग्राम-सफाअी पर खास ध्यान देना चाहिये। लोग जहां-तहां टट्टी न जायं, अिसके लिअे अुचित स्थानों पर पाखाने बनाये जायं और मैले पर अच्छी तरह मिट्टी डालनेकी बात बताअी जाय। लोगोंको यह समझाया जाय कि अच्छा खाद किस तरह तैयार होता है। प्रौढ़-शिक्षा और लड़के-लड़कियोंको पढ़ानेकी बातें ग्रामवासियोंके सामने जोर देकर रखी जायं।

मेरी मान्यता है कि 'साम्प्रदायिकता' तो शहरोंकी अनेक गंदगियोंमें से अेक है। और वह शहरकी ही अुपज है। गांवोंमें अैसा वातावरण नहीं है। गांवोंमें अिससे काम भी नहीं चलता। हमारे गांव अितने अधिक गरीब हैं कि अुनमें अेक-दूसरेके साथ लोगोंका काम पड़ता ही रहता है। आपसके संबंधोंसे कुटुम्ब जैसा वातावरण बन जाता है। अिसलिअे वहां यह प्रश्न रहता ही नहीं।

२॥ बजे अेक दुःखी बहन आअी। अुसने कहा, मेरे पति शहरके अच्छे प्रतिष्ठित वकील हैं और शहरमें अुनका खासा असर है। मगर मैं कम पढ़ी हुअी हूं। वे किसी और स्त्रीके प्रेममें फंस गये हैं। अिसका मुझे पता नहीं था। परन्तु मुझे फुसलाकर अुन्होंने तलाक-पत्र पर मुझसे हस्ताक्षर करा लिये और दूसरी स्त्रीसे शादी कर ली। अब वे कहते हैं कि अिस तरह जो स्त्री आसानीसे फुसलाअी जा सकती है वह किसी औरके भुलावेमें भी आ सकती है। अैसी स्त्रीको पत्नीके रूपमें रखकर क्या करूं? बापूजी, अब मुझे सूझ नहीं पड़ती कि मैं क्या करूं। अिसलिअे आपके पास आअी हूं।

यह सुनकर बापूजीने मुझे कहा, "देखो, यह सारा किस्सा तुम्हारे लिअे भी समझने लायक है। अैसी घटनायें बहुत होती रहती हैं।"

अुस बहनसे बापूजीने कहा, "तुम्हारा पति बी० अे०, अेल० अेल० बी० हो गया हो तो भी मैं अुसे अज्ञान ही कहूंगा। अुसने अैसा काम तो जरूर किया है, जो अुसकी पढ़ाअीको शोभा नहीं देता। सही तरीका तो यह होता कि तुम्हारा भोलापन दूर करना तुम्हें सिखाया जाता। फिर, तुम्हारे पतिने तुम्हें भुलावेमें डाला और तुम भुलावेमें आ गअीं अिसमें मुझे कोअी बेजा बात नहीं दिखाअी देती। अपने पतिके भुलावेमें आनेमें हमारे समाजकी पत्नियां अपना गौरव

समझती हैं। अिसलिअे अैसे पुरुष जब तक अिस प्रकारके दूषित काम करनेमें शरमायेंगे नहीं, तब तक हमारी नाव ठिकाने नहीं लगेगी। यह बात तो मैंने तुम्हारे समर्थनमें कही। परन्तु अब तुम्हारा मुख्य प्रश्न तो यह है कि अिस स्थितिमें तुम्हें क्या करना चाहिये? तुम्हें किसी भी सेवाकार्यमें लग जाना चाहिये। अगर सेवाकार्यके लिअे तैयार न होओ तो कस्तूरबा ट्रस्टकी तरफसे चलनेवाले वर्गोंमें भी जा सकती हो। अतः सेवाके लिअे तैयार हो जाओ और यह बात भूल जाओ कि तुम विवाहित हो।

"दूसरा रास्ता यह है कि अगर तुम अपने मनको वशमें न रख सको तो योग्य साथी ढूंढ़कर विवाह कर लो। अैसे साथी जल्दी नहीं मिल सकते, अिसलिअे प्रयत्नसे संतोष मानना। और यदि तुम्हरा प्रयत्न शुभ होगा तो अवश्य सफल होगा।"

वैसे बापूजीका कार्यक्रम नियमानुसार चलता रहता है। काठियावाड़के भाअी तीन बजे आये। अुनके साथ थोड़ी बातें करते हुअे बापूजी बोले, "अब जैसे जैसे स्वतंत्रता नजदीक आती जा रही है, वैसे वैसे मेरा खयाल है कि हम परतंत्र होते जा रहे हैं। स्वतंत्रताका मैं तो यह अर्थ करता हूं कि स्वतंत्र मनुष्य अपनी जरूरतोंकी पूर्तिमें किसीका भी सहारा न ले। स्वतंत्रताका अर्थ केवल भौगोलिक स्वतंत्रता नहीं है।

"व्यापारी तो यही चाहेगा कि अुसके ग्राहकोंकी जरूरतें बढ़ें। हम अपनी जरूरतें बढ़ाते हैं और दूसरी तरफ पूंजीवादका नाश करनेवाला अेक वर्ग चिल्लाहट मचाता है। यह मेरी समझमें ही नहीं आता। अुदाहरणके लिअे, तुम जानते होगे कि अमेरिका और अिंग्लैण्डमें तैयार रसोअी मिलती है। हमारे यहां भी यह हवा आ तो गअी है। हम किसीको खाने बुलाते हैं तो बम्बअीके ताजमहलके जैसे होटलमें आर्डर दे देते हैं। अिसका नतीजा यह होगा कि हमारे यहां स्त्रियोंका जो वर्ग पाकशास्त्रको कला समझकर अपनाता है वह धीरे धीरे लुप्त हो जायगा। और मैं अैसे समयकी भी कल्पना कर सकता हूं, जब शायद स्त्रियां खाना पकाना बिलकुल भूल जायं। अेक छोटा-सा दृष्टान्त देता हूं। यह मेरी ही लड़की है। अुसे आप कहें कि बाजरेकी रोटियां बना दे तो वह नहीं बना सकती। आजकलकी लड़कियां जब अितनी-सी बात भी भूलने लगी हैं, तो आगे क्या नहीं भूलेंगी? (सब मेरी तरफ देखकर हंस पड़े।)

"अिसलिअे मैं मानता हूं कि स्वतंत्रताका मजा लेना हो तो प्रत्येक पुरुषको रोजमर्राके अुपयोगकी जिस चीजकी जरूरत हो अुसे स्वयं पैदा करना सीख लेना चाहिये।

"जो चीज आदमी खुद पैदा न कर सके अुसके बिना काम चला लेना चाहिये। अिससे स्वावलंबन बढ़ेगा और वह अुत्तरोत्तर प्रगति करेगा। अगर हम राजनीतिक स्वतंत्रताका सदुपयोग न कर सकें तो वह किस कामकी? स्वावलंबन तो स्वतंत्रताकी बुनियाद है और परावलंबन गुलामीकी निशानी है। अैसे स्वावलम्बी मनुष्योंको कभी कचहरी नहीं चढ़ना पड़ता या झगड़ेमें नहीं फंसना पड़ता। वे आपसमें निबटारा कर लेते हैं। अेक हद तक वे अपने पर कर लगायेंगे और अुसीसे अनेक बच्चोंके लिअे पाठशालाअें बन जायंगी, शिक्षकोंका गुजारा हो जायगा और ट्रेनिंग मिल जायगी। अैसी शिक्षा किसी पर भार नहीं बनेगी। हम खुद अपनी रक्षा कर लें तो किसी सेना या पुलिसकी जरूरत कहां रहेगी? काठियावाड़में अैसे प्रगतिशील अुत्साही कार्यकर्ता मौजूद हैं। अुन्हें जाग्रत रहना चाहिये कि आअिन्दा अुनकी जिम्मेदारी खूब बढ़नेवाली है। फिर तो मुझे विश्वास है कि छोटा-सा काठियावाड़ सारे देशके लिअे अेक आदर्श नमूना बन जायगा। और सारे देशका मार्गदर्शन कर सकनेकी काठियावाड़ियोंमें शक्ति है। वहांके लोग अज्ञान हैं, परन्तु वे साहसी और बुद्धिशाली भी हैं।

"साथ साथ काठियावाड़ अवगुणोंसे भी भरा है। काठियावाड़ियोंके बारेमें अेक कहावत प्रचलित है। आप तो जानते ही हैं कि वे पगड़ी पहनते हैं। अुस पगड़ीके जितने पेंच होते हैं, अुतने ही पेंच काठियावाड़की प्रजाके मनमें होते हैं। अैसा हो तो वही काठियावाड़ देशके लिअे कलंक हो सकता है।"

यह बात पूरी होते ही मौलाना साहब आ पहुंचे। अुनके साथ भी कुछ बातोंके सिलसिलेमें बापूजीने अिन्हीं विचारों पर जोर दिया।

राजकुमारी बहन नियमित आती हैं और अपने लम्बे-चौड़े कामकाजके बावजूद बापूजीकी डाक लिख जाती हैं। बापूजीके प्रार्थना-प्रवचनोंका अनुवाद भी कर जाती हैं।

शायद दो चार दिनमें हमें पटना जाना होगा। बापूजी जल्दी ही पटना पहुंचना चाहते हैं। बिहारमें भी मंत्रियों, कांग्रेसियों, लीगवालों और जनतामें

काफी झगड़े हैं। और अब तो बापूजीको स्पष्ट दिखाओ देने लगा है कि वहांका हत्याकाण्ड भी आपसके झगड़ोंके कारण ही हुआ है।

आजकी प्रार्थना-सभामें सुचेताबहनने अपने मधुर कण्ठसे 'हम अैसे देशके वासी हैं' भजन सुनाया। बापूजीने अुनके भजनका अुल्लेख करते हुअे कहा, "क्या ही अच्छा हो यदि हमारा देश अैसा बन जाय, जहां न शोक हो और न अीर्षा-द्वेष हो, जहां निरन्तर आनन्दमय वातावरण हो और परस्पर मैत्रीभाव तथा प्रेम हो!

"आज तो देशकी स्थिति अिस भजनके शब्दोंसे बिलकुल भिन्न है। परन्तु अिसमें शंका नहीं कि अिस भजनसे प्रेरणा लेकर यहांका हरअेक मनुष्य अिसके जैसा बननेका प्रयत्न करे तो देश जरूर अैसा बन जाय। समुद्र तो पानीकी बूंदोंसे ही बना है न? जैसे समुद्र पानीकी अेक-अेक बूंदसे बना है, वैसे देश अेक-अेक मनुष्यके अुत्तम चरित्रसे बनेगा। और यदि हम सब अैसे बन जायं तो पाकिस्तान बने या हिन्दुस्तान, अुसमें ११ प्रान्त हों या २१ हों, अुससे कुछ बिगड़ेगा नहीं। अगर हरअेक आदमी यह सोचने लगे कि जिस देशमें मैं जी रहा हूं अुस देशके प्रति मेरा क्या फर्ज है, तो किसीके दुःखी होनेकी नौबत ही न आये।

"मेरे नाम बेशुमार पत्र आते हैं। कुछमें मेरी तारीफ होती है, तो कुछ गालियोंसे भरे होते हैं। मगर अिससे मुझे क्या? मैं निन्दा और स्तुति दोनोंको समान मानता हूं। अिसीलिअे मैं काम कर सकता हूं।

"थोड़े समयमें हम आजाद हो जायंगे। अभी हम पूर्ण स्वतंत्र नहीं बने हैं। लेकिन अगर हम मिल-जुलकर काम करें, तो वाअिसरॉय कल ही जानेको कहेंगे। मुझे कहना चाहिये कि लार्ड माअुण्टबेटन साहब और अुनकी पत्नी लेडी माअुन्टबेटन बड़े संस्कारी और शरीफ खानदानके हैं। दोनों कुशल और समझदार हैं। अभी वे १४ महीने यहीं रहेंगे। हम लायक हैं या नालायक, अिसका प्रमाणपत्र प्राप्त करना हमारे हाथमें है।

"अैसे ही हमारे देशको देखनेके लिअे थोड़े समय पहले अेशियाके दूर दूरके देशोंसे अनेक स्त्री-पुरुष आये थे। खूनका अेक बूंद भी गिराये बिना हमने आजादी ली है; वे अिसी कीमियाको देखने आये थे। वे ही हमारे देशवासियोंको लड़ते देखकर गये। अुन पर अिसका क्या असर पड़ा होगा? मैं तो समझ ही नहीं सकता कि यह अमानुषिक आचरण किसलिअे है। क्या

यह सारी लड़ाअी पाकिस्तानके लिअे है? मैं कहता हूं कि जबरदस्तीसे पाकिस्तान तो क्या, जमीनका अेक अिंच टुकड़ा भी कोअी नहीं ले सकेगा। समझाकर और शान्तिसे सारा हिन्दुस्तान लिया जा सकता है। परन्तु गुंडागिरी करके तिलभर भी नहीं लिया जा सकता। मैं खुश होअूंगा यदि जिन्ना साहब हिन्दुस्तानके — आजाद हिन्दुस्तानके — पहले अध्यक्ष बनें। परन्तु शर्त यह रहेगी कि वे खुदाकी कसम खाकर, खुदाको हाजिर-नाजिर जानकर, अपनी नजरमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, यहूदी वगैरा अनेक जातियोंके लोगोंको समान समझें।

"बंगालके विभाजनका आन्दोलन होनेकी तैयारियां चल रही हैं। मैं कहता हूं कि डरा कर कोअी कुछ भी नहीं करा सकता। लेकिन अगर अल्प-संख्यक जातिको जीत लें और अल्पसंख्यक जाति यह कहे कि हमें तो सुहरा-वर्दी साहब ही चाहिये, हमें हिन्दू मंत्री नहीं चाहिये, हमें सुहरावर्दी साहब पर ही पूरा भरोसा है, तो मैं कहूंगा कि सब कुछ अुन्हींको सौंप दीजिये। परन्तु आज यह स्थिति नहीं है।

"मैं साहसपूर्वक अेक निःशंक बात बताता हूं कि हिन्दुस्तानमें अगर सच्ची बहादुरी आ जाय और वह आजका जंगलीपन छोड़ दे, तो मेरा विश्वास है कि पाकिस्तानके लिअे जोरशोरसे जो आन्दोलन चलाया गया है वह बेकार हुअे बिना नहीं रहेगा।

"मैं तो बता देता हूं कि डर या गुण्डागिरीसे कोअी कुछ भी नहीं ले सकता।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़े टहले। फिर अखबार सुने। बंगाली पाठ लिखा। और ९॥ बजेके बाद सोनेकी तैयारी की।

मैं भी कामकाज पूरा करके जल्दी ही सोने चली गअी।

भंगी-निवास, नअीदिल्ली,
१०-४-'४७

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थनाके लिअे अुठे। प्रार्थनासे पहले दातुन करते समय रूसकी भूमि अुजाड़ देनेकी नीतिके संबंधमें बातें करते हुअे बापूजी बोले, "ये लोग अपनी संपत्ति शत्रुके हाथमें न जाने देनेके लिअे अुसका नाश करनेमें विश्वास रखते हैं, और फिर भी अुसके बखान किये जाते हैं और अुस नीतिको महत्त्व दिया जाता है। अिससे मुझे आश्चर्य

होता है। वहांके बड़े बड़े विद्वान अिस नीतिकी प्रशंसा करते हैं। परन्तु न जाने क्यों मेरे मनमें अभी तक अुस नीतिकी प्रशंसा करनेकी बात नहीं आती। संभव है मैं अुनकी अपेक्षा अधिक अज्ञान होअूं। अिस नीतिकी हवा हमारे यहां भी बह रही है। पूंजीपतियोंका जबरदस्ती नाश करानेमें न तो मुझे कोअी त्याग दिखाअी देता है, न कोअी बहादुरी। मुझे मालूम हो जाय कि दुश्मन मेरे पास आ रहा है तो अपनी संपत्ति नष्ट करनेकी अपेक्षा मैं अुसे ज्योंकी त्यों रखकर वहांसे हट जाअूं। मैं मानता हूं कि अिसीमें सच्चा त्याग है और मानव-प्रेमकी पराकाष्ठाकी रक्षा है। अैसा हो तो वह शत्रु हमारा मित्र बने बिना रहेगा ही नहीं। यह मेरा दावा है। समाजको अुसके अंगभूत व्यक्तियोंसे अलग नहीं किया जा सकता। सच्चे अर्थमें हम सब अेक-दूसरेके भाअी-भाअी हैं। आज सरकार यथासंभव अच्छा काम कर रही है। परन्तु वह चाहे तब काम करना बन्द भी कर सकती है। अुस समय समाज जिन व्यक्तियोंसे बना है अुन स्त्री-पुरुषों पर यह जिम्मेदारी आ पड़ेगी। अुस समय यदि हम यह न समझें कि हम सब भाअी-भाअी हैं और अुसके अनुसार आचरण न करें, तो संभव है कि अंधाधुंधी बढ़ जाय। अुससे किसीको भी लाभ नहीं होगा।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने पानी पीते हुअे मुझे गीताके ४ श्लोक लिखवाये। ६ बजते बजते गोपालस्वामी आयंगर आ गये। अिसलिअे अुनके साथ मौजूदा सरकार और हिन्दुस्तान-पाकिस्तानके बारेमें विचार-विमर्श हुआ।

घूमते समय मौलाना साहब भी आ गये। मालिशके समय बापूजीने मुझे यंत्रों-संबंधी कुछ बातें कहीं। बापूजी बोले:

"यंत्रका अुपयोग कब हो और कब न हो, यह जान लिया जाय और समझ कर अुसका अुपयोग किया जाय, तो हमारी बहुतसी मुश्किलें कम हो जायंगी। जैसे, हमें चोट लग जाय तो घाव पर टिंक्चर आयोडीन (जहरीली दवा) लगा दी जाती है। परन्तु बुखार आ जाय तो टिंक्चर आयोडीन पिया नहीं जाता। डॉक्टर जहरीली दवाओंका जिस तरह अुपयोग करते हैं, अुसी तरह हमें सावधानीपूर्वक अिन यंत्रोंका अुपयोग करना चाहिये। यंत्रशक्तिको आर्थिक अुत्पादनमें अच्छा भाग लेना है। परन्तु आम जनताके हितका खयाल रखे बिना

यंत्रशक्तिका अुपयोग केवल थोड़ेसे पूंजीपतियोंने किया है, अिसीलिअे आज हमारी अधोगति हो गअी है।

"आज ही मैं कुछ भाअियोंसे वात कर रहा था। अुसमें हमारे गांवोंकी वैलगाड़ियोंमें रवर टायर या मोटर टायर लगानेके वारेमें चर्चा चली। मैंने कहा कि मुझे तो स्पष्ट मालूम होता है कि अैसे रवर टायरोंसे ग्रामीण भागोंकी सुविधा नहीं वढ़ेगी; हां, अुनकी जरूरतें और लाचारी जरूर वढ़ जायगी। और अुनके शोषणका अेक नया साधन पैदा हो जायगा।"

जो वंगाली भाअी वंगालके विभाजनका सख्त विरोध करते हैं, वे वापूजीसे मिलने आये थे। वापूजीने अुन्हें दृढ़ रहनेकी सलाह दी।

दोपहरको चांदपुर (नोआखाली) से प्यारेलालजीका फोन आया। अुन्होंने वहां जो घटनाअें फिरसे हो रही हैं अुनके वारेमें वातें करनेके लिअे आनेकी अिजाजत मांगी। फोन मेरे नाम था। वापूजीने कहलवाया, "मैं कोअी मार्ग-दर्शन नहीं दे सकता। तुम्हें सूझे सो करो और सतीशवावूके साथ परामर्श करो। केवल परामर्श करनेके लिअे ही नोआखालीसे यहां आना ठीक नहीं है। मैंने देनेको वहुत-कुछ दे दिया है। अव जो ठीक मालूम हो वैसा करो।"

शामको प्रार्थनासे पहले कुछ कार्यकर्त्री वहनें वापूजीके पास आअीं। अुन्होंने पूछा कि स्त्रियां स्त्रियोंमें ही काम करें या अुन्हें पुरुषोंमें भी काम करना चाहिये? वापूजीने कहा :

"मैं यह पसन्द करूंगा कि स्त्रियां अलग अलग विभागोंमें काम करें। क्योंकि स्त्रियोंके लिअे स्त्रीवर्गमें ही अितना ज्यादा काम करनेको पड़ा है कि कभी कभी तो कुछ स्त्रियोंकी ही संस्थाओंमें स्त्री-कार्यकर्ताओंके अभावमें पुरुषोंको काम करना पड़ा है। हमारे समाजने स्त्रीवर्गकी तरफ असह्य अुपेक्षा दिखाअी है। अुनमें काम करनेके लिअे वुद्धिशाली और सेवाभावी वहनोंकी वड़ी जरूरत है। फिर भी अितना ध्यान रखनेके लिअे जरूर कहूंगा कि पुरुषों और स्त्रियोंको आपसमें स्पर्धा न करनी चाहिये। दोनोंकी जरूरतें दोनों तरहसे समान और महत्त्वकी हैं। दोनोंके वीच कोअी परदा न होना चाहिये। अिसी तरह अेक-दूसरेके प्रति अुनका वरताव भी स्वाभा-विक और सहज होना चाहिये।

"आज तो बहुतसे कार्यकर्ता भी, जो किसी दिन कट्टर अहिंसक थे, मानो अहिंसाके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। अहिंसा, सत्य, रचनात्मक कार्य, ग्रामोद्योग, खादी अिन सब बातोंसे लोगोंको घृणा हो, तो भी मैं तो मृत्युपर्यन्त यही बात कहूंगा; क्योंकि हिन्दुस्तानकी अुन्नति मुझे अिसीमें दिखाअी देती है। रचनात्मक कार्यकी दिशामें अुचित प्रयत्न हुअे बिना और बुराअी करनेवालेके प्रति मनमें सद्भाव पैदा किये बिना हमारी अुन्नति हो ही नहीं सकती। अच्छे अच्छे आदमियोंकी बुद्धिने मनचाहे प्रयोग करके हथियारों या शस्त्र-सामग्रीकी खोज की है, फिर भी मेरा मन अुनसे ललचाता नहीं। यह सामग्री जैसे जैसे बढ़ती है वैसे वैसे मैं अपने अिस मतमें दृढ़ होता जा रहा हूं कि अहिंसासे पैदा होनेवाली शक्ति अनन्त गुनी और अद्वितीय है। अिस शक्तिकी मैं पिछले ३० सालसे पूजा कर रहा हूं। आजका जमाना बड़ा नाजुक है। अैसे समय मैं अिस शक्तिके साथ खिलवाड़ कभी नहीं करूंगा। और कोअी न हो तो भी मैं तो अपना साथी हूं ही।

"हिन्दुस्तानमें जबरन् लादी गअी हथियारबन्दी तो है ही। लेकिन यदि हिन्दुस्तानका प्रत्येक मनुष्य अुसे अैच्छिक बना ले और मरनेकी बहादुरीका गुण अपना ले, तो हिन्दुस्तान यह दावा कर सकता है कि आत्मरक्षा या देशकी अुन्नति अणुबमसे नहीं, परन्तु अहिंसासे ही हो सकती है। अिस दिशामें केवल बहनें ही महत्त्वपूर्ण भाग ले सकती हैं, अितनी बड़ी ताकत अीश्वरने अुन्हें दी है।"

अुन बहनोंने बापूजीके ग्राम-स्वराज्य-संबंधी विचार जानना चाहे।

बापूजीने अुन्हें संक्षेपमें बताया कि प्रत्येक गांवको अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये। अपने गांवकी जरूरतकी चीज गांवमें ही पैदा करना चाहिये। विशेष परिस्थितियोंमें ही वे चीजें बाहरसे मंगाअी जायं। हर गांव अपने ही पैसेसे पाठशाला, सभा-भवन या धर्मशालाअें बनाये। संभव हो तो बनानेवाले कारीगर भी अुसी गांवके हों। गांवके प्रत्येक व्यक्तिको स्वच्छ अनाज, स्वच्छ पानी और स्वच्छ मकान मिले, यह देखना होगा। नअी तालीमके अनुसार बुनियादी शिक्षासे लेकर जब तक वह शिक्षा पूरी न हो जाय तब तक प्रत्येक बालकके लिअे वह अनिवार्य होनी चाहिये। प्रत्येक प्रवृत्ति सहकारी ढंगसे चलानी चाहिये। झगड़े भी आपसमें ही निबटा लेने चाहिये।

गांवमें अूंची-नीची जातियोंके भेदभाव नहीं होने चाहियें। गांवमें बालिग अुमरके चुने हुअे पांच-सात स्त्री-पुरुषोंकी अेक कार्यकारिणी या पंचायत स्थापित की जानी चाहिये। वे लोग गांवके सार्वजनिक काम हाथमें लें। वह पंचायत ही गांवकी सरकार और धारासभा बने।

अिन बहनोंके जानेके बाद बापूजीने रस पिया और तुरन्त प्रार्थना-सभामें गये।

आज भी सुचेताबहनने गुरुदेवका बंगाली भजन गाया। अुसका भाव था कि तेरे स्वजन तुझे छोड़कर चले जायं तो अुसकी चिन्ता न करना। तेरी आशालता टूट जाय और वह फूले-फले नहीं तो अुसकी चिन्ता न करना। बापूजीने अुसका अुल्लेख करते हुअे कहा:

"यह भजन जितना मीठा है, अुतना ही अुसका अर्थ प्रेरणादायक है। अुसमें कहा गया है कि हम पर कितनी ही मुश्किलें आयें तो भी हमें अुनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। हमें अपना प्रामाणिक पुरुषार्थ जारी रखना चाहिये।

"आज भी मेरे पास बहुतसे पत्र आये हैं। अेक भाअी तो लिखते हैं कि जब हिन्दू और मुसलमान दोनों हैवान बन गये हैं, तब आप क्यों नहीं कोअी रास्ता सुझाते? रास्ता तो मेरे पास है ही। दोनोंमें से अेक पक्ष समझ जाय और हैवानियत छोड़ दे, तो अपने-आप सब शांत हो जाय।

"वाअिसरॉय साहब तो अब हमें सत्ता सौंपना ही चाहते हैं। अंग्रेज यह भी कहते हैं कि अुन्होंने सच्चे दिलसे अपनी सत्ता समेट लेनेको ही अिन्हें यहां भेजा है। अिस पर हमें विश्वास रखना चाहिये। अुन्होंने अब तक हमारे देशमें व्यापार किया है, हमें चूसा है और अैश-आराम भोगा है। लेकिन सिविल सर्विसवालोंका असह्य जोर है। अिस कारणसे अब भी शंका होती है कि क्या सचमुच वे लोग जाना चाहते हैं? परन्तु मैं अिस समय अितना ही कह सकता हूं कि स्वराज्यका अरुणोदय हो रहा है, अभी सूर्य निकला नहीं है। अिसलिअे अरुणोदयके समय तो क्या पता चले कि दिनमें कितनी धूप पड़ेगी?

"परन्तु अंग्रेजों, सिविलियनों और सैनिकों तक यदि मेरी आवाज पहुंच सके, तो मैं अुनसे कहना चाहूंगा कि आपको अंग्रेजोंका नाम यदि

कायम रखना हो, तो अब यहांसे चले ही जाना चाहिये। अब तक आप सब हमारे कंधे पर बैठकर नाचते थे, अब नीचे अुतर जायं तो आपके लिअे ही लाभदायक होगा।

"अिन लोगोंसे यह काम करानेको ही माअुंटबेटन साहब यहां आये हैं। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अैसे अुदारहृदय, बुद्धिशाली और हमारे प्रति सहानुभूति रखनेवाले वाअिसरॉय यहां बहुत कम आये हैं। ये अुन्हींमें से अेक हैं। वे अिंग्लैण्डवालोंकी सत्ता अपने हाथमें लेकर आये हैं। सिविलियन तो जानेकी तैयारीमें ही हैं। और अुन अफसरोंको पेंशन भी ब्रिटेन ही देगा।

"अैसी बातें भी सुननेमें आ रही हैं कि अिन दंगोंमें अंग्रेजोंका भी हाथ है। मैं नहीं जानता कि सत्य क्या है। परन्तु यह सच हो तो बड़ी शर्मकी बात है। और अितिहास तो किसीकी परवाह नहीं करेगा। भावी अितिहास यही कहेगा कि ये लोग केवल लुटेरे ही थे। और अगर यह बात गलत है — मैं आशा रखता हूं कि यह गलत साबित होगी — तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है।

"जो हुआ सो हुआ, अब तो जागे तभीसे सवेरा मानना चाहिये। अंग्रेजोंमें व्यापारियों, सिपाहियों और सिविलियनोंको भारत छोड़नेमें शायद अनेक गुनी कठिनाअियां होंगी। अब क्या करें, यह प्रश्न भी पैदा होगा। अुनके सामने घोर अंधेरा होगा। फिर भी मैं अुनके हितमें कहता हूं कि अुन्हें भारत छोड़ ही देना चाहिये। अिसीमें अुनका श्रेय है। अिसके बाद ही वे हमारे बीचका झगड़ा निबटानेकी बात करें। हमारा कुछ भी हो, अब वे अिसकी चिन्ता न करें।

"मेरी अीश्वरसे प्रार्थना है कि वे यहांसे दुश्मनकी तरह न जायं, परन्तु हम अुन्हें मित्रके रूपमें विदा करें। और भगवान हमारे और अुनके दिलमें यह मित्रताकी भावना सदा बनाये रखे।"

आजका भाषण खूब जोशीला था। बापूजीसे मैंने कहा, "बापूजी, आज बहुत दिनोंमें आपने अैसा भाषण दिया।" बापूजी कहने लगे, "मेरा मन आज अिन बातोंसे भरा था। शायद जिन्ना साहबको मना लेनेकी बातें हो रही हों, अंग्रेज कोअी खेल खेल रहे हों। अिसलिअे मुझे अुनके सामने टार्चका प्रकाश फेंकना ही चाहिये, जिससे वे अंधेरेमें कहीं टकरा न जायं।"

अैसा मालूम होता है कि अिसका गहरा असर पड़ेगा। प्रार्थनाके बाद बापूजीने दूध लिया और जवाहरलालजी, खानसाहब, कृपालानीजी, राजाजी, राजेन्द्रबाबू वगैरा सब नेता आये। रातको ९ बजे तक बातें हुआीं।

बापूजी और खानसाहब तो देशके टुकड़े करनेका सख्त विरोध कर रहे हैं, परन्तु जिन्ना साहब किसी तरह नहीं मानते। बापूजी अुन्हें सारा भारत सौंपनेको तैयार हैं, फिर भी वे स्वीकार करनेको तैयार नहीं हैं। अुन्हें तो केवल पाकिस्तान ही चाहिये।

असह्य गरमीके कारण बापूजी रातको १० बजे नहाये। बादमें खान-साहबके साथ थोड़े घूमे। शायद १२ तारीख तक बिहार जाना होगा। वहांकी समस्या भी बड़ी अुलझी हुआी है।

बापूजी आज खूब थक गये हैं। आंखें बन्द करके थोड़ा घूमे। अुनकी आवाजमें भी थकावट जान पड़ती है। अुन्हें दिनमें बहुत अधिक बोलना पड़ता है। फिर देशकी चिन्ता भी है। और आपसके झगड़े निबटानेमें भी काफी मेहनत करनी पड़ती है। बिहारमें तो कुछ कार्यकर्ताओंके निजी व्यापार भी चलते हैं। अिन सबकी वेदना भी बापूजीको थका डालती है।

१०-१० पर बापूजी बिस्तर पर लेटे। कुछ सिर दुखनेकी बात भी कह रहे थे। सिरमें तेल मलकर मैंने थोड़ी देर दबाया और सिर पर तथा पेट पर मिट्टी रखी। खानसाहबने नियमानुसार बापूजीके पैर दबाये। वे भी अब अेक-दो दिनमें सरहदकी तरफ जायंगे।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
११-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना हुआी। प्रार्थनाके बाद बंगाली पाठ। मुझे गीता-पाठ पढ़ाया। आये हुअे बंगाली भाअियोंके साथ बापूजीने बंगालके बारेमें बातें कीं। अैसा लगता है कि बंगालका भी विभाजन होगा। बापूजी कहते हैं: हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेका अर्थ यह है कि किसी दिन अुसके १०० टुकड़े कर दें तो भी अलग अलग जातियां अपने अलग अलग प्रान्त लेनेकी हिमायत जरूर करेंगी। अिसलिअे यह आरंभ अच्छा नहीं।

बापूजीका मन अब बिहारमें लगा हुआ है। बिहारसे तार और पत्र आ रहे हैं। बापूजी मानते हैं कि यदि वे बिहारको ठीक रास्ते पर ला सकेंगे, तो और जगह सब अपने-आप ठीक होता चला जायगा।

६–३० पर राजेन्द्रबाबू आये। बापूजीने अुन्हें भी यही बात कही कि, "मैं यदि दिल्लीमें अपना स्थायी निवास बना लूं, तो मुझे कोअी यह नहीं कहेगा कि तुम जाओ। परन्तु मेरा मन बिहारमें है और मैं यहां हूं।"

राजेन्द्रबाबू खुद भी चाहते हैं कि बापूजी अब जल्दीसे जल्दी बिहार जायं तो कोअी बेजा बात नहीं होगी। और शायद कल जाना हो भी जाय। अब शामको चार बजे वाअिसरॉय साहबसे मिलने पर अन्तिम निश्चय होगा। पंडितजीके साथ भी अिस बारेमें कोअी सलाह-मशविरा नहीं हुआ है।

मालिश, स्नान, भोजन वगैरा नियमसे चलता है। दोपहरको आराम करते हुअे बापूजीने मुझे कलकी तैयारी रखनेकी सूचना की।

दोपहरको बापूजी आराम करके अुठे ही थे कि समाचार मिले कि राजेन्द्रबाबूजीको सख्त बुखार आया है। बंगालके मुख्यमंत्री प्रफुल्लबाबू बैठे थे। परन्तु बापूजी अुन्हें मोटरमें साथ ले गये, जिससे रास्तेमें बातें कर लें। ज्यों ही खबर मिली, वे तुरन्त राजेन्द्रबाबूको अुनके बंगले पर देखने गये। साथमें मैं और भाअी साहब थे। बापूजीको अचानक कमरेमें घुसते देखकर सब स्तब्ध हो गये। चपरासी अेकदम भागदौड़ करने लगे और राजेन्द्रबाबू, जो बिस्तरमें सोये हुअे थे, अुठकर सीधे बैठ गये। बापूजीके प्रति अुनकी भक्ति — श्रद्धा असीम है। अिसलिअे अुनके स्वास्थ्यकी खबर लेनेके लिअे बापूजीके अिस तरह अेकाअेक आनेसे वे कुछ शरमाये। बापूजीको देखकर अुनकी आंखोंमें प्रेमके आंसू आ गये, परन्तु अुन्होंने तुरन्त आंखें पोंछ लीं।

बापूजीकी व्यवहार-कुशलताका क्या कहना है? पता लगते ही प्रफुल्ल दाको साथ लेकर मुझसे कहने लगे, "व्रजकिशनसे कहो कि किसीकी गाड़ी हो तो पांच-सात मिनटके लिअे राजेन्द्रबाबूको देख आअूं।" वहां जाकर अुन्हें आग्रहपूर्वक आराम लेनेको कहा और पूरी सावधानी रखनेकी सूचना दी। अुनकी पत्नीसे बापूजी विनोदमें कहा, "क्यों, मालूम होता है तुम अच्छी तरह अिनकी सेवा नहीं करतीं। ये बार बार बीमार क्यों पड़ते हैं?" राजेन्द्रबाबूकी पत्नी बोली, "बापूजी, हमारी बात ये कहां मानते हैं? बहुत काम करते हैं, आराम नहीं करते। अिसीलिअे बीमार होते हैं।"

बापूजी फिर हंसते हंसते बोले, "यह कसूर भी तुम्हारा ही है। तुम्हें हुक्म देना चाहिये कि अब आराम करना ही पड़ेगा। राजेन्द्रबाबू

पतिकी हैसियतसे तुम पर कभी तो हुक्म चलाते ही होंगे? तो तुम्हें भी अुन पर हुक्म चलानेका हक है।"

सारा कमरा हंसीसे गूंज अुठा। वहांसे आनेके बाद सर दातार-सिंहजीकी लड़की कृपालबहन आओीं। वे अपने घरमें फूलकी तरह पली हैं। शरीर भी वैसा ही कोमल है। परन्तु बापूजीकी कुछ न कुछ सेवा करनेकी अिच्छा अुन्होंने प्रगट की। स्वभावसे खूब मिलनसार हैं। अुन्होंने आज कातना सीख लिया। बापूजीके दो तीन पत्र टाअिप कर दिये।

मुझसे कहने लगीं, "बापूजीसे कहो कि मुझे तुम्हारे साथ घूमने दें। मुझे बिहार भी चलना है।"

मैंने बापूजीसे कहा तो वे बोले, "मेरे साथ रहना तलवारकी धार पर रहने जैसा है। मेरे साथ खाने-पीनेका ठिकाना नहीं होता। सोनेके लिअे बढ़िया पलंग नहीं होते। ये सब लड़कियां तो अिन कठिनाअियोंकी आदी हो गअी हैं। अेक शतरंजी पर भी पत्थरकी तरह सो जाती हैं। और मेरे साथ कपड़े भी अैसे मुलायम नहीं मिलते। जल्दी अुठना पड़ता है, पाखाना-सफाअी करनी पड़ती है। तुम अच्छी तरह तैयार हो जाओ। जब मैं सेवाग्राम आश्रम जाअूं तब मेरे साथ आना। तब तकके लिअे जब मेरा दिल्ली आना हो तब तो तुम आओगी ही।"

कृपालबहन थोड़ी निराश हुअीं। बहुत ही भावुक और संस्कारी बहन हैं। मुझसे कहने लगीं, "तुम कितनी भाग्यशाली हो कि तुम्हें बापूजीकी सेवा करनेका मौका मिल रहा है। और हमें बापूजी मना करते हैं।"

अिन शब्दोंमें अुनकी निराशा दिखाअी देती थी। सामान अुन्होंने ही याद कर करके पैक करनेमें मेरी मदद की। सामान थोड़ा बढ़ रहा था, अिसलिअे खुद घरसे सन्दूक ले आअीं। अुन्हें जब मैंने बताया कि सोनेके लिअे अेक छोटी-सी शतरंजी काममें लेती हूं तो जबरदस्ती अेक छोटी गादी ले आअीं। परन्तु मैंने वापिस भेज दी। अुनके पिताजी और मां भी बड़े प्रेमी हैं। कृपालबहनका सारा लालन-पालन पाश्चात्य ढंगसे हुआ है, तो भी वे अितना अधिक श्रम यहां करती हैं। किसी काममें अुन्हें घृणा नहीं आती। बापूजीकी पीकदानी धोने या मांजनेका काम खुद आग्रह करके मेरे हाथसे ले लेती हैं।

कातते समय बापूजीने . . . से कहा, "तुम्हारा धर्म बंगालमें रहकर सेवा करना है। कोओी दल या वाद स्थापित करे तो हम अुसकी परवाह न करें, कोओी चर्चा न करें। (तन-मन-धनसे चुपचाप सेवा करनेवालेकी सेवा निष्फल कभी जाती ही नहीं। अपनी आत्माको, अपने ओश्वरको प्रसन्न करनेके लिअे अुसकी दी हुओी शक्तिका सदुपयोग करनेके खातिर ही सेवा है। बाकी तो दंभ ही कहलायेगा।")

४ बजे मिट्टी लेते हुअे राजकुमारी बहनसे अेक पत्र वाअिसरॉयको लिखवाया, और लिखवाते लिखवाते नींद आ गओी। सुबह साढ़े तीन बजेसे अुठे हैं। दोपहरको भी जरा नहीं सो पाये। दक्षिण अफ्रीकासे डॉ० दादू और नायकर आये हैं। बापूजीने अुनसे दक्षिण अफ्रीकाके संबंधमें बात-चीत करते हुअे कहा, "सच कहा जाय तो मेरा निर्माण दक्षिण अफ्रीकामें ही हुआ है। अिसलिअे जितना हिन्दुस्तानके लिअे मेरा प्रेम है, हिन्दुस्तानके प्रश्नोंकी मुझे चिन्ता होती है, अुतनी ही चिन्ता मुझे दक्षिण अफ्रीकाकी होती है। क्योंकि सत्याग्रहका शस्त्र तो वहींसे मेरे हाथ आया है, और अहिंसक सत्याग्रहमें सफलता भी वहीं मिली; अिसीलिअे मेरे विचारोंमें — मेरी श्रद्धामें मैं दृढ़ होता गया। आज हिन्दुस्तान आजादीके द्वार पर खड़ा है। लेकिन मुझे अैसी आजादीकी अिच्छा नहीं है। अथवा हिन्दुस्तान आजाद होगा और अैसा विभाजन होगा या अल्पमतकी रक्षा नहीं हो सकेगी, तो मेरी रायमें वह आजादी नहीं हो सकती। क्योंकि मेरा आजादीका स्वप्न तो कुछ दूसरा ही है। अभी तो देश पूरा आजाद भी नहीं हुआ है; अभीसे आसार बुरे नजर आने लगे हैं। हमारे यहां कहावत है कि 'पुत्रके लक्षण पालनेमें ही दिख जाते हैं'। यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। वैसे तो सब ओश्वरके हाथमें है।"

प्रार्थनामें जानेसे पहले कल शामको बिहार जानेका लगभग निश्चय हो चुका है; बापूजी प्रार्थनामें अभी अभी अिसकी घोषणा करेंगे।

लेकिन ठीक पता तो बापूजीके कल शामको वाअिसरॉय साहबसे मिलनेके बाद ही चलेगा। नियमानुसार शामको प्रार्थना-सभामें गये। अब तो अच्छी तरह प्रार्थना होती है। हजारोंकी संख्यामें स्त्री-पुरुष आते हैं।

प्रार्थनाके बाद बापूजी बोले:

"आपको यह खबर देते हुअे मुझे संकोच होता है कि कल मैंने बिहार जानेका लगभग निश्चय कर लिया है।

"नोआखालीमें मैं अीश्वरकी आज्ञासे गया था और अुसीके सिल-सिलेमें मेरा बिहार जाना हुआ। दोनों जगह काफी संतोषजनक काम चल रहा है। लेकिन मुझे तो बिहारको आदर्श बनाना है। चारों ओर चाहे जितनी आग लगे, फिर भी बिहार या नोआखालीमें अुसका कभी थोड़ा भी असर न पहुंचे, अैसा आदर्श मुझे स्थापित करना है या मरना है। दिल्लीमें आज जो राजनीतिक हवा चल रही है, अुसका जो भी परिणाम आना होगा आवेगा। परिणाम लानेवाला मैं कौन हूं? और अुस आशा पर बैठा नहीं जा सकता। मैं तो यहां केवल दो व्यक्तियोंका कैदी हूं। वाअिसरॉय साहबका और पंडित जवाहरलाल नेहरूका। अिन दोनोंको मैंने सूचना पहुंचा दी है।

"मैं गीतामाताका सेवक हूं। गीतामें स्पष्ट कहा गया है कि अपने धर्मकी ही रक्षा करना और अपने क्षेत्रमें ही रहकर सेवा करना चाहिये। दिल्ली मेरे लिअे परक्षेत्र है। मेरा क्षेत्र तो बिहार और नोआखाली है। और परक्षेत्र या परधर्म भयानक होता है। अिसलिअे अगर अब मैं दिल्लीको अपना क्षेत्र बनाकर रहूं, तो मेरे लिअे यह भयानक बन जायगा।

"और वहां बैठे बैठे भी मैं पंजाबका काम तो करूंगा ही। मैं जहां जाअूंगा वहां अेक ही बातको बार बार दोहराते हुअे कभी थकनेवाला नहीं हूं। सत्य और अहिंसा यानी मर जायं परन्तु किसीको मारें नहीं और न किसी पर गुस्सा ही करें — अिसीमें आत्मोन्नति है, अैसा मुझे दिन पर दिन दीये जैसा स्पष्ट दिखाअी देने लगा है। यदि यह सूत्र दोमें से अेक पक्ष भी अपना ले, तो मेरा विश्वास है कि आज ही देशभरमें शांति हो जाय और अनेक कठिनाअियोंसे हम अुबर जायं। हमें अकलके अंधे नहीं हो जाना चाहिये। अन्तमें यह सारा नुकसान हमें ही अुठाना पड़ेगा। अिंग्लैण्ड या अमेरिकासे आपके लिअे कोअी कुछ भेजनेवाला नहीं है। अितना तो समझिये!!

"और अिसीलिअे मैं घूमता हूं। अैसा करते हुअे जिस क्षण मेरी मौत लिखी होगी अुस क्षण आप लोगोंमें से कोअी अुसे रोक नहीं सकेगा। दुनियाभरके वैद्य-डॉक्टरोंको अिकट्ठा करेंगे तो भी कुछ होनेवाला नहीं है। और यह दुनिया तो चार दिनकी चांदनी जैसी है। अभी ही आपने भजन सुना है। तो फिर मौतसे किसलिअे डरते रहें? यदि आप समझ जायं तो पाकिस्तानवालोंको तो दुनिया कहेगी कि

अैसा जालिम राज्य तुम नहीं चला सकते। लेकिन आज तो हममें ही दोष भरे हैं, तब मैं दूसरेको किस मुहसे कहूं कि तुम दोष करते हो?

"सत्याग्रहका अर्थ ही यह है कि सत्याग्रही सारे संसारको प्रेमसे अपने वशमें कर सकता है। अुसके लिअे अिंग्लैण्ड-अमेरिकामें प्रचारकोंकी जरूरत नहीं होती। जो सच्ची सेवा करनेवाला है, अुसका प्रचार तो अपने-आप होनेवाला है। यह मैं कोरी कल्पनाकी बातें नहीं कहता, सच्ची बात कहता हूं। दक्षिण अफ्रीकामें मैंने अिसी तरीकेसे सारी दुनियाकी सहानुभूति प्राप्त की थी।"

प्रार्थनासे लौटते समय अेक मद्रासी भाअी बापूजीके हस्ताक्षर लेने आये। बापूजीको अुन्होंने तामिलमें हस्ताक्षर देनेके लिअे कहा। बापूजीने कहा, "यदि मैं तामिलमें अपने हस्ताक्षर करनेका प्रयत्न करूं तो आप सुधार लें। किन्तु अिसके लिअे आपको दुगुनी कीमत देनी होगी, यानी दस रुपये।" अुन्होंने दस रुपया देना मंजूर किया। बापूजीने धीरे धीरे याद करके तामिलमें 'मो० क० गांधी' लिखा और बताया। वे भाअी बोले, "आप तो कहते थे कि मुझे अच्छी तरह लिखना नहीं आता?"

बापूजी बोले, "अगर मैंने बिना भूल किये लिखा हो तो आपको मुझे दस रुपये और देना चाहिये न?"

अुन भाअीके पास और दस रुपये तो नहीं थे। बापूजी कहने लगे, "अभी तो मैं कल शाम तक यहां हूं। आप कल शाम तक दे जाअिये। मैं आप पर विश्वास रखता हूं।"

परन्तु अिससे तो अुन तामिल भाअीको बापूजीके प्रति और भी आदर पैदा हो गया और अुन्होंने हाथकी अुंगलीमें जो सोनेकी अंगूठी पहन रखी थी अुसे तुरन्त निकाल कर प्रणाम करके बापूजीको दे दी।

बापूजी खुश हो गये। अितनेमें पंडितजी आ गये। हम दो-चार आदमी बापूजीके आसपास खड़े थे। यह देखकर वे बोले, "क्या है?"

मैंने कहा, "बापूजी अपना व्यापार कर रहे हैं।"

बापूजीने कहा कि मैंने भूल किये बिना तामिलमें हस्ताक्षर किये तो मुझे हरिजन-कोषके लिअे मेहनताना तो मिलना चाहिये न? पंडितजीने हंसते हंसते अुन तामिल भाअीसे कहा, "तुम जानते नहीं थे कि बापू बनिये हैं?"

तामिल भाअीने कहा, "लेकिन साहब, अुनमें लूटनेकी अद्भुत शक्ति है।"

बापूजीने कहा, "लेकिन ये रुपये दुखी लोगोंके हितमें ख़र्च होंगे। वे आपको कितने आशीर्वाद देंगे?"

तामिल भाअी : "मेरे लिअे तो आपका आशीर्वाद ही बहुत है।" यह कहकर अुन्होंने बापूजीके चरणोंको छूकर प्रणाम किया। बापूजीने भी अुनकी पीठ पर मीठी थपकी लगाअी और वे खुश होकर चले गये। बापूने पंडितजीके साथ ४० मिनट अेकान्तमें बातचीत की।

फिर बापूजी थोड़े घूमे। बादमें ठंडे पानीसे स्पंज किया।

आज खानसाहबको भी थोड़ा बुखार आ गया है। अुन्हें गरम पानी और शहद दिया। वे भी कल पेशावर जायेंगे। वे बहुत निराश हो गये हैं। अुन्हें लगता है कि कि वे न हिन्दुस्तानके रहे न पाकिस्तानके। लेकिन मुझसे कहते हैं, "जब तक महात्माजी हैं तब तक मुझे कोअी चिन्ता नहीं है।"

अुनके शरीर पर मानसिक चिन्ताका असर पड़ रहा है। बुखार था फिर भी बापूजीके पैर दबाने आये। बापूजीने बहुत मना किया। मैंने तो मना किया ही था। लेकिन कहने लगे, "कल तो बापू आप कहां होंगे और मैं कहां होअूंगा? आजका ही दिन है। और आपके पैर दबानेसे मैं ठीक हो जाअूंगा।"

खानसाहबकी बापूजीके प्रति अैसी भक्ति है।

बापूजीने सोनेसे पहले मुझसे कहा, "तुम्हें कल शाम तक सब कुछ तैयार रखना है। अगर यहीं रहना पड़ा तो सामान खोलनेमें देर नहीं लगेगी। परन्तु मनमें तो तुम्हें जानेकी ही तैयारी रखनी है।"

मैंने आधा सामान आज ही बांध लिया। फालतू सूत खादी-भंडारमें दे दिया। भेंटमें आये हुअे थान हरिजन-आश्रममें वियोगी हरिजीके पास भेज दिये। रास्तेमें खूब गरमी लगेगी, अिसलिअे डिब्बेकी खिड़कियों पर खसके परदे लगानेकी सूचना भाअी साहबने आज रेलवे अफसरोंको दे दी। परन्तु ये परदे स्टेशन पर लोग तोड़ डालते हैं। अिसलिअे यह खर्च फिजूल है।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
१२-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना हुअी। मुझे गीतापाठ पढ़ा कर बापूजीने मेरी डायरीके बारेमें बातें की। पूरी हो जाने पर अुसे संभाल कर महुआ भेजनेको

वापूजीने कहा। ५–३० पर राजकुमारी वहन आओीं। वंगाली पाठ करते करते अुनके साथ वातें कीं। राजेन्द्रवावू भी आये। अितनी कमजोरीमें आनेके लिअे अुलाहना देकर वापूने कहा, "दिल्ली छोड़नेसे पहले मैं आपके यहां जरूर आ जाता।" गोपालस्वामी आयंगर भी आये। सव मिलनेके लिअे ही आये थे।

मालिश और स्नानसे आज जल्दी ही निपट गये। वापूजीका वजन लिया। ११२ पौंड निकला। गरमीके हिसावसे ठीक ही कहना चाहिये। फिर अेकके वाद अेक लोग आते-जाते रहे।

९–३० पर कुछ सिक्ख भाअियोंके साथ वातें कीं। अुन्हें जवाव देते हुअे वापूजीने कहा: "वहम जव वुद्धि पर अधिकार जमा लेता है, तव अुसे निकालना वड़ा मुश्किल हो जाता है। गुरु गोविन्दसिंहके लिअे मैं वड़ा आदर रखता हूं। मुझे माफ कीजिये, परन्तु मैं साहसपूर्वक कहता हूं कि आप सवकी अपेक्षा शायद मैं अुनका सच्चा पुजारी हूं। आश्रमकी प्रार्थनामें अुनके अनेक भजन गाये जाते हैं। परन्तु कानूनसे किसी मनुष्यको वदला नहीं जा सकता, समझानेसे ही वदला जा सकता है। अिसलिअे कानूनने कभी कोअी अहिंसक नहीं वन सकता। हिंसाको अनिवार्य वनानेवाला तो कोअी भी धर्म नहीं है; अहिंसाको अनिवार्य वनानेवाले लगभग सभी धर्म हैं। परन्तु आप यह क्यों नहीं समझते कि यदि मैं दूसरोंसे कहूं कि तुम मेरे धर्मको आदरकी दृष्टिसे देखो, तो पहले मुझे ही प्रत्येकके धर्मको आदरकी दृष्टिसे देखना चाहिये? परन्तु दुःखकी वात है कि आज मैं यह चीज आपको नहीं समझा सकता।"

१० वजे राजाजी आये। पाकिस्तान-हिन्दुस्तानके वारेमें वातें हुअीं। १५ मिनट आराम करके ११–३० पर वाअिसरॉयसे मिलने गये। मैं सामान पैक करनेमें लग गअी। 'टाअिम्स' में छपा है कि गांधीजीका फार्मूला कांग्रेसकी कार्यसमितिको मंजूर नहीं है, अिसलिअे वे जल्दी विहार जा रहे हैं।

वापूजी वाअिसरॉयसे मिलकर आये तव यह वात पढ़कर स्तब्ध हो गये। यह वात सच है कि वापूजी पाकिस्तान वनानेके विरुद्ध हैं। परन्तु अिसीलिअे वे विहार जा रहे हैं, यह विलकुल झूठ है। वापूजी कहने लगे, "अीश्वरने मनुष्यको वुद्धि दी है। परन्तु सदुपयोगकी अपेक्षा अुसका दुरुपयोग अधिक हुआ है। अखवारवाले अिसमें सवसे आगे हैं। चाहें तो अखवारवाले

हिन्दुस्तानका रंग पलट सकते हैं, अच्छी और सुरुचिवाली पाठ्य-सामग्री देकर लोगोंकी सेवा कर सकते हैं; और चाहें तो लोगोंको बिगाड़ सकते हैं, अुत्तेजना फैलाकर सत्यानाश कर सकते हैं।"

खानसाहब सीधे पेशावर जायेंगे। आज आखिरी दिन है, अिसलिअे मुलाकातियोंका पार नहीं है। मुख्यतः कृपालानीजी, सुचेताबहन, प्रफुल्ल-बाबू, खानसाहब, चीनी भाअी, डॉ॰ मुखर्जी, बलदेवसिंह, सी॰ अेच॰ भाभा, देवदास काका, जमनादास काका, सर दातारसिंहजी, फ्रांसके राजदूत, कृष्ण मेनन, श्रीवरानीजी, राजाजी, पं॰ जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाअी, मौलाना साहब, अरुणा आसफअली, अरब डेलीगेशन, मेहरचन्द खन्ना वगैरा आये।

आजकी प्रार्थनामें सुचेताबहनने भजन गाया। कल राष्ट्रीय सप्ताहका अंतिम दिन है, अिसलिअे अुसके सिलसिलेमें बापूजीने बातें कहीं:

"कल राष्ट्रीय सप्ताहका आखिरी दिन है। ६ अप्रैलका दिन जागृतिका दिन था। अुस दिन हम लोगोंने देखा कि सारा हिन्दुस्तान अेक हो गया था। शहर तो अेक हो ही जाते हैं, क्योंकि अैक्यके बिना वहांका काम चल नहीं सकता। परन्तु हिन्दुस्तानका अेक अेक गांव भी अुसमें मिल गया था। अैसा सुनहरा दिन वह था। ६ अप्रैलके दिन मैंने अुपवास रखनेको कहा था, और सारे देशने मेरी बात मान ली थी। मैं तो था ही कौन? वह केवल अीश्वरी संकेत ही था। अुस समय पंजाबसे आसाम तक, कन्या-कुमारीसे काश्मीर तक और मद्राससे पंजाब तकके अेक अेक गांवमें जागृति पैदा हो गअी थी। और १३ अप्रैलकी तारीख हिन्दुस्तानकी कलकी तारीख है। अुस दिन जलियांवाला बागमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख अेकसाथ कत्ल हुअे। वहां कोअी बगीचा नहीं था। चारों तरफ पक्की चुनी हुअी दीवार थी और वहांसे भागनेके लिअे जरासा भी रास्ता नहीं था। दो हजारसे पांच हजार मनुष्योंकी हत्या अुस दिन हुअी थी। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सबका खून अेकसाथ बह रहा था। कोअी बड़ेसे बड़ा डॉक्टर भी कह नहीं सकता था कि कौनसा खून किसका होगा? जलियांवाला बागमें सभी हिन्दुस्तानी अेकसाथ शहीद हुअे, यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं है। और वह हत्याकांड अितना भयंकर था कि सारा देश अुससे अकुला अुठा था। अिसलिअे कल १३ अप्रैलका दिन हमें मनाना है। गुरुदेव टागोरने भी अुस समय अिस हत्याकांडके कारण सरकारको पत्र लिखा था।

"मुझे दुःख है कि कल मैं आपके साथ नहीं रहूंगा। मैंने बिहार जानेका निर्णय कर लिया है। आप कह सकते हैं कि अेक दिन ठहर जाअिये। परन्तु बिहारमें मैं मौज अुड़ाने नहीं जा रहा हूं। यथाशक्ति सेवा करने ही जा रहा हूं। और अुपवास तो रेलगाड़ीमें भी करूंगा ही। जिस ढंगसे आपने ६ अप्रैलका दिन मनाया, अुसी तरह कल भी अुपवास, मौन और कताअी तथा अेकता बनाये रखनेके कार्यक्रममें आप सब भाग लीजिये।

"अगर आपने सात दिनकी मेरी बातें सुनी हों और वे अच्छी तरह आपके गले अुतरी हों, तो आप थोड़े-से ही सुननेवाले निश्चय कर लीजिये कि हम मर जायेंगे परन्तु किसीको मारेंगे नहीं। हमें तलवार, लाठी, बन्दूकका आसरा छोड़कर केवल अीश्वरका ही आसरा लेना चाहिये। अिससे आपमें अैसी निडरता आ जायगी कि आप स्वयं अपनी रक्षा कर सकेंगे।

"आज तो हम अिस तरह लड़ रहे हैं कि मेरे पास जो अनेक विदेशी लोग आते हैं अुनके सामने मैं शर्मिन्दा हो जाता हूं; और वे लोग मुझसे अहिंसाके अमोघ शस्त्रको काममें लानेकी पद्धति पूछते हैं, तब मैं सोचता हूं कि आज जब मेरे ही देशवासी आपसमें अेक-दूसरेका खून कर रहे हैं, तब अिस विषयमें मैं किस मुंहसे अुन्हें कुछ कहूं? मैं जानता हूं कि अिस बेवकूफीकी लड़ाअीमें गिनतीके ही आदमी हैं। परन्तु हम यदि अैसा निश्चय कर लें कि हमें जिस ढंगकी आजादी चाहिये अुसे हम बुद्धिके बलसे प्राप्त करेंगे, तलवारके बलसे नहीं, तो वह आजादी मीठी और पवित्र होगी।

"अखबारवालोंसे दो शब्द कहनेकी अिच्छा होती है। कोअी कितना ही चिल्लाता रहे, परन्तु अखबारवाले सुधरते ही नहीं हैं। आजके अेक अखबारमें छपा है कि मेरी वर्किंग कमेटीके मेम्बरोंसे बनती नहीं है, अुनसे मेरा मतभेद और झगड़ा हो गया है, अिसलिअे मैं बिहार जा रहा हूं। यह बात किसी छोटे-से अखबारमें नहीं, अच्छी प्रतिष्ठा पाये हुअे अख-बारमें छपी है। यह खबर देखकर मुझे दुःख हुआ कि हमारे अखबार कितने नीचे चले गये हैं। झगड़ा किस बातका होता? झगड़ा होता तो अभी यहां सब अिकट्ठे हुअे थे वे क्यों होते? सभी मुझे अपने बुजुर्गके रूपमें मानते हैं और मुझसे सलाह पूछते हैं। मतभेद तो होता ही है। मतभेद कहां नहीं होता? बाप-बेटेके बीच भी मतभेद होता है। परन्तु अिस कारणसे झगड़ा होनेकी बात लिखना, लोगोंको भड़काना

और अिस प्रकार अखबारकी बिक्री बढ़ाकर कमाअी करना, यह पापी तरीका अखबारवालोंका है। पेट भरनेके लिअे अैसे ढंग आजमाये जायं, तो अिससे बड़ा पाप और क्या हो सकता है? मैं भी पुराना अखबारनवीस हूं। मैंने भी दक्षिण अफ्रीकामें अखबार चलाया है। अुस परसे मैं यह कह सकता हूं। अपनी कमाअी करनेके लिअे अैसी झूठी बातोंसे पन्ने भर कर भारतकी कुसेवा करनेकी अपेक्षा यदि अखबार बन्द हो जायं या सम्पादक अैसे काले काम करनेके बजाय पेट भरनेका कोअी और धंधा खोज लें तो अच्छा हो। अंग्रेजीमें अखबारोंको राज्यकी चौथी शक्तिका सम्मान दिया गया है। अखबारोंसे बहुत-सी बातें सुधरती हैं और बहुत-सी बातें बिगड़ती हैं। यदि अखबार स्वच्छ और शुद्ध नहीं रहेंगे, तो भारतकी स्वतंत्रता किस कामकी? (और हमें भी अैसी कुटेव पड़ गअी है कि सवेरे अुठते ही हम अीश्वरका नाम नहीं लेंगे, गीता, कुरान, बाअिबल या रामायणका पाठ नहीं करेंगे, परन्तु अखबार जरूर पढ़ेंगे। अुसके बिना जैसे हमारा काम ही नहीं चलता। यह अेक व्यसन-सा बन गया है और हम अखबारोंके गुलाम बन गये हैं।) और अखबारवालोंने हवाअी किलोंकी बातें कह-कहकर मनुष्योंको मूर्ख बनाया है। परन्तु मैं पाठकोंसे कहता हूं कि अैसे निकम्मे अखबारोंको आप फेंक दीजिये। अैसे अखबार नहीं पढ़ेंगे तो आपको जरा भी नुकसान नहीं होगा। यदि अखबार पढ़ने ही हों तो अैसे पढ़िये, जिनसे कुछ सीखनेको मिले, लोगोंकी कुछ सेवा करनेका मार्गदर्शन मिले। अिससे अखबारवालोंको भी अैसी झूठी अफवाहें फैलानेके लिअे रातमें जागरण नहीं करना पड़ेगा।

"अैसी कुछ बातें हों तो अखबारवालोंका पहला फर्ज यह है कि वे गांधी, नेहरू या कृपालानीसे पूछें।

"मैं बिहार जाअूं या नोआखाली, जहां रहूंगा वहां आपका ही काम करूंगा। पंजाबका काम भी मैं वहां बैठकर करूंगा और जब कृपालानी, सरदार, नेहरू या वाअिसरॉय दुबारा बुलायेंगे तब अुपस्थित हो जाअूंगा। क्योंकि अन्तमें तो मैं अुनका कैदी हूं।"

[रातको १० बजे गाड़ीमें डायरी पूरी कर रही हूं।]

८-१५ पर भंगीबस्ती छोड़ी। हम अम्माजान (श्रीमती सरोजिनी नायडू) को देखने गये। अुनके पास १५ मिनट ठहर कर सीधे स्टेशन पर

आये। खानसाहब बहुत ही अुदास थे। प्यारसे मेरी पीठ थपथपा कर और मुझे छातीसे लगाकर बोले: "बेटी, तुमको मैं रोज याद करूंगा। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। देखो, अेक बातका खयाल रखना कि कोअी कुछ भी कहे, मगर बापूको कभी नहीं छोड़ना।"

यों कहकर अुन्होंने बापूको प्रणाम किया। दोनों व्यक्तियोंका हृदय अितना पवित्र था कि अुससे वातावरणमें अेक अलग ही तरहका प्रकाश था। काली बदलीमें बिजली चमकती है और अुससे आंखें चौंधियां जाती हैं; वैसा ही पवित्र और विरल अिन दोनों महात्माओं, दोनों गांधियों, दोनों अहिंसाके सच्चे पुजारियोंके अेक-दूसरेसे जुदा होते समयका दो मिनटका दृश्य था। कुछ अलौकिक चमक थी।

गाड़ीमें बापूने वाअिसरॉयको पत्र लिखा। कुछ और पत्र लिखे और १०–१५ के बाद सोनेकी तैयारी की।

मैं भी सवेरेकी थोड़ी तैयारी करनेके बाद यह डायरी पूरी करके सोने जा रही हूं। स्टेशनों पर हरिजन-कोषके लिअे चन्दा अिकट्ठा किया। पटना जानेवाली गाड़ीमें आधी डायरी लिखी है। कल बापूजी अुपवास रखनेवाले हैं।

पटना जानेवाली गाड़ीमें,
१३–४–'४७

आजकी रात तुलनामें बहुत शान्तिसे गुजरी। मैं प्रत्येक स्टेशन पर जाग जाती थी। रातको हरिजन-कोषके लिअे चार सौ रुपये अिकट्ठे हुअे। लोग बहुत ही शान्तिपूर्वक बापूजीको देखते थे और दर्शन करके चले जाते थे। किसी प्रकारका नारा लगानेको मना किया जाता तो लोग मान जाते थे। मैं लगभग २–३० के बाद सो गअी और ३–३० पर बापूजीने प्रार्थनाके लिअे जगाया तभी जागी। नियमानुसार दातुन-कुल्ला करनेके बाद प्रार्थना हुअी। चलती गाड़ीमें ब्राह्म-मुहूर्तमें प्रार्थना और अुसमें भी गीतापाठ करनेमें बड़ा आनन्द आता है। प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया और कुछ भाअियोंके साथ बातें कीं। अुरुलीकांचनके मणिभाअीके साथ अुरुलीके नैसर्गिक अुपचारोंके बारेमें और वहांकी व्यवस्थाके बारेमें बातें कीं। फिर डाक लिखी। . . . को लिखा:

"... ने तुम्हारे क्रोधकी बातें कहीं। स्वतंत्र व्यवहारकी बातें भी कहीं। (जो मनुष्य संस्थामें रह कर स्वतंत्र व्यवहार करता है, वह

संस्थाका घातक बनता है। काम करनेवाले सब लोग संस्थाके नियमोंका अक्षरशः पालन करें और अेक तंत्रके अधीन रह कर चलें, तो ही संस्था बन सकती है, टिक सकती है और बढ़ सकती है।

"तुममें शक्ति बहुत है। नैसर्गिक अुपचार तुम अच्छी तरह जानते हो। परन्तु यदि संस्थामें रहनेके गुण तुममें न हों, तो और सब गुण बेकार हो जाते हैं। . . ."

अेक और पत्र चिमनलाल काकाको अुरुलीमें अपने निजी कोषमें से रुपये देनेके बारेमें लिखा। बालकोबाजीको भी अुरुलीमें रहनेके बारेमें लिखा। . . . को नैसर्गिक अुपचारके सिलसिलेमें लिखा:

रेलमें, ता० १३–४–'४७

चि० . . .

. . . साथ है। लिखना तो बहुत है। जब हो जाय तब सही। अभी तो बहुत काममें फंसा हुआ हूं।

". . . मिल गया। मैंने साफ बात की। मेरा विश्वास नहीं जमता। कहीं न कहीं असत्य है। परन्तु तुम्हें संतोष हो, तो मेरी रायकी परवाह मत करना।

"नैसर्गिक अुपचारके बारेमें विचार तो करता ही हूं। मेरे विचार अधिक दृढ़ होते जा रहे हैं। अुरुलीका ट्रस्ट स्वतंत्र और अलग होना चाहिये। अुसमें नैसर्गिक अुपचारके साथ संपूर्ण ग्राम-सुधार मिलना चाहिये। अिस ट्रस्टमें मैं चाहता हूं कि . . . रहे। नरगिस बहनको शायद तकलीफ नहीं दी जा सकती। वे चाहें तो आ सकती हैं। अुरुलीका विकास दूसरे ही ढंग पर होना चाहिये। अुसके खर्चकी हद बांध दी गअी है। बाहरकी "मदद" अेक लाख तक रखी गयी है, जो मेरे द्वारा होगी। अिससे अधिककी जरूरत पड़े तो अुरुलीके लोग दें या काम कम कर दिया जाय। विदेशी यंत्रों आदिको अुसमें हरगिज स्थान न दिया जाय।"

निर्मलदाको बापूजीने पत्र लिखा, अुसमें आखिरमें लिखा:

"My Bengali continues, though slowly."

दूसरे पत्रमें :

"गरीबोंको हरगिज न लूटना चाहिये, अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है।"

. . . को लिखा :

"दूसरों पर क्या असर पड़ता है, अिस विचारके लिअे स्वतंत्र स्थान नहीं है। यह सापेक्ष सत्य है। अिससे चिपटे रहें तो हम आगे नहीं बढ़ सकते। सभ्यतामें कहीं भी दम्भ, असत्य, मद न हो, यह देखना होगा।"

आज बापूजीका अुपवास है। अुनका चरखा आज बिगड़ गया। मुश्किलसे आध घण्टेमें ठीक हुआ। हमारे साथवाले श्री मणिभाअी, हिंगोराणीजी और अुनकी पत्नी अलाहाबाद अुतर गये। अलाहाबादकी भीड़ गजबकी थी; अुस पर असह्य गरमी थी। दिनमें लोग प्रत्येक स्टेशन पर हजारोंकी संख्यामें आते हैं, अिसलिअे गाड़ी लेट है और काफी भीड़ होती है। ४ बजे बापूजीने मिट्टी ली। आज अुन्होंने २ घण्टे काता। दिनमें बहुत आराम नहीं मिला। (पटना पहुंचकर रातके ११ बजे यह डायरी पूरी कर रही हूं।)

७-१०. बजे हम पटना पहुंचे। डॉ० सैयद महमूद साहब, हुनरभाअी वगैरा आये थे। मुकाम पर पहुंचते ही बापूजी नहाये और अुपवास छोड़ा। प्रार्थना रास्तेमें ही कर ली थी। सफरकी थकान सबको बहुत लग रही थी। बापूजी भी बहुत थक गये थे। थोड़ेसे चक्कर लगाकर ९॥ बजे सोने चले गये। मैंने भी अपना कामकाज पूरा कर लिया। अब ११ बज रहे हैं। बेगम साहिबा और डॉक्टर साहबकी लड़कियोंके साथ थोड़ी देर बातें कीं। सामान मिलाया। बाकी काम सवेरे ही करनेकी बापूजीने आज्ञा दी है, अिसलिअे अब सोने जा रही हूं।

पटना,
१४-४-'४७, सोमवार

आज बापूजीका मौनवार है। नित्यकी भांति प्रार्थना और बंगाली पाठके बाद बापूजीने मुझे गीता पढ़ाअी और डाक लिखी। . . . को लिखा :

"यहां कल रातको लौटा और तुम्हारा १२-३-'४७ का पत्र दुबारा पढ़ा। मैं कुछ लिख चुका हूं, अैसा याद आता है। क्या यह

लखना रह गया है? यदि तुम्हारे आग्रहने अूंचा अुठाया हो और ही आग्रह अब नीचे ले जाता हो, तो यही मानना चाहिये कि शुरूका ाग्रह दुराग्रह था और हम अूंचे चढ़े ही नहीं। अैसा माननेवाले ड़े आदमी हैं। वे मानते हैं कि अहिंसाकी मेरी शिक्षा घातक सिद्ध ुअी है। चरखा हमें मध्यकालमें ही ले जानेवाला है। यही बात ामोद्योग और नअी तालीमकी है। क्या अैसा नहीं हो सकता कि ुझमें कोअी मौलिक दोष रहा हो, जिससे मुझे विपरीत बुद्धि ही सूझती ही? मेरे विचार तो जैसे पहले थे वैसे ही अब भी हैं।"

...को हिन्दीमें लिखा:

"जब विचारका अैक्य होगा और विचारकी सर्वथा शुद्धि हो ायगी, तब विचार-मात्रसे ही मिल सकते हैं। और जब अैसा होता है तब हमने मृत्युको भी जीत लिया है। अैसा समय बगैर भाग्यके ौर अभ्यासके नहीं आता है। आदर्श तो रखें। कभी आदर्शको हुंचनेकी शक्ति भगवान देगा।"

ाज सुबह ८-३० बजे ही बापूजीने खाना खा लिया। गरमी अितनी पड़ती ८-३० बजे अैसा लगता है जैसे १०-३० बज गये। खाना खाते खाते ंत्रि-मंडलके बारेमें चर्चा हुअी। ११-३० बजे बापूजीने आराम किया। अेक पत्र लिखा। अुसमें लिखा:

"अगर-मगरवाली दलील निरर्थक मानी जायगी। और अैसा किया होता तो अच्छा होता, यह कहना दोषपूर्ण है। जो मुख्यत: अीश्वरके चलाये चलनेका दावा करता है, अुसके लिअे यह नहीं कहा जा सकता। अीश्वर चलाता है, यह कहनेका अधिकार तो अुसे है, जिसका चित्त शुद्ध हो। मेरा चित्त शुद्ध रखना मुझे आये, अिसका मैं यथाशक्ति प्रयत्न करता हूं। अिसीलिअे मैं अीश्वरको बीचमें लाता हूं।"

आजकी प्रार्थनामें अपार भीड़ थी। अेक लाखसे अूपर लोग होंगे। शुरू होनेसे पहले अशान्ति थी, अिसलिअे पहले रामधुन शुरू कराअी। प्रार्थना हुअी।

प्रवचनमें बापूजीने कहा:

"पहले सफरके बारेमें थोड़ा-सा कहूंगा। अिस बारका सफर काफी । हुआ। सारी रात अच्छी तरह बीती। कानपुरमें बहुत बड़ा

जनसमूह था, फिर भी मुझे पता न चला अितनी शान्ति रही। परन्तु बिहारकी सीमा आओी और मामला बिगड़ा। दिनमें जितना आराम चाहिये अुतना मैं न ले सका और काम भी न कर सका। बिहारके भाओी-बहनोंसे मैं कहूंगा कि हमारा प्रेम सात्त्विक होना चाहिये।

"अब मैं दिल्ली गया अिसका ब्योरा आपको सुनाअूंगा। वहां पंडितजी और कांग्रेस कार्यकारिणीके सदस्योंसे तो मैं समय समय पर मिलता ही रहता था, परन्तु मुख्यतः मैं वाअिसरॉय साहबसे ही मिलने गया था। वे साफ दिलके हैं और समय समय पर कहते रहते हैं कि मैं हिन्दुस्तानका आखिरी ही वाअिसरॉय हूं।

"अब यदि हम आपसमें लड़ते रहेंगे, तो हम ही अुन्हें जानेसे रोकेंगे। अेक तरफ आजादी अब हमारे पैरोंमें लोट रही है और दूसरी तरफ हम आपसमें लड़ते हैं। अिस करुण दुःखका मैं क्या वर्णन करूं? साथियोंसे मेरी यही बातें हुओीं। अब जो हो चुका अुसे हमें भूल जाना चाहिये।

"मुझसे पूछा जाता है कि मैं पंजाब क्यों नहीं जाता? परन्तु अिसके लिअे मैं अितना ही कहूंगा कि मुझे अपनी अन्तरात्माकी तरफसे प्रेरणा न मिले, तब तक मैं वहां नहीं जाना चाहता। मेरा धर्म बिहार और नोआखालीमें काम करना है। वहीं करने या मरनेका मेरा निश्चय है। पंजाब अिस समय मेरे लिअे परधर्ममें जानेके बराबर है। यहांके लोग कह दें कि अब सारा हिन्दुस्तान जल अुठेगा तो भी हम मिलकर रहेंगे, तो मैं आज ही नोआखाली चला जाअूं। और वहांके मुसलमान कह दें कि अब हम ही हिन्दुओंकी रक्षा करेंगे, तो मैं तुरंत पंजाब चला जाअूं।

"सुहरावर्दी साहब सतीशबाबूके लिअे जो कहते हैं वह अुन्हें शोभा नहीं देता। सतीशबाबू जैसे फकीर आदमी हिन्दुस्तानमें बहुत थोड़े हैं। वे तो हजारों रुपयोंकी बंगाल केमिकलकी कमाओी छोड़कर सबकी सेवा करने बैठे हैं। किसीके बारेमें जाने बिना झूठी बातें अुड़ाना हमारे पतनकी निशानी है।

"मुसलमान यह मानते हों कि मारकाट करनेसे पाकिस्तान बना सकेंगे, तो मैं अुन्हें विनयपूर्वक कहूंगा कि आप डर दिखाकर तो अेक अिंच जमीन भी नहीं ले सकेंगे; शान्तिपूर्वक समझाकर चाहिये तो सारा भारत ले सकेंगे, परन्तु डरसे तिलभर जमीन भी नहीं ले सकेंगे।

"कलसे बंगालका नववर्ष शुरू होता है। भारतमें नववर्षके दिन अनेक और अलग अलग आते हैं। अीश्वर करे कोअी समय अैसा आवे, जब सारे हिन्दुस्तानमें सब लोग नये वर्षके रूपमें अेक ही दिन साथ साथ मनायें और अेक-दूसरेके दोषोंके लिअे क्षमा मांगे। मैं नववर्षकी शुभेच्छाअें भेजता हूं। अीश्वर करे सब जगह शान्ति हो जाय और हिन्दू मरनेका पाठ सीख लें। वे अैसा निश्चय करें कि मर जायेंगे पर किसीको मारेंगे नहीं, बल्कि मारने-वाले पर गुस्सा भी नहीं करेंगे। अैसे बहादुर आदमी मुट्ठीभर भी मिल जायं, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जाय।"

प्रार्थनाके बाद फंडमें नकद पैसोंके अलावा दो सोनेकी चूड़ियां, दो मीनेकी अंगूठियां, अेक लौंग और कानके बुन्दे थे। ये सब लगभग पांचसौ रुपयेके होंगे।

प्रार्थनाके बाद बापूजी मुसलमान भाअियोंसे बातें करते हुअे बोले, "मैं निश्चित रूपसे मानता हूं कि अंग्रेज भारतसे चले जायेंगे, तो यहां साम्प्र-दायिक अेकता अवश्य हो जायगी। लीगवालोंकी समझमें अितना क्यों नहीं आता कि पहले गुलामीसे तो मुक्त हो जायं, बादमें विभाजनकी बातें करें। अिसलिअे या तो मुसलमान हिन्दुस्तानको अपनी मातृभूमि मानते हैं या नहीं मानते। अगर मातृभूमि मानते हों तो यह कत्लेआम बन्द कराकर पहले अंग्रेजोंकी गुलामीसे बिलकुल मुक्त हो जाना चाहिये। और बादमें साथ रहना पसन्द न हो तो वे समझाकर विभाजन करनेकी मांग करें। अथवा अपनी सरकारें बनाकर और अपनी सेना रखकर भले ही लड़कर विभाजन कर लें। परन्तु अिस तरह पीठ पीछे छुरे भोंक कर हजारों निर्दोषोंकी हत्या क्यों हो रही है, यह मेरी समझमें नहीं आता। हिन्दुस्तानको मुसलमान अगर अपना देश न मानते हों, तब तो पाकिस्तानका प्रश्न ही अुपस्थित नहीं होता।"

ये मुसलमान भाअी लीगकी तरफके थे। अुन्हें बड़ी स्पष्ट भाषामें बापूने यह कह दिया। यह सुनकर वे भाअी तो सन्न रह गये। कहने लगे, "अैसे कत्लेआमकी तो हम भी निन्दा करते हैं।"

परन्तु बापूजी कहां छोड़नेवाले थे? बोले, "तो आपको यहांकी लीगकी शाखाकी ओरसे वक्तव्य निकालने चाहिये और जिन्ना साहबको पत्र लिखने चाहिये। यदि अितना भी करेंगे तो आप अपनी संस्थाकी बड़ी सेवा करेंगे . सब लोग अनुचित अन्यायसे बचेंगे।"

परन्तु लीगकी नीति तो 'कहना कुछ और करना कुछ' की ठहरी। तदनुसार ये लोग अेक घण्टा खराव कर गये। वापूजीसे वड़ी मीठी-मीठी वातें कर गये। यह भी कह गये कि जिन्ना साहवको हम पत्र भी लिखेंगे। परन्तु अुनके जानेके वाद वापूजी कहने लगे, "अुनकी वातोंमें वहुत सार नहीं दीखता।"

१० वजे वापूजी थोड़ी देर टहले। विसेनभाअी वड़ी मदद करते हैं। अिसलिअे हिसावका काम वापूजीको या मुझे वहुत नहीं देखना पड़ता।

यहां भी दिल्ली जैसी ही गरमी रहती है। रातको तो गंगाके किनारे ही सोते हैं, अिसलिअे काफी ठंडा रहता है। मैं ११-३० के वाद सोने गअी। आज लगभग वारह वार मुझे नकसीर छूटी। वैसे रोज कोअी पांच वार छूटना तो स्वाभाविक हो गया है। परन्तु दिल्लीसे पटना आते हुअे कुछ तो रास्तेकी असह्य गरमीके कारण और आज यहां धूपमें वहुत घूमनेके कारण अैसा हुआ होगा।

वापूजीके पेटमें भी गरमीके कारण गड़वड़ है। शामको केवल गरम पानी और शहद ही लिया। सुवह ९॥ वजे भी खानेमें छह औंस दूध और थोड़ा-सा तरकारीका रसा ही लिया था। विहारकी राजनीतिक स्थितिकी भी वापूजीको काफी चिन्ता रहती है।

गांधी कैम्प, पटना,
१५-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके वाद वंगाली पाठ। फिर मुझे गीता-पाठ कराते हुअे वापूजीने अपरिग्रह और आजके समाजवाद या आर्थिक समानता पर कुछ वातें कहीं: "समाजवाद आधुनिक युगका शब्द है। परन्तु यह कोअी नअी खोज नहीं है। गीताजीमें भी यही सिद्धान्त भगवान कृष्णने वताया है। मनुष्यको जरूरतके लायक ही अपने पास रखना चाहिये। अर्थात् प्रभुने मानवको वनाया है तो प्रत्येक मनुष्यको अेकसा खाने, पहनने और रहनेको मिलना ही चाहिये। अिस धर्मके पालनके लिअे वड़े वड़े संघ वनानेकी जरूरत नहीं। अेक मनुष्य भी अिसका पालन कर सकता है। जीवनमें अिस आदर्शको ओतप्रोत करनेके लिअे पहले तो भारतके गरीवसे गरीव लोगोंका खयाल करके हमें अपनी आवश्यकताअें कमसे कम करनी चाहिये। अपना या अपने कुटुम्वका पेट भर जाय अितना ही कमाना चाहिये। वैंकमें

रुपया रखनेके लोभका तो अुसमें स्थान ही नहीं हो सकता। और जो धन कमाया जाय वह भी पूरी ओमानदारीके साथ कमाया जाय। अपने जीवनको छोटी-छोटी बातोंमें भी संयमी बनाना चाहिये। अेक भी व्यक्ति अिस प्रकार जीवन व्यतीत करनेकी कोशिश करे, तो अुसकी छूत दूसरोंको लगे बिना नहीं रहेगी। धनिकोंको अपने धनके ट्रस्टी बन जाना चाहिये। परन्तु यदि अिस धनको हिंसात्मक ढंगसे लूटा जाय, तो अुससे देशका ही नुकसान होता है। अिसे साम्यवाद कहा जाता है। हिंसात्मक मार्ग अपनानेसे अुलटे अेक शक्तिशाली मनुष्यको समाज खो बैठता है।"

बहुत दिनों बाद आज बापूजीने गीता समझाते हुअे अैसी बात कही। आजकल न तो बापूजीको फुरसत रहती है और न मुझे। अिसलिअे गीताजीके श्लोक बुलवाने या लिखवानेके लिअे मुश्किलसे बापूजी सुबह १० मिनटका समय दे सकते हैं।

बापूजीने बंगालीमें छोटे छोटे वाक्य लिखना शुरू किये हैं। पांच वाक्य लिखे और फिर डाक सुनी।

अेक शिक्षककी परेशानी थी कि विद्यार्थी मार खाये बिना सीधे होते ही नहीं। लेकिन अहिंसामें विश्वास रखनेवाला क्या करे? बापूजीने अुनको जवाब लिखवाया:

> "विद्यार्थियोंको मारना तो कभी नहीं चाहिये। परन्तु शिक्षक और विद्यार्थीके बीच अैसा अैक्यका वातावरण हो कि शिक्षक स्वयं ही कोअी अैसी सजा अपनेको दे, जिससे ममताके कारण अुस बालकके मनमें अपने-आप पश्चात्ताप हो और अुसका दिल पिघले, तो विद्यार्थी स्थायी रूपसे सुधर सकता है। मैं यह कोअी काल्पनिक बात नहीं करता। मैंने खुद अिसका अनुभव अपने जीवनमें किया है। माताअें भी अिसी तरीकेसे अपने बालकोंको सुधार सकती हैं। दक्षिण अफ्रीकामें मैंने हिन्दू, मुसलमान और पारसी लड़के-लड़कियोंको संभाला है; और अुनमें से सिर्फ अेक ही बार अेक विद्यार्थीको मारनेका मुझे स्मरण है। लेकिन अिसकी अपेक्षा अपने अहिंसाके तरीकेको अधिक अच्छी तरह सफल होते हुअे मैंने देखा है। यदि बच्चोंमें शिक्षकके प्रति प्रेम हो, तो अुन्हें अिस बातका दुःख हुअे बिना नहीं रहेगा कि हमारे लिअे हमारे शिक्षक यह सजा भोग रहे हैं। अिससे वे तुरन्त नरम

हो जायंगे। अिस पर भी कोअी विद्यार्थी न सुधरे तो अुसके साथ असहयोग करना चाहिये। लेकिन यह दूसरा तरीका है, सर्वोत्तम तरीका तो पहला ही है।

अितना लिखवाकर बापूजी दसेक मिनट सोये। अुठकर फिर अपने काममें लग गये। ६ बजे घूमने निकले। घूमते वक्त आअी० अेन० अे० वाले कर्नल शाहनवाज आये। अुनसे भी यहां मेरा अच्छा परिचय हो गया है। बहुत मीठे स्वभावके आदमी हैं। बापूजीने कैसे कैसे आदमियोंको खींच लिया है, अिसकी कल्पना करने पर मालूम होता है कि अुनमें अैसी कोअी शक्ति है जो मनुष्योंको अुसी तरह अपनी तरफ खींच लेती है, जैसे चुम्बक लोहेको खींच लेता है।

टहलते समय अुनसे बातें करते हुअे बापूजी कहने लगे, "मैं तो आप पर बड़ी आशाअें लगाये बैठा हूं। मुझे आपको सम्पूर्ण अहिंसक शस्त्रके सिपाही बनाना है। आपने नेताजीके साथ रहकर कर्नलकी पदवी प्राप्त की। अुसी तरह मुझे आपको अहिंसाका कर्नल बनाना है। यदि आप अैसे कुशल हो जायं कि मैं आपको यह पदवी दे सकूं, तो अिस अैक्यके कार्यकी सफलतामें मुझे जरा भी शंका न रहे। सबको प्रेमसे जीतना है। आपको कातना सीख लेना चाहिये।"

शाहनवाज साहब तो खुश खुश हो गये। घूमकर लौटने पर मुझसे कहने लगे, "मुझे अेक चरखा दो, आज ही चरखा चलाना सिखा दो। बापूजीने कहा कि लोहेकी तलवारको चलाना भूल जाना है, और अहिंसाके अिस हथियारको चलाना सीखना है।"

बापूजीकी मालिश, स्नान और भोजन निपटाकर शाहनवाज साहबको मैंने चरखा बताया, अेक पूनी कातकर बताअी और चरखा किस तरह शुरू करना, कैसे बन्द करना वगैरा बताया। वे तुरन्त ही सीख गये। अेक पूनी अुन्होंने बिगाड़ी, लेकिन दूसरी पूनी ठीकसे कात ली।

शाहनवाज साहबको कातते देखकर लगता है कि बापूजीने अिस तरहसे कितनों ही के हृदयको बदल डाला होगा। अुन्होंने नेताजी सुभाषबाबूकी सेनाके अेक कर्नलको सुबह दस मिनटमें अपना बनाकर कातने बैठा दिया। कर्नल शाहनवाज स्वेच्छासे — अुत्साहपूर्वक चरखा चलाना सीखने लगे।

८-३० से ही मुलाकातें शुरू हो गअीं। मुसलमान भाअी आये। मंत्रि-मंडलके सदस्य अलग अलग आये।

सुबह बापूजीका वजन लिया। १०८ पौंड निकला। दिल्लीमें ११२ पौंड था। शायद कांटेमें फर्क हो। लेकिन ४ पौंड का फर्क तो हरगिज नहीं हो सकता। गरमीके कारण वजन घटा है। बापूजीने खुराक बहुत कम कर दी है। मेरा वजन ८७ पौंड निकला। बापूजीने कअी बार मेरा वजन जबरदस्ती करवाया है। आज पांच वर्ष पहलेकी आगाखान महलकी बात याद करते हुअे बापूजी बोले, "तुम्हें याद है कि आगाखान महलमें तुम्हारा वजन १०६ पौंड था? १९ पौंडका फर्क? अिसका अर्थ यह है कि मैं तुमसे भूतकी तरह काम लेता हूं। या तुम अपने स्वास्थ्यका ध्यान नहीं रखतीं।"

मैं तो स्तब्ध हो गअी। बापूजीको पांच वर्ष पहलेका मेरा वजन कैसे याद रह गया? मुझे स्वयं भी याद नहीं था। मैंने कहा, अिधर नकसीर बहुत छूटती है और गरमी भी बहुत है। आप भी तो ४ पौंड घट गये।

बापूजी: "तुम ७८ वर्षकी नहीं हो न? नहीं तो शायद मैं तुम्हारी दलील पर ध्यान भी देता। लेकिन अब अितना ध्यान रखना कि जब तक तुम्हारा १०० पौंड वजन न हो जाय, तब तक मैं तो तुम्हें बेकार समझूंगा। तुम्हारा वजन अितना घट गया होगा, अिसकी तो मुझे कल्पना भी नहीं थी। सूख जरूर गअी हो। लेकिन वजन अितना घट गया है, यह तो आज अगर तुम्हारा वजन न लिया होता तो मुझे मालूम नहीं ही पड़ता!"

अुत्तरमें कोअी दलील देना व्यर्थ था, क्योंकि बापूजी मुझसे नाराजीमें बात कर रहे थे। अिसलिअे 'सबसे बड़ी चुप' का ही मैंने सहारा लिया। क्योंकि अुन्होंने अेक सूचक बात कही कि "आज ही तुमसे यह लिखवाया था न कि वह शिक्षक अपने विद्यार्थीको किस प्रकार सजा दे। वैसा ही कुछ मुझे भी करना होगा।"

यहां पुलिसके सिपाहियोंका आन्दोलन शुरू हुआ है। आज हमारे घरके आसपास बहुत बड़ा जुलूस निकला था। पुलिसमैन अेसोसियेशनके नेताको बापूजीने बुलाया था। अुन्हें हथकड़ी डालकर गिरफ्तार कर लिया गया, यह बापूजीको बहुत अच्छा नहीं लगा। अैसा न किया होता तो शायद बापूजीके समझानेसे सब मामला शान्त हो जाता। अब तो बात बिगड़ गअी है। फिर भी बापूजी ठीक कर ही देंगे। बापूजीके समझानेसे ही रामानंद तिवारी [illegible]में आ गये हैं।

दोपहरको कओी भाअियोंके साथ बातचीत करते हुअ बापूजीने कहा:

"विज्ञानमें सूक्ष्मसे सूक्ष्म रजकण जैसी चीजें तौलनेके लिअे अेक सेन्सिटिव बैलेन्स होता है, जिसमें बालको भी तौला जा सकता है। अिसलिअे अहिंसा और सत्यमें यदि बाल जितनी भी भूल हो जाय, तो यह तराजू हिल अुठनी चाहिये। हमारी कसौटी अिस हद तक हमें दिखानी है, और दिखानी ही चाहिये। अिसलिअे किसी मनुष्यके बारेमें किसी भी प्रकारका अनुमान लगा लेना अहिंसक मनुष्यको शोभा नहीं देता। कोओी हमारे बारेमें कुछ कहे तो यह मान लेनेका कोओी कारण नहीं कि वह हमारे विरुद्ध ही होगा। अुदाहरणार्थ, दो मित्रों या दो भाअियोंके बीच कुछ मतभेद हो जाय, तो वे मित्र मिट नहीं जाते या भाओी मिट नहीं जाते। अैसे अनेक अुदाहरण हैं। पानीमें दो भाग हाअिड्रोजन और अेक भाग आक्सीजन है। फिर भी अुसका पृथक्करण और अेकीकरण करके दोनों तरहसे जांच करें और पानी अुत्पन्न हो जाय तो ही पानीकी खोजमें हमारा अनुमान सही कहा जायगा। अिसी प्रकार हमारे रोजाना व्यवहारमें भी बहुत बार अैसा होता है कि जो हमें दीयेकी तरह स्पष्ट दीखता है वह भी गलत साबित हो सकता है। पूरी जांच किये बिना अनुमान लगा लेनेमें सत्य और अहिंसाका निश्चित भंग है। यदि हमने सत्य और अहिंसाका व्रत लिया हो, तो हमें छांछको भी फूंक-फूंक कर पीना चाहिये। हमें प्रतिक्षण अितना सावधान रहना चाहिये। राजा-महाराजाओंके अनेक दोष मेरी जानकारीमें हैं, फिर भी मैं अुनसे आदरपूर्वक मिलता हूं, अुनका स्वागत करता हूं। क्योंकि अिसमें अुनका कसूर नहीं, परन्तु परिस्थितियोंके कारण अुनका स्वभाव अैसा बन गया है। अुन्हें प्रेमसे ही बदला जा सकता है और तभी अुन्हें लग सकता है कि हम अुनके मित्र हैं; और अिसीसे वे स्वयं कओी बार पश्चात्ताप करनेकी हद तक पहुंच जाते हैं।

"आप जानते हैं कि दीनबन्धु अेन्ड्रूजका सरकारी अधिकारी हमेशा तिरस्कार करते थे। फिर भी अेन्ड्रूज अुनके घर यदा-कदा जाते और अुसके परिणाम-स्वरूप कितनों ही को पश्चात्ताप करना पड़ा। आपके बीच यदि मैं अहिंसा और सत्यके प्रयोगोंको सिद्ध कर सकूं, तो ही मैं पंजाब या दिल्ली जा सकता हूं, और तब मुझे हर जगह सफलता मिले बगैर रह ही नहीं सकती। अिस-लिअे अहिंसक बने हुअे मनुष्यको सूक्ष्मतासे आत्म-निरीक्षण करना चाहिये और प्रत्येक क्षण जाग्रत रहकर सावधान रहना चाहिये।"

अेक भाअीने . . . के वारेमें अनुमान लगाकर जरा अविश्वासकी वात की। अुन्होंने अेक ही वाक्य कहा। अुसके वदलेमें वापूजीने अूपरकी हृदय-स्पर्शी वात सुनाअी और अपने वन्दर गुरुकी ओर अिशारा करते हुअे कहा, "यह गुरु मुझे हमेशा यही पाठ सिखाता है कि किसीको अविश्वासकी दृष्टिसे नहीं देखना चाहिये। अिसीसे अिसने आंखें वन्द कर ली हैं। किसीकी निंदा नहीं सुननी चाहिये, अिसीलिअे अिसने दोनों कान वन्द कर लिये हैं। और किसीकी चुगली नहीं करनी चाहिये या दूसरेको दुःख हो अैसा अेक भी शव्द मुंहसे नहीं निकालना चाहिये, अिसीलिअे अिसने मुंह वन्द कर लिया है।"

वाकी सव नियमानुसार चलता है। प्रार्थना यहां वांकीपुर मैदानमें ही हुअी।

प्रार्थनामें वापूजीने कहा:

"मेरे पास दिल्लीमें पत्र आते थे। विहारके लोगोंको सन्देह था कि मैं वापस आअूंगा या नहीं? और कितने ही तो मैं यहां आया हूं अिसलिअे मेरी स्तुति करते हैं। लेकिन स्तुतिकी तो अिसमें क्या वात है? जो मनुष्य धर्म-पालन करता हो अुसकी प्रशंसा करनेकी कोअी जरूरत नहीं होती। देनेवाले मुझे गाली भी देते हैं। वह भी मुझे स्पर्श नहीं करती; क्योंकि मैं तो धर्म-पालन करनेमें प्रयत्नशील रहता हूं। मुझे करना है या मरना है। कोअी कहता है कि अेक मुसलमानके कहनेसे मैं यहां कैसे आया? लेकिन जिस मुसलमानके कहनेसे मैं यहां आया हूं, वह तो आपके खिदमतगार डॉ० सैयद महमूद साहव हैं। आपके प्रख्यात सेवक मजरुलहक साहवके वे दामाद हैं। अुन्होंने देशके लिअे वहुत कष्ट भोगे हैं। वे विद्वान और होशियार आदमी हैं और हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके लिअे अपना शरीर खपा रहे हैं। अैसे आदमीने मुझे यहां वुलाया। लेकिन वे मुसलमान हैं अिसलिअे अुनके वुलाने पर यहां आकर क्या मैंने गुनाह किया?

"लेकिन विहार तो मेरा प्रदेश है। विहारके लोगोंने ही मुझे वनाया है। विहारसे मुझे ममता है। साथ साथ डॉक्टरके लिअे अैसी गाली भी दी जाती है कि 'यह शैतान है। अिसने गांधीको विहारमें वुलाकर अपना घर वनाया है और नोआखाली विगड़ रहा है।' अैसी गंदी वात हमें [illegible]ड़नी चाहिये। नोआखालीकी यात्रा भी मैं मुसलमानोंके वीच ही करता [illegible]न? आपको मालूम होगा कि मेरे सालों पुराने साथी अभी वहां जानको

खतरेमें डालकर काम कर रहे हैं। अुनमें मैं आ ही जाता हूं। और डॉक्टर साहबके लिअे अैसे शब्दोंका अुपयोग करना हमारी गिरावटकी निशानी है। अुन्होंने कांग्रेसको कितनी सेवा की है? और शैतान कहनेका अधिकार मनुष्यको नहीं, अीश्वरको ही है। आज वे मुझे कितने प्रेमसे रखते हैं? मेरी अिस लड़कीको अपनी लड़कीसे भी ज्यादा प्रेमसे संभाल करते हैं। सारा कुटुम्ब अिस लड़कीकी कैसे संभाल रखता है, यह आप देखें तो मालूम हो कि अिनमें हिन्दू-मुसलमानका भेदभाव है ही नहीं। और मैं जाअूं वहां मेहमानोंकी भीड़ तो रहती ही है। अितने सारे मनुष्योंकी यह कुटुम्ब तन, मन, धनसे सेवा और संभाल करता है। अन्सारी और डॉ० सैयद महमूद जैसे त्यागी और होशियार मुसलमान बिहारमें पड़े हों, तो अुन्हें मिनिस्ट्रीमें लेनेमें मैं कोअी दोष नहीं देखता। क्योंकि मरनेकी हिम्मत रखनेवाले अैसे दो ही मुसलमान हों तो भी मेरे लिअे काफी हैं।

"खानसाहबको देखिये! अुन्होंने पठानोंके बीच कितने ही हिन्दुओंकी रक्षा की है। अेक आदमी गुंडा निकले तो क्या अुसकी वजहसे सारी जातिसे नफरत करनी चाहिये? अैसी संकुचित मनोवृत्ति अब हमें छोड़नी पड़ेगी। क्योंकि स्वराज्यमें तो विशाल दृष्टि ही रखनी होगी। तो ही हम स्वराज्यको सुरक्षित रख सकेंगे। नहीं तो हमारी संकुचितताके परिणामस्वरूप किसी समय स्वराज्य खतरेमें पड़ जायगा। अितना ही नहीं, हमें फिरसे गुलामी मोल लेनी पड़ेगी।

"केवल बिहारमें ही अेकताका वातावरण पैदा हो जाय, अेक अेक हिन्दू बच्चा और अेक अेक मुसलमान बच्चा बेधड़क और निडर बन जाय, तो अुसका असर सारे हिन्दुस्तान पर पड़े बिना रह ही नहीं सकता। अगर बिहार निश्चय कर ले तो वह सारे हिन्दुस्तानका मार्गदर्शन करके शान्तिका दीपक बन सकता है। बिहार तो रामका भक्त है। रामजीने कभी भी बुरा काम नहीं किया। तो जो हुआ अुसे भूलकर 'जब जागे तभी सवेरा' अिस कहावतके अनुसार आप फिर जाग जाअिये। मुझसे जितनी और जैसी मदद चाहिये आप मांग सकते हैं। मेरी अिस विनती पर आप सब विचार कीजिये।

"अैसी असह्य गरमीके कारण मैं अभी यात्रामें नहीं जा सकता, क्योंकि गरमीके कारण अेक-दो घंटे काम करनेके बाद मुझे थोड़ा आराम

करना पड़ता है और थकान भी लगती है। पटनामें बैठे बैठे यह काम जितना हो सकेगा अुतना मैं करूंगा ही।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीकी बैठक बाहर जमा दी। रातके ८ बजे गये हैं फिर भी लू चलती है।

९–३० के बाद बापूजी घूमे और फिर सोनेकी तैयारी की। १०–३० के बाद यह डायरी पूरी करके अब मैं सोने जा रही हूं।

पटना,
१६–४–'४७

आज बापूजी रोजकी अपेक्षा कुछ जल्दी अुठ गये। प्रार्थनाके पहले बिहारके विषयमें सामान्य बातें करते हुअे मुझसे कहने लगे, "मुझे सन्तोष मिले अैसा काम अभी नहीं हो रहा है। अेक-दूसरे पर आक्षेप करनेसे ही लोग बाज नहीं आते। मुझे अैसे वातावरणमें काम करना है। जो हो जाय सो सही। जब तक प्रत्येक हिन्दुस्तानी — स्त्री हो या पुरुष — स्वयं अपना रक्षक नहीं बनता, तब तक हमारे अुद्धारका कोअी अुपाय नहीं। और यह तभी हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसियोंका तन, मन, धनसे सदा कल्याण ही चाहे, फिर भले वे किसी भी कौम या धर्मके हों। धर्म और कौम तो व्यक्तिगत चीजें हैं। लेकिन यह काम बहुत कठिन है। क्योंकि १५० वर्षसे जिस तरहकी हमारे मानसकी रचना हुअी है, वह पूरी तरह तो कैसे मिट जायगी? वाअिसरॉय भी बहुत होशियार आदमी हैं। मुझे कहना चाहिये कि मैं अितने वाअिसरॉयोंसे मिला, लेकिन अिनमें कुछ अलग ही संस्कार हैं।"

प्रार्थनाके बाद मुझे गीतापाठ कराया और फाअिलमें पत्र रखनेका तरीका समझाते हुअे कहा कि "अैसा करनेसे चाहे जिस क्षण, चाहे जिस पत्रका अनुसंधान तुरन्त मिल सकता है।"

५–३० से ५–४५ तक बापूजी सोये। बापूजी पैरोंमें दर्द होनेकी शिकायत करते हैं। गरमीके कारण दर्द है। नोआखालीमें तो यहांकी अपेक्षा बापूजीको विशेष काम रहता था और रोज वे दो बजेसे जाग जाते थे। परन्तु यहां कुछ विशेष थक जाते हैं। यहां मानसिक थकान भी काफी रहती है। क्योंकि मनुष्यको जब अपने ही लोग ठगें तो अुनसे काम लेना कठिन हो जाता है। अैसा ही यहां है। लोग अेक बात कह जाते हैं, हां कहते

हैं, वचन देते हैं, लेकिन अुनका आचरण कुछ और ही होता है। बापूजी तो अुनसे निबटनेकी शक्ति रखते हैं, लेकिन दूसरे दुर्बल मनुष्योंका यहांके कामको संभालनेका बूता नहीं है।

घूमते समय अेक भाअी अपना गुनाह कबूल करने आये। बापूजीने अुन्हें कहा, "अब फिर कभी अपने हाथसे अैसा न करनेका दृढ़ निश्चय करना ही सच्चे प्रायश्चित्तका मार्ग है। आजके बाद किसी समय कोअी भूल आपसे हो जाय तो दिनमें हुअी भूलको रातमें सोनेसे पहले कबूल किये बिना नहीं रहना चाहिये। भूल करनेसे तो कोअी मनुष्य बचा ही नहीं। अिसलिअे भूल तो मनुष्यसे होती ही है। अुसमें बहुत खतरा नहीं है। लेकिन अुस भूलको छिपानेमें खतरा है। क्योंकि अेक भूलको छिपानेके लिअे जो झूठ बोलना पड़ता है वह दूसरी भूल होती है। अिस तरह भूलोंकी परम्परा चालू रहे तो बेशुमार नुकसान भोगने पड़ सकते हैं। शरीरमें यदि फोड़ा हो गया हो तो अुसे दबाकर पीप तो निकाल सकते हैं। लेकिन अुस फोड़ेमें से अगर जहर न निकले तो वह जहर मनुष्यके शरीरमें फैल जाय और अुसकी मृत्यु ही हो जाय। यही बात भूल हो जाने पर अुसे कबूल न करनेमें होती है। पापी मनुष्य चाहे जितना पाप करे, लेकिन अन्तिम समयमें अपना पाप कबूल करके वह प्रायश्चित्त करे तो अीश्वर अुसे माफ कर ही देता है। अीश्वरकी अिस सृष्टिमें प्रत्येक मनुष्यका तो क्या, जीव-जन्तु और पशु-पक्षियों तकका कल्याण हो, अैसी भावना मनमें रखनी चाहिये। और वह बल प्राप्त करनेका अेकमात्र अुपाय सुबह-शाम अीश्वरका ध्यान करना है। सबके कल्याणकी सद्‌भावनामें अपना कल्याण तो आ ही जाता है।"

आज सुबह जो भाअी आये थे अुन्हें बापूजीने बहुत प्रेमसे समझाया और अब हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके काममें लग जाने तथा चोरी किया हुआ माल अुन्हें या मृदुलाबहनको सौंप जानेको कहा।

आज खानसाहब भी खास कामसे आये। अुनकी तबीयत ठीक लगी। पहलेकी ही तरह मैं अुनकी सेवा करने लगी हूं। यद्यपि वे थोड़े ही दिन रहनेवाले हैं। खानसाहबका मैं जरा-सा काम करती हूं तो अुन्हें लगता है जैसे मैं अुनका बहुत काम करती हूं। वे बार बार पूछते हैं, "तुम थकती तो नहीं न? बापूजीके काममें बाधा तो नहीं आती न?"

मैं कहती हूं: आपकी सेवा करनेसे तो अुलटे मुझे लाभ होता है। आप कोअी चिन्ता न करें। शामको फिर अैसा ही पूछ रहे थे।

आज मुझे कुछ बुखार होनेसे १२–३० पर मैं सो रही थी। मुझे सोते देखा, अिसलिअे बापूजीने स्वयं ही चरखा तैयार करके कातना शुरू कर दिया। बापूजी कात रहे थे तभी मैं जाग अुठी। मैं चरखा तैयार करनेके लिअे ही चौंक कर जाग पड़ी थी। मुझे देखकर बापूजी खिल-खिलाकर हंसने लगे। बोले, "और थोड़ी देर सो जाओ तो मुझे ज्यादा अच्छा लगे।"

मैंने कहा, "लेकिन मुझे जगाया क्यों नहीं?"

बापूजी: "मुझे देखना था कि मैं चरखा तैयार कर सकता हूं या नहीं। मुझे यह अच्छा मौका मिल गया न? अपने लिअे लाभदायक मौकेको कोअी छोड़ता है भला? तुम्हें स्वयं गहरी नींदमें सोते देखकर मैं बहुत खुश हुआ।" अैसा कहकर मेरा कान पकड़ा।

मैं नहीं चाहती थी कि मुझे बुखार आया है, यह बापूजी जानें। लेकिन मेरा कान पकड़ा अिसलिअे अुन्हें पता चल गया। लेकिन बुखारकी शुरुआतमें ही मैंने आराम ले लिया, अिसलिअे बापूजीकी नाराजीसे बच गअी। अितना ही नहीं, मेरे साथ अुन्होंने विनोद भी किया। मेरा बुखार बढ़कर १०३ डिग्री हो गया।

वाअिसरॉय साहबकी सूचना थी कि बापूजी और जिन्ना साहब मिलकर संयुक्त वक्तव्य निकालें और अुसमें दोनों दस्तखत करें। अिन दंगोंके बारेमें हिन्दुओंकी तरफसे बापूजी दस्तखत करें और मुसलमानोंकी ओरसे जिन्ना साहब करें। यद्यपि बापूजी कहते थे कि मैं केवल हिन्दुओंका नहीं, मैं तो सबका सेवक हूं, फिर भी वाअिसरॉय साहबके अिस आग्रहसे कि भारतीय जनताका तो आप पर ही विश्वास है, बापूजीको लगा कि यह परिस्थिति सुधरती हो तो मुझे दस्तखत करनेमें कोअी आपत्ति नहीं होनी चाहिये। अिसके बारेमें प्रार्थनासे पहले आखिरी समाचार आये कि कायदे आज़म जिन्ना साहबने भी वक्तव्य पर दस्तखत कर दिये हैं।

प्रार्थनाके समय बुखार लगभग अुतर जानेसे बापूजीने प्रार्थनामें जानेकी अिजाजत दे दी, फिर भी तापमान देखनेको कहा। ९९.६ था। परन्तु मेरी अिच्छा थी कि प्रार्थना न छोड़ूं। अिसलिअे अुन्होंने हां कह दिया। लेकिन

प्रार्थना बैठे-बैठे करनेकी सूचना की। आज प्रार्थनामें बहुत भीड़ होनेके कारण पहले रामधुन शुरू करवाओ। बादमें ही प्रार्थना हो सकी।

प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने कहा:

"आपको अेक खबर दूं कि अन्तिम बार जब मैं वाअिसरॉय साहबसे मिलने गया था तब अुन्होंने अेक वक्तव्य तैयार किया था। अुनकी सूचना यह थी कि अुस वक्तव्य पर मैं अपने दस्तखत कर दूं तो अच्छा हो। अुस पर कायदे आजम जिन्ना साहबने भी अपने दस्तखत किये हैं। हम दोनों यह मानते हैं कि आजकल देशमें जो अंधाधुंधी और अमानुषी बरताव चल रहा है वह बहुत खराब है; अुससे देशकी बदनामी हो रही है और निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। यह तो राजनीतिक मामलोंके लिअे ही अैसा हो रहा है। किसी पर जबरदस्ती नहीं की जा सकती। हम लोग अिसकी निन्दा करते हैं।

"अैसे वक्तव्य पर मेरे दस्तखत हों या न हों, अिसकी कोअी कीमत नहीं। क्योंकि मैं तो पुकार पुकार कर कहता हूं कि निर्दोष मनुष्योंको मत मारो। परन्तु कायदे आजम जिन्ना साहबके दस्तखतकी कीमत ज्यादा है। अुन्होंने वाअिसरॉयके साथ अपने दस्तखत भी किये हैं। अब वाअिसरॉय साहबकी यह नअी युक्ति कितनी सफल होती है यह देखना बाकी रहा। लेकिन हम लोगोंको अिस पर विश्वास और श्रद्धा रखना चाहिये कि अबसे दंगा-फसाद बंद होगा। कायदे आजम तो लीगके प्रतिनिधि भी हैं, जब कि मैं किसीका प्रतिनिधि नहीं हूं। आपका नौकर हूं और अपना ही प्रतिनिधि हूं। फिर भी आप सब प्रेमसे कहते हैं कि तू ही हमारा प्रतिनिधि है तो अुसके लिअे मुझे आपका आभार मानना चाहिये। मैं किसी खास संस्थाका प्रतिनिधि नहीं हूं। लेकिन मेरे दस्तखत जो लिये हैं वह स्वयं मेरे लिअे तो खतरनाक है। अब अगर हिन्दू 'महात्मा गांधीकी जय' कहकर लोगोंको मारें तो पहले मुझे ही मरना पड़ेगा। नोआखालीके लिअे तो अैसा करनेका मुझे अधिकार मिल ही जाता है। वहांके हिन्दुओंको मैं यह वचन देता हूं कि वे लोग समझें और मानें कि मैं करूंगा या मरूंगा। मेरे अिस निश्चय पर अुनको विश्वास रखना चाहिये। मैंने ये हस्ताक्षर हिन्दुओंके प्रतिनिधिकी हैसियतसे नहीं किये, यह स्पष्टीकरण मैं यहां कर देता हूं। मैं तो सब धर्मोंका प्रतिनिधि हूं।

"लेकिन आप सब लोगोंको मुझे अिस काममें मदद देनी है। अेक समय जिन्ना साहब कांग्रेसके बड़े नेता थे, और वे सबके लिअे बोलते थे। खास तौर पर अखबारवालोंसे मैं कहता हूं कि अिस मामलेमें किसी प्रकारकी गलतफहमी न होने पाये अिसका ध्यान रखिये। अखबारवालोंको स्वतंत्र भारतमें बहुत सावधान होकर जनताकी सेवा करनी चाहिये।

"अिस नअी घटनासे मेरे मस्तिष्क पर बहुत बड़ा बोझ आ पड़ा है। अिस घटनामें वाअिसरॉय साहबकी मध्यस्थता है। अुनकी अिस मेहनतके लिअे वे धन्यवादके पात्र हैं। लेकिन अिसकी अपेक्षा अधिक शोभा तो अिसमें रहती और अधिक अच्छा तो यह होता कि वाअिसरॉय साहबको तकलीफ दिये बिना हम दोनोंने आपसमें ही समझकर अैसा कर लिया होता। अुसके लिअे मैंने मेहनत भी करके देखी। लेकिन मुझे कबूल रकरना चाहिये कि मैं जिन्ना साहबको समझानेमें सफल न हो सका। लेकिन भले वाअिसरॉय साहब बीचमें रहें। अगर अिससे शान्ति होती ही हो तो मुझे कोअी अेतराज नहीं है। लेकिन अब अीश्वर हम दोनोंको अैसी सुबुद्धि दे कि हम सच्चाअीसे अपनी सेवा दे सकें। आप सबको मैं कहूंगा कि आप भी अिस प्रयत्नमें हमारा साथ दीजिये। अब हमारा धर्म क्या है, यह विचार कीजिये। कांग्रेस और लीग मिलकर अपने कर्तव्यको समझें और साथ मिलकर काम करें।

"आज बिहार शरीफ और मुंगेर जिलेसे दो भाअी मुझसे मिलने आये थे। अुनके मुसलमान होनेसे अुन्हें मजदूरी नहीं मिलती। दूसरी बात अुन्होंने यह बताअी कि मैं अुन्हें राअिफल रखनेकी अिजाजत दिलवाअूं।

"मुझे अिस बातसे दुःख होता है और शरम आती है कि बिहारके हिन्दू अेक समय कैसे थे और आज कैसे हो गये हैं? वे मुसलमानोंके साथ हिल-मिलकर सत्याग्रहकी अनेक लड़ाअियां लड़ चुके हैं। और आज अुन्हीं भाअियोंमें अितनी दुश्मनी हो गअी कि मजदूरी भी नहीं मिल सकती। मेरी अिच्छा तो है कि मैं मुंगेर जिलेमें जाअूं, लेकिन मेरा शरीर काम नहीं करता। अिस कष्टसे मुझे बचानेके लिअे आप कोशिश कीजिये। और राअिफलकी अिजाजत मैं दिलाअूं? यह तो मुझसे होने जैसी बात नहीं है। क्योंकि राअिफल मनुष्यकी रक्षा करती है, अिस सिद्धान्तमें मेरा विश्वास नहीं है। हां, राअिफलकी जरूरत कभी बाघ-चीता आवे तो पड़ सकती है। लेकिन आज तो हिन्दुओंको या मुसलमानोंको मारनेके लिअे ही अिन सब

हथियारोंकी जरूरत पड़ती है। विहारी तो रामायणके प्रखर अव्ययनकर्ता कहलाते हैं। अुसमें अेक सुन्दर कथा है। विभीपणने रामसे पूछा कि आप रावणके विरुद्ध किस ढंगसे लड़ेंगे? तो रामने जवाव दिया कि मेरे पास मेरी पवित्रता, सत्य और तपस्याका वल है और अुसी शक्तिसे मैं लड़ूंगा। हमारे खयालमें यह आना ही नहीं चाहिये कि राअिफलके वल पर हमारी रक्षा होगी। प्रत्येक परस्त्रीको आप अपनी मां, वहन या पुत्री समझने लग जाअिये।

"और अेक वात मुझे अपने किसान भाअियोंसे कहनी है। हमारे देशमें हमारा राज्य आया है, और थोड़े समयमें तो हम पूरी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे। जमींदारीके अुन्मूलनके लिअे वर्षोंसे सव प्रयत्न कर रहे हैं। अव तो स्वतंत्रता मिलनेके वाद अुस दिशामें आगे काम चलेगा। लेकिन अिसका यह अर्थ यह नहीं है कि किसान जमींदारों पर सवार हो जायं। आज अैसी खवर मिली है कि किसान मारपीट भी करते हैं। अिस तरह किसान जरा भी अूंचे नहीं अुठ सकेंगे। किसानोंके साथ अन्याय होता हो तो आप किसी भी समय सरकारके पास जरूर जा सकते हैं, लेकिन कानूनको आप हाथमें नहीं ले सकते। हमारे देशमें स्वराज्य आया अिसका यह अर्थ तो नहीं है कि जिसे जैसा अच्छा लगे वैसा वह कर सकता है। अुलटे हमें तो अधिक नम्र वनना चाहिये और भलमनसाहतसे सहानुभूतिपूर्वक काम करना चाहिये। तो ही हिन्दुस्तान सुखी हो सकता है; और तभी जमींदारोंको भी शरम आयेगी कि हमारे भाअी भूखों मरते हैं और हमारे पास हजारों अेकड़ जमीन है, लाओ हम अपने भाअियोंको गुजरके लायक थोड़ी जमीन वोनेके लिअे दे दें। कहना यह है कि जो काम समाधान-वृत्ति, कुशलता, भलमनसाहत और प्रेमसे हो सकता है, वह अच्छेसे अच्छे कानूनोंसे भी सफल नहीं हो सकता। और जमींदारोंको भी समझना पड़ेगा कि अव तक दूसरोंका शोपण करके जो अैश-आराम किया वह अव नहीं किया जा सकता।"

प्रार्थनाके वाद यहांका मंत्रि-मंडल मिलने आया। लगभग डेढ़ घंटे चर्चा चली।... मैं तो आधेक घंटे वैठी थी। वुखारके कारण काम खतम करके जल्दी ही सो गअी। मंत्रि-मंडलके जानेके वाद वापूजीने प्रार्थना-प्रवचन जांचा-सुधारा और १० वजे सव काम पूरा करके मुझे जगाया।

बगीचेमें पांच-सात चक्कर लगाकर सवा दस बजे बापूजी सोये। मैं भी बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर सो गअी। सोनेसे पहले बापूजीने बुखार देखनेको कहा। १०१ डिग्री हो गया था। लेकिन कुछ कामकाज तो था नहीं, अिसलिअे फिर सो गअी। मेरी तबीयत जरा भी बिगड़ती है तो बापूजी बेहद बेचैन हो जाते हैं। आधे आधे घंटे पर पूछा करते हैं, "तुम्हारे क्या हाल हैं? सिर दुखता है? हाथ-पैर टूटते हैं?" और अेक-अेक घंटेसे गरम पानी पीनेके लिअे स्वयं मुझे याद दिलाया करते हैं।

गांधी कैम्प, पटना,
१७–४–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद . . . को लम्बा पत्र लिखा। आराम नहीं किया। आजसे मैं जो प्रवचन हिन्दीमें लिखती हूं अुसे बिलकुल वैसे ही प्रेसमें भेजनेके लिअे बापूजीने मुझे कहा।

मंत्रि-मंडल 'बिहार समाचार' नामका अेक दैनिक बुलेटिन निकालनेका विचार कर रहा है। अुसमें बापूजीके प्रार्थना-प्रवचन और शांति-संबंधी विचार होंगे और अुसे गांव गांवमें पहुंचानेकी कोशिश की जायगी।

८–३० पर कुछ बहनें आअीं। बापूजीने अुन बहनोंसे कहा :

"आपको अपनी आत्मा और प्रभुमें ही पूरा भरोसा रखना चाहिये। आत्म-विश्वास और हिम्मत बढ़ानी चाहिये। डरनेवालेको सभी डराते हैं। अिसलिअे यदि आप डरपोक रहेंगी तो अीश्वरने आपको हिम्मत बढ़ानेकी शक्तिका जो वरदान दिया है अुससे आप कोअी लाभ नहीं अुठा पायंगी। अिसलिअे आपको अपनी शक्तिका सदुपयोग करनेके लिअे भी अपनेमें विद्य-मान शक्तिका माप निकालना चाहिये।

"भारतकी बहनोंको अबला कहनेकी खोज किसने की होगी वह तो अीश्वर ही जाने। 'अबला' कहना अुस शक्तिकी निंदा करना है। मेरी दृष्टिमें तो यह स्त्रियोंके लिअे अेक प्रकारकी गाली है। हमारी स्त्रियां न तो कभी अबला थीं, न आज हैं। हमारे देशके राजपूत-काल, मुगल-काल या महाभारत-कालका अितिहास पढ़ें तो अुसमें स्त्रियों द्वारा किये हुअे अद्भुत परा-क्रम वर्णन आयेगा ही। ये पराक्रम अुन्होंने केवल हथियारोंका प्रयोग करके

नहीं किये, लेकिन अपना चरित्रबल बढ़ाकर यह महान शक्ति अुन्होंने अपनेमें विकसित की थी। यदि बहनें यह निश्चय कर लें कि अुन्हें अपने देशका मुंह अुज्ज्वल करना है तो अिस देशकी काया चंद महीनोंमें बदल जाय। क्योंकि अन्य देशोंकी अपेक्षा आर्य नारीके संस्कार सर्वथा भिन्न हैं।

"बिहारमें क्या और नोआखालीमें क्या, सारे देशमें जहां देखो वहांसे अेक ही खबर मिलती है कि अमुक स्थान पर अमुक स्त्रियोंको गुंडोंने बिगाड़ा या कहींसे फेंक दिया। अैसी अनेक खेदजनक खबरें सुनकर मेरा दिल द्रवित हो जाता है। मैं सोचता हूं कि हमारी स्त्रियां अितनी भीरु कैसे बन गअीं? स्त्रियोंकी प्रतिभा कम होती गअी, अिसके लिअे स्त्रियां ही अुत्तरदायी हैं। आपको द्रौपदी और सीताकी तरह अीश्वरमें असीम श्रद्धा रखनी चाहिये। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, यहूदी जैसे जातिभेद आपको अपने अन्दरसे निकाल देने चाहिये। जो धर्म अच्छा लगे अुसीका व्यक्तिगत रूपमें पालन कीजिये। लेकिन जो पुरुष स्त्रियोंको खराब करते हैं वे कौन हैं? आपके ही भाअी, पिता या पुत्र हैं न? आखिर तो सब देशभाअी ही हैं न? आपको अपने घरके पुरुषोंको अैसे क्रूर कर्म करनेसे रोकना चाहिये और कहना चाहिये कि आप यदि किसी मुसलमान स्त्रीको खराब करेंगे तो वह हमें खराब करनेके बराबर होगा। क्योंकि वह भी हमारी बहन है। लेकिन आज तो स्त्रियोंके मनसे भी अैसा विचार चला गया है। अुसके बजाय अपना पुत्र, भाअी या पिता अथवा पति परस्त्रीको मारे या तंग करे, तो घरकी स्त्रियां गर्व करती हैं, और पुत्रको शाबाशी भी मिलती है। अैसे अुदाहरण मैंने बहुत देखे हैं। लेकिन याद रखिये कि आज जो पुरुष या नौजवान बाहरकी बहनोंकी बेअिज्जती करेंगे, वे कल आपकी भी बेअिज्जती करेंगे। परिणामस्वरूप सगे भाअी-बहन भी व्यभिचारी होंगे। यही अिस मारकाटका परिणाम मैं देख रहा हूं। मैं तो यह सब देखनेके लिअे जीनेकी अिच्छा नहीं रखता। आपको भी कहता हूं कि आर्य संस्कृतिको कलंकित करनेमें आप साक्षी न बनिये। आप तो अभी बारह-पंद्रह बहनें हैं, लेकिन कार्यकर्त्री हैं। आपके द्वारा अगर मेरी आवाज समाजकी बहनों तक पहुंच सके, तो सारे देशकी प्रत्येक बहनको मेरी यह हृदय-व्यथा पहुंचानेकी अिच्छा मैं रखता हूं।"

१५ मिनट तक बापूजीने बहनोंके बारेमें बहनोंसे रखी हुअी आशा और अिच्छाके सम्बन्धमें बहुत ही भारी हृदयसे अपने अुद्गार प्रगट किये।

८-४५ पर खाना खाते समय बापूजीसे मैंने पूछा कि आपने और जिन्ना साहबने शान्तिके लिअे जो अपील की है अुससे कोअी फायदा होगा?

बापूजी बोले, "मैं तो विश्वासी आदमी ठहरा। मेरा क्या जाता है? लेकिन अगर मुसलमानों पर वे अंकुश रखेंगे तो बहुतसा काम निबट जायगा। फिर भी मुझे अुसमें पूरी पूरी शंका है। परन्तु मेरे साथ दगा करके दगा करनेवाला ही गिरता है। कहावत है कि दगा किसीका सगा नहीं होता। तन, मन, धनसे अगर काम करता रहूंगा तो मुझे कोअी आंच नहीं आयेगी, अिस पर मुझे पूरा विश्वास है। अिसमें तुम जो दो-तीन लोग मेरे साथ रहते हो अुनका भी पूरा सहकार होना चाहिये।"

भोजनमें बापूजीने दूध और फल ही लिये। अैसी असह्य गरमीमें कुछ खुराक ली नहीं जाती।

दोपहरको यहांके कांग्रेसी कार्यकर्ता मिलने आये। अुनमें से कअी भाअी अेक-दूसरे पर आक्षेप करते थे, जिसके कारण अन्तमें वातावरण गरम हो हो गया। बापूजी चुपचाप सुनते रहे। परन्तु जब देखा कि मामला काबूके बाहर जा रहा है तब वे बोले:

"आज सुबह ही कुछ बहनोंको मैंने अपने हृदयकी व्यथा कही थी। वही व्यथा आप लोग भी मुझे देंगे अैसी मैंने आशा नहीं रखी थी। हममें यह अेक भारी कुटेव है। जब-जब किसी काम पर विचार करनेको सभा होती है तब हम अेक-दूसरे पर अैसे व्यक्तिगत आक्षेप करके गुस्सेमें आ जाते हैं और अिस प्रकार अपना समय बरबाद करते हैं। कांग्रेसी कार्य-कर्ताओंके सार्वजनिक जीवन और व्यक्तिगत जीवनमें अेक-दूसरेके प्रति वैर फैलता देखनेमें आता है। अिससे गुंडागिरी, अनुशासनका अभाव और लापरवाही दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। आज जब हमारा शासन, हमारा राज्य अपने हाथमें आनेकी जोरदार तैयारियां चल रही हैं, अुस समय हमारा अुत्तरदायित्व बढ़ रहा है। क्रोध, असहिष्णुता आदि दूर होने चाहिये, वर्ना हम टिक नहीं सकते। अितना ही नहीं, शायद अिससे भी अधिक किसीकी गुलामीमें हम फंस जायेंगे। मैं तो अैसा स्वराज्य मांगता हूं, जिसमें करोड़ों लोग और निरक्षर मनुष्य स्वराज्यकी खूबीको समझें। अिसके सब समर्थ बन जाअिये। अंग्रेजोंकी मनमानी और निरंकुशताका

तथा लोकतंत्र और अहिंसक शासनका भेद अुन्हें अपने-आप समझमें आ जाय, शासन-तंत्रकी अैसी व्यवस्था होनी चाहिये। मैं तो आशावादी मनुष्य हूं। मेरा विश्वास है कि हमारे हाथमें देशकी वागडोर आयेगी तव हम अपनी जिम्मेदारी समझ सकेंगे और हमारे अन्दर ये सव जो कृत्रिमतायें हैं वे जरूर दूर हो जायंगी।

"अणुवमोंकी अितनी अधिक अुत्पत्ति होते हुअे भी अहिंसा और सत्यमें *मेरी श्रद्धा अधिक दृढ़ होती जा रही है। सत्य और अहिंसाकी शक्तिसे बढ़कर* संसारमें दूसरी कोअी शक्ति नहीं है, अिस वारेमें मुझे जरा-सी भी शंका नहीं है। यह अेक नैतिक और आध्यात्मिक वल है। अिसमें आत्माका अगाध वल काम करता है; दूसरोंमें शारीरिक और अप्राकृतिक वल है, जो नाशवान है। आत्माका कभी नाश नहीं होता। यह मेरा सिद्धान्त नहीं है, वल्कि वेदों और धर्मशास्त्रोंका वताया हुआ सिद्धान्त है। आत्माकी शक्ति जव जागती है, जव अुदय होती है, तव वह संसारमें विजय प्राप्त करती है। यह शक्ति मनुष्यमात्रमें रहती है। लेकिन अगर कोअी व्यक्ति अपने जीवनकी अेक-अेक वातमें, मनके कोनेमें भी, लोग निंदा करें या स्तुति अुसकी परवाह किये विना, अिस सिद्धान्तका पालन करे, तो ही वह सफल हो सकता है।"

शान्ति-समितिके कार्यकर्ताओंके सामने वापूजीने अपना हृदय अिस प्रकार अुड़ेल दिया।

साढ़े तीन वजे दरभंगाके महाराजा आये। अुन्होंने वापूजीसे संदेश मांगा। वापूजी वोले, "प्रजाके सेवक वनिये। आप अपनी सारी सम्पत्तिके ट्रस्टी हैं, अैसा मानकर अुस सम्पत्तिमें से अपनी जरूरत पूरी करने जितना ही खर्च करें। फिजूलका सव खर्च वन्द कर दीजिये। सव राजाओंको मैं यही सन्देश देता हूं।"

थोड़ी देर वैठ कर वे चले गये। ५ वजे जमीयत-अुल-अुलेमाके प्रतिनिधि आये। वे सव वातें तो अच्छी कर गये। वापूजीने अुन लोगोंसे कहा, "आपका पहला धर्म यह है कि आप यह जाननेके लिअे अुत्सुक न वनें कि हिन्दुओंने कितने मुसलमानोंको मारा; वल्कि कितने मुसलमानोंने हिन्दुओंको कहां मारा यह जान-समझकर अुन मुसलमान भाअियोंको अैसा अधम कृत्य न करनेकी वात समझायें। वैसे ही हिन्दुओंके पास जाकर अुनकी सेवा करनी चाहिये।

अुनमें यह विश्वास पैदा करना चाहिये कि सभी मुसलमान अैसे नहीं होते। अिस तरीकेसे हिन्दुओंको निर्भय बनाना चाहिये। अगर हिन्दुस्तानके राष्ट्रीय मुसलमान अपने जीवनको खतरेमें डाल कर अितना भी करने लगेंगे, तो मुसलमान अूंचे अुठेंगे, मुस्लिम धर्म अूंचा अुठेगा और खुदा आप पर दुआओंकी वर्षा करेगा। लेकिन आज मेरी बात सुननेको कौन तैयार है? चार करोड़ मुसलमानोंमें से सिर्फ सौ ही मुसलमान भाअी-बहन मुझे अैसे मिल जायं, तो वे हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ हिन्दू-मुसलमानोंकी सेवा कर सकेंगे। बोलिये, आप जितने लोग यहां आये हैं अुनमें से है कोअी तैयार?"

लेकिन क्या जवाब दें? फिर भी सबने यह तो कहा कि, "हमारे भाअी गलती करते हैं। लेकिन हम अुनका साथ कहां देते हैं?"

बापूजी बोले, "हमारा दुःख ही यह है कि हम मेरा-तेरा करते हैं। आपको यह समझना चाहिये कि हिन्दुस्तानका अेक बच्चा भी गलती करता है तो हम सब गलती करते हैं। अैसी भावना जब तक हम नहीं अपनायेंगे, तब तक हमारी खैरियत नहीं है।"

आजसे ६-४५ बजे प्रार्थना शुरू करनेका निश्चय हुआ। ६-३० नमाजका समय होनेसे प्रार्थनाका समय अितना आगे बढ़ा दिया।

प्रार्थना-सभामें बापूजीने कहा :

"मेरे सुननेमें आया है कि यहां नमाजका समय होता है, तब कुछ लड़के हंसी-मजाक करते हैं। हमें किसीके धर्मकी हंसी नहीं उड़ानी चाहिये। आज हम अुनके धर्मकी हंसी अुड़ायेंगे, तो कल वे हमारे धर्मकी हंसी अुड़ायेंगे।

"आज थोड़ेसे मुसलमान भाअी मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने दुःखद कहानी सुनाअी। मेरे नसीबमें आजकल दुःखद कहानी सुनना ही लिखा होगा। हिन्दू अभी भी अपने किये हुअे कृत्यों पर पश्चात्ताप नहीं करते, अुलटे धमकाते हैं। बिहार शरीफके बारेमें भी मैंने अैसा ही सुना है। अिसलिअे मुसलमान वहां जा नहीं सकते। यह सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य हुआ। अेक समय था जब बिहारके हिन्दू-मुसलमान आपसमें भाअीकी तरह रहते थे। लेकिन आज अैसा समय आ गया है कि दोनोंकी दुश्मनी अिस हद तक गअी है। मुझे आशा तो है कि मैं बिहार शरीफ जाअूंगा। अिस समय कमजोर पड़ गअी है। अेक समय था जब मैं अैसी किसी बातकी

परवाह नहीं करता था। लेकिन आज तो मैं बूढ़ा हो गया हूं। सच पूछा जाय तो आपको अब मुझे तकलीफ नहीं देनी चाहिये। मेरा काम सरल करनेके लिअे आप सबको मिल-जुलकर रहना चाहिये।

"कुछ मुसलमान भाअियोंने मुझसे बन्दूकके लाअिसेन्स मांगे। मेरी तो अिच्छा है कि किसीके पास राअिफल न रहे। बंदूक शिकारके लिअे रखी जाती है। लेकिन यहां तो शेर-चीतेका भय नहीं है कि आपको बन्दूककी जरूरत पड़े। दुर्भाग्यवश आज अेक-दूसरेको डरानेके लिअे ही बन्दूककी मांग होती है। सरकारकी ओरसे आप पूरी व्यवस्थाकी मांग कीजिये। और सरकारको वह सहूलियत देनी भी चाहिये। परन्तु आजके समयमें मैं व्यक्तिगत हथियार रखनेके पक्षमें नहीं हूं।

"आज मेरे पास कुछ जमींदार आये थे। अुनकी बातें भी मुझे आपसे कहनी हैं। मैंने सुना कि किसान और मजदूर अैसा मानने लगे हैं कि अब हमारा राज्य हो गया है, अिसलिअे जमींदारोंको गाली दी जा सकती है, अुनकी सम्पत्तिको बरबाद किया जा सकता है। अिसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। अिस तरीकेसे किसान अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं। यह बात सच है कि आज तक जमींदारोंने किसानोंको चूसा है। लेकिन अिसका अर्थ यह नहीं है कि अब सत्ता अपने हाथमें आ गअी है, अिसलिअे हम अुन्हें लूटें। अिसमें बहादुरी नहीं है। हर काम समझदारीसे करना चाहिये।"

प्रार्थनाके बाद दरभंगाके महाराजाकी ओरसे ५००० रुपये आये, वे बिहारके फंडमें दिये। थोड़ी-सी खादी आयी जो निराश्रितोंको दे आये। असह्य गरमीके कारण बापूजी रातको नहाये। १० बजे बाद सोनेकी तैयारी की।

गांधी कैम्प, पटना,
१८–४–'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद . . . के साथ बातें करते हुअे बापूजीने कहा, "अब तो सबको अीश्वर जैसी सुझाये वैसी सेवा कीजिये। छोटी छोटी बातोंके लिअे यहां दौड़कर व्यर्थ समय बिगाड़ना ठीक नहीं लगता। हमें अेक बात पर खास जोर देना है कि कहीं जरा भी झूठ न हो, किसीकी बातमें रत्तीभर भी अतिशयोक्ति न हो और अीश्वर पर प्रबल श्रद्धा रखी जाय। अितना होगा तो चाहे जितना विकट मार्ग भी सरल बन जायगा।"

घूमते वक्त डॉ० सैयद महमूद साहब और दूसरे भाअियोंके साथ बातें करते हुअे बापूजीने कहा, "विहारके मुख्यतः लीगी और गैरलीगी कुटुम्बोंसे मिलकर, अुनमें घुलमिल कर, अुनके हृदयको जीतकर तथा समझाकर अुन्हें विश्वासमें लेना चाहिये। दंगा करनेवाले ही केवल हत्यारे नहीं हैं। बड़े हत्यारे तो वे हैं जो दंगा कराते हैं और फिर भी सद्‌गृहस्थोंमें गिने जाते हैं। अगर अिन सद्‌गृहस्थोंको हम सही रास्ते मोड़ सकें, तो जो बेचारे निमित्त बननेवाले हैं, वे तो पैसेके लोभसे ही बुरा काम करते हैं। अुन्हें कोअी बुरा काम करना अच्छा लगता है अैसा नहीं है। अिन मुस्लिमोंको आप विश्वासमें ले सकेंगे तो बहुत बड़ा काम होगा। अन्सारी साहबके साथ भी आपको बात करनी चाहिये।"

मालिशके समय मैंने बापूजीसे पूछा कि आप यंत्रोंके विरुद्ध हैं और ग्रामोद्योगोंके बारेमें भी कहते हैं। लेकिन मान लीजिये लोग ग्रामोद्योगोंको ही अपनायें, तो मद्रास, बंबअी, कलकत्ता, दिल्ली, अहमदाबाद वगैरामें जो अितने कारखाने खड़े हो गये हैं अुनका क्या होगा?

बापूजीने कहा:

"अिस लोहेमें (मशीनोंमें) जो रुपया लगाया गया है अुसका अगर चूरा भी हो जाय तो मुझे सहानुभूति नहीं होगी। सच्चा हिन्दुस्तान तो सात लाख गांवोंमें बसता है। तुझे मालूम है? युरोपके बड़े शहर लंदन आदिने हिन्दुस्तानको चूसा है और हिन्दुस्तानके शहरोंने अुसके गांवोंको चूसा है। अुसीसे शहरोंमें अैसे महल खड़े हुअे हैं और गांव कंगाल बन गये हैं। मुझे तो अिन गांवोंको फिरसे प्राणवान बनाना है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि सब शहरोंकी सारी मिलोंको तोड़-फोड़कर बरबाद कर दो। लेकिन जहां भूले वहांसे फिर सावधान होकर चलना चाहिये। गांवोंको चूसना बन्द करना चाहिये और जितना अन्याय हुआ हो अुसकी बारीकीसे जांच करके गांवोंकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनानी चाहिये।"

फिर सत्य और अहिंसा पर बातें करते हुअे बापूजी बोले:

"सत्य और अहिंसासे हममें बहुत ताकत आअी है, अिसमें मुझे शंका ... । यदि देशने अहिंसाके शस्त्रको न अपनाया होता तो वह कभी अूंचा अुठता ... लेकिन सत्य जैसा चाहिये वैसा देशने नहीं अपनाया। देशमें अितना ... चलता है कि बहुत बार हमें आश्चर्य होता है। अहिंसाके आचरणमें

अलवत्ता कमी तो वहुत है। लेकिन अहिंसाको हमने अपनाया न होता, तो हम अितने अुठ ही नहीं सकते थे। साध्य तो सत्य ही है। और सत्यका दर्शन अहिंसाके पालनसे ही हो सकता है। अहिंसा साधन है। सच वोलनेकी आदत मुझे वचपनसे है, लेकिन अहिंसाको अपनानेके लिअे मुझे मेहनत करनी पड़ी है। अगर अहिंसा अपनाअी जा सके, तो सत्य अुसके साथ ही अपनाया जा सकता है। कअी वार अशुभमें से शुभ निकलता है। लेकिन यह तो अीश्वरी संकेत है। मनुष्यका अनुभव तो यही है कि जैसे शुभमें से शुभ निकलता है वैसे ही अशुभमें से अशुभ निकलता है। हिंसाका नाश प्रतिहिंसासे होता ही नहीं। मनुष्य-जातिको यदि हिंसासे अुवरना हो, तो अहिंसाको अपनाये विना छुटकारा ही नहीं है। द्वेषको तो केवल प्रेमसे ही जीता जा सकता है। सत्य या अहिंसाके सिद्धान्त आजके नहीं हैं; जवसे विश्वकी सृष्टि हुअी तभीसे वे चले आये हैं। मेरे जीवनमें ६० वर्षोंके अनुभवके वाद मेरी श्रद्धा अिन सिद्धान्तोंमें दिनोंदिन अधिक दृढ़ होती जाती है।"

मालिशमें वापूजी सारे समय मेरे साथ अूपरकी वातें करते रहे और सोये नहीं।

स्नानके वाद वापूजीने पत्र लिखे। . . . को लिखा :

जिसे हमने यज्ञ माना हो अुसे प्रियजनोंकी वेदना दूर करनेके लिअे भी वंद नहीं कर सकते। लेकिन जहां मनुष्य स्वयं कर्ता हो और कर्म भी हो, वहां तटस्थताको कठिन मानकर अपने विरुद्ध कोअी कदम अुठाया जाय तो अुसे अुठाने देना चाहिये। मेरे विचार तो जो थे वे ही हैं। और अुनमें मैं अधिक दृढ़ होता जाता हूं। अुनमें मैं कोअी दोष नहीं देखता। . . .

श्री अणेको (हिन्दीमें) लिखा :

प्रिय वापूजी अणे,

आपके ता० १६ मार्चके खतका आज ही जवाव दे सकता हूं। नूतन वर्षका संदेशा वड़े प्रेमसे आया वैसे ही पढ़ा गया, लेकिन अुत्तर देनेका मौका ही न मिल सका। समय मिल सकता था, लेकिन भ्रमणमें सव चीज साथ नहीं रखता था। अुसका परिणाम यह आया कि आज तक खत पड़ा रहा।

यहांका मामला आज बहुत गंभीर है। अेक-दूसरोंका अेतबार अुठ गया है। अैसे मौके पर मेरे जैसेका संदेश अरण्यरोदन जैसा हो जाता है। और व्यासजीके अन्तिम वचन, जो अुन्होंने धर्मराजके मुखमें रखे थे, और जो अेक रोज आप मुझे सुना गये थे, अुन्हें याद करके संतुष्ट रहता हूं।

वहां कुछ हो सकता है क्या? अेशियन कान्फरेन्सका कुछ असर पड़ा?

पंडित जवाहरलालजीको (हिन्दीमें) लिखा:

चि० जवाहरलाल,

जलियांवाला बागके बारेमें मालवीयजीके स्वर्गवासके कारण अब क़ौन चेकोंमें दस्तखत करेंगे? सरदार वहां हैं। तो मशविरा करके मुझे खबर दो।

बापूके आशीर्वाद

कुछ जमींदार भाअी मिलने आये। अुनकी बातें सुननेके बाद बापूजीने अुन्हें समय पहचान लेनेकी सलाह देते हुअे कहा:

"जमींदार या पूंजीपति अगर अब मजदूरोंको या किसानोंको दबायेंगे तो वे टिक नहीं सकेंगे। अब आप मालिककी तरह नहीं, लेकिन हिस्सेदारकी तरह, मित्रकी तरह, अुनके साथ व्यवहार करें और ट्रस्टी बनकर रहें, तो ही आप जी सकेंगे। अंग्रेजी राज्यमें बहुत समय तक आपने मजदूरों और किसानोंको चूसा है। अिसलिअे आपके भलेके लिअे मैं यह सलाह देता हूं कि आप चेतेंगे नहीं तो अब आपका निभना मुश्किल है।"

सवा पांच बजे किसान और मजदूर संगठनके नेता आये। बापूजीने अुन्हें भी काफी स्पष्ट बातें कहीं:

"मजदूरोंको अगर अपना हक साबित करना हो, तो यह अुन्हें (जमींदारोंको) परेशान करके या मार कर नहीं होगा, लेकिन जमींदारोंके साथ मेल साधकर ही होगा। जमींदारीका नाश करना कोअी बहुत मुश्किल काम नहीं है। हमारे यहां जमींदार तो मुट्ठीभर हैं। लेकिन अगर आप कानून लेंगे, तो अपने ही पैर पर अपनी कुल्हाड़ी मारेंगे। आपकी जो अुन्हें सरकारके सामने जरूर रखिये। लेकिन आप कानून हाथमें

नहीं ले सकते (मारकाट नहीं की जा सकती)। जो दूसरोंका नाश करने जाता है, अुसका अपना ही नाश होता है। अिसके कअी अुदाहरण हैं। लेकिन यादवोंका अुदाहरण तो प्रसिद्ध ही है। अगर आप अपने कामके घंटोंमें तन-मनसे काम करेंगे, तो आपके मालिकोंको अुसकी अुचित मजदूरी चुकानी ही पड़ेगी। लेकिन अिस तरह तंग करनेसे आपकी तरफ किसीकी सहानुभूति नहीं होती। थोड़ी देर पहले आये हुअे जमींदार भाअियोंको भी मुझे जो अुचित लगा वह मैंने सुनाया और आपको भी कहता हूं। मैं दूसरे ढंगसे बना हुआ नहीं हूं। मुझे जो ठीक लगेगा वह मैं जरूर कहूंगा।"

प्रार्थनामें जानेसे पहले आज बापूजीने सिर्फ मोसंबीका रस ही लिया। प्रार्थना बांकीपुर मैदानमें ही हुअी। आज मिलने आये हुअे जमींदारों और मजदूर नेताओंके साथ हुअी बातें प्रार्थनामें सुनाअीं। अुसके बाद म्यूनिटी टैक्सकी अेक भाअीकी शिकायतके विषयमें बापूजीने कहा:

"आजकल हम अितने बेवफा हो गये हैं कि अेक ओर तो हम गुंडोंको आश्रय देते हैं और दूसरी ओर पुकार मचाते हैं कि सरकार गुंडोंको पकड़ती नहीं है। हममें सरकारको गाली देनेकी जितनी शक्ति होती है अुतनी गाली अुसे देते हैं और अुसकी निंदा करते हैं। दूसरी तरफ सरकार अैसे गुंडोंको पकड़नेके लिअे अगर गांव पर कर लगा दे, तो ग्रामवासी अुसे भी सहन नहीं कर सकते। यह बात सच है कि गुंडोंको आश्रय तो दो-चार घरोंमें ही मिला करता है। लेकिन अुसकी सजा गांवकी सारी बस्तीको भोगनी पड़ती है। अुससे बचनेका अेक ही अुपाय है। अैसे मनुष्योंको गांवमें खोज निकालना चाहिये जो बेवफा होकर गुंडोंका पोषण करते है। अुन्हें सरकारके हवाले करा देनेमें मदद करनी चाहिये। अैसा हो तो सरकारको सारे गांव पर कर लगानेकी कोअी जरूरत नहीं होगी।"

मुसलमान विद्यार्थी आये थे। बापूजीने अिन भाअियोंके साथ हुअे वार्तालापमें कहा:

"विद्यार्थियोंने आजादीकी लड़ाअीमें जो भव्य हिस्सा लिया है, अुसके लिअे मेरे मनमें बड़ा आदर है। लेकिन आज यह जोश दूसरी ओर मुड़ गया है। तुम निश्चय कर लो तो हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके मेरे अिस काममें खूब मदद कर सकते हो। तुम हिन्दू विद्यार्थियोंको अपना मित्र बनाओ। अुनकी बहनोंको अपनी बहन समझो। अुन पर अगर आपत्ति आअी हो, तो तुम जाकर अुनके

दुःखमें भागीदार बनो और अपना चरित्र शुद्ध बनाओ। तुम भावी भारतके निर्माता हो। तुममें से ही मुहम्मद पैगम्बर साहब जैसे बेजोड़ धार्मिक पुरुष निकले। आगे किसलिअे जाअूं? अभीका जीता-जागता अुदाहरण तुम्हारे सामने है न? तुममें से ही मौलाना साहब और खानसाहब जैसे अहिंसक सत्यनिष्ठ सेवक पैदा हुअे हैं। अब वे सब तो वृद्ध हो गये हैं। अिसलिअे देशकी बागडोर संभालनेकी जिम्मेदारी तुम पर आये, तो अुसे संभालनेकी शक्ति तुम अपनेमें बढ़ाओ। यह शक्ति बढ़ानेके लिअे चरित्रबलकी बहुत जरूरत है।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने प्रवचन देखा। मैंने भी हिन्दीमें प्रवचन तैयार कर दिया। आज जाजूजी, धोत्रेजी, रामकृष्णजी, कृष्णदासभाअी वगैरा आये हैं।

बंगालसे श्री अनिल राय और लीला राय आये थे। बंगालके विभाजनके संबंधमें बातें कर गये। लेकिन कोअी सबल कारण न दे सके। बापूजीने अुनसे कहा, "विभाजन करना कोअी बच्चोंका खेल नहीं है। मुझे आश्चर्य होता है कि हमारे देशवासी छोटे बच्चोंके खेलकी तरह देशके साथ खिलवाड़ कैसे कर रहे हैं? वे देशके करोड़ों मनुष्योंके जीवनके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, अिस जिम्मेदारीका भान अुन्हें कैसे नहीं होता? अीश्वर सबको सन्मति दे मेरी तो यही प्रार्थना है।" १० बजेके बाद सोनेकी तैयारी की।

गांधी कैम्प, पटना,
१९-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगाली पाठ लिखा। मुझे बुखार आ गया, अिसलिअे बापूजीको गरम पानी और रस देकर मैं सो गअी। बापूजीने पत्र लिखे।

बापूजी कुछ दिनोंमें 'हरिजन' के लिअे लिखना शुरू करेंगे अैसा लगता है। अिस बारेमें आज श्री जीवणजीकाकाको बापूजीने पत्र लिखा। बापूजीकी नम्रताका और अुनका अपना कुछ नहीं है, अिसका सुन्दर अुदाहरण आजके लिखवाये हुअे पत्रमें है। . . . को लिखा कि:

> मैं अपनेको 'हरिजन' का मालिक नहीं समझता। सच्चे मालिक तो आप लोग हैं, जो लगनसे अुसे चलाते हैं। मेरा जो अधिकार है वह केवल नैतिक है। अिसका मुझे पूरा भान है।

नोआखाली जानेके बाद कामके असह्य बोझके कारण 'हरिजन' में लिखना बापूजीने बन्द कर दिया था। वह फिर शुरू होगा, जिससे लोगोंको बहुत लाभ तो होगा ही।

चरखा संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, ग्रामोद्योग संघ वगैरा संस्थाओंकी मीटिंग होनेसे कार्यकर्ता भाओी यहां आये हुओ हैं। घूमते समय अुनमें से दो-चार भाअियोंके साथ बातें करते हुओ बापूजीने अपने विचार प्रगट किये :

"शिक्षामें जब तक बुनियादी फेरफार नहीं होगा, तब तक हिन्दुस्तानकी आजादीका आनन्द लूटा नहीं जा सकता। अुद्योगोंके जरिये ही शिक्षा देनी चाहिये। आज तो हमारे लिअे जो पाठ्यपुस्तकें तैयार की जाती हैं, अुन्हें पढ़कर हम परीक्षा पास करते हैं। लेकिन अब अुन व्यर्थकी पुस्तकोंके पन्ने अुलटनेके बजाय प्रयोग करके, अुदाहरणके लिअे कपास कैसे अुगाना असका अध्ययन करके कपास अुगानेसे लेकर कपड़ा तैयार करने तकके प्रयोग हो सकते हैं और फिर किस देशमें कौनसी कपास अुगती है और अुसका नाम क्या है यह जानकर वे नमूने भी बच्चोंको बताये जा सकते हैं। अितिहास, भूगोल, गणित और भाषाका ज्ञान तो अिस अुद्योगके द्वारा सहज ही मिल जाता है। और अैसा करनेसे हमारे देशमें आलस्य नामके शत्रुने जो घर बना लिया है वह आलस्य अुड़ जायगा और हम अुद्यमशील बन जायेंगे। बहुतसी पाठशालाओंमें यह अुद्योग अनिवार्य हो जाय तो ही यह काम सरलतासे हो सकेगा। युनिवर्सिटीकी शिक्षा हमारे देशमें किसी कामकी नहीं है। अुलटे अुससे नुकसान होता है और युवकोंको नौकरीके अलावा दूसरा कुछ सूझता ही नहीं है। मेरे ध्यानमें अैसे कितने ही युवक हैं, जो पढ़-लिखकर तैयार होनेके बावजूद अंधेरेमें बैठे हैं; अेक कौड़ीकी भी कमाओी नहीं कर सकते। अुनकी अपेक्षा अेक बेपढ़ा कारीगर महीनेमें कमसे कम ६०–७० रुपये कमा सकनेकी ताकत तो रखता ही है। ये कॉलेजियन नौकरीके अभावमें अिधर-अुधर भटकते हैं, फिर भी अमुक पढ़ाओी किये होने कारण अुन्हें अमुक ढंगके कपड़े, बूट, मोजे आदि तो चाहिये ही। अिसलिअे मां-बापका पैसा पढ़ाओीमें तो खर्च हुआ ही; फिर काम-धंधा न मिलने पर भी 'पोजीशन' बनाये रखनेमें शिक्षासे दुगने पैसे खर्च होते हैं। हमारे विद्यार्थियोंकी आज अैसी कंगाल हालत है। अिसीलिअे प्रजाकी भी है। अिसलिअे लोगोंको अूंचा अुठाना हो, तो अुद्योगोंके जरिये शिक्षाका आन्दोलन जगानेकी खास जरूरत है। लेकिन अैसे परिवर्तन केवल भाषणोंसे या सरकारी आज्ञायें भेजनेसे नहीं हो सकते। अिस तरह मदद तो जरूर

मिलेगी। लेकिन अिसकी अपेक्षा अगर नेता यानी सत्ताधारी नियमित रूपसे दिनका अेकाध घंटा भी अुद्योगमें बितायेंगे, तो अुसका असर बहुत अच्छा होगा। मुट्ठीभर अंग्रेज हमारे देशमें आकर अितने वर्षों तक हमें गुलाम कैसे रख सके? अुसका अेक यही कारण है कि अुनके आनेके साथ ही अुन्होंने अैसी शिक्षा देना शुरू कर दिया, जिससे हमारे बालक क्लर्क बनें।"

मालिशके बाद मुझे तेज बुखार चढ़ा। बापूजीको भोजन परोसनेके बाद मैं सो गअी। कुनैनके अिंजेक्शन भी अब काम नहीं करते। लगभग ६ तोले लिये। बापूजी खाकर मेरे पास आये। मेरे बिस्तरमें बैठकर मुझे प्रेमसे सहलाते हुअे बोले, "तुम्हें मैं शरीरसे नहीं सुधार सकता, यह मेरे लिअे कम दुःखकी बात नहीं। सप्ताहमें दो बार बुखार क्यों आना चाहिये? लेकिन बुखार अुतारनेमें तुम्हारी जितनी मदद चाहिये अुतनी नहीं मिलती, यह भी तुम्हें जान लेना चाहिये।" दो बजे बुखार अुतर गया। आज बढ़कर १०५° हो गया था। बापूजी कहने लगे, "रामनाम हृदयमें बस जाय तो तुम्हारा बुखार न जाने कहां चला जाय।" अुतरनेके बाद मैं फिर काममें लग गअी। बापूजीका सूत अुतारा। कलके लिअे खाखरे बनाये। बापूजीके कपड़े हुनर-भाअीने धोये। दोसे चार बजे तक चरखा संघकी सभा होती रही। चरखा संघकी सभामें आये हुअे सब भाअियोंके लिअे चाय-नाश्तेकी व्यवस्था करनेके लिअे डॉक्टर साहबने मुझे कहा था, अिसलिअे वह जिम्मेदारी पूरी की।

दो अंग्रेज बहनें चार बजे मिलने आअीं। अुन्होंने थोड़ी बातें कीं। बापूजीने अुनके साथकी बातचीतमें कहा, "विदेशी सत्ता तो अब थोड़े ही समयमें जायगी। लेकिन हममें, हमारी रग-रगमें व्याप्त पश्चिमकी शिक्षा, पश्चिमकी संस्कृति, पाश्चात्य रहन-सहन वगैरा चली जायगी, तभी मैं मानूंगा कि हमने सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त की है। क्योंकि अिस संस्कृतिने हमारे देशके भाअियों और बहनों दोनोंके जीवनको खर्चीला और कृत्रिम बना दिया है। अिससे जब मुक्ति मिलेगी तभी अैसा लगेगा कि हमने सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त की है।"

अुनके जानेके बाद यहांका मंत्रि-मण्डल आया। स्वतंत्र भारतमें मंत्रि-मण्डल अथवा गवर्नरको कैसे रहना चाहिये, अिस पर बापूजीने कुछ बातें कहीं:

"(१) मंत्रियों अथवा गवर्नरोंको जहां तक हो सके वहां तक अपने देशमें अुत्पन्न होनेवाली वस्तुअें ही काममें लेनी चाहिये और करोड़ों गरीबोंकी रोटी

मिले अिसके लिअे अुनको तथा अुनके कुटुम्वको खादी ही पहननी चाहिये और अहिंसाके अिस चक्रको हमेशा घूमता हुआ रखना चाहिये।

(२) अुन्हें दोनों लिपियां सीख लेनी चाहिये। जहां तक हो सके आपसकी वातचीतमें भी अंग्रेजीका व्यवहार नहीं करना चाहिये। सार्वजनिक रूपमें तो हिन्दुस्तानी ही वोलनी चाहिये और अपने प्रांतकी भाषाका खुलकर अुपयोग करना चाहिये। आफिसमें भी जहां तक हो सके हिन्दुस्तानीमें ही पत्र-व्यवहार होना चाहिये, हुक्म या सर्क्युलर भी हिन्दुस्तानीमें ही निकलने चाहिये। अैसा होनेसे लोगोंमें व्यापक रूपसे हिन्दुस्तानी सीखनेका अुत्साह वढ़ेगा और धीरे धीरे हिन्दुस्तानी भाषा अपने-आप देशकी सामान्य भाषा वन जायगी।

(३) मंत्रियोंके दिलमें अस्पृश्यता, जाति-पांति या मेरा-तेराके भेदभाव नहीं होने चाहिये। किसीका थोड़ा भी असर कहीं चलना नहीं चाहिये। सत्ताधारीकी दृष्टिमें अपना सगा वेटा, सगा भाअी या अेक सामान्य माना जानेवाला शहरी, कारीगर या मजदूर सभी अेकसे होने चाहिये।

(४) अिसी तरह अुनका व्यक्तिगत जीवन भी अितना सादा होना चाहिये कि लोगों पर अुसका प्रभाव पड़े। अुन्हें हर रोज देशके लिअे अेक घंटे शारीरिक श्रम करना ही चाहिये। भले वे चरखा कातें या अपने घरके आस-पास अन्न या सागभाजी लगाकर देशके खाद्य-अुत्पादनको वढ़ायें।

(५) मोटर और वंगला तो होना ही नहीं चाहिये। आवश्यक हो वैसा और अुतना वड़ा साधारण मकान काममें लेना चाहिये। हां, अगर दूर जाना हो, या किसी खास कामसे जाना हो तो जरूर मोटर काममें ले सकते हैं। लेकिन मोटरका अुपयोग मर्यादित होना चाहिये। मोटरकी थोड़ी-वहुत जरूरत तो कभी कभी रहेगी ही।

(६) मेरी तो अिच्छा है कि मंत्रियोंके मकान पास-पास हों, जिससे वे अेक-दूसरेके विचारोंमें, कुटुम्वोंमें और कामकाजमें ओतप्रोत हो सकें।

(७) घरके दूसरे भाअी-वहन या वच्चे घरमें हाथसे ही काम करें। नौकरोंका अुपयोग कमसे कम होना चाहिये।

(८) आज जव देशके करोड़ों मनुष्योंको वैठनेके लिअे शतरंजी तो क्या पहननेके लिअे कपड़े भी नहीं मिलते, तव विदेशी महंगे फर्नीचर — सोफासेट, आलमारियां या चमकीली कुर्सियां वैठनेके लिअे नहीं रखी जानी चाहिये।

(९) और मंत्रियोंको किसी प्रकारके व्यसन तो होने ही नहीं चाहिये।

अैसे सादे, सरल और आध्यात्मिक विचार रखनेवाले जनताके सेवकोंकी जनता ही रक्षा करेगी। जनता अैसे अुत्तम सेवकोंकी रक्षा किये विना रह ही नहीं सकती, अिसमें मुझे तिलभर भी शंका नहीं है। प्रत्येक मंत्रीके बंगलेके आसपास आज जो छह या अिससे अधिक सिपाहियों पहरा रहता है, वह अहिंसक मंत्रि-मण्डलको वेहूदा लगना चाहिये। अिससे बहुत खर्च वच जायगा।

लेकिन मेरे अिन सब विचारोंको मानता कौन है? फिर भी मुझसे कहे विना रहा नहीं जाता, क्योंकि मूक साक्षी रहनेकी मेरी अिच्छा नहीं है। अेक बिहार ही, जहां राजेन्द्रवावू जैसे परम आध्यात्मिक नेता हैं, अितना करके दिखा दे, तो सारे हिन्दुस्तानके लिअे ही नहीं शायद सारे विश्वके लिअे वह आदर्श बन जायगा, अिसमें मुझे लवलेश भी शंका नहीं है।"

मंत्रियोंको अुनके रहन-सहनके वारेमें ये वातें वापूजीने अेक सांसमें वहुत गंभीर भावसे समझाअीं। ये सब वातें विशेष रूपसे यहां खादी-कार्यकर्ताओंकी मीटिंगमें और नअी तालीमकी सभामें भी होंगी। लेकिन खादी-कार्यकर्ताओंकी शिकायत भी सच्ची है कि जिस खादीको अेक दिन लोगोंने धर्म और फर्ज समझकर अपनाया था, अुसी खादीको — जिसे वापूजीने स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी, 'सूतके धागेसे स्वराज्य' लानेकी सूचक और पवित्र चावी माना है अुस खादीको — जब कुछ ही दिनोंमें स्वतंत्रता आनेवाली है, तव नेतागण भूलने लगे हैं। अिन सब विचारोंके द्वारा आज जो लोग अिकट्ठे हुअे थे अुनके सामने और आये हुअे नेताओंके सामने वापूजीने अपना हृदय खोलकर रख दिया।

शामको प्रार्थना नियमानुसार वांकीपुर मैदानमें ही हुअी। वापूजीने अपने प्रवचनमें कहा :

"मेरे पास दो-अेक पत्र आये हैं। अुनके वारेमें आपको थोड़ा कह दूं। पंजावकी अेक वहनने मुझे गुस्सेमें अेक पत्र लिखा है। अिस वहनको अव अहिंसामें विश्वास नहीं रहा। वह लिखती है कि तू भला तो है, महापुरुष भी है। लेकिन तेरी राजनीति मुझे पसंद नहीं है। अिस वहनने प्रार्थना-सभामें अुत्तर मांगा है। और दूसरा पत्र गुस्सेसे और गालियोंसे भरा है। वह वहन स्वयं विदुषी है और गीताके अध्ययनका दावा भी करती है।

पहली बात तो यह है कि अगर भगवद्गीताका अध्ययन किया हो, तो गीता-माता तो स्पष्ट कहती है कि जो क्रोध करता है अुसे सम्मोह पैदा होता है और सम्मोहसे स्मृतिभ्रम होता है तथा स्मृतिभ्रमसे बुद्धिनाश होता है। अितनी सीधी बात यह बहन समझती है अैसा लगता नहीं। फिर अिस बहनका दावा है कि हिंसा किये बिना किसी तरह बचा ही नहीं जा सकता। तो मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तानकी रक्षा केवल अहिंसासे ही होनेवाली है, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है। मैं अपने विचारोंमें अधिकाधिक दृढ़ होता जाता हूं।

"बिहारके ही चंपारन जिलेमें गरीब लोगोंको कितनी मुश्किलें थीं? वहांके राज्यकर्मचारी अुन्हें कितना तंग करते थे? लेकिन चम्पारनके किसानोंने धैर्यपूर्वक अहिंसक तरीकेसे सामना किया, तो अपने-आप सब ठीक हो गया। बिहारवालोंको तो अिससे ही सीख लेनी चाहिये।

"आजसे ४–५ दिन तक यहां चरखा संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी सभा होगी। चरखा संघकी मीटिंग तो आजसे शुरू हो गअी है। मैं जेलमें था तब स्व० जमनालालजीने खादीका काम शुरू किया था। पहले तो रचनात्मक काम ही मुख्य वस्तु थी और अिस कामके लिअे स्वतंत्र संस्था थी। तबसे आज तक खादीका काम चलता रहा है। पंडित नेहरूने भी कबूल किया है कि भारतकी राष्ट्रीय पोशाक खादी ही होनी चाहिये। जबसे कांग्रेसका आंदोलन शुरू हुआ, कांग्रेसका झंडा बना, तबसे मैंने माना है कि हमें आजादी दिलानेवाला हमारा सुदर्शन चक्र यह चरखा ही है। १२–१४ महीने बाद अंग्रेज तो यहांसे चले जायंगे। हमने अितनी मंजिल तय की, अिसमें बड़ा हिस्सा खादीका है। कांग्रेसमें तो खादीको जगह मिली, लेकिन दिलमें जो जगह मिलनी चाहिये वह नहीं मिली। खादीके जरिये करोड़ों रुपये गरीब भाअी-बहनोंके घरोंमें जाते हैं।

"खादी तो अहिंसाकी निशानी है। खादीको जो स्थान देना चाहिये था, वह बिहारने अुसे नहीं दिया। वर्ना बिहार अैसा पागल हरगिज नहीं बनता। सात लाख गांव नियमित रूपसे चरखा चलाने और खादी अुत्पन्न करने लग जायें, तो अेक अिंच कपड़ा भी हमें बाहरसे नहीं लाना पड़े। खादी अितनी पवित्र वस्तु है कि अुसे पहननेवालेके मनमें बुरा विचार भी नहीं आना चाहिये। आज अैसा नहीं है। आज तो खादीकी टोपी पहनकर काले

कारनामे करनेके हजारों अुदाहरण मेरे पास मौजूद हैं। अिसलिअे मुझे मंजूर करना चाहिये कि खादीके पीछे जो तप होना चाहिये, वह तप नहीं हुआ। अुसीका यह परिणाम है।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने डाक देखी, प्रवचन सुधारा। मैंने चंदा गिना। बापूजी थोड़ा घूमे। साढ़े नौ बजे सोनेकी तैयारी की।

गांधी कैम्प, पटना,
२०-४-'४७

रोजकी तरह प्रार्थना। गरम पानी पीते हुअे बापूजीने बहुतसी डाक लिखवाअी। मुझे गीतापाठ कराया। . . . को पत्रमें लिखा कि :

> दलित वर्गोंकी मांग मंजूर नहीं होनी चाहिये। 'मैक्डोनल्ड अेवार्ड' के बारेमें थोड़ी जांच कर लेनी चाहिये। अुसने पहली ही बार हिन्दुओंके बीच फूट डाली थी। तथाकथित परिगणित जातियोंके लिअे अुसमें अलग-अलग निर्वाचिक-मंडल थे। हिन्दू समाजमें विशेष रूपसे अिस फूटके विरुद्ध मैंने क्रान्तिकी भविष्यवाणी की थी। अिसके परिणाम-स्वरूप विशेष बैठकोंकी संख्या काफी बढ़ गअी और प्रारम्भिक चुनाव अलग रखा गया। परन्तु यह विभाजन पूरी तरह प्रयोगमें न आ सका। विभाजनकी नीतिवाले और हिन्दुओंमें फूट डलवानेका प्रयत्न करनेवाले अधिकसे अधिक अिस हद तक जायंगे। संयुक्त निर्वाचिक-मंडलमें सवर्ण हिन्दुओंका विरोध और प्रभाव मेरी रायमें तो व्यर्थ ही है। निर्वाचिक-मंडलको किसी भी दलमें मिला देनेको ही संयुक्त निर्वाचिक-मण्डल कहा जाता है। फिर भी संयुक्त निर्वाचिक-मण्डलकी प्रथामें जो बुराअियां हैं, वे सब प्रजाको सच्ची तालीम देनेसे और सच्ची रहनुमाअी मिलनेसे दूर हो जायंगी। अगर थोड़े समयके लिअे भी आंबेडकरकी कठिनाअियोंको साथ मिलता रहता, तो हिन्दुत्वकी जड़ अुखड़ ही जाती। अिसलिअे बहिष्कारके भयसे हरगिज न डरना चाहिये।

. . . के बीच संघर्ष चला करता है। अुनके साथकी बातोंमें बापूजीने कहा, "अगर दोनों आदमी अेक-दूसरेकी भूलें ही देखें और कोअी अपनी न स्वीकारे, तो मुझे मानना चाहिये कि मेरी ही भूल है। आप तो नअी सीखे हैं। अुसे यहां आचरणमें ला सकेंगे, तो मुझे अुसमें यह देखना

है कि अिस तरहकी शिक्षामें कितने और कैसे लाभ हैं? और यह प्रयोग करनेके लिअे ही मैंने आपको यहां रखा है, न कि मेरी क्लर्की (दफ्तरी काम) करनेके लिअे। नअी तालीम तभी सफल होगी, जब मनुष्य दूसरेकी भूलें निकालनेके बजाय सबसे पहले अपनी भूलें देखे।"

अिन सब भाअियोंकी बातोंका अुल्लेख करते हुअे मालिशके समय बापूजीने मुझे कहा : "तुमसे भी मैं अब यह आशा रखता हूं कि आपसमें अगर किसीको भी गलतफहमी हो तो तुम अुसे दूर करो और समाधान कराओ। यह कुशलता तुममें है। अुसका तुम्हें अुपयोग करना चाहिये। महादेव अैसे ही थे। यह तो बहुत ही मामूली बात है। लेकिन बहुत गंभीर बातोंमें भी महादेव अद्भुत तरीकेसे समाधान करा देते थे। प्यारेलाल भी अैसा ही काम कर सकते हैं। लेकिन स्त्रियोंके लिअे तो यह गुण खास अपनाने जैसा है। क्योंकि सम्मिलित परिवार या समूहमें स्त्रियां अगर यह गुण अपनेमें बढ़ायें, तो कुटुम्ब या समूहके द्वारा वे राष्ट्रकी भी सेवा कर सकती हैं, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है।"

कृष्णदासभाअीने आज बापूजीको नया चरखा दिया है, जिसमें दुबटने और कातनेकी दोनों क्रियाअें अेकसाथ होती हैं। बापूजीने अुस पर अेक घंटा काता।

कितने ही भाअी बाहरसे नअी तालीमकी मीटिंगके लिअे आये हैं। अुनके साथ शिक्षा-सम्बन्धी बातें करते हुअे बापूजी बोले, "अक्षरज्ञानकी अपेक्षा संस्कारी शिक्षाको मैं अधिक महत्त्व देता हूं। बच्चोंको कैसे बैठना चाहिये, कैसे बात करना चाहिये, कैसे कपड़े पहनना चाहिये — वगैरा दैनिक जीवनकी छोटीसे छोटी बातोंमें भी अच्छे संस्कार दिखने चाहिये।" अिन भाअियोंमें ग्रामोद्योग संघके भाअी भी थे। अुन्होंने प्रश्न पूछते हुअे वर्तमान सरकारों द्वारा ग्रामोद्योग संघकी वस्तुओंका अुपयोग किये जानेके बारेमें बापूजीके विचार जानना चाहे।

बापूजीने कहा : "मैं तो अिससे भी आगे जाता हूं। गरीब देशमें कभी अेक पाअीका भी खर्च व्यर्थ नहीं होना चाहिये, वर्ना हमारी सरकार और अंग्रेज सरकारके बीचका फर्क नहीं देखा जा सकता। विदेशोंकी अेक पिन भी हमारी सरकारके दफ्तरोंमें नहीं आनी चाहिये। अगर हमें पिनकी जरूरत हो, तो वह हमारे देशकी बनी हुअी लेनी चाहिये; वर्ना अुसके बिना चला लेना चाहिये। यानी कागजको सूअी-डोरेसे सी लेना चाहिये। यह

मैंने अेक अुदाहरण दिया। मैं तो यहां तक जाता हूं कि मंत्री या गवर्नर जब देशकी वफादारीकी शपथ लेते हैं, तब साथ साथ यह शपथ भी लें कि अपने जीवनकी जरूरतें और अपने आफिसकी जरूरतें पूरी करनेमें मैं अपने देशकी ही बनी हुअी वस्तुओंका अुपयोग करनेका आग्रह रखूंगा। लेकिन आज मेरी सुनता कौन है? मैं शायद बूढ़ा हो गया हूं, अिसलिअे सोचता हूं कि कहीं मेरी बुद्धि सठिया तो नहीं गअी है?" बापूजीने अट्टहासके साथ यह हृदयवेधक कटाक्ष किया।

प्रार्थना-सभामें आज भी बापूजी खादी पर ही बोले :

"अगर मैं श्रीबाबूकी जगह पर यहांका प्रधानमंत्री होता, तो पहला कानून यह बनाता कि सारे नौकरपेशा वर्ग और जनता तकको अब खादी पहननी होगी। वह खादी खरीदनी नहीं होगी। मैं राशनकार्ड पर यह नोट कराता कि जो नियमित रूपसे आधा घंटा काते, अुसीको कपड़ा पहनने और अन्न खानेका अधिकार होगा। मिलका कपड़ा बिलकुल न मिलेगा। यह योजना तुरन्त तो अमलमें नहीं आ पाती, लेकिन अेकाध वर्षमें अुसका अमल जरूर होता। मैं तो मानता हूं कि देशका प्रत्येक मनुष्य कातना और बुनना सीख जाय, तो हम सारे विश्वको कपड़ा पहुंचा सकें अितनी ताकत अिस कच्चे सूतके धागेमें है। क्योंकि हमारा देश अितना विशाल है और हमारी आबादी भी अितनी विशाल है।

"हम अपना कितना समय बरबाद करते हैं? स्कूलों और कॉलेजोंमें सिर्फ आधा घंटा ही अनिवार्य चरखा चलाया जाय, तो भी बहुत काम हो सकता है। लेकिन मैं जानता हूं कि मेरी अिस बातको कोअी सुननेवाला नहीं है। फिर भी आप लोग अितना विचार तो करना कि अेक बूढ़े, जमाना देखे हुअे आदमीको बिलकुल बकवास तो नहीं सूझेगी। अुसमें कोअी तथ्य होगा अिसीलिअे वह बोलता है।

"बिहारको तो चरखा संघ द्वारा आजादी मिल गअी है। लक्ष्मीबाबू बतायेंगे कि विकेन्द्रीकरणका काम किस तरहसे होता है। अगर यह काम सरल न हो सके, तो मैं मानूंगा कि बिहारवालोंने देशके लिअे जितना त्याग किया है अुसका पुण्य समाप्त हो गया है। क्या बिहारवाले अपनी अिज्जत खो देंगे? चरखेमें मेरी श्रद्धा दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है। अगर हम सिर्फ अिस अेक ही कलाको हस्तगत कर लें, तो अिसके चारों ओर हमारी दूसरी अनेक

सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक अुन्नतिकी प्रवृत्तियां अपने-आप आकर्षित होकर चलने लगेंगी। अिसीलिअे चरखेको मैं सूर्यकी अुपमा देता हूं।"

प्रार्थनामें आज अपार भीड़ थी। डॉक्टर साहब और बेगम साहिबा दोनों प्रार्थनामें आये थे। बेगम साहिबाकी तबीयत जरा कमजोर है। भीड़के कारण अुन्हें चक्कर आ गये।

आजका चंदा २०० रुपये हुआ। प्रार्थनासे आकर बापूजीने प्रवचन लिखा। अत्यधिक गरमीके कारण ठंडे पानीका स्पंज किया। सिर पर ठंडे पानीका कपड़ा रखा। डॉक्टर साहबने तो बरफ मंगायी थी। लेकिन बापूजीने व्यर्थ खर्च करनेको मना किया, और मटके पर ठंडे पानीसे तर कपड़ा बंधवाया। अिसी पानीसे भीगा कपड़ा सिर पर रखवाया। अिसलिअे आधे आधे घंटेसे बापूजीका तौलिया और मटकेका कपड़ा बदलना पड़ा। डॉक्टर साहब मुझे कहने लगे, "बापूजीने तुम्हारा काम बढ़ा दिया है। रोज अेक रुपयेकी बरफ मंगा लें, तो सारे दिन चले और बापूजीको भी ज्यादा ठंडक मिले।"

बापूजीके सामने जब यह बात रखी गअी तो वे खिल-खिलाकर हंसते हुअे बोले, "आप तो कमाते हैं, आपके लड़के भी कमाते हैं। परन्तु अिस लड़कीको या मुझे कोअी वेतन नहीं देता। अिसलिअे यह लड़की बरफ कहांसे मंगाये? और हम अितने नाजुक भी नहीं हैं कि हमें बरफकी जरूरत पड़े? गीला कपड़ा लपेट लिया कि वह बरफके पानीका ही काम करता है। अितना ही नहीं, यह पानी निर्दोष भी होता है। बरफका पानी तो पिया ही नहीं जा सकता और शायद अैसी लूमें अितना ठंडा पानी पियें तो सरदी हो जाय।"

डॉक्टर साहब बेचारे यह बात सुनकर बिलकुल ढीले पड़ गये। मुझसे कहने लगे, "बापूकी अिजाजत लिये बिना ही बरफ यहां आ जाता तो ज्यादा अच्छा होता। अिजाजत लेने गया तो अुन्होंने मुझे शरीरकी दृष्टिसे सारा विज्ञान समझा दिया।" फिर बोले, "बापूका कैसा दिमाग होगा? अुनसे छोटीसे छोटी बातमें या अेक वाक्यमें अैसा पाठ मिल जाता है, जिस पर कॉलेजमें खासा लेक्चर दिया जा सकता है!"

रातको १० बजे बापूजीने बगीचेमें थोड़ेसे चक्कर लगाये और १०-३० के बाद बिस्तर पर लेटे। आज बापूको सोनेमें बहुत देर हो गअी।

गांधी कैम्प, पटना,
२१–४–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके वाद वापूजीने वंगला पाठ किया और मुझे गीतापाठ कराया।

आजकल चरखा संघकी वैठक हो रही है। अुसके ट्रस्टी-मंडलमें वापूजी थोड़ा फेरवदल करना चाहते हैं। वापूजीने कहा, "सरला वहन (सरलावहन साराभाअी) मिल-मालिककी पत्नी हैं, परन्तु अुन्होंने देशके लिअे फकीरी ली है; वह भी किसीके दवावसे नहीं परन्तु स्वेच्छापूर्वक। अैसी महिलाअें हिन्दुस्तानमें दूसरी हैं ही नहीं यह कहूं तो चल सकता है। अुन्हें ट्रस्टी-मंडलमें लेना ही चाहिये। तभी जो परिवर्तन मिल-मालिकोंके मानसमें मैं करना चाहता हूं वह होगा। मैं जानता हूं कि चरखा संघके मित्र मेरी यह वात नहीं मानेंगे। परन्तु मुझे अिसमें शंका नहीं कि मेरी वात न मान कर वे भूल कर रहे हैं। सरलावहन अैसी मूक सेवा करनेवाली गुजरातिनोंमें शायद पहली ही महिला होंगी। वे जितनी कार्यकर्त्री हैं अुतनी ही आदर्श गृहिणी भी हैं। वे करोड़पतिकी पत्नी हैं, परन्तु सादगी और त्यागकी साक्षात् मूर्ति हैं।" वापूजीने गरम पानी पीते पीते पूज्य सरलावहन संवंधी वात लिख कर की। फिर थोड़ी देर आराम करके पत्र लिखवाये। . . . को लिखवाया कि :

> आपके वारेमें परसों ट्रस्टी-मंडल वैठा था। लगभग सभीकी यह राय थी कि अिस समय जव खादी पर विपत्तिके वादल मंडरा रहे हैं और खादीकी नीति मिलोंके विरुद्ध प्रत्यक्ष रूपमें चल रही है, तव मिलोंके राजा जैसेकी पत्नीका ट्रस्टी-मंडलमें शामिल होना खलभलाहट ही पैदा करेगा। फिर भी मेरा आग्रह हो तो ट्रस्टी-मंडल आपकी नियुक्ति करनेको तैयार हो सकता है। मैंने अिस तरह अुसकी मेहरवानी मांगनेसे अिनकार कर दिया। ट्रस्टी सन्तुष्ट हुअे अिसलिअे आपका नाम मैंने वापस ले लिया। अिसमें मेरा अंदाज कुछ गलत निकला। मैं देखता हूं कि आजकल अैसा होता रहता है। मेरे वचनोंका जो प्रभाव किसी समय साथियों पर पड़ता था वह आज नहीं पड़ता। अिसे संतोपजनक वात मानना चाहिये। संभव है पहले मैं साथियोंकी वुद्धिकी प्रगतिको रोकता था। और अव अुनकी वुद्धिने

मुझसे स्वतंत्रता पा ली हो! अथवा मेरे विचार ही समयकी गतिसे अपरिचित हों! कुछ भी हो, मैंने तो आपके सामने अपना सारा मानस रख दिया है। आपकी पवित्रताके लिअे मेरे मनमें अितना आदर है, अिसलिअे मैं चाहूंगा कि आप यही समझ कर खादी-विद्यामें दिलचस्पी लीजिये कि आप ट्रस्टी हैं, शंकाको दूर कर दीजिये और यह वात सिद्ध करके वता दीजिये कि मिलके राजाकी रानी खादीके प्रति अुतना ही प्रेम रख सकती है जितना कोअी सर्वोच्च खादीप्रेमी।

वापूके आशीर्वाद

अिसके वाद अेक और पत्रमें लिखा:

I have had all your letters. The work in front of me leaves me little room for correspondence that is not absolutely necessary. . . . You must have seen all I had to do with the Viceroy. We have come to like one another. Events will show of what he is made. He is certainly working hard as behoves a naval man. . . . My work is very difficult. I knew the difficulty. . . .

निर्वासितोंके लिअे अेक भाअीके पूछे हुअे प्रश्नके जवावमें वापूजीने (हिन्दीमें) लिखा:

(१) पुनर्वस्तीके लिअे तैयारी करना आवश्यक है। लेकिन हकूमत या मुसलमान कुछ न करें तो हमारे लिअे क्या चारा हो सकता है?

(२) अगर हकूमत कुछ भी मदद न दे तो हम क्या काम दे सकते हैं?

(३) मेरा दृढ़ अभिप्राय है कि हमें मिलका सूत नहीं मिलेगा। थोड़ा मिले तो काम नहीं देगा। हमारे हाथका सूत पैदा करना चाहिये, ताकि लोग खुद कातें और दूसरे भी।

(४) सभी गिरफ्तारोंको मुक्त कर दें तो हम केस करनेमें न पड़ें। वह हमारे क्षेत्रके वाहर है।

(५) . . . का खत पढ़ा। मैं अुसको महत्त्व नहीं देता हूं।

(६) वहां डॉ० महमूद आये हैं। देखें वे क्या करते हैं।

(७) मैं वहां आनेके लिअे (नोआखाली आनेके लिअे) अुत्सुक हूं। यहांकी हवा देखता हूं। . . .

. . . को दूसरा पत्र:

'सबमें से प्राण अुड़ गया है' यह वाक्य ठीक नहीं है। रामनाम लेनेवाला अैसा वाक्य नहीं लिख सकता। सुख कहां है? दुःख कहां है? किसे सुख मानना? किसे दुःख मानना? आप यज्ञ कर रहे हैं या क्या? गुजरात (पंजाबका गुजरात प्रदेश) जानेका आपको धर्म मैं नहीं देखता। मैं जाता लेकिन मुझे रोका गया। अिस बारेमें और कभी लिखूंगा, लेकिन यहां अपना धर्म पाल सकूंगा तो अुसका असर गुजरात पर तो पड़ेगा ही, सारे जगत पर भी पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

. . . को (हिन्दीमें) लिखा:

अुस युवकने बीभत्स खयाल प्रगट किया अुससे क्यों चिंता हुअी? तू वीरांगना है तो तू कोअी भी बीभत्स कार्य करे अुससे पहले तुझे मौतकी भेंट होगी। हमारी सबकी वही तैयारी है। वही हमारा यज्ञ है। तेरे पास रामनाम-रूपी बख्तर है। तुझे क्या डर हो सकता है? . . .

बापूजीके आजके पत्रोंसे अुनकी मानसिक स्थिति खूब समझी जा सकती है।

"स्वराज्य प्राप्त करनेसे पहले आजसे भिन्न प्रकारके कार्यकी देशको जरूरत थी; और अब जब कि स्वराज्य आ रहा है, तब देशको टिकाये रखनेके लिअे भारतके अेक अेक मनुष्यके सहयोगकी जरूरत है। अुदाहरणके लिअे, गिरिजाशंकर बाजपेयी। तुम जानती हो न कि १९४२ में अुन्होंने मेरे विषयमें तो क्या, बाकी मृत्युके बारेमें भी भयंकर असत्यसे काम लिया था। परन्तु आज अुनकी शक्तिका अुपयोग हमें करना ही चाहिये और वह हो रहा है। यही बात रचनात्मक संस्थाओंमें होनी चाहिये। पूर्वग्रहोंको छोड़कर सहकारसे जिसकी शक्तिका जहां अुपयोग हो सके वहां अुसे काममें लेकर देशको मजबूत बनानेकी बड़ी जरूरत है। अिसीलिअे मैंने . . . को ट्रस्टी-

मंडलमें लेनेकी अिच्छा प्रकट की थी।" बापूजीने. . . . को लिखाये हुअे पत्र परसे पर्ची पर अूपरकी बात लिखी।

घूमते समय नाथजी और स्वामीजीकी ओरसे आये हुअे पत्रोंकी नकल करनेका बापूजीने मुझे आदेश दिया, अिसलिअे मैं घूमने नहीं गअी। परन्तु मेरा टहलना छोड़ना बापूजीको पसन्द नहीं आया। अिसलिअे घूमकर लौटनेके बाद अुन्होंने मुझसे थोड़ा दौड़ आनेको कहा, ताकि कसरत हो जाय। मौनवार होनेके कारण आज सब सूना-सूना लगता है। प्रार्थना-प्रवचन बापूजीने लिखा। आजके प्रवचनमें खादी पर ज्यादा जोर दिया :

"आज भी मुझे आपको खादीकी कथा ही सुनानी है। खादीका रहस्य हाथ-कते सूतमें है। और वह कोअी नया नहीं है। पुराने जमानेमें भी स्त्रियां कातनेकी कला अच्छी तरह जानती और समझती थीं। और मध्य-युगमें तो स्त्रियोंसे यह काम जबरदस्ती कराया जाता था, और बुननेका धंधा पुरुषोंका माना जाता था। यह धंधा तो अब भी चलता है। लेकिन कातनेका काम बहुत मंद गतिसे चलता है। अुसका पुनरुद्धार करनेकी बहुत जरूरत है। वह न हो तो बुननेका धंधा भी खतरेमें पड़ जायगा। स्त्रियों और पुरुषोंको कपास अुगानेके कामसे लेकर सिलाअी करने तकका काम जानकर अुस संबंधमें पूरी तरह स्वावलंबी बनना चाहिये। तो ही खादी पहननेकी सार्थकता सिद्ध होगी।

"स्त्रियोंके प्रति आज तक किये गये पापोंका निवारण करना हो, तो भारतके प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्रीको कातना चाहिये। तब मैंने खादीके संबंधमें जो स्वप्न देखा है वह सिद्ध होगा। पुरुषोंको अेक घंटेकी मजदूरीके लिअे जो मेहनताना मिलेगा, वही मेहनताना स्त्रियोंको भी दिया जायगा। स्त्री-पुरुषके बीच मजदूरीकी दरमें फर्क हो ही नहीं सकता। पुरुष स्त्रियों पर जो स्वामित्व आज तक भोगता आया है, अुसका अंत अिस रचनात्मक कामके द्वारा हो सकता है। हम पुरुष अिस बातको स्वीकार न करें तो दूसरी बात है। परन्तु अिससे जगत जो परिवर्तन कर रहा है, वह कभी रुकनेवाला नहीं है। प्रभुने पुरुष और स्त्रीको मिलाकर अेक अखंड और पूर्ण अिकाअी बनाअी है। और प्रभुकी दृष्टिमें तो दोनोंका दर्जा अेकसा है। खादीका ध्येय स्त्री-पुरुषकी समानताके अिस सिद्धान्तका सबूत देता है। फिर भी मुझे कबूल करना चाहिये कि चरखा संघको जितनी

चाहिये अुतनी सफलता अिस दिशामें अभी नहीं मिली है। मेरी तो यह अिच्छा है कि जब अेक मिल-मालिककी पत्नी खादीकी सच्ची भक्त बनेगी, तभी खादी सारे हिन्दुस्तानमें सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगी और तभी मिलके कपड़ेका अंत आयेगा। अैसा शुभ दिन आये, अिसलिअे स्त्रियां अगर अिस कामको धर्म समझकर अपनायें तो कितना अच्छा हो!"

प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़ा घूमे। घूमते-घूमते बापूजीने यह बताया कि वे यंत्रोंका विरोध क्यों करते हैं: "यंत्रके विरुद्ध मैं अिसी कारणसे हूं कि वह मनुष्यकी मजदूरी छुड़ा कर अुसे बेकार बनाता है। वह यंत्र है अिसीलिअे मैं अुसके विरुद्ध नहीं हूं। लेकिन यंत्रसे बेकारी आती है अिसलिअे मैं अुसके विरुद्ध हूं।"

नअी तालीमके बारेमें मैंने बापूजीसे पूछा, "आप जिस बुनियादी तालीमकी बातें करते हैं अुसे मान लीजिये कोअी बालक अपनी १४–१५ वर्षकी अुम्र तक अपनावे और कभी पाठशालामें जाय ही नहीं, तो वह कैसा हो सकता है?"

बापूजी बोले: "यदि अुस बालकको शुद्ध वातावरण मिला हो तो वह साहसी, स्वस्थ और सेवाभावी होगा। अुसका मन और शरीर दोनों अुचित अनुपातमें विकसित होंगे। अुसमें किसी प्रकारका कपट या चरित्रहीनता होगी ही नहीं। वह गांवमें रहकर गांवकी सेवा करेगा तथा गांवकी जनता जो नमक और रोटी देगी वही खानेकी वृत्ति रखेगा। वह जो सेवा करेगा और जो कुछ अुसने सीखा होगा, अुससे अपने आसपासके लोगोंको वह सच्चा मार्गदर्शन देगा और अिस तरह अन्य अनेक युवकोंको तैयार करेगा। मेरी यह अपेक्षा है कि नअी तालीम पाया हुआ विद्यार्थी अैसा निकलना चाहिये।"

बापूजीके नाम आये तारों और पत्रोंका आजकल ढेर हो जाता है। अुनका पौना भाग तो बिलकुल निकम्मा ही होता है। अैसे तारों और पत्रोंका ढेर मैंने बापूजीके पास रखा। अितनेमें श्रीबाबू आ गये। बापूजीने अुनसे मजाक करते हुअे कहा: "कौन कहता है कि हिन्दुस्तान गरीब है! बिसेननने अिनमें से आधे पत्र और तार तो निकाल डाले होंगे। फिर भी कितने ही निकम्मे रह गये होंगे। जरा-सी बातमें लोग तार देना सीख गये हैं। अिस परसे मुझे विचार आता है कि देशमें धनिक तो दो-चार गिनतीके ही हैं। गरीबोंको चूस कर पाये हुअे रुपयेका अुपयोग अैसा हो रहा है।

(अेक तार दिखाकर) यह तार अैसा है जिसमें बताया गया काम दो पैसेके पोस्टकार्डसे भी हो सकता है। परन्तु हमारी मूर्खताकी कोअी हद ही नहीं है। हमें पता ही नहीं कि हम क्या कर रहे हैं। अिस तरहके निकम्मे तार रोज असंख्य मनुष्य करें, तो अुसके लिअे कितने अफसर, चपरासी और मकान रखने पड़ेंगे। अिसका हिसाब अगर किया जाय, तो पता चले कि हम अपना कितना रुपया अिस तरह बरबाद कर रहे हैं। खैर, मैं दूसरी बातमें चला गया। हम अपना काम जल्दी निपटायें। आपका समय मैंने कुछ अधिक ले लिया। परन्तु मैं अिस तरहकी बातें देखता हूं तो मुझे खटकता है। अिसलिअे आपके सामने अितना कह दिया।"

बापूजीने अखबार सुने। १०–३० के बाद सोनेकी तैयारी की।

गांधी कैम्प, पटना,
२२–४–'४७

३–३० पर प्रार्थना हुअी। सुमी और सीता (क्रमशः रामदासभाअी गांधी तथा मणिलालभाअी गांधीकी लड़कियां) रातको १० बजे बनारससे आअीं। आकर चुपचाप सो गअीं। प्रार्थनाके बाद लगभग सारे समय बापूजीने अुन्हींके साथ बातें कीं।

२२ तारीखको पूज्य बाकी पुण्यतिथि होनेसे हर महीनेकी तरह मैंने गीता-पारायण किया। बादमें बापूजीने बंगाली पाठ लिखा। आशाबहनके साथ बातें कीं। घूमते वक्त . . . के साथ बापूजीकी खानगी बातें हुअीं, अिस-लिअे मुझे छुट्टी-सी थी।

अेक कॉलेजकी लड़कीको, जो अपने साथ पढ़नेवाले युवकके साथ शादी करना चाहती थी, बापूजीने अिस प्रकार सलाह दी :

> अति छूटका परिणाम भयंकर होता है। प्रेम-विवाह चाहनेवाले भले बुजुर्गोंको पसन्द हो तो सगाअी कर लें, परन्तु अैसी सगाअी होनेके बाद तीन वर्ष तक अुस जोड़ेको कोअी खास संबंध नहीं रखना चाहिये और अपने अपने काममें लगे रहकर वह समय पूरा करना चाहिये। अिस प्रकार जो युवक और युवतियां करेंगी, अुनकी जिन्दगी खूब सुखी होगी, अिसमें मुझे शक नहीं।

ये सब बातें मेरे भी समझने लायक होनेके कारण बापूजीने मुझे शिक्षाके रूपमें कहा, "हम चाहें तो दूसरोंके जीवनसे भी बहुत-कुछ सीख सकते हैं।"

वापूजीके कपड़े आज सुमित्राने धोये। दोनों वहनोंके होनेसे मुझे वड़ा आनन्द आ रहा है; वे काममें भी खूब मदद देती हैं। दो वजेसे तालीमी संघकी वैठक शुरू हुआी। अुससे पहले खादीके कार्यकर्ता आये थे। तालीमी संघकी वैठकमें स्वावलम्वी शिक्षा पर.जोर दिया गया। अेक सवाल यह आया कि सरकारसे अिस संस्थाके लिअे कितनी रकम ली जाय? अुसका वापूजीने जो जवाव दिया अुससे समझमें आया कि शिक्षाके वारेमें वापूजीका दृष्टिविन्दु क्या है।

वापूजीने कहा, "सरकार तो हमें जितनी चाहिये अुतनी मदद देगी ही। परन्तु सरकार पर आधार रखकर हमारा काम नहीं चल सकता। जितने लिये जा सकें अुतने ही विद्यार्थी लीजिये। भले कम विद्यार्थियोंको यह लाभ मिले, परन्तु शिक्षा अैसी हो जिससे किसीके सामने हमें अेक पाअी भी मांगनेको हाथ न फैलाना पड़े। नानाभाअी भट्टमें वहुत शक्ति है। परंतु अुन्हें अपनी सारी शक्ति पूंजी अिकट्ठी करनेमें लगा देनी पड़ी। अिसलिअे रुपया अिकट्ठा करके शिक्षाकी संस्था खड़ी करनेका मैं घोर विरोधी हूं। प्रारंभिक रचनाके लिअे जो कुछ रकम चाहिये वही ली जाय और तीन वर्षके वाद किसीसे अेक पैसा भी न मांगा जाय। यदि हम शिक्षाको अैसी स्वाव-लंवी नहीं वना सकते, तो हमें लोगोंके सामने अपनी हार स्वीकार कर लेनी चाहिये। अिससे हम जरा भी नीचे नहीं अुतरते, वल्कि अूंचे ही चढ़ते हैं। अैसा किये विना यह नअी तालीम हरगिज नहीं चलेगी। अिसलिअे स्वावलंवी वनना है, यह वात मनमें रखकर ही अिस संस्थाका वजट हमें वनाना चाहिये।"

प्रश्न: "सरकारी शालाअें यदि अैसी संस्थाको सौंपी जायं तो अुन्हें लिया जाय या नहीं?"

वापूजी: "सरकारी शालाअें चलानेकी हममें शक्ति हो तो ही वह जिम्मेदारी ली जाय। वर्ना हम भी काम नहीं कर सकेंगे और सरकारको भी परेशान करेंगे। हमारा अैसा खयाल वन गया है कि हमारे हाथमें सत्ता आअी है, अिसलिअे हम जितना चाहें अुतना खर्च कर सकते हैं। हममें यह वृत्ति पैदा हो गअी है कि स्वराज्यमें अव हमें कौन पूछनेवाला है। परन्तु अैसा दम्भ वहुत समय तक नहीं टिकेगा। जनता जाग्रत होगी और विद्रोह मचेगा। मैं तो अीश्वरसे यही प्रार्थना करता हूं कि यह सव

देखनेको मैं जिन्दा न रहूं। हमारा काम मजबूत होना चाहिये। अिसलिअे हममें सम्पूर्ण शक्ति हो, तो ही यह काम हम हाथमें लें। अगर अैसी शक्ति न हो तो सरकारसे कह दें कि हमारी अैसी स्थिति है कि हम केन्द्रोंमें ही काम चला सकते हैं, प्रान्तोंमें नहीं चला सकते। भले केवल सेवाग्राममें ही चलाअिये। परंतु अिस तरह चलाअिये कि वह सारे हिन्दुस्तानकी आदर्श स्वावलंबी शिक्षाकी संस्था बने। हमेशा छोटे पैमाने पर जो काम चलता है वही मजबूत बनता है। अिसलिअे आप नींवको मजबूत बनायेंगे तो अिमारत अपने-आप मजबूत बनेगी। परन्तु बहुत काम फैला देंगे तो कहींके भी न रहेंगे।

"नअी तालीममें केवल कताअी या सफाअी करानेसे ही विद्यार्थी पारंगत नहीं बनता। परन्तु नअी तालीममें बुद्धिकी शुद्धि होती है और आत्मा तथा शरीरको शिक्षा मिलती है। प्रत्येक धर्मके अच्छे सिद्धान्तों द्वारा धार्मिक शिक्षा भी दी जा सकेगी। अिसलिअे मेरे कहनेका अर्थ यह है कि यदि कताअी और सफाअीके द्वारा आत्माको खुराक न दे सकें, तो अुसे छोड़ दीजिये और अपनी हार कबूल कर लीजिये। क्योंकि मैं तो मानता हूं कि अिसी शिक्षाके द्वारा हमारी अुन्नति होगी। अैसा हुआ तो मिलके सारे कपड़ेका स्थान खादी ले सकेगी, यह मेरा विश्वास है। आप करोड़ों गरीबोंको अुन्नत कर सकनेवाला काम चरखेके सिवा और कोअी बतायें, तो मैं अपनी हार स्वीकार कर लूंगा और अपना ५० वर्षका सिद्धान्त वापस ले लूंगा। सब भारतवासी केवल अेक ही घंटा कातें, तो हिन्दुस्तानको न मिलोंकी जरूरत रहे और न बाहरके कपड़ेकी। हर आदमीको ६ या ८ घंटे कातना पड़े, तब तो खादी मर ही जायगी। क्योंकि मनुष्यको और कअी काम होते हैं। परन्तु अेक घंटा मनुष्य काते तो आत्माको भी फायदा होता है और आर्थिक दृष्टिसे भी फायदा होता है।

"अंग्रेजोंने मिलोंकी बुनियाद हमारी तकली और हमारे करघे परसे ही डाली है। अुन्होंने मिलें बनाकर हमारा शोषण किया। हिन्दुस्तान यदि युरोपकी नकल करेगा तो अुसका नाश होगा। अिसलिअे हमें तकली, चरखे और हमारे करघेका ही शास्त्र तैयार करना चाहिये। अैसी तालीम पाया हुआ विद्यार्थी मिलोंकी तरफ आंख अुठाकर भी नहीं देखेगा। आज बहुतसे मंत्री या अुद्योगपति मिलें चलानेकी ही बात करते हैं। परन्तु हमें अुन्हें बता देना चाहिये कि हम जो कर रहे हैं वह ठीक है। ध्येयको पूरा करनेकी

श्रद्धा रखनी चाहिये और मरते दम तक अुस ध्येयको छोड़ना नहीं चाहिये। चरखा संघ और तालीमी संघ कांग्रेसके ही बनाये हुअे हैं, परन्तु कांग्रेसने अुनकी तरफ देखा भी नहीं। कांग्रेस राजनीतिक कामोंमें ही पड़ गअी। कांग्रेसवालोंके पास रुपया न था और दूसरा अनुभव भी नहीं था, अिसलिअे अुन्होंने थोड़ा रचनात्मक कार्य किया। अुसमें सफलता भी मिली। बीच बीचमें लड़ाअियां भी आअीं। सत्ता हमारे पास आअी है, परन्तु अुसे हजम करनेमें बहुत समय लगेगा, अैसा कुछ अनुभवों परसे मालूम होता है। हमें तो भावी प्रजाको तैयार करना है। अिसमें जो अनेक कठिनाअियां आयेंगी, अुनका सामना करना होगा। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मुझमें पहले जैसी शक्ति नहीं रही। अिसमें सरकारका कसूर नहीं है। हमारी सरकारको जो विरासत मिली है वह अैसी ही गंदी है। परन्तु जो है अुसीसे काम चलाना पड़ेगा। आज मैं जो कुछ कह रहा हूं वह लोगोंके गले नहीं अुतरता। मैं बूढ़ा हो गया अिससे कहीं मेरी बुद्धि तो मन्द नहीं हो गअी है? बहुतसे लोग मुझे अैसी सलाह भी देते हैं कि अब तुम्हारा काम पूरा हो गया है अिस-लिअे तुम हट जाओ। अिसलिअे संभव है बुढ़ापेके कारण मेरी बुद्धि खराब हो गअी हो!

"परतु अितना ध्यानमें रखिये कि मैं देख रहा हूं कि कांग्रेसका तंत्र आज टूटता जा रहा है। आज भी अुसे संभाला जाय तो वह बच सकता है। नहीं तो साम्यवादके आनेमें देर नहीं लगेगी और अैसा बलवा होगा जिसमें खूनकी नदियां बहेंगी। यह सबको दिखाअी नहीं देता, परन्तु मुझे दिखाअी देता है।

"सहशिक्षामें शिक्षक योग्य और पवित्र तथा नअी तालीमकी भावनासे भरे होने चाहिये। नअी तालीमका शिक्षक भी कारीगर होगा। अुसकी पत्नी और बालकोंको भी अुसमें साथ देना होगा। सारे हिन्दुस्तानके गांवोंमें नअी तालीम चल सके तो अेक बड़ा काम होगा।"

४ बजे स्थानीय मंत्री मिलने आये। बापूजीने अुनके सामने भी अपना हृदय अुंड़ेला, "मैं गंभीरतासे विचार कर रहा हूं कि अिन सब बातोंमें मेरा धर्म क्या है? हां, मेरी यह दृढ़ श्रद्धा है कि अीश्वर मुझे अिसमें से रास्ता जरूर बतायेगा। और अहिंसाके बारेमें तो आज मेरे वचनोंका कोअी मूल्य ही नहीं रहा। लोग मुझ पर जो प्रेम बरसाते हैं अुसकी मैं कद्र करता

हूं। परन्तु अुस कद्रकी कीमत चुकानेका अेक यही रास्ता है कि ओश्वरने मुझे जो सत्य दिखाया है अुसे मैं संसारके सामने रख दूं। अहिंसाके शस्त्रका हमने शक्तिशाली अंग्रेज हुकूमतको भारतसे निकालनेके लिअे अिस्तेमाल किया। अब यदि हम अपने भाअियोंके विरुद्ध हिंसाका अुपयोग करेंगे, तो हम कायर माने जायेंगे और दुनियामें हमारी बदनामी होगी। आपके सिर पर हीरे-मोतियोंका मुकुट नहीं, कांटोंका ताज है।"

बापूजीने अलग अलग समय पर अपने हृदयकी व्यथा अुंड़ेली। अुसकी ध्वनि भी अुतनी ही गांभीर्यपूर्ण थी। वे अेक अेक शब्द तौल तौल कर बोलते थे। खूब थकावट होनेसे बापूजीने शामको भोजनमें कुछ भी नहीं लिया। मानसिक थकावट भी खूब है। शामको थोड़ेसे अंगूर ही लिये।

प्रार्थनामें आज सुमीने भजन गाया। प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने आजकल चरखा संघ वगैराकी जो बैठकें हो रही हैं अुनको ध्यानमें रखकर ही कहा:

"आज दो दिनसे यहां हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी बैठक हो रही है। और कांग्रेसने तालीमी संघको शिक्षाका काम सौंपा है, अिसलिअे अैसी आशा जरूर रहेगी कि राज्यका प्रबंध करनेकी सत्ता हाथमें आ आने पर कांग्रेस तालीमी संघके निष्णातोंकी सलाह ले। परन्तु अिसके कारणोंकी गहराओमें जानेकी मुझे जरूरत नहीं। डॉ० जाकिर हुसेन साहब तालीमी संघके अध्यक्ष हैं। वे शिक्षाके निष्णात हैं और जामिया मिलिया संस्थाकी आत्मा हैं। आर्य-नायकम् और अुनकी पत्नी आशादेवी भी अुनके सहायक हैं। अिस संघकी स्थापनाको सात वर्ष पूरे होकर आठवां वर्ष बैठा है। अिस संस्थाका नाम 'नओ तालीम' रखा गया है, क्योंकि अिस शिक्षाको किसी दूसरे देशसे नहीं लाया गया है। अिसमें किसीकी नकल नहीं है और लोगों पर अुसे जबरदस्ती थोपा नहीं गया है। परन्तु यह दृष्टि ध्यानमें रखी गओ है कि सात लाख गांवोंके बने हुअे भारतमें किस प्रकारकी शिक्षा अुपयोगी हो सकती है। मनुष्य तीन तत्वोंसे बना है — शरीर, मन और आत्मा। और नओ तालीम अिन तीनोंके बीच संतुलन कायम करके अुनमें मेल रखेगी। पश्चिमकी शिक्षा-पद्धतिमें और नओ तालीममें बहुत बड़ा भेद है। शरीर, मन और आत्मा अिन तीनोंको खुराक पहुंचानी हो, अुन्नत बनाना हो, तो श्रम करके अुद्योगोंके द्वारा शिक्षा देना ही अिसका अेकमात्र सरल मार्ग है। नओ तालीममें

दूसरी खूबी यह है कि विद्यार्थीको वह पूरा स्वावलंबी बनाती है, अर्थात् वह अपनी शिक्षाका खर्च आप ही निकाल लेता है। अिस प्रकार लोगोंकी शिक्षाके लिअे करोड़ों रुपये खर्च करनेकी बात ही नहीं रह जाती। और अब जब हमारे हाथमें देशकी सत्ता आअी है, तब साधारण व्यवहारमें अंग्रेजीके बजाय हिन्दी भाषा ही हमें अिस्तेमाल करनी चाहिये।

"मेरी और जिन्ना साहबकी तरफसे जो शांतिकी अपील निकली है अुसमें मैंने हिन्दीमें हस्ताक्षर किये हैं। अिस पर हमारे गवर्नर जनरल माअुन्ट-बेटन साहबने कुछ अेतराज नहीं किया, क्योंकि वे जानते हैं कि अंग्रेजोंको थोड़े समयमें यहांसे चला जाना है।"

प्रार्थनासे आकर बापूजी घूमे। घूमते समय . . . के साथ खानगी बातें हुअीं। मैं और सुमित्रा अलग घूमीं। हम दोनों खेलीं। घूमकर बापूजीने प्रवचन सुधारा। पत्र लिखे। आअी हुअी डाक सुनी। कातना बाकी था अुसे पूरा किया। आज वे बहुत थके हुअे हैं। बहुत धीरे बोल सकते हैं। १० के बाद सोनेकी तैयारी की।

गांधी कैम्प, पटना,
२३–४–'४७

प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगाली पाठ किया। फिर मुझे गीतापाठ कराया। . . . लीगवाले लोग मिलने आये। अुनके साथ बातें करते हुअे बापूजीने कहा, "लीगको यदि आगे आना हो तो अुसे अपना ध्येय बदलना पड़ेगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप अपनी अन्तरात्मासे पूछें। यों तो अब लीग अन्तरिम सरकारमें शामिल हो गअी, है, परन्तु अभी तक अुस ढंगसे कामकाज नहीं चल रहा है, जिस ढंगसे सगे भाअी मिलकर चलाते हैं। आप यदि लीगके सच्चे प्रतिनिधि हैं, तो आपको जिन्ना साहब या लियाकत अली साहबसे साफ कहना चाहिये कि यह मार्ग अुलटा है। तभी यह कहा जायगा कि आपने लीगकी वफादारीके साथ सेवा की है। अभी भी नोआ-खालीमें, बंगालमें, पंजाबमें मुसलमानोंकी तरफसे कत्लेआम हो रहा है। मैं यह नहीं कहता कि हिन्दू नहीं करते, परन्तु हिन्दुओंके अिन कृत्योंकी मैं और पंडित जवाहरलाल वगैरा सख्त शब्दोंमें निन्दा करते हैं, सार्वजनिक रूपमें अैसा न करनेकी अुनसे प्रार्थना करते हैं। क्या अिस तरह अभी तक

लीगके किसी प्रतिनिधिने मुसलमानोंसे कहा है? पाकिस्तान लेना हो तो भी नेता लोग भले लड़ें। परन्तु यदि प्रत्येक मनुष्य कानूनको अपने हाथमें ले ले तो कैसे काम चलेगा? कायदे आजम जिन्ना साहबने कहा तो है कि अल्पमतकी पूरी रक्षा की जायगी। परन्तु मुझे यह भी आपसे कहना चाहिये कि अभी तक अुस वचनका पालन नहीं हुआ है। मैं अपने आपको सबका अेक वफादार मित्र मानता हूं। और वह मित्रता मुझे साबित करनी है। मैं आपसे हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि आप हिन्दुओंको अपने सगे भाअीकी तरह समझें। अिससे आपकी अुन्नति होगी।" सुबह ही सुबह अिन लोगोंको बापूजीने काफी खरी बातें सुनाअीं। अिसके बाद बम्बअी सरकारके बुनियादी शिक्षा योजना-संबंधी पत्र पढ़े। बापूजीको वे पसन्द आये। अुसमें अुन्होंने थोड़ा-सा परिवर्तन कराया।

टहलते समय सीता और सुमीके साथ बातें कीं। थकानके कारण बापूजी आंखें बन्द करके घूमे। मालिशमें बापूजी सो गये थे। भोजनमें आज केवल तीन सन्तरे ही लिये।

तालीमी संघ और चरखा संघकी बैठकें हुअीं। आज भी खादी पर बातें हुअीं:

"खादी तो प्रत्येक कार्यका मध्यबिन्दु है। हम सबको खादीकी जरूरत है। मेरे सामने तो हिन्दुस्तानके छह लाख गांवोंका प्रश्न है। अब केवल कताअीकी क्रिया जाननेसे कुछ नहीं होगा। कताअीके साथ हर आदमीको बुनाअी भी जाननी होगी। नअी तालीम तो अपूर्ण मनुष्यको सम्पूर्ण बनायेगी। अिस लिअे शिक्षामें खेती तो आयेगी ही। फल, अनाज, सागभाजी और फूल आदिमें जरूर बुद्धिका अच्छा विकास होता है। गांवके लड़के अच्छी तरह सीखकर जीवनकी तमाम आवश्यक वस्तुओंकी कला हस्तगत कर लें, तो अुससे मुफ्त शिक्षा अपने आप हो जायगी।

"परन्तु दुःखकी बात यह है कि आज हमारा संगठन कमजोर होता जा रहा है। जहां जहां हमारे हाथमें सत्ता हो, वहां वहां प्रान्तीय समिति और सरकारको अेक हो जाना चाहिये। वे अेक-दूसरेमें ओतप्रोत हो कर अेक-दूसरेको बलवान बनायें, तो ही हम सोचा हुआ काम सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं। सरकारको भी अपनी मर्यादा अिसमें आंकनी पड़ेगी। अब हम लोगोंके पास चन्दा मांगने नहीं जा सकते। और नअी तालीमके

लिअे तो चन्दा मांगना मैं पाप समझता हूं। अलबत्ता, सरकारसे मांगा जा सकता है।

"हम यदि सेवा करना चाहते हों तो हमारी सेवा अेक ही दिशामें मुड़नी चाहिये।

"हमें अेक महासागर पार करना है। हमारी परीक्षा अिसी समय होगी। चारों ओरसे तूफानी बादल आ रहे हैं और छाये हुअे बादलोंको हमें बिखेरना है। जो कर्णधार है अुससे अधिक श्रेष्ठ कोअी कर्णधार नहीं है, जो अिस जहाजको संतुलित रखकर ठीक दिशामें ले जा सके। अिसलिअे हम सबको किसीका दोष देखे बिना अपने कर्तव्यके लिअे कटिबद्ध हो जाना चाहिये।"

३ से ५ तक यह बैठक और प्रश्नोत्तरी चली। आज भी सुमी और सीताके साथ ही मेरा सारा समय बीता। मैं भी अुन लोगोंके साथ डॉ० साहब और बेगम साहिबाके साथ मेज पर खाने गअी। बहुत दिनों बाद वहां खाने गअी, अिसलिअे सब बड़े खुश हुअे।

शामको अंगूर खाते खाते शान्ति-समितिके कांग्रेसी कार्यकर्ताओंके साथ वार्तालाप करते हुअ बापूजीने कहा :

"हमें आजादी चाहिये। कांग्रेसने आजादी पानेके लिअे जी-तोड़ परिश्रम किया, अितने बलिदान दिये। मुझे लगता है कि अैसी पवित्र संस्थाकी तरफ हमारा लापरवाहीका रवैया शुरू हो गया है। यदि अैसा करना हो तो बेहतर है कि कांग्रेसको तोड़ दिया जाय अथवा हम कांग्रेससे अलग हो जायं। कांग्रेसने जो कमाअी की है, अुसे क्या हमें खो देना है? अगर आपमें अहिंसाके रास्ते चलनेकी बहादुरी न हो, तो जिसने आपको कोड़ा लगाया हो अुसको आप कोड़ा लगायें, अिसे मैं समझ सकता हूं। परन्तु कोड़ा लगानेवालेसे डरकर अुस कोड़ेका बदला निर्दोषोंसे लेनेका अधम पाप हिन्दुस्तानी कैसे कर सकते हैं? हिंसात्मक रवैयेमें भी कुछ नियम और मर्यादायें होती हैं। अुन मर्यादाओंका पालन न किया जा सके, तो हिंसा करनेवालेका ही नाश होता है। यह दीये जैसी स्पष्ट बात मैं आपको नहीं समझा सकता, अिसमें मेरा ही दोष है। हम सच्चे तरीकेसे मर जायं तब तो मैं अुसमें जीवनकी सार्थकता समझूंगा। परन्तु आजादी आनेके समय ही मैं जो अपशकुन देख रहा हूं, अुसका
।१५।।म यह होगा कि आप डेढ़ सौ वर्षसे जो गुलामी भोगते आ रहे हैं,

अुससे भी वड़ी गुलामीमें अैसे फंस जायंगे कि अुससे कभी छुटकारा ही नहीं होगा।

"अिस समय विहारमें जो शान्ति है, वह सैनिक वलके कारण ही है। अिसे मैं शान्ति कहता ही नहीं। आपकी शान्ति-सेनाकी छूत लोगोंको लगेगी और लोग अपने आप यह समझ जायेंगे कि प्रत्येक हिन्दू या प्रत्येक मुसलमान हमारा भाअी है, हमारी वहन-वेटी है, तभी वह शान्ति टिकेगी। परन्तु अुसकी छूत तभी लगेगी जव आप हृदयसे १०१ फी सदी सच्चे होंगे। वर्ना सव निरा दिखावा ही होगा। मुझे खुश करनेके लिअे आप कुछ भी न करें। मेरी वात गले न अुतरे तो आप जरूर अलग हो सकते हैं। परन्तु शान्ति-सेनाका सैनिक शान्ति-सेनामें शामिल होनेके वाद अपने मन, वचन या कर्मसे दूसरोंसे वैर लेनेकी धारणा रखेगा तो मुझे अत्यन्त दुःख होगा। वुरे काम करनेके विरुद्ध अथवा वदला लेनेके खातिर आप दूसरे धर्मवालोंको मारेंगे, तो वह नामर्दीका काम माना जायगा और आप हिन्दुस्तानकी आजादीको खतरेमें डालेंगे।

"अपने भीतर वीरोंकी अहिंसा पैदा करनी हो, तो अन्तरको साफ करना पड़ेगा, मनसे नामर्दीके विचार निकाल देने होंगे। जिसने अहिंसाको अपनाया है, वह किसीसे क्यों डरेगा? वह जरा भी क्रोध किये विना अपनी वात साफ साफ दूसरोंको समझायेगा। अिसलिअे आपको जो कुछ पूछने जैसा लगे, वह मुझसे अथवा श्रीवावूसे आप जरूर पूछ सकते हैं। अिसमें मुसलमान भाअी भी हैं, अिसलिअे मुझे आनन्द होता है। अुनसे भी मैं कहता हूं कि आपको जो सही मालूम हो वह आप कह सकते हैं। लड़ाअी और हिंसाके रास्ते जाकर आप पाकिस्तानको पाक नहीं वना सकते, यह जिन्ना साहवको सार्वजनिक रूपमें कहनेका आपमें साहस होना चाहिये। हम आपसमें लड़ेंगे तो आजादीकी वात भूल ही जानी पड़ेगी, और कोअी तीसरी सत्ता यहां स्थान जमा लेगी। हिन्दुस्तान कैसी स्वर्णभूमि है, अिसका आपने कभी विचार किया है? हमें अपनी दृष्टि विशाल वनानी चाहिये, न कि छोटी छोटी वातोंमें झगड़े करने चाहिये। हमारे देशमें खनिज पदार्थ, कीमती धातुअें और अैसी अनेक समृद्धियां मौजूद हैं। अुनकी खोज करनेमें और अुसके द्वारा हिन्दुस्तानको समृद्ध वनानेमें हमें अपने समयका अुपयोग करना चाहिये। अुसके वजाय आज हम कहां जा रहे हैं, अिसका आपने विचार किया है? हमारी वेवकूफीसे

सरे लोग फायदा अुठा लेंगे। आप मेरी यह बात समझ गये हों, तो अुस
र विचार कीजिये और अुसे अपने जीवनमें ओतप्रोत कर लीजिये। अिससे
जाका अपने आप निर्माण होगा। सेवकों पर बहुत बड़ी नैतिक जिम्मेदारी
। अुसे पूरा करनेकी शक्ति आपमें न हो तो नम्रतासे अैसा स्वीकार कीजिये।
हीं तो अपने सिर आये हुअे फर्जको तन, मन, धनसे वफादारीके साथ अदा
ीजिये।"

अिस प्रकार बापूजीने ३० कार्यकर्ताओंके सामने अपने मनकी बात
ही। बापूजी लगभग ४५ मिनट तक लगातार बोले। अिन लोगोंके जानेके
ाद हाथ-मुंह धोकर सीधे प्रार्थना-सभामें गये।

प्रार्थनामें आज बहुत भीड़ थी। १ लाखसे अूपर लोग होंगे। रामधुनमें
ालियां बेताल बज रही थीं। अिसलिअे बापूजीने पहले ताली कैसे बजाना
भसकी तालीम देनेकी सूचना की।

प्रार्थना-सभामें बापूजी नअी तालीम पर ही बोले :

"अंग्रेज सरकारने हमें जो शिक्षा दी है, वह जीवनका नाश करनेवाली
ो है। और नअी तालीममें हमारी जनताके जीवनमें प्रकाश भरनेवाली
ाक्षा है। अंग्रेजी शिक्षासे भारतकी सारी सम्पत्ति विदेशोंमें चली गअी, देशी
ाषाअें कंगाल बन गअीं। क्योंकि यदि मैं यह कहूं कि देशी भाषाओंका
ाठशालाओंमें कोअी स्थान ही नहीं है, तो जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।
ुदाहरणके लिअे, बालक सात वर्षका होता है तबसे २५–३० वर्षकी आयु
क वह पढ़ता है। अुस समयमें आप औसत हिसाब निकालें तो पता चलेगा
क पाठशालाओंमें अंग्रेजी भाषाके लिअे शिक्षकोंको जितनी चिन्ता होती है
ुतनी देशी भाषाओंके लिअे नहीं होती। यह मेरी अनुभव की हुअी बात है।
ालक अंग्रेजीमें फेल हो जाय तो अुसका सारा साल बिगड़ जाता है, परन्तु
शी भाषामें कम नम्बर मिलें तो विद्यार्थीको चढ़ा दिया जाता है। हमारी
ाक्षाकी अिस कंगाल स्थितिका मैं विचार करता हूं तो मेरा हृदय रो
ड़ता है।

"नअी तालीममें तो बालक माताके पेटमें रहता है तभीसे अुसकी शिक्षा
ुरू हो जाती है। आपको महाभारतका किस्सा मालूम है न? अभिमन्युने
ाताके पेटमें तालीम पाअी थी। यह कथा बड़ी विचारणीय है। अुसे भले
सच्ची बात न मानें, फिर भी अुसमें तथ्य है। कविको कल्पना कितनी

अूंची है! बालक माताके पेटमें हो तभीसे यदि माताको शिक्षा मिले, तो बालकको अपने आप शिक्षा मिल जायगी। और अैसी शिक्षा पाअी हुअी सन्तान सर्वथा स्वावलंबी बनेगी। नअी तालीममें मेरी यह कल्पना है।

"केवल आवश्यक साधन जुटानेके लिअे ही पूंजी लगाअी जायगी। अिसके सिवा नअी तालीममें अेक भी पाअी खर्च नहीं होगी। शिक्षक जो वेतन लेंगे वे अपनी मेहनत करके लेंगे। नअी तालीम जीवनकी कलाका विकास करनेकी हिमायत करेगी। नअी तालीमकी पद्धतिसे पढ़ानेवाले शिक्षक अपने पढ़ानेके कामसे और अुस पद्धतिसे पढ़नेवाले विद्यार्थी अपने पढ़नेके कामसे ही नअी सम्पत्तिका अुत्पादन करेंगे। अिस तरह बुनियादी शिक्षा जीवनको शुरूसे ही समृद्ध बनाती है। और अैसी शिक्षा पाये हुअे विद्यार्थीको नौकरीके अभावमें भटकना तो पड़ेगा ही नहीं। आज हमारी मासिक औसत कमाअी सिर्फ पांच रुपये और वार्षिक कमाअी सिर्फ साठ रुपये है। नअी तालीमसे वह अुत्तरोत्तर बढ़ती ही जायगी। और फिर हमें बिना सत्त्वकी खुराक खाकर या नंगे-भूखे नहीं रहना पड़ेगा। स्वयं मेहनत करके अनाज बोया हो, शाकभाजी बोअी हो, पशु-पालन सीखा हो तो ताजा दूध-घी तो मिलेगा ही। अिसके साथ अपना हाथ-कता कपड़ा हो, तो फिर जनताको और चाहिये ही क्या? हां, मौज करनेका, सिनेमा-नाटक देखनेका या किसीके साथ लड़ाअी-झगड़ा करनेका अवकाश हरगिज न रहेगा। क्योंकि हमारा अेक अेक क्षण प्रवृत्तिसे भरा होगा। यह है नअी शिक्षाका मेरा स्वप्न। स्वतंत्र भारतका प्रत्येक मनुष्य दृढ़ संकल्प करे और थोड़ी मेहनत करना स्वीकार करे, तो ही यह स्वप्न पूरा होगा। लेकिन सहयोग और आधारके बिना केवल सरकार कुछ भी नहीं कर सकेगी। मेरी आजकी बातों पर आप सब विचार करें। अिन्हें फेंक न दें। आप सबसे अितनी मेरी नम्र प्रार्थना है।"

गांधी कैम्प, पटना,
२४–४–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। बादमें बापूजीने मुझे गीतापाठ कराया और डाक देखी। ग्रामोद्योग संघकी सारी रिपोर्ट पढ़नेमें ही बहुत समय चला गया।

घूमते समय कॉलेजकी शिक्षाके बारेमें बापूजीने कहा: "जब तक स्त्री या पुरुष, युवक या युवती अपने चरित्रमें पूर्ण शुद्धता नहीं लाते, — वे भले

अेक-दूसरेके साथ हिलें-मिलें, लेकिन जब तक अुनमें थोड़ा भी विकार पैदा होता है — तब तक मैं अुस शिक्षाको दोषपूर्ण ही मानूंगा। भले दूसरा ज्ञान अुसमें कितना ही मिलता हो।" बापूजीके मनमें . . . की व्यथा भरी है।

पंडितजीका तार आया है कि मअी महीनेमें बापूजीको दिल्ली आना ही पड़ेगा।

शेष सारा कार्यक्रम नियमानुसार चलता है। सुबहके भोजनमें बापूजी दो खाखरे, शाक और दूध लेते हैं। और शामको सिर्फ अंगूर या संतरे।

अखबारोंमें बापूजीके प्रार्थना-प्रवचन सही ढंगसे नहीं छपते। अिसलिअे अिस बारेमें शैलेनभाअीके साथ अुन्होंने बातें कीं। वॉल्टन साहब बापूजीसे मिलने आये। अुन्हें बापूजीने कहा कि, "निराश्रितोंके लिअे अेक ही कालोनी बनवा देनी चाहिये। बहुत पक्के मकानोंकी जरूरत नहीं है। गांवोंमें गारे-मिट्टीके मकान बनते हैं वैसे बनवा दें। मेरी तो अिच्छा है कि अैसे मकान लोग अपने आप बनायें और सरकार अुन्हें योग्य मजदूरी दे। मुफ्त खाना देनेमें मैं तो पाप समझता हूं।"

४ बजे बापूजी सदाकत आश्रममें गये। वहां कार्यकर्ताओंकी सभा बुलाअी गअी थी।

बापूजीने कार्यकर्ता भाअियोंकी बातें सुनकर यह कहा :

"लक्ष्मीबाबूने जो शिकायत कार्यकर्ता भाअियोंके बारेमें की है, वह बिहारवालोंके लिअे शर्मनाक मानी जायगी। विकेन्द्रीकरणकी बातें तो तीन सालसे चल रही हैं। मैं जेलसे छूटा तब मैंने यह विचार प्रगट किया था। अिसमें पहले कुछ संकल्प-विकल्प चलता था, लेकिन अब तो मुझे दीये जैसा स्पष्ट दिखता है। और लक्ष्मीबाबूने तो तभी मेरी यह बात खुशीसे मान ली थी। आप सब लोग विकेन्द्रीकरणकी योजनामें कहां परेशानी महसूस करते हैं, यह मुझे समझायें तभी मुझे समझमें आये न ? चरखा संघकी छायामें रहकर खादीकी बिक्री अधिक नहीं हो सकती। अिस तरह तो खादीका नाश ही होगा। काते वही पहने। अिस तरह सच्चे पहननेवाले ही रहेंगे। और मुझे अैसे सच्चे सेवक ही चाहिये। अैसा होगा तो चरखा संघमें जो करोड़ों रुपये अटके पड़े हैं, वे बच जायंगे। हिन्दुस्तानमें बिहारने चरखेका महत्त्व खूब बढ़ाया है। यंत्रयुग २०० या ३०० वर्षोंसे ही है। अिससे पहले तो सारा काम हम हाथसे करते थे और अुत्साहसे करते थे। यंत्रयुग आया और हमारे हाथ कट

गये। और अब तो हाथकी कारीगरी और शरीर-श्रम आखिरी सांस ले रहे हैं। अिसलिअे हम आलसी बन गये हैं। अब चरखा संघको व्यापारकी जगह रखें, तो खादीकी कोअी कीमत ही नहीं रह जायगी। शहरवाले और गांववाले अुसी तरह कातें और पहनें, जिस तरह घर घरमें लोग खाना बनाते हैं। यह कोअी बड़ी बात नहीं है। अगर अैसा नहीं करेंगे, तो हम सबका अन्त आ जायगा। हम न करनेका काम करते हैं, अिसलिअे भूखों मरनेकी नौबत आअी है। हिन्दुस्तान चीनसे भी गरीब देश है। हम लोग आकृतिमें भले ही मनुष्य हैं, लेकिन वास्तवमें पशुवत् जीवन बिताते हैं। अगर मनुष्य पशु जैसे बन जायंगे तो गायका क्या होगा? अगर हिन्दुस्तानका अेक अेक गांव खुराक और कपड़ेमें स्वावलंबी बन जाय, तो अेक अरब रुपया तो हम सहज ही बचा लेंगे, अिसमें मुझे जरा भी शक नहीं है। हमें किसीकी जरा-सी भी मददकी जरूरत नहीं रहेगी और सारा हिन्दुस्तान अेक सहकारी संस्था बन जायगा। सहकारकी संस्थाअें जापान और जर्मनीमें हैं। हमें लक्ष्मीबाबू जैसे आदर्श सेवक मिल गये हैं। अुन्हें हमें मदद देनी चाहिये। विकेन्द्रीकरणमें अेक स्वतंत्र पाठ है। जैसे घरमें चूल्हा जलाकर हम अपना रोजका भोजन तैयार कर लेते हैं, वैसी ही खूबी विकेन्द्रीकरणमें है। हम सब अगर कटिबद्ध हो जायं और स्वयं ही खादी अुत्पन्न करने लग जायं, तो लक्ष्मीबाबू जो प्रयोग यहां करना चाहते हैं वह शायद आजाद हिन्दुस्तानका पहला पाठ होगा। यू० पी० में विचित्रबाबूने भी मेहनत की है। लेकिन सभी गांवोंको हम स्वावलंबी न बनायें तो यह सब बेकार है।

"यहां तो अेक दूसरा भी अुद्योग विकसित हो सकता है। अलसीके डंठलके रेशेसे भी कपड़ा बनाया जा सकता है। और वह बहुत खूबसूरत होता है। मेरे पास समय नहीं है, नहीं तो मैं यह साबित करके बताअूं कि मिलके कपड़ेका परिणाम जहर जैसा होता है और खादीका परिणाम अमृत जैसा होता है। खादी पोशाककी दृष्टिसे तो सबके लिअे अच्छी ही है। अिसे चरित्रहीन, पापी, शराबी, जुआरी सभी पहन सकते हैं। लेकिन खादीमें जो अेक पवित्र गुण है, वह यह कि खादी स्वतंत्रताकी निशानी है। जिन्हें आजाद हिन्दुस्तानमें जीनेकी अिच्छा हो, अुन्हें तो खादी पहननी ही चाहिये। और जो खादी पहनेगा वह सत्याग्रही बनेगा; और सत्याग्रही तो गीतामें कहा गया है, वैसा सात्त्विक होना ही चाहिये। यह गुण खादीकी पोशाकमें है।"

सदाकत आश्रमसे लौटकर बापूजीने हाथ-मुंह धोया और सीधे प्रार्थना-सभामें गये।

सदाकत आश्रममें हरिजनसेवकों और सेविकाओंसे जो बातें कीं, अुन्हीं पर आज प्रार्थना-सभामें बापू बोले। अुन्होंने कहा : "हमें जानना चाहिये कि हरिजन सिर्फ सवर्णोंको छूने लगें तो अस्पृश्यता-निवारण हो गया, अैसा मानना गलत होगा। क्योंकि अिस भेदका तो अब लगभग नाश हो गया है। लेकिन हमें अुनमें संस्कार भरने पड़ेंगे। मुझे आशा है कि बिहार अिस मामलेमें और खादीके मामलेमें सबसे आगे रहेगा।"

वहांसे आकर . . . की अेक मीटिंग हुअी। बापूजीने अुन लोगोंको साफ साफ कहा कि :

". . . मुझे अेक बात कह जाते हैं और अुनका आचरण दूसरा ही होता है। अिस तरह हम आजादीको टिका नहीं सकते। आखिर आप सब लोग अितने अूंचे दरजे पर पहुंचे किस तरह? किसके द्वारा? मेरी ही तालीम आपने ली है न? राजेन्द्रबाबूके बिहारमें ही यदि अैसी गड़बड़ हो सकती है, तब तो मुझे लगता है कि मेरे लिअे किसीसे कुछ भी कहनेको नहीं रह जाता। मुझे यह पसन्द नहीं। . . . बाद भी स्पष्टीकरण नहीं कर सकते, यह खटकने-वाली बात है। वे होशियार हैं, भले हैं। अगर मेरा ही पथप्रदर्शन चाहते हैं तो दूसरी बात क्यों हो रही है? क्या मुझे खुश करनेके लिअे हां कहा जाता है? अैसा करेंगे तो आप अपने देशके प्रति बेवफा साबित होंगे। मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, परन्तु जनताके प्रति बेवफा साबित होनेका परिणाम अच्छा नहीं निकल सकता। यह माननेका कोअी कारण नहीं कि मेरी सभी बातें सही होती हैं, परन्तु मेरी 'हां' में 'हां' मिलानेसे हम दोनों ही अपराध कर बैठेंगे। आपको भीतरसे यह लगे कि मेरी बात सही है तो ही हां कहिये। यदि मेरी बात गले न अुतरे तो मुझे समझाना चाहिये। परन्तु किसीको भी खुश करनेके लिअे झूठी हां नहीं करनी चाहिये। बिहारमें आज जो कुछ हो रहा है वह बहुत ही शर्मनाक है। आप अपनी डायरीमें लिख रखिये कि यदि अैसा ही होता रहेगा, तो हिन्दुस्तानको अिग्लैंड, अमरीका और रूस जैसी दुनियामें मानी जानेवाली तीन बड़ी ताकतोंके मातहत फिरसे गुलामी भुगतनी पड़ेगी। आज बिहार, बंगाल और पंजाबमें जो हो रहा है, वह हिन्दुस्तानकी आजादीको [illegible] रहा है यह कहूं तो गलत नहीं होगा। आप यहांके कर्णधार हैं।

अगर कर्णधारोंमें अेकता, मेल और सिद्धान्त-निष्ठा न हों, तो औरोंसे मैं क्या आशा रख सकता हूं ?"

बापूजीने बड़ी व्यथाके साथ मनका यह गुबार निकाला।

आज प्रवचन बापूजीने स्वयं ही लिखवाया। कल किसीने अखबारमें अिस ढंगसे छापा कि अुससे अर्थका अनर्थ हो गया।

१० बजे बाद सोनेकी तैयारी करनेसे पहले . . . को दिल्ली जानेके बारेमें पत्र लिखा :

> "जवाहरलालका तार आया है कि मुझे मअीके आरंभमें वहां पहुंच जाना चाहिये। अिसलिअे २ तारीखको यहांसे निकलकर ३ तारीखको सुबह वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। साथी (मंडलीके आदमी) तो ये ही होंगे। रहना तो भंगीबस्तीमें ही है। घनश्यामदास, मौलाना वगैराको खबर देना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। 'हरिजन' के विषयमें तुम्हारा तार मिला था। अब लिखनेकी तैयारी कर रहा हूं। जीवणजीको और किशोरलालको लिखा है। आजकल चरखा संघ और तालीमी संघकी बैठकें हो रही हैं।
>
> बापूके आशीर्वाद"

यह पत्र लिखकर बापूजी १०-३० को सोये।

गांधी कैम्प, पटना,
२५-४-'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना, गीतापाठ अित्यादि। सुबह घूमते समय दो अंग्रेज सज्जन आये। अुनके साथ आजादीके प्रश्नों पर बातें करते हुअे बापूजी बोले :

"भारतमें जल्दी या देरसे आजादी तो आनेवाली ही है। अितने अितने बलिदानोंके बाद यह तपस्या विफल तो होगी ही नहीं। परन्तु यदि लीग सहयोग दे तो मुझे भरोसा है कि आजादी कल ही मिल जाय। अिस समय लीगवाले अन्तरिम सरकारमें जो शरीक हुअे हैं, वह स्वेच्छासे नहीं हुअे हैं। मेल हार्दिक होगा तो ही अुसमें आनंद आयेगा। दुनियामें आज भाषणोंकी जरूरत नहीं, कामकी जरूरत है। जो हम मानते हैं वह करके दिखायें तभी अुसका मूल्य है। नहीं तो कुछ भी होना मुश्किल है। और हम तो अपने सत्य

और अहिंसाके हथियारोंसे ही लड़े हैं। यद्यपि मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मैंने जितनी कल्पना लोगोंको तैयार करनेकी की थी, वहां तक मैं नहीं पहुंच सका। परन्तु जहां तक मैं अपनी अन्तरात्माको जानता हूं, वहां तक मैंने स्वयं तो मन, वचन और कर्मसे अिस आदर्श तक पहुंचनेका प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा हूं। अनजाने कोअी भूल की हो तो मुझे पता नहीं। परन्तु अहिंसाके रास्ते चले बिना कोअी भी प्रजा सुखी हो ही नहीं सकती। यह सिद्धान्त मेरा नहीं है, यह अनादि कालसे चला आया है। रूस जैसा देश भी, जो जनताके पक्षमें खड़ा रहा था, साम्राज्यशाही सत्ता कायम करनेमें फंस गया है। यह कितना दुःखद है! मैं मानता हूं कि जिसने अणुबमकी खोज की है, अुसने विज्ञानशास्त्रका बड़ेसे बड़ा पाप किया है। दुनियाको बचाना हो, तो अहिंसा ही अुसका अेकमात्र शस्त्र है। यद्यपि आज दुनियाका प्रवाह जिस ओर बहने लगा है, अुसे देखते हुअे मैं तो सबको बिलकुल मूर्ख जैसा ही लगता हूं। लेकिन अिसका मुझे दुःख नहीं होता। मैं प्रभुका अुपकार ही मानता हूं कि अुसने मुझे अणुबमकी खोज करनेकी शक्ति नहीं दी। यह मुझ पर प्रभुकी अपार कृपा है।

"पश्चिमकी प्रजायें आज अणुबमके पीछे पागल हो गयी हैं, यह कहना भी गलत है। वहां अैसे लोग भी मौजूद हैं, जो अब अिस बारेमें सोचने लगे हैं। परन्तु मैं अितना तो सम्पूर्ण श्रद्धा और विश्वासके साथ कह सकता हूं कि जहां अहिंसा और सत्य होंगे, वहींके लोग सुखी होंगे, सन्तुष्ट होंगे। यद्यपि आजकल ये दोनों चीजें लुप्त-सी हो गअी हैं, परन्तु अुनका सर्वथा लोप नहीं हुआ है। विदेशियोंके बारेमें आप पूछते हैं तो अेक आखिरी बात कहता हूं कि विदेशियोंको हिन्दुस्तानी बनकर रहना हो, तो ही वे यहां रह सकेंगे। अगर हिन्दुस्तानी बनकर नहीं रहेंगे, तो अुनके लिअे यहां कोअी स्थान नहीं होगा। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद हमें विदेशियोंके साथ मित्रता साधनी है, न कि वैरभाव पैदा करना है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रताकी रक्षा करनेमें हमसे अनेक भूलें होंगी, हमारे रास्तेमें अनेक कठिनाअियां आयेंगी। शायद जितना चाहिये अुतना लोगोंको सन्तोष भी न दिया जा सके। फिर भी मैं अुसमें किसी प्रकारका खतरा नहीं देखता। अैसा करते करते ही हम सीखेंगे। यदि कांग्रेस सत्य और अहिंसा छोड़ देगी, तो कांग्रेसकी ख्याति, कांग्रेसकी पवित्रता घटे बिना न रहेगी। किन्तु सत्य और अहिंसाका पालन स्वेच्छासे ही करना है। तभी

वे टिकेंगे। जबरदस्तीसे हुआ कोअी भी काम टिकता नहीं। संविधानमें अैसे कानून नहीं लिखे जाते। मैं तो यहां तक जाता हूं कि जिस तरह शरीर पर कपड़ा पहनना ही चाहिये — फिर वह अच्छा हो या खराब, परन्तु शरीरको ढंकना जैसे जीवनका सिद्धान्त है — अुसी तरह सत्य और अहिंसाको अपनाना प्रत्येक मानवका धर्म है।"

दोनों विदेशी सज्जन बापूकी बातें भलीभांति समझकर और खुश होकर गये। परन्तु जानेसे पहले अुन्होंने बापूजीका दैनिक कार्यक्रम जान लिया। बापूजी कहां नहाते हैं? मालिश कहां और किस ढंगसे कराते हैं? बापूजीके कपड़े कैसे हैं? वे कैसे धोये जाते हैं? अुनकी हजामत कौन करता है? वे क्या भोजन लेते हैं? आदि सारी बातें अुन्होंने जान लीं। खिल-खिलाकर हंसते हुअे बापूजीने मेरी पीठ पर धप लगाकर अुन लोगोंको मेरा परिचय दिया :

"यह मेरी पोती भी है और मेरी 'हज्जाम' भी है।। साबुनके बिना ही मेरी हजामत कर देती है और मैं अुस वक्त सो जाता हूं।" यह सुन कर वे लोग पेट पकड़कर हंसने लगे और 'कुशल हज्जाम' कहकर मेरा अभिनंदन करते हुअे मुझसे हाथ मिलाया। मैंने कहा : बात सच है। परन्तु जो अनाड़ी होता है अुसे हिन्दुस्तानी कहते हैं कि यह बिलकुल हज्जाम जैसा है! अिस पर बापूजीने अुन लोगोंसे कहा, "देखा, यह लड़की क्या कहती है? अिस जमानेमें यश मिलना मुश्किल है।" सब खूब हंसे। और वे बापूजीसे विदा लेकर चले गये। बापूजीने दोनोंको दो दो खाखरे खानेके लिअे कागजमें लपेटकर दिये।

बापूजी मेहमानोंका स्वागत करनेमें कभी चूकते नहीं। यहांसे वे दोनों सज्जन दिल्ली जायंगे और दिल्लीसे बम्बअी होकर अिंग्लैण्डके लिअे रवाना होंगे। दोनों वॉल्टन साहबके रिश्तेदार हैं। अुनमें से अेक सज्जन तो अिंग्लैंडमें अिंजीनियरिंग विभागके मुखिया हैं।

फिर मालिश, स्नान वगैरा नियमके अनुसार चले। बादमें डाक लिखी। श्री . . . को पत्रमें लिखा :

> "कांग्रेसके बारेमें आप जो लिखते हैं वह मैं भी दुःखीत हृदयसे देखता रहता हूं। हम आशा रखें कि अन्तमें अीश्वरकी चलेगी और शैतान हारेगा।"

आजकी गरमी असह्य थी। बापूजीके सिर पर ठंडे पानीकी पट्टी रखने पर भी अुन्हें घबराहट मालूम होती थी। अिसलिअे दोपहरकी मुलाकातें लगभग बन्द-सी रखी गअीं।

प्रार्थनाका समय आधा घंटा आगे बढ़ा दिया गया। शामको कुछ हिन्दू महासभावालोंके पत्र आये, जिनमें मुख्यतः गोरक्षा-संबंधी बातें लिखी थीं। यह भी लिखा था कि मुसलमान गायका मांस खाते हैं, अिसलिअे वे हिन्दुओंके दुश्मन ही हैं। अित्यादि अित्यादि।

बापूजीने प्रार्थना-सभामें अुनका बहुत सुन्दर अुत्तर दिया। अुन्होंने कहा :

"हम यही नहीं जानते कि सच्ची गोरक्षा किसे कहा जाय? मेरा यह दावा है कि गोमाताके जो सच्चेसे सच्चे पुजारी होंगे, अुनमें मेरी व्याख्याके अनुसार मैं तो गिना ही जाअूंगा। मैं गोमाताका भक्त हूं। वह हमें दूध देती है, अिसलिअे मैं गायको जन्मदात्री मांकी तरह ही पूज्य मानता हूं। लगभग ४० वर्ष पहले 'हिन्द स्वराज्य' नामक पुस्तकमें मैंने अिस विषयमें लिखा था कि हिन्दुस्तानमें अैसी कितनी ही मंडलियां हैं, जो गायका रक्षण नहीं करतीं वरन् अुनका भक्षण करती हैं। मेरा ४० वर्ष पहले जो विचार था वही आज भी है। जिनके हृदयमें गायकी सच्ची सेवा और भक्ति हो, अुन्हें तो हृदयमें अुदारता रखनी चाहिये। अुनकी दृष्टि विशाल होनी चाहिये। अुनके पास गायके पालन-पोषणकी पूरी तालीम होनी चाहिये। सारी दुनिया पर नजर डालें तो अिस देशमें गायकी पूजा होनेके बावजूद गाय और अुसके बछड़े-बछड़ीके साथ जैसा जुल्म हम करते हैं, वैसा जुल्म दुनियाके किसी भी भागमें नहीं होता। बैलोंके साथ हम जो क्रूरताका व्यवहार करते हैं, क्या वह अुनकी हत्या करनेके बराबर नहीं है? मैं तो मानता हूं कि किसी जीवको सतानेकी सजा देनेकी अपेक्षा अुसकी हत्या करना ज्यादा अच्छा है। अिससे अुस जीवकी पीड़ाका जल्दी अन्त तो आ जाता है!

"आपको मालूम है कि अंग्रेज गोमांसका कितना व्यापार करते हैं? वे लोग अुसमें से गोमांसका सत (बीफ अेक्सट्रैक्ट) बनाते हैं। मैंने अैसे कितने ही हिन्दू देखे हैं जो बड़े मजेसे गोमांस खाते हैं। हम अुनके विरुद्ध कुछ कर नहीं सकते; और अिस अेक बातको पकड़कर मुसलमानोंका नाश करनेके लिअे कहते हैं। अच्छे-अच्छे वैष्णव और पुष्टिमार्गके आचार-विचारवाले हिन्दू भी सत बड़े स्वादसे खाते हैं।

"खिलाफतके जमानेमें हजारों गायोंका वध रोका गया था। मैं मानता हूं कि हिन्दुओंकी भावनाका आदर करनेके लिओ गायोंका वध बंद होना ही चाहिये। लेकिन साथ ही साथ मैं यह भी बता देता हूं कि गाय और अुसके बछड़ोंको किस प्रकार पाला-पोसा जाय अिसकी हिन्दुओंको पूरी पूरी शिक्षा लेनी पड़ेगी। और मुसलमान गायोंका वध करते हैं, अिसलिओ अुन पर रोप करना और वैर निकालना सरासर बेवकूफी है।

"दूसरोंकी टीका करनेके पहले हम अपने दोपोंको देखें तो अधिक अच्छा हो। हमारे अपने धर्मोंकी अिमारत अब बिलकुल हिल गअी है, अिसलिओ अगर हम अुसे मजबूत बनायेंगे, तो यह निश्चित है कि बाकी सब अपने-आप ठीक हो जायगा।

"गायको हम केवल तिलक लगाते हैं, लेकिन अुसका दूध तो कसकर निकाल लेते हैं। अुसे मारनेमें कोअी कसर नहीं रखते और खिलानेमें पैसेका लोभ करते हैं। गाय बूढ़ी हो जाती है और अुसका दूध सूख जाता है, तब या तो हम अुसे पिंजरापोलमें रख देते हैं या अुस माताको मारी-मारी फिरने देते हैं। मैं ये जो बातें आपसे कहता हूं, वे अगर सच न हों तो आप मुझसे जरूर अिसका जवाब मांग सकते हैं। लेकिन दूसरेकी भूलें निकालनेमें हम बड़े शूर हैं; यह हमारी अेक आदत ही बन गअी है। अिसलिओ मेरी आजकी बातका जरा भी अनर्थ न करके आप अिस प्रश्न पर विचार कीजिये कि वास्तवमें गायका वध कौन करता है?"

प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा घंटा आंखें बंद करके घूमे। फिर प्रार्थना-प्रवचन देखा। आज दोपहरको गरमीके कारण बापूजी कात नहीं सके थे। अिसलिओ रातको ९–३० के बाद काता। अुस समय मैंने अुन्हें अखबार सुनाये।

लगभग ११ बजे बाद सोनेकी तैयारी की। आज तो अितनी असह्य गरमी है कि अिस समय रातके बारह बजे भी, जब मैं अपनी डायरी पूरी कर रही हूं, गरम हवा चल रही है।

१२–३० के बाद मैं सोने गअी। सुमी और सीता अेकाध दिनमें ही चली जायंगी। आज जानेको कहती थीं। आजकल हम तीनों बड़े आनन्दमें रहती हैं। शामको तो 'साततालो' का खेल खेला था। बापूजी यह जान कर कहने लगे: "मुझे खेलाया होता तो मैं भी तुम्हारे साथ खेलता न?"

आज प्रार्थनाके वक्त सुमी और सीता अुठी नहीं थ
अच्छा नहीं लगा। अुन्होंने कहा, "सब कुछ छोड़ा जा
प्रार्थना हरगिज नहीं छोड़ी जा सकती। प्रार्थना तो हम
करनेवाली झाड़ू है। अुसे छोड़ें तो हमारे मनमें कचरा और
और हमारी आत्मा गंदी हो जाय। मैं तो तुमसे यह आ
कॉलेजमें पढ़नेवाली सब लड़कियां जल्दी अुठें और प्रा
बनायें। कॉलेजमें तुम दो लड़कियां तो हो ही। आश्रमका
या बालिका, भाअी-बहन जहां जायें वहां आश्रमका वातावरण बना दें,
अैसी मेरी हमेशा अिच्छा रहती है। और मरूंगा तो भी हमेशा — जहां कहीं रहूंगा वहां — मेरी यही अिच्छा रहेगी। और कुछ न करो तो भी कातना, सादी खुराक, सादगी, खादी और प्रार्थना — अितना तो आश्रममें रहनेके बाद जीवनमें हमेशाके लिअे स्थापित हो ही जाना चाहिये। लेकिन अिसमें तुम क्या करो? मनुष्यकी सभी अिच्छाअें थोड़े सफल होती हैं? (यह अंतिम वाक्य बापूजीने बहुत ही धीमी आवाजमें कहा और आगे बोले) अिसमें मेरी ही कहीं भूल लगती है। यह अुसीका प्रतिबिम्ब तो न हो?"

प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे गीतापाठ कराया। अब तो बापूजी बंगालीमें पत्र भी अच्छे लिख लेते हैं। फिर भी रोज कक्का और बारहखड़ी लिखते हैं।

आज घूमते समय कोअी नहीं था। हम तीनों बहनें और बापूजी ही थे। सुमीने घूमते वक्त अच्छा आनन्द करवाया।

मालिशमें बापूजीने मुझे कहा, "कुदरतने हमारे जीवनका हिसाब ठीक रखनेके लिअे बहुत स्पष्ट वस्तुअें दिखाअी हैं। (मैं अिसका अर्थ तुरन्त न समझ सकी, लेकिन थोड़ी देर बाद समझमें आया कि प्रार्थनामें ये दोनों बहनें नहीं थीं अुसीके अनुसंधानमें बापूजी कह रहे हैं।) तुम्हारे बाल बिखरे हुअे हैं, अिसलिअे तुम्हारी वैसी ही परछाअीं पड़ रही है। (मैं धूपमें खड़ी थी।) तुम बोलोगी वैसी ही प्रतिध्वनि अुठेगी। यह सब किसलिअे होता होगा, अिसका विचार करना चाहिये। यह सब बताता है कि हम जैसा करते हैं वैसा ही दुनियामें होता है। कोअी बनाता नहीं है। लेकिन मनुष्य अपनी भूलें पहचान ले, अुतनी शक्ति अुसमें होनी चाहिये। अिसलिअे

आश्रममें मेरी तालीममें कहीं न कहीं अपूर्णता होनी ही चाहिये। अगर वह तालीम पूर्ण होती, तो आश्रमके नियमोंके लिअे आश्रमवासियोंको मुझे जरा भी क्यों टोकना पड़ता ? अथवा अैसी लड़कियोंको यह क्यों कहना पड़ता कि तुम प्रार्थनाके लिअे क्यों नहीं अुठतीं ? मेरे लिअे यह सब बहुत विचारने जैसा है।"

बापूजी विचारोंमें डूब गये थे। अेक छोटेसे प्रसंगमें भी वे अितना गहरा रहस्य बताते हैं।

नहानेके बाद बापूजीने अपनी डाक लिखवाअी। कुछ स्वयं भी लिखी। . . . ने ग्रामोद्योगोंका जो विवरण भेजा था अुसके अुत्तरमें लिखा :

"आपकी रिपोर्ट मैं पढ़ गया हूं। अगर यह आपके व्यक्तिगत विचारोंको बतानेवाला वक्तव्य होता, तो मैं आपको धन्यवाद देता और साथ ही कुछ आवश्यक सुझाव भी देता। आप बड़े अर्थशास्त्री हैं, विद्वान हैं और आपने बड़ा व्यापार फैलाया है। लेकिन ग्रामोद्योगोंके बारेमें मैं ज्यादा जानता हूं। अिसलिअे हम यह समझकर चले हैं कि अिस विषयमें मैं आपको कुछ अधिक दे सकता हूं। और यदि यह कथन ठीक न हो तो भी मैं तो यह समझकर ही चला हूं। अिसमें मेरे अहंकारने काम नहीं किया है, लेकिन वस्तुस्थिति ही अैसी है। जो वक्तव्य मैंने पढ़ा, वह तो बंबअी सरकारकी नियुक्त की हुअी कमेटीका है, जिसके आप अध्यक्ष हैं। अिस दृष्टिसे अिस वक्तव्यके बारेमें मुझे बहुत कुछ कहना है। सद्भाग्यसे यहां चरखा संघके ट्रस्टियों और नअी तालीमके सदस्यों दोनोंकी बैठक थी। अुसमें कुमारप्पा थे, धोत्रे थे, अिसलिअे दोनोंके ही साथ मैं बातें कर सका। . . . अभी तो मैं 'हरिजन' देख नहीं पाता। जो छपता है अुसे छपनेसे पहले अपने पास मंगवाता नहीं। प्यारेलाल भी अुसमें कुछ नहीं लिखते।

"जिस प्रस्तावकी रूसे कमेटीकी नियुक्ति हुअी है, वह प्रस्ताव ही मुझे तो पसन्द नहीं है। मेरी राय है कि अुस प्रस्तावके मातहत लक्ष्मीदास और धोत्रे काम कर ही नहीं सकते। यह प्रस्ताव पास करनेसे पहले बंबअी सरकारको चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी संघके साथ विचार कर लेना चाहिये था। आप शायद नहीं जानते होंगे कि अिन तीनों संस्थाओं पर कांग्रेसकी मुहर है और

वे कांग्रेसकी मानी जाती हैं। अिन तीनों संस्थाओंके पास ग्रामोद्योगोंके बारेमें जो अनुभव है, वह हिन्दुस्तानमें और किसीके पास नहीं है, नहीं हो सकता। फिर भी यह भूल कैसे हुअी, यह मैं नहीं कह सकता। कमेटीकी रिपोर्टमें लक्ष्मीदास और धोत्रेको हस्ताक्षर करनेसे आपको रोकना चाहिये था, अैसा मुझे आपकी बुद्धिको देखते हुअे लगता है। मैं तो यह भी कहूंगा कि आप खुद भी अैसी रिपोर्ट नहीं बना सकते, क्योंकि कुछ मूलभूत बातोंकी अवहेलना करके रिपोर्ट बनायें तो वह बालू पर महल बनाने जैसा होगा। और अिसमें अैसा ही हुआ है। अिससे अधिक अभी नहीं कह सकता। अगर आपकी हिम्मत हो तो मैं यह जरूर कहूंगा कि बंबअी सरकारको आप लिख भेजिये कि आपकी रिपोर्टको वह अधूरी माने और अुस पर अभी कोअी अमल न करे। धोत्रेने तो अपने हस्ताक्षर वापस ले लिये हैं। *अुन्होंने अपने पत्रकी नकल आपको भेजी होगी। मुझे लिखना तो* बहुत है, लेकिन समय नहीं है। सुज्ञेषु किं बहुना।"

. . . को लिखा :

". . . ने आपको ब्यौरेवार लिखा होगा। मेरी रायमें तो बंबअी सरकारकी जिस ग्रामोद्योग-समितिमें आपने नाम दिया है, अुसमें सरकारका मार्गदर्शन देखते हुअे आप नाम दे ही नहीं सकते थे।

"साथ ही आपको चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ और तालीमी संघसे मिलकर अुनकी राय लेनी चाहिये थी। गुण-दोषों पर तो बहुत कुछ कहने लायक है, परन्तु अुसे छोड़ देता हूं। यदि आपके विचारोंमें मौलिक परिवर्तन हुआ हो तब तो दूसरा ही प्रश्न अुठेगा। परन्तु मैं मानता हूं कि अैसी बात नहीं है। मेरी राय है कि धोत्रेने बाला साहबको जो पत्र लिखा है, अुसमें आपको हस्ताक्षर करने चाहिये। अिस रिपोर्टके अनुसार सरकार कुछ भी काम शुरू करे, अुससे पहले, अुसे हमारी नीति स्पष्ट समझ लेनी चाहिये। मैंने तो भाअी . . . को भी लिखा है।

"आपकी तबीयत ठीक होगी। क्या शरीर पूरा काम दे सकता है ?"

. . . . को (हिन्दीमें) लिखा :

"तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। हिन्दुस्तानीमें लिखनेका अच्छा प्रयत्न है। क्या ही अच्छा होगा जब मैं अितना बंगलामें लिख सकूंगा। बंगला पाठ हमेशा चलता ही है। और आजकल बिसेन पढ़ाता है। प्रातःकालका भजन मनु भी बंगालीमें ही गाती है। देखें आखिरमें क्या होगा? . . . यहां गरमी तो खासी पड़ती है। खिड़कियों पर खसकी टट्टी लगा दी है। अिसलिअे सहनीय हो गअी है। मुझे अिस माहके आखिरमें देहली जाना होगा। कितना ठहरना पड़ेगा सो नहीं जानता हूं।

दीदीमणि*ने मुझे कुछ नहीं लिखा। बहुत दुःखित रहती है क्या? मेरा समय बचानेके लिअे कुछ नहीं लिखती है। अगर अैसा है तो कहो कि मैं अिस तरह समय बचाना नहीं चाहता हूं।"

* * *

. . . को अिस प्रकार लिखा :

"चि० . . . के लिअे मैं स्वयं कुछ नहीं कर सकता। पंडित जवाहरलाल बहुत शुद्ध व्यक्ति हैं। ये सारी अर्जियां गुण-दोषोंके आधार पर जांची जाती हैं। . . . के लिअे सिफारिशकी जरूरत नहीं रहेगी।"

* * *

. . . को (हिन्दीमें) लिखा :

"तुम्हारा खत मिला। अंग्रेजीमें क्यों? हिन्दुस्तानी नहीं जानते हैं तो मराठीमें लिख सकते थे। मैं तो दूर पड़ा हूं।"

* * *

चि० . . .

तुम्हारा २० ता० का पत्र मिला। विस्तृत अुत्तरकी राह देख रहा हूं। तुम्हारी भाषामें प्रेम टपकता रहता है, जो मैं तुम सबके

---

* दीदीमणिबहन — सतीशबाबूकी बड़ी लड़की। अुनके पति अेकाअेक बीमार पड़ गये और अुनका देहान्त हो गया। अुसीका अुल्लेख बापूजीने यहां किया है।

बारेमें अनुभव कर रहा हूं। (अुतना ही) तुम भी अनुभव करो तो मुझे कुछ भी न कहना पड़े। परन्तु तुम्हारे पत्रों परसे मुझे दूसरा ही आभास हुआ।

. . . को . . . के पास जाना ही चाहिये, यह मैं तुम्हारे पत्र परसे मानने लगा हूं।

* * *

चि० . . .

. . . मैं आम लोगोंकी सम्पत्ति हूं। अिस कारण अुस संपत्तिके (मेरे) अंतरकी भीतर और बाहरसे जांच करनेका आम जनताको पूरा अधिकार है। अितने पर भी अिस तरह यदि बालकी खाल निकालने लगें तो परेशानी पैदा होगी। . . . के बारेमें दूसरी बात है। वे तो मेरे साथ काम करनेवाले हैं, मुझसे मार्गदर्शन लेनेवाले हैं। आज अुन्हें मेरे व्यवहार अथवा विचारोंका कोअी भाग खटके, तो अुसकी पूरी चर्चा करनेका अुन्हें अधिकार होना ही चाहिये। यहां दुःखका कारण यह है कि लोगोंकी और मेरी विचारधारा अलग दिखाअी देती है। अिसलिअे अिस विचारके आधार पर बने हुअे आचार भी अलग होंगे और वे खटकेंगे। मैं कह सकता हूं कि मेरे ये विचार और आचार आजके नहीं, पचपन वर्ष पुराने हैं। यह हो सकता है कि अिन्हें मैं स्पष्ट रूपमें अपने लेखोंमें या वाणीमें रख न सका होअूं। लिखा ही है, यह मैं नहीं कहता। क्योंकि अपने सारे लेख पढ़नेका समय बचा सकूं तो प्रसंगोपात्त लिखे गये वाक्य मैं अुद्धृत कर सकता हूं। लेकिन अिसमें पड़नेसे क्या लाभ? विचारोंकी चर्चा . . . के और मेरे बीच होती रहती है। चर्चाको रोकनेका कोअी कारण नहीं। अुस चर्चासे अुकता जानेका भी कोअी कारण नहीं है। यह चर्चा होनेसे मेरी विचारसरणीमें कदाचित् भूल होगी तो वह सुधर जायगी; अथवा किसीमें सुधारकी गुंजाअिश ही नहीं होगी, तो दोनों विचार-भेद अथवा कदाचित् आचार-भेदको सहन कर लेंगे। मुझे आशा है कि अैसा परिणाम नहीं आयेगा। अेक अथवा दूसरा भूल सुधार लेगा और दोनों अेक ही जगह पर रहेंगे।

* * *

. . . को (हिन्दीमें) लिखा:

"तुम्हारे खत मिले। अब मैं समझा हूं कि निर्मलबाबू अेक दिनके बाद आयेंगे। जब आयेंगे तब तो वहांका पूरा चित्र (नोआखालीका) मेरे सामने आ जायेगा। (बंगालकी अंधाधुंधीका) मुझे यह डर लग रहा है कि मेरी तैयारी देहली जानेकी हो रही है। शायद मुझे ३० तारीखको जाना पड़ेगा। देखता हूं कि क्या होता है। मेरी अुम्मीद तो अैसी है कि नोआखालीमें सब शान्ति रहेगी।

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। अच्छी ही रखनी चाहिये। अिस गरमीके दिनोंमें पानीका प्रबंध वहां कैसे रहता होगा?"

*　　　*　　　*

अेक बीमार नौजवान पुत्रकी माताको अिस प्रकार लिखा:

"... तुम्हारा दुःखद पत्र मिला। तुम्हें और ... को अितना दुःख अुठाना पड़ा, अिसका मुझे आश्चर्य होता है। परन्तु सुख-दुःखका विचार हमें करना ही नहीं चाहिये। यह चीज बताती है कि जिसका मेरे साथ पाला पड़ा है अुसके लिअे सेवाग्राम सर्वश्रेष्ठ है। जिसकी वहीं जीने अथवा मरनेकी टेक हो वही तरेगा, अैसा न हो तो डूबेगा। मैंने दो तार तो दिये हैं। मामाको बुला लिया, यह ठीक किया या नहीं सो तो भगवान जाने। आ गये हों तो आश्वासन मिलेगा। मुझे लिखते रहना और रामनाम रटना।"

आज खानेके बादका सारा समय पत्र लिखवानेमें ही गया। पत्र-व्यवहारका बहुत काम निबटा दिया।

-शामको प्रार्थनामें बापूजीने प्रवचन किया। जमीयत अिस्लामिया कान्फरेंसमें गये। मुझे परदेवाली बहनोंके पास ले गये, यद्यपि बापूजीको यह बहुत अच्छा नहीं लगा। (मुसलमानोंमें बहनें बिना परदेके नहीं बैठ सकतीं, अिसलिअे मुझे वहां परदेमें ले गये।) दूसरेके यहां जाते हैं अिसलिअे अैसी मुश्किलमें पड़ जाते हैं। परन्तु अेक तरहसे ठीक ही हुआ। क्योंकि वहां बहनोंसे मेरा मिलना हुआ और बहनोंने मुझसे हिन्दुओंके किये हुअे अत्याचारोंकी बातें कहीं। अुसमें मुझे अतिशयोक्ति भी लगी। अैसा नहीं लगा कि अिन लोगोंके मनसे अभी पूरा जहर निकल गया है। मैंने तो अन्तमें अेक ही बात कही कि, "आपमें से कुछ बहनोंको नोआखाली देखने जाना

चाहिये। फिर आप अपने मनसे चर्चा कीजिये। आपसे भी ज्यादा जुल्म नोआखालीमें हिन्दू बहनों पर हुअे हैं। अुन्हें आप देखें तो आपको पता चले। फिर भी मैं हिन्दुओंका वचाव करनेके लिअे यह नहीं कहती। मैं मानती हूं कि हिन्दुओंने जो अन्याय यहां किया है वह नहीं करना चाहिये था। परन्तु आप जिस ढंगसे वचाव करती हैं, वह तटस्थ वचाव नहीं है।"

कुछ वहनोंको मेरा जवाव जरा भी पसन्द नहीं आया और वे वहीं शोर मचाने लगीं। परन्तु अितनेमें वापूजीके अुठनेका समय हो जानेसे मुझे वुलाया गया। अिन भाअियोंने वापूजीको कुछ भी वोलनेके लिअे नहीं कहा। वापूजीको वोलनेका मौका दिया होता तो बहुत अच्छा होता।

मोटरमें मैंने वापूजीसे वहनोंके साथ हुअी अपनी बातें कहीं। बापूजीको मेरा जवाव पसन्द आया। अुन्होंने कहा, "मेरा खयाल था कि मैं दो शब्द कह सकूंगा। परन्तु ये लोग भी जानते हैं कि मैं साफ साफ सुना दूंगा। अभी भी दगा कहां कम हुआ है? परन्तु अिस तरह ये अपनी जातिका नाश कर देंगे। और मुसलमान अगर यही रंगढंग रखेंगे तो हिन्दुस्तानमें नहीं रह सकेंगे, यह भी अुतनी ही सही बात है।"

वहांसे लौटनेके बाद डॉ० सैयद महमूद साहबके साथ आजकी बातें कीं। बापूजीने कहा: "अुस दिन आपको खूब सावधान रहना चाहिये। अिन सब भाअियों या वहनोंके दिलोंमें अभी तक मैल भरा है। अिसलिअे अुसे निकालनेकी कोशिश करनी चाहिये।"

रातको सोते समय फिर पंडितजीका तार आया। अिसलिअे अैसा लगता है कि ३० तारीखको तो दिल्ली जाना ही पड़ेगा। आज रातको भी अुतनी ही सख्त गरमी लग रही है, यद्यपि हम गंगा-मैयाके किनारे ही सोते हैं। रातको किनारे पर जो छोटी-सी नाव पड़ी है अुसके डेक पर टहले।

गांधी कैम्प, पटना,
२७–४–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद वंगाली पाठ। राजकुमारी वहन, सरदार दादा और भाअी साहबके नाम अितनी खबर देनेको कि हम दिल्ली आनेवाले हैं पत्र लिखवाये। देवभाअीसे रद्दी कागजोंसे ही फाअिलें बनानेको और बोले, 'खरीद कर न ली जायं।' . . . को सेवाग्रामके लिअे आदिकी योजनायें (हिन्दीमें) लिखवाअीं:

" १. जमीन ग्रामसंस्थाकी मानी जायगी और हाअुसिंग सोसायटीके ताबेमें होगी। मकानोंका काम अिसके मातहत्त चलाना चाहिये। जो शेअर-होल्डर्स चंदा देकर सदस्य बनेंगे और दूसरी शर्तें भी मानेंगे वे, चाहे अेक रुपया भी चंदा क्यों न हो, चंदा देंगे और अुन्हें ही मकान बनानेका हक मिलेगा। पहले कोऑपरेटिव बैंक बनावें और काम शुरू करें, लेकिन यह बैंक व्यापारी ढंगकी नहीं होगी। कुछ लोन लोगोंसे जमा हो। अुन्हें ३% सूद देंगे। ज्यादा रकम लगे तो वह मुझसे मांग सकती है। हाअुसिंग सोसायटीके कार्यकर्ता ट्रस्टी बनकर काम करेंगे। व्यापारी ढंगसे नफा नहीं अुठायेंगे।

मो० क० गांधी

२. जो नयी जमीन खरीदी है अुसके प्लॉट बनाकर बेचना शायद ठीक नहीं। यह व्यापारी ढंग होगा। किराया कमानेके लिअे भी मकान नहीं बनने चाहिये। तब तक लगान देना पड़े तो भी कोअी हरज नहीं। पहले अिन्तजाम ठीक बनाना है। जब तक यह काम ट्रस्टीकी पद्धतिसे नहीं होगा, तब तक काम रुका रहे। पैसा कमाना यह धोरण (दृष्टि) अिसमें नहीं है। दरमियान कोऑपरेटिव खेतीका काम कर सकती है।

मो० क० गांधी

३. मालगुजारी आदिका काम ग्रामसंस्थाके नामसे चलने दें। अुसमें से खर्चके लिअे जो रुपये लेने हैं वे लेनेमें कोअी हर्ज नहीं।

मो० क० गांधी

अितना याद रखना आवश्यक है कि मेरा सब अभिप्राय अेकतरफी है। . . . दूसरी तरफ मैंने सुना नहीं है।

मेरी कल्पना यह है कि सारे ग्रामको आरोग्यस्थान बनाना चाहिये। अस्पतालको अिसमें कोअी स्थान नहीं है। व्याधिको रोकनेके नामसे जो हो सकता है अुससे भी संतुष्ट रहना। मेरी कल्पनामें आजकलके डॉक्टरोंको स्थान नहीं है। गांव-खेतोंमें जो काष्ठ औषधि होती हैं अुसीसे संतुष्ट रहना। रामनाम रामबाण दवा है।

२७-४-'४७ मो० क० गांधी"

अेक विधवा वहनको अुसका पति गुजर जाने पर आश्वासनके रूपमें लिखा :

"जन्म और मृत्यु तो अेक सिक्केके दो पहलू हैं। तुमने शांति रखी, अिससे मैं खुश हुआ। लड़कियां शांत होंगी। तुम्हें अब अुनके पीछे लोकोपयोगी कामोंमें लगकर अुसके द्वारा अीश्वरकी सेवा करनी चाहिये।"

बापूजीने आज बहुत समयके बाद पूरा भोजन लिया। ३ खाखरे, ८ औंस दूध और थोड़ेसे अंगूर। सुमित्रा आज शामको जानेवाली है, अिसलिअे यथासंभव वापूजीकी सारी ही सेवा वह कर रही है। वह चली जायगी तो घर बहुत सूना हो जायगा।

दोपहरको कुछ परदेवाली बहनें आअीं। मृदुलाबहन तो दूसरे गांव गअी हैं। अिसलिअे अिन सब मुलाकातोंका प्रबंध भी मुझीको करना पड़ता है। वापूजीने अुनसे कहा :

"अब हम अैसी आशा रखें कि हिन्दुस्तान थोड़े ही समयमें आजाद होगा। बहनें अिरादा कर लें तो अीश्वरकी दी हुअी अद्‌भुत शक्तिका दर्शन करा सकती हैं। अिसके लिअे आपको हमेशा प्रार्थना करनी चाहिये। परंतु आज तो प्रार्थना मानो केवल बूढ़ी माताओं या निवृत्त जीवन बितानेवालोंके लिअे ही शौककी चीज हो गअी है। और मेरे पास अैसे अुदाहरण भी मौजूद हैं कि कुछ युवक-युवतियोंको प्रार्थना या अीश्वर-भजन करना या अिसका अुपदेश सुनना हास्यजनक और तुच्छ लगता है। अिसीलिअे आज हमारी यह दुर्दशा हो रही है। परन्तु यदि प्रार्थनामें भरे हुअे रहस्यको समझा जा सके, तो अिस अद्‌भुत शक्तिका पता लग सकता है। यदि हम प्रार्थना द्वारा अपनी आजादी लेंगे तो वह टिक सकेगी। परन्तु आध्यात्मिक स्त्री-पुरुषोंको यह भी जान लेना चाहिये कि अहिंसाका रहस्य क्या है। अगर हमारी अहिंसा कमजोरोंकी अहिंसा होगी, तो समझ लीजिये कि अैसी अहिंसासे आजादी टिक नहीं सकेगी। और अुससे यह भी साबित होगा कि हथियारोंसे भी हम अपनी रक्षा नहीं कर सकते। क्योंकि हथियार हमारे पास हैं ही नहीं, और हथियार कैसे चलाये जायं अिसकी कला भी हमने नहीं सीखी है। अैसे समय हमारे पास अेक वेजोड़ और अद्वितीय हथियार है और वह है सत्य और अहिंसाका हथियार। केवल आजादी हासिल करनेके लिअे ही यह हथियार काममें नहीं लेना है, परन्तु यदि आजादीको टिकाये रखना हो

तो भी अहिंसाको अपनानेके सिवा दूसरा कोअी चारा नहीं है। जो हमें अपने दुश्मन समझते हैं अुन्हें यदि जीतना हो, तो प्रेम और अहिंसासे जीत सकते हैं। यह काम वहनें बड़ी आसानीसे कर सकती हैं। मैं अेक सादी मिसाल दूं। आप अपनी १४–१५ या १६ वर्षकी लड़कीको किसी अनजान घरमें व्याह देते हैं, अनजान आदमीको सौंप देते हैं और वह लड़की अुस घरकी लड़की जैसी वन जाती है, अथवा थोड़े ही दिनोंमें अुस अनजान घरकी मालकिन वन सकती है। अिसका क्या कारण है? अुसे भगवानने प्रेमपूर्ण हृदय दिया है। अपने स्नेह, प्रेम और अहिंसासे वह सबको जीत सकती है। यह हम रोजके व्यवहारमें देखते हैं। तो अिस वड़े समाजमें यदि चाहें तो आप हिन्दू वहनोंकी सहेलियां वन सकती हैं। अुनके गुण आप अपनायेंगी तो आपके गुण वे जरूर अपनायेंगी। वहनोंमें त्याग करनेकी अद्भुत शक्ति है।

"जीवनकी अलग अलग हालतोंमें और अपने देशको आगे लानेके लिअे, मजबूत बनानेके लिअे, अपनापन भूल कर वीरतासे प्रार्थना करते करते यदि मरनेका मौका आ जाय तो मरना सीखिये। और मरनेकी हिम्मत पैदा करनेके लिअे प्रार्थना मरनेकी कला साधनेका पहला और आखिरी मंत्र है। अिसमें पूर्ण श्रद्धाकी जरूरत है। श्रद्धाके विना सत्याग्रही सफल होता ही नहीं। अीश्वरको भले कोअी राम कहे, कोअी रहीम कहे, कोअी गॉड कहे अथवा अल्लाह कहे, किसी भी नामसे पुकारे, परन्तु अुसका कानून तो हमेशा अेक रहता है।

"मेरी अिन वातों पर आप विचार कीजिये। आप परदा करके आअी हैं। अिस परदेका असली मतलव तो यह है कि आप काम, क्रोध, मोहके विरुद्ध परदा करें। अर्थात् अपने मनको वशमें रखें। यह वाहरी परदा तो केवल ढोंग है। मन मैला हो और वाहर परदा रखें, तो अुसका कोअी अर्थ नहीं।"

चार वजे आजाद हिन्द फौजके लोगोंसे वातें करते हुअे वापूजी बोले:

"आजाद हिन्द फौजका नाम अहिंसक आजाद हिन्द फौज रखना चाहिये न? (हंसते हंसते) क्योंकि मुझसे आप कोअी दूसरी वात नहीं सुन सकेंगे। सुभाषवावू तो मेरे पुत्रके समान थे। अुनके और मेरे विचारोंमें भले ही अन्तर पड़ा हो, लेकिन अुनकी कार्यशक्ति और देशप्रेमके लिअे मेरा

सिर अुनके सामने झुकता है। पिछले ३० वर्षोंसे कांग्रेसने जिस सिद्धान्तको अपनाया है, अुसके द्वारा ही आजादी हासिल की जा सकेगी। हमें किसीको अपना दुश्मन मानना ही नहीं चाहिये। दुश्मनी और बुराअियोंको हमें छोड़ना ही होगा और स्थितप्रज्ञ बनना होगा। अैसा जब मैं कहता हूं तब आप अपने मनमें शायद यह कहेंगे कि हम कहां महात्मा हैं? परन्तु महात्माओंके लिअे ही सिद्धान्त हो, सो बात नहीं है। किसी भी मनुष्यको सुखी होना हो तो अिस सिद्धान्तको जीवनमें ओतप्रोत किये बिना छुटकारा ही नहीं। विदेशोंमें आप हथियारोंसे लड़े। परन्तु अुसका जो परिणाम आया, वह भी आपने देख लिया न? अुससे आपको कोअी फायदा नहीं हुआ। हां, आपने बहादुरीसे अनेक कष्ट सहन किये। परन्तु नेताजीने भी कहा है कि भारतमें तो कांग्रेसमें रहकर ही काम करना है। तो आप जिस ढंगसे अपनी फौजकी बर्मामें हथियारोंके द्वारा रक्षा करते थे और देशकी आजादी प्राप्त करनेके लिअे तैयारी करते थे, अुसी तरह अब आप प्रेम और अहिंसा द्वारा साम्प्रदायिकताका भेद मिटाअिये। लोगोंको आप अिस तरह तैयार कीजिये कि वे किसी भी तरहके जातपांतके भेदभावको भूलकर यह समझने लगें कि हम सब अेक ही देशके भाअी-बहन हैं; प्रत्येक पुरुष यह समझे कि हरअेक स्त्री मेरी माता, बहन या लड़की है। और अिस तरह नेताजी द्वारा शुरू की गअी तपस्याको पूरा करनेकी कोशिश करें। आजाद हिन्द फौजमें नेताजीने जो अेक अपूर्व जीवन पूरा है वह यह है कि अिस फौजमें किसी भी प्रकारका भेदभाव नहीं है। तो आप अिस नीतिका घर घरमें विकास कीजिये।

"आप अितना समझ लीजिये कि तलवारकी ताकत बढ़ानेके बजाय आत्मबलकी ताकत बढ़ाना हजार गुना मुश्किल है।

"मनुष्य और पशुओंके आहार, निद्रा वगैरामें तो कोअी फर्क नहीं है। फिर भी हमारे लिअे अिस समय दो ही रास्ते रह गये हैं। हमें तय करना है कि हम पशुके जैसा जीवन जीना पसन्द करेंगे या मनुष्यके जैसा? हिन्दुस्तानमें हमारे यहां अनेक सुन्दर धार्मिक शास्त्र विद्यमान हैं। तो भी मुझे कहने दीजिये कि यह तो लगभग अैसी ही बात है कि 'कथा सुन सुन फटे कान, तो भी न आया ब्रह्मज्ञान'। (आचरणमें कुछ भी नहीं ला सकते। मैं अनेक अनुभवों परसे नम्रतापूर्वक कहता हूं कि अहिंसाका मार्ग [illegible]का मार्ग है। कविने गाया है कि हरिका मार्ग शूरवीरोंका मार्ग है। वह हरि

कौन है? वह कोअी हाथ-पैरवाला मानव नहीं है। सत्य और अहिंसाका मार्ग वीरोंका मार्ग है। और आपमें अैसी वीरोंकी ताकत होनी चाहिये। जिससे आप हिन्दुस्तानके गांव-गांवमें, अेक अेक कोनेमें नेताजीके नामको अमर पद दे सकेंगे। आप अुनकी कीर्तिको युगों तक जीवित रखेंगे, तो नेताजी जीवित ही रहेंगे। भले वे देहधारी न हों। देहधारी मनुष्य ही जीवित है और मरा हुआ मनुष्य जीवित नहीं है, यह गलत बात है। जिनका नाम अमर है, जिनकी सेवा अनोखी है, जो गरीबोंकी मददको दौड़ते हैं, वे मरने पर भी जीवित ही हैं।"

बापूजीको आज बहुत बोलना पड़ा, अिसलिअे थक गये हैं। प्रार्थनामें अुनकी आवाज बहुत धीमी पड़ गअी थी। गरमी भी रोज खूब पड़ रही है। दिल्लीमें तो यहांसे भी ज्यादा होगी।

प्रार्थना-प्रवचनमें 'राम कहो, रहमान कहो' भजनका अुल्लेख करते हुअे बापूजीने कहा:

"राम-गॉड-अल्लाह किसी भी नामसे अीश्वरको पुकारिये। परन्तु अीश्वर ही मनुष्यके लिअे भक्ति करने योग्य है। हमने अैसा मान लिया है कि अीश्वरको हम तरह तरहके भोग अर्पण करें तो वह खुश होता है। अिस प्रकार मनुष्यने अपने-आपको धोखा देनेकी कोअी हद ही नहीं रखी है।

"कल मुझे जमीयते-अिस्लामकी बैठकमें हाजिर रहनेका निमंत्रण था, अिसलिअे मैं वहां गया था और आपके सामने कोअी बात नहीं कर सका था।

"मुझे वहां बताया गया कि जमीयतके लोग खुदाके सच्चे बन्दे हैं। अुनका रहन-सहन संयमपूर्ण और सादा है और वे अपने मुसलमान भाअियों और बहनोंको आत्मशुद्धि और आत्मज्ञानका संदेश देना चाहते हैं। धर्मकी रक्षा तलवारसे कभी नहीं हुअी। अुसकी रक्षा तो हमेशा खुदाके बंदोंने ही की है। मैं कल अुनकी सभामें गया। जिससे कुछ लोगोंको अैसा लगा कि मैं मुसलमानोंकी भावनाको संतोष देने जा रहा हूं। अिसका जवाब मुझे तो अितना ही देना है कि अैसी बातोंमें रही बेवकूफीकी जड़में बातें करने-वालोंके दिलमें बसा हुआ अभिमान ही है। आपने अभी-अभी भजन सुना कि रामका भक्त कैसा होना चाहिये। रामके भक्तको अैसा अभिमान होना ही नहीं चाहिये। रामके भक्तको तो जगतमें जितने भी जीवजन्तु हैं, अुन

सब पर प्रेम ही रखना चाहिये। हिन्दू धर्मका अुद्धार अुसीसे होगा। परंतु यह बात केवल हिन्दू धर्म पर ही लागू नहीं होती। किसी भी धर्मका अुद्धार करना हो, अुसे अूंचा अुठाना हो, तो विश्वव्यापी प्रेम ही अिसका अेकमात्र मार्ग है।"

प्रार्थनासे आकर बापूजीने मौन लिया और खूब थकावट होनेके कारण सिर पर गीला कपड़ा रखवाकर २० मिनट आराम किया। शरीर थोड़ा गरम लगता था। मैंने थोड़ी देर पैर दबाये। परन्तु मुझे रातको सोनेमें देर न हो, अिसके लिअे बापूजीने मेरा काम जल्दी पूरा करनेको कहा और पैर दबानेसे मना कर दिया। यह मुझे अच्छा न लगा। परन्तु बापूजीकी तबीयत अच्छी नहीं है, अिसलिअे मैं कुछ न बोली। थोड़ी देरमें सुमी आअी तो अुसे बैठाया। वह आज रातको १० बजे गयी। बापूजी सो गये हैं। मैं अिस डायरीकी आखिरी लकीर लिख रही हूं और घड़ी १०-३० बजा रही है। नहाकर मैं भी सो जाअूंगी।

निर्मलबाबूके जानेके बाद बापूजी पर दूसरे कामोंका बोझ खूब रहता है और डाकका ढेर हो जाता है।

गांधी कैम्प, पटना,
२८-४-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। बापूजीने मुझे गीतापाठ कराया और बंगाली पाठ किया। थोड़ी देर आराम करके यहांकी लीगके मंत्रीको पत्र लिखा:

"... मुसलमानोंको भारतमें रहना हो तो वे भारतको अपना वतन, अपना देश मानकर आरामसे रह सकते हैं। और अैसे लोगोंकी रक्षा करना सरकारका फर्ज होगा। परन्तु अिसके साथ मुसलमान भाअियोंको भी अपना फर्ज समझना होगा। यदि वे मनमें भी हिन्दुओंको धिक्कारेंगे तो अुसका परिणाम ४॥ करोड़ मुसलमानोंको भोगना होगा, यह भी अुतनी ही सच्ची बात है। मुझे नम्रतापूर्वक अितना कहना ही चाहिये कि मेरे पास अैसी शिकायतें आअी हैं कि जहां मुसलमानोंका बहुमत है वहां वे बिहारके अल्पसंख्यक हिन्दुओंको तंग करते हैं, और अिसमें अन्य मुसलमानोंकी सहानुभूति है। यह बात सच हो तो अुसका परिणाम मैं अच्छा नहीं देखता।"

आज सोमवार है, अिसलिअे बापूजीकी मुलाकातें बिलकुल बन्द करा दी हैं। बापूजी बोल बोलकर बहुत थक जाते हैं। ब्लडप्रेशर भी रहता है। अिसलिअे प्रति सप्ताह मुलाकातियोंका आना रोकनेकी व्यवस्था कर दी गयी है। फिर भी कोअी न कोअी आते ही रहते हैं। आज यहांके थोड़ेसे विद्यार्थी आये। अुन्होंने कुछ प्रश्न पूछे। अिन सब प्रश्नोंका अेक प्रश्न बनाकर बापूजीने अुनके लिअे थोड़ासा लिखकर दिया :

"हमारा आलस्य मिट जाय तो हम सच्चे समाजवादी माने जायेंगे। परन्तु अभी तक हमारा आलस्य मिटा नहीं है। आपसे पूछूं तो मुझे जरूर यह अुत्तर मिलेगा कि पंद्रहों विद्यार्थियोंके घर पर नौकर हैं।"

सबने जवाब दिया कि हां, अेक नौकर तो हमारे यहां है। बापूजी और सब विद्यार्थी हंस पड़े। बापूजीने लिखा :

"तुम अपने घरमें ही अपना काम हाथसे नहीं करते और दूसरोंकी सेवा करना चाहते हो और अुसे समाजवाद कहते हो, यह मेरी समझमें नहीं आता। मेरी सलाह मानो तो मैं कहूंगा कि विद्यार्थी-अवस्थामें विद्यार्थियोंको किसी भी 'वाद' में नहीं पड़ना चाहिये। प्रत्येक वादके बारेमें जरूर पढ़ें, विचार करें और जितना संभव हो अुसका अमल करें। परन्तु विद्यार्थियोंको अुसके नेता बननेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये। समाजसे शोषण और हिंसाका नाश करना हो, तो शरीर-श्रम और मेहनत-मजदूरी करनी ही चाहिये। और यह चीज सर्वमान्य और स्वाभाविक हो जानी चाहिये। हमारे गांव सुखी और स्वावलंबी माने जाते थे। लेकिन आज वहां बेकारी बढ़ गअी है। अिसका कारण हमारी गुलामी और अूंच-नीच तथा जातपांतका भेदभाव है।

"हमारी राजनीतिक गुलामीका तो लगभग अंत आ गया है, अिसलिअे हमें अभी ही सावधान होनेकी जरूरत है। और यह काम विद्यार्थी बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं। अुदाहरणार्थ : (१) तुम सुबह अुठकर अपना बिस्तर खुद अुठा लो, (२) तुम नाश्ता और दूध वगैरा लेते हो तो तुम्हारी मां या और कोअी तैयार करके तुम्हें दे, अिसका अिंतजार किये बिना तुम अुस काममें मदद करो, (३) घरके झाड़ने-बुहारनेमें सहायता दो, (४) अपने कपड़े खुद धोओ, (५) अपनी माताओंको रसोअीमें, बरतन मलनेमें

मदद करो, (६) रोज नियमित कातकर अपने कपड़े खुद बनाओ, (७) शालाओंमें काम आनेवाली अपनी पुस्तकें साफ और व्यवस्थित रखो। नोटबुकके अुपयोगमें भरसक किफायत करो, (८) पचास रुपयेकी फाअुन्टेन पेनके स्थान पर दो आनेकी स्याही-कलमसे काम चलाना सीखो।

"अैसे अनेक नियम अपने जीवनमें अपनाओ, तो तुम्हें किसी भी वादकी माथापच्चीमें नहीं पड़ना पड़ेगा। देशका प्रत्येक विद्यार्थी अितना कर ले, तो मुझे यकीन है कि माता-पिताका बोझ बहुत कम हो जायगा और हम अपने आप समाजवादी कहलाने लगेंगे। परन्तु मेरी बातें तुम्हारे गले अुतरेंगी या नहीं, अिसमें मुझे शंका है। फिर भी घर जाकर विचार करना कि अेक ७८ वर्षके अनुभवी बूढ़ेने मौनके दिन लिखकर हमें जो दो शब्द कहे हैं अुनमें कुछ तथ्य है या नहीं?"

दोपहरको सुशीलाबहन, राजाजी, सरदार दादा, किशोरलाल काका, ब्रजकिशनजी वगैराके पत्र आये सो पढ़े।

भोजनमें दोपहरको बापूजीने केवल आठ औंस दूध और थोड़ेसे अंगूर लिये थे। असह्य गरमीके कारण दोपहरको लगभग अितनी ही खुराक लेते हैं। शामको ४ बजे मोसम्बीका रस लिया और प्रवचन लिखा:

"३० तारीखको सवेरे मेरा दिल्ली जाना तय हुआ है। १ मअीको दिल्लीमें कांग्रेसकी कार्यसमितिकी बैठक शुरू होगी, अिसलिअे अुसमें पंडित नेहरू और आचार्य कृपालानीने मुझे आग्रहपूर्वक बुलाया है। मुझे आप सबको छोड़कर यहांसे जानेमें दुःख होता है। जब तक मुसलमान खुले दिलसे यह न कहें कि आप यहांसे जाअिये और हिन्दू मुझे निर्भय न कर दें कि हम अपने प्राण देकर भी मुसलमानोंकी रक्षा करेंगे, तब तक मुझे बिहार नहीं छोड़ना था। क्योंकि नोआखाली और बिहार दोनों जगहोंके लिअे मेरा तो अेक ही मंत्र है: 'करेंगे या मरेंगे'। मेरी आत्मा मुझे आदेश देती है कि अल्पसंख्यक जातिके लिअे तू अपनेको समर्पण कर दे। अिसलिअे दोनों स्थानोंके हिन्दू और मुसलमान अपना वैरभाव भूल जायं, तो मैं अपना नया जन्म हुआ मानूंगा। परन्तु अिस कड़ी परीक्षामें से आखिर क्या निकलेगा, यह तो अीश्वर ही जानता है। मनुष्य तो यथाशक्ति प्रयत्न कर सकता है और अधिकसे अधिक प्रयत्न करते हुअे मृत्युका आलिंगन कर सकता है।

"अीश्वर सर्व-समर्थ है। वही सर्वस्व है; हम तो केवल शून्य हैं। यहां मैं जो काम करता हूं, अुसी कामके लिअे दिल्ली जा रहा हूं; और थोड़े ही समयमें फिर यहां आपकी सेवामें अुपस्थित हो जाअूंगा।

"मेरे पास अब भी अैसे पत्र आते हैं कि मैंने मुसलमानोंके साथ दोस्ती करके हिन्दुओंके हितोंको नुकसान पहुंचाया है। अिस प्रकारके पत्रोंसे मुझे तो आश्चर्य ही होता है। परन्तु मैं मुसलमानोंका दोस्त बनकर ही सच्चा हिन्दू बना हूं। और अिसी तरह मैंने हिन्दुओं और हिन्दू धर्मकी सच्ची सेवा की है। परन्तु यदि साठ वर्षकी अपनी सार्वजनिक सेवाओंसे भी लोगोंको मैं न बता सका होअूं, तो केवल शब्दोंसे किस तरह बता सकूंगा? सच्चा धर्म तो यही है कि मनुष्योंको सबके साथ मैत्री रखना चाहिये और सबकी सेवा करनी चाहिये। यह मैं ठेठ बचपनसे अर्थात् अपनी मांकी गोदसे सीखा हूं। वैसे तो 'मजहब नहीं सिखाता आपसमें वैर रखना' यह पंक्ति दोहरानेके सिवा मेरे पास और कोअी बचाव नहीं है। मित्रोंके साथ मैत्री रखना आसान है, परन्तु जो अपनेको हमारा दुश्मन समझे अुसके साथ मैत्री रखना ही सत्यधर्मका मर्म है। बाकी सब मित्रता तो दुनियावी है।"

प्रार्थनासे आनेके बाद बापूजीका मौन छूटा। आकर अुन्होंने नीबूका पानी लिया। खूब थक गये थे। थोड़ी देर टहले। आजकी गरमी भी असह्य है।

९-३० के बाद बापूजीकी सोनेकी तैयारी हुअी। परन्तु आज कातना रह गया। मुझे याद तो था, परन्तु तबीयत अच्छी न होनेसे मैंने बापूजीको याद नहीं दिलाया। बापूजी सो रहे थे, लेकिन अुठे। मुझसे कहने लगे:

"चरखेको हम भूल ही कैसे सकते हैं? कताअीकी प्रवृत्तिका अर्थ यह है कि हम सब समान हैं। चरखेसे हमें अेक अनोखा पाठ यह मिलता है कि चालीस करोड़के साथ अेक होकर अुनके अेक तारकी तरह हमें रहना है। अुसमें किसी मालिक या नौकरकी खींचतान, जो दुनियामें अिस समय चल रही है, रहने ही न पायेगी। आज हममें अूंच-नीचका कितना भेदभाव है? परन्तु चरखा हमें सावधान करता है। अिसलिअे अिस देवताकी पूजा किये बगैर कैसे रहा जा सकता है?"

बापूजीने कातते कातते मुझसे यह बात कही, अिसलिअे सोना ११ बजे बाद ही हुआ।

गांधी कैम्प, पटना,
२९–४–'४७

प्रार्थनाके बाद बंगाली पाठ। आज बंगाली पाठमें बापूजीने बंगालीके १ पर १०० बार हाथ घुमाया। फिर कुछ पत्र लिखे।

. . . को पत्रमें लिखा:

"तुम्हारा १४ तारीखका पत्र कल मिला। प्रलयकाल किसने देखा है? किसी दिन वह भी आयेगा। अुस समय अेक-दो आदमी रह जायेंगे या सभी चले जायेंगे, अिसकी चिंता हम क्यों करें? हम अपना प्रतिक्षणका धर्म पालन करते रहें, तो न्यायाधीशके सामने खड़े रह सकेंगे। . . . अब तुम्हारे पास जल्दीसे जल्दी आयेगा, अैसा मैं मानता हूं। . . . तुम अुबले हुअे साग और फलों पर ही रह सको तो मैं तो प्रसन्न ही होअूंगा। घी, तेल और मक्खनके बगैर आसानीसे काम चलाया जा सकता है, क्योंकि तुम दही लेते हो। यदि दही काफी मात्रामें लिया जाता हो और साथमें साग, फल, दूध हों तो सम्पूर्ण भोजन हो गया। अिससे शक्ति बनी रहनी चाहिये। अिससे मस्तिष्क भी बिलकुल साफ रहता है। साग और फलोंका चुनाव ठीक ठीक होना चाहिये। सूखा मेवा लेते हो? और लेते हो तो क्या क्या? मुझे ब्यौरेवार लिखोगे तो अच्छा लगेगा। क्योंकि प्राकृतिक चिकित्सामें मैं खास तौर पर दिलचस्पी लेता हूं। अिस खुराकसे तुम्हारे चेहरे पर भी फर्क पड़ना ही चाहिये। . . ."

घूमते समय बापूजीने आंखें बन्द कर ली थीं। नोआखालीकी और दूसरी पुरानी बातें करते हुअे बापूजी मुझसे बोले:

"मैं अतिशयोक्ति और झूठके बीच घिर गया हूं। ढूंढ़ने पर भी अभी तक सत्य नहीं मिला है। परन्तु अितना तो लगता है कि मैं ीश्वर और सत्यके अधिक निकट पहुंचा हूं। लेकिन अिससे मेरी कितनी ही पुरानी दोस्तियां टूट भी गअी हैं। फिर भी मुझे अिसका बिलकुल अफसोस नहीं होता। यह चीज मैं ीश्वरके समीप जानेकी जो बातें करता हूं अुनका सबूत है। अिसीलिअे मैं सबको साफ कह सकता हूं और लिख सकता हूं। जिन ११ व्रतोंका मैंने अनुमोदन किया है, अुन्हें मैं पूरी तरह आचरणमें ला

सका हूं। यह ६० वर्षकी तपस्याका परिणाम है। अिसमें निमित्त तुम बनी हो। वर्षोंसे जिस पवित्रता और सत्यके दर्शनके लिअे मैं तरस रहा था, अुसकी झांकी मैंने अिस यज्ञमें की है। और अिसमें तुमने पूरा योग दिया है। फिर भी तुम्हारी अुम्र अितनी छोटी है कि आज अिस यज्ञका परिणाम तुम अनुभव नहीं कर सकतीं। तुम्हारी डायरी मैं रोज पढ़ता हूं, तब मुझे महादेवका स्मरण सहज ही हो आता है। आजकल तुम जो लिखती हो, जो अध्ययन करती हो और यज्ञको समझ सकनेकी जो शक्ति रखती हो, अुसे देखकर खयाल होता है कि महादेव होते तो यह लड़की कुछ दूसरी ही तरहसे विकसित होती। मैं तुम्हें संतोषजनक समय नहीं दे सकता। कुछ शक्तियोंमें महादेव मुझसे बहुत बढ़े-चढ़े थे। आज कोअी घूमते समय बातें करनेवाले नहीं आये, अिसलिअे तुमसे अितनी बातें करनेका समय मिल गया।"

बापूजीने बहुत समय बाद आज मुझे अपने मनकी बात कही। महादेव काकाको भी बापूजीने याद किया। और अुनकी शक्ति बापूजीसे भी कुछ बातोंमें अधिक थी, यह वाक्य बोलते समय वातावरण और भी गंभीर बन गया।

मालिशमें बापूजी कोअी आध घंटा सो गये। अतिशय थक गये हैं। भोजनमें बहुत दिनोंके बाद आज दो खाखरे, आठ औंस दूध, पनीर और साग लिया। खाकर थोड़ी देर आराम किया।

कल चरखा समय पर चलाना बापूजी भूल गये थे और रातको जागना पड़ा, अिसलिअे मैंने चरखा पहलेसे ही रख दिया।

३ बजे यहां शांति-समितिकी नियुक्तिकी कार्रवाअीमें अुपस्थित हुअे। अिस समितिके सदस्य गांव गांव घूमेंगे और अेकताका प्रचार करेंगे।

३॥ से ५॥ तक यहांके मंत्रि-मंडलसे मुलाकात। बापूजीने अुनके सामने अपना दिल खोलकर रख दिया: "आपसे अूंचे अधिक आदमी तो मैं कहांसे लाअूंगा? आप पर मेरी बड़ी आशा लगी हुअी है। परन्तु जब मैं कहीं भी आपकी बदनामी सुनता हूं और अिस बदनामीमें तथ्य पाता हूं, तब मुझे यह सोचकर दुःख होता है कि हम राज्य-शासन चला सकेंगे या नहीं?..." यह सारी बातका सार था।

मंत्रियोंकी बैठकके दौरानमें बापूजीने ६ औंस दूध और खजूर ली।

कल दिल्ली जाना है, असलिअे मैं अपनी तैयारीमें थी। प्रार्थना-सभामें आज असह्य भीड़ थी। कल बापूजी दिल्ली जानेवाले हैं, असलिअे कोअी न कोअी नअी घोषणा करेंगे, अैसा मानकर खूब लोग आये थे। प्रवचन करते हुअे बापूजीने कहा :

"कल सबेरे मुझे थोड़े दिनके लिअे दिल्ली जाना है, यह तो मैंने कल आपसे कह ही दिया है। असलिअे सबसे पहले मुझे आप सबसे यह नम्र प्रार्थना और विनती करनी है कि मुझे विदा देनेके लिअे आप स्टेशन पर भीड़ न करें। आपका मुझ पर यदि सच्चा प्रेम हो तो आप अेकताका वह काम कीजिये जिससे मुझे संतोष हो, गरीबोंकी सेवा कीजिये और अूंच-नीचके भेद-भाव भुला दीजिये। आप अितना करेंगे तो मैं मानूंगा कि आपका मुझ पर अपार प्रेम है। अब अिस अुम्रमें मुझसे जयनादोंका शोरगुल सहा नहीं जाता। मेरे जयनादोंसे मुझे अत्यन्त घृणा अुत्पन्न हो गअी है। अेक ओर 'महात्मा गांधीकी जय' बोलकर निर्दोष बहनों, बच्चों और मनुष्यों पर छुरे चलाये गये हैं, दूसरी ओर 'अल्लाहो अकबर' कहकर मुसलमानोंने हिन्दुओं पर प्रहार किये हैं। निर्दोषों पर जुल्म करनेमें अीश्वरका नाम लेनेसे बढ़कर और कोअी पाप नहीं हो सकता।

"जनरल शाहनवाज साहब, जो आजाद हिन्द फौजके बड़े कर्नल थे, मसूढ़ी जिलेमें सुन्दर काम कर रहे हैं। अुन्होंने जो लिखा है वह आज आपको पढ़कर सुनाअूं तो आपको आनन्द होगा। वे लिखते हैं, 'लोगोंको फिरसे बसानेके काममें अच्छी प्रगति हो रही है। यह प्रदेश हिन्दुओंका है, फिर भी वे मुसलमानोंको अच्छी तरह रखते हैं। अिसके थोड़ेसे अुदाहरण देता हूं।

"'(१) अन्तरपुरा नामके गांवमें हमने स्थानीय लोगोंकी मददसे ग्राम-पंचायतकी स्थापना की है। दो दिनके बाद पंचायतके सरपंच पटना आये और मुस्लिम निराश्रित कैम्पमें निराश्रितोंसे मिले। अुन्होंने सबको विश्वास दिलाया कि आप वापस अपने गांव चलिये। हम अपनी जान देकर भी आपका बचाव करेंगे।

"'अिसके परिणामस्वरूप कोअी ५० मुसलमान परिवार अन्तरपुरामें लौट आये हैं और बहुत शान्ति और स्थिरतासे रहने लगे हैं। यहां पुलिसकी ... भी नहीं रखी गअी है और फिरसे बसे हुअे लोगोंने पुलिसकी रक्षा नहीं मांगी।

"'(२) मैंने अुस गांवमें जाकर निराश्रितोंके लिअे अनाजकी व्यवस्था की, यह हिन्दुओंको अच्छा नहीं लगा। मेरी बात न मानते हुअे वे बोले कि मुसलमान तो हमारे मेहमान हैं। हमीं तुरन्त अुनकी सारी जिम्मेदारी ले लेंगे।

"'बीर गांवके अेक मुसलमानने मेरे पास आकर कहा कि मुझे बीर जाना है, मगर मुझे बहुत डर लगता है। वह खूब रो रहा था। मैंने अपनी मोटर दी और आजाद हिन्द फौजके अपने दो सैनिक भी दिये। रास्तेमें बीर गांवकी ग्राम-पंचायतके अेक सदस्य मिले। अुन्होंने मोटरको रोका। पूछताछ करके वे बोले, सिपाही क्यों लिये जा रहे हो? अुस मुसलमान भाअीने जवाब दिया कि मुझे बहुत डर लगता है। तब अुस हिन्दू सदस्यने कहा कि गांधीजीने खुद अितने सुरक्षाके आश्वासन दिये, फिर भी तुम्हारे साथ पुलिस लानी पड़े, तो यह हमारे लिअे शर्मकी बात होगी। तुम्हारा बाल भी बांका हो जाय तो तुम मुझे मरा हुआ समझना।

"'और अिस आश्वासनके बाद वह मुसलमान भाअी मुझसे कहने लगा कि अब मुझे रक्षकोंकी जरूरत नहीं है।

"'कोअी तीन दिन पहले अपने गांव लौटा हुआ अेक मुसलमान बीमार निराश्रित मर गया, तो लेफ्टिनेन्ट कर्तारसिंहने खुद अपने हाथसे अुसे दफनानेके लिअे कबर खोदी। और अब वे सभी मुसलमानोंमें बहुत प्रिय हो गये हैं। मस्जिदोंमें होनेवाली सभाओंमें भी हिन्दू-मुसलमान साथ ही जाते हैं।'"

शाहनवाज साहबका यह सारा विवरण सुनानेके बाद बापूजी बोले:

"मेरा खयाल है कि हिन्दू सच्चे दिलसे मुसलमानोंसे मैत्री रखेंगे, तो आज सब जगह फैली हुअी आग बुझ जायगी। आसपास चारों तरफ आग लग जाती है, तब अुसे बुझानेके लिअे चारों तरफसे भागदौड़ मचानेके बजाय अगर मुख्य स्थानसे आग बुझाअी जाय तो वह जल्दी काबूमें आ जाती है।

"बिहार कोअी छोटा प्रान्त नहीं है। बिहारके हिन्दू और मुसलमान अपना फर्ज वफादारीके साथ अदा करें, तो पंजाब, कलकत्ता और दूसरे स्थानों पर अपने-आप शान्ति छा जायगी।"

प्रार्थनासे आनेके बाद बापूजीने तुरन्त प्रवचनका अंग्रेजी अनुवाद किया। मैंने सवेरे दिल्ली जानेकी तैयारी की। बापूजीने श्री अनुग्रह नारायणसिंहके साथ अेक घण्टे बिहार-संबंधी बातें कीं। ८–३० के बाद थोड़ेसे घूमे। आज थोड़ी ठंडक थी। ९–३० के बाद बापूजी बिस्तर पर लेटे। बापूजीके पैर दबाकर और सिरमें तेल मलकर मैंने हरिजन-कोषका और दूसरा हिसाब साफ किया, और दूसरा फुटकर कामकाज निवटा कर आजकी डायरी लिखी। अिस समय लगभग १२–४५ हो गये हैं। बापूजीका सूत अुतार कर सोने जाअूंगी।

पटनासे दिल्ली जाते हुअे रेलमें,
३०–४–'४७

३–३० पर बापूजीने जगाया। परन्तु आंखोंमें नींद अितनी थी कि दो बार तो अुठते अुठते सो गअी। अिसलिअे १५ मिनट बापूजीने मुझे सोने दिया। अन्तमें ३–४५ पर तो जागना ही चाहिये। बापूजीने दातुन-कुल्ला कर लेनेके बाद ही मुझे फिरसे अुठाया। मुझे कुछ पता नहीं रहा। बापूजीसे पूछा तब वे बोले, "आज जाना था और तुमने रातको जल्दी अुठानेको कहा था, अिसलिअे दो बार तो हिलाकर अुठाया, परन्तु दोनों ही बार तुम सो गअीं। अिससे मैं समझ सका कि तुम्हें नींदकी कितनी अधिक आवश्यकता है। मैंने सोचा कि मैं तुम पर कितनी क्रूरता करता हूं! अिसलिअे सोने दिया। १५ मिनट बाद भी अुठानेकी अिच्छा नहीं होती थी। परंतु तुम व्यर्थ मनमें दुःखी होगी यह सोच कर अुठा दिया। तुम रातको अितनी देरसे सोअीं, अिसलिअे तुम्हें सजा देनेके लिअे भी जल्दी नहीं अुठाया।"

मैंने हंसते हंसते कहा, "मुझे सजा देनेमें हिंसा नहीं होती?"

बापू बोले, "मैं अिसे हिंसा कभी नहीं मानूंगा, बल्कि सूक्ष्म रूपमें यह अहिंसा है। लेकिन तुम हिंसा मानो तो भी मुझे परवाह नहीं है। परन्तु प्रार्थनाके बाद तुम्हें अनिवार्य रूपमें सो जाना है। ६ बजे अुठाअूंगा। हमारी गाड़ी तो ८ बजे रवाना होती है।"

मैं अिस परिणामसे स्तब्ध हो गअी। मनसे या बेमनसे मुझे ६ बजे तक सोये ही रहना पड़ा। ६। बजे बापूजी घूमने गये तब मुझे ...। मैं घूमने नहीं गअी। मैंने आखिरी सामान तैयार किया। बिस्तर बांधा और सामान स्टेशन पर भेजा। परन्तु बापूजीने ५। बजे तक अपने पास ही

सुलाये रखा। अिसलिअे बादका सामान बांधनेमें खूब मुश्किल पड़ी। तीसरे दरजेका डिब्बा फिनाअिलसे नहीं धुलवाया गया, अिसलिअे मनमें बुरा लग रहा था।

डॉ० महमूद साहबको बापूजीने नोआखालीकी हालत देखने भेजा था। अुनके साथ स्टेशन पर आने तक बातें कीं। स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। ७–४१ पर हम स्टेशन आये। हमारे साथ आशाबहन, ओमियोबाबू, बिसेनभाअी और पत्र-प्रतिनिधि हैं। हमारी गाड़ी ठीक ८ बजे रवाना हुअी। गाड़ी रवाना होनेके बाद मैंने बापूजीके लिअे साग और दूध प्राअिमस पर गरम किया।

१०–३० पर बापूजीने खाना खाकर थोड़ी देर आराम किया। मैंने पैरोंमें घी मला। हमारी मंडलीके सब लोगोंको खाना दिया। ११–३० बजे बापूजीने फलोंका रस लिया। प्रत्येक स्टेशन पर खूब भीड़ होती है और गाड़ीमें भी अुतनी ही भीड़ है। हरिजन-कोषका चंदा औसतन १०० रुपये तक तो हरअेक स्टेशन पर हो ही जाता है। फलोंकी टोकरियां बहुत आती हैं। जरूरतसे ज्यादा फल मैं स्टेशनों पर गरीब आदमियोंको दे देती हूं।

१२॥ से १। बजे तक बापूजीने काता और मैं सो गअी। २ बजे मिट्टी ली। लोग नारे खूब जोरसे लगाते हैं, अिसलिअे बापूजीको कानोंमें अुंगली डालनी पड़ती है। ४ बजे अलाहाबाद आया। अलाहाबादकी भीड़ क्या थी, मानव-समुद्रकी लहरें अुछल रही थीं। सारे रास्ते अुतनी ही असह्य गरमी थी। ४ बजे भी धूप तेज थी, मानो आग धधक रही हो। बहनें बच्चोंको लेकर बापूजीके दर्शनोंको आअी थीं। भीड़को शांत करनेके लिअे बापूजीने मुझे पांचेक मिनट रामधुन गानेकी सूचना की। अिससे वातावरण कुछ शान्त हुआ।

बिहारसे पुलिसके कोअी दरजन भर आदमी हमारे साथ हैं। फिर भी भीड़ काबूमें नहीं रहती। बापूजीने पुलिसको बीचमें पड़नेसे रोक दिया, परंतु रामधुनसे लोग व्यवस्थित हो गये।

ओमियोबाबू और आशाबहन दूसरे वर्गके डिब्बेमें हैं, परन्तु प्रार्थनाके समय सब हमारे डिब्बेमें आ गये। आज भजन मित्तूने गाया। प्रार्थनाके बाद बापूजीने दूध और अंगूर लिये और सो गये। ८। बजे कानपुर आया। कानपुरमें तो अलाहाबादको भी मात करनेवाली भीड़ थी। बापूजी सो गये थे, परन्तु अिस भारी भीड़के हल्लेसे जाग गये। फाटकके पास आये। लोगोंको

अितनी भीड़ थी कि रेलके डिब्बेके फाटकके पास खड़े रहने पर भी बापूजीको धक्के लग रहे थे। यहां श्री गुप्तजीकी तरफसे हमारे लिअे गरम खाना आया था।

यहां कुल मिलाकर ८०० रुपयेका हरिजन-कोष अिकट्ठा हुआ। अेक भाअी बापूजीके हस्ताक्षर लेने आये, परन्तु अुनके पास पांच रुपये नहीं थे। अुन्होंने कलाअीकी घड़ी बापूजीको दी और बापूजीके हस्ताक्षर कराये। बापूजीने कहा, "मैं दिल्लीसे पटना लौटूं तब आप मुझे याद करके दे देंगे तो काम चल सकता है। मैं अितना विश्वास रखनेको तैयार हूं।" परन्तु अुन भाअीने घड़ी दे ही दी। ५० रुपयेके आसपासकी होगी। कानपुर निकल जानेके बाद बापूजी अब सोये हैं और मैं डायरी पूरी कर रही हूं। अिस समय अिस डिब्बेमें मैं और बापूजी ही हैं; और सब अपनी अपनी जगह चले गये हैं।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
१-५-'४७

सारी रात लगभग जागरण हुआ था। परन्तु रोजकी भांति प्रार्थना हुअी। बंगाली पाठ करके बापूजीने मुझे गीतापाठ कराया। थोड़ी देर आराम किया। टूंडला स्टेशन पर अिंजन बिगड़ गया, अिसलिअे हमारी गाड़ीको २ घंटेकी देर हो गअी। ८ बजे शहादरा स्टेशन पर मणिबहन, राजकुमारी बहन, ब्रजकिशनजी, कृपालानीजी और सुचेताबहन भी अुपस्थित थीं। मैं और बापूजी शहादरा स्टेशन पर अुतर गये। सारा सामान दिल्ली जंकशन पर गया।

बापूजी घूमनेके लिअे थोड़े पैदल चले। मैं सीधी भंगी-बस्तीमें ही गअी। जाते ही बापूजीके लिअे खाखरे बनाये। अितनेमें ७-४५ को बापूजी आ पहुंचे। पैर धोकर सीधे मालिशके लिअे आये। मालिशमें १० मिनट सोये। बापूजी कहते थे, "थकावट खूब मालूम होती है। रातको अच्छी तरह नींद नहीं आअी, अिसकी थकावट है।" अनेक मुलाकाती आ पहुंचे। विधान बाबूने बापूजीकी जांच की। तबीयत कुल मिलाकर ठीक है। अुन्होंने आग्रह किया कि मालिश और भोजनके समय बापूजी बातें न करें। १०-३० बजे बापूजी खाने बैठे, परन्तु अेकके बाद अेक मुलाकाती आते ही रहे।

आशाबहन यहीं रहीं, परन्तु ओमियोबाबूकी व्यवस्था अन्यत्र कराअी गअी। हमारा सामान लगभग ११ बजे आया। अुसे मिलाया। १२-३०

पर बापूजी आरामके लिअे लेटे। मैं बहुत काममें थी, अिसलिअे मुलाकाती खास क्या बातें कर गये अिसका बहुत ध्यान नहीं रहा। मैं नहाकर निबटी तब लगभग १। बजा था। २ बजे अरुणाबहन आसफअली मिलने आओीं। अुन्होंने मौजूदा परिस्थितिके बारेमें बातें कीं। वे बहुत ही कोमल स्वभावकी हैं। बापूजीकी तबीयत कैसी रहती है, वे क्या खाते हैं, वगैरा बातें अुन्होंने मुझसे पूछीं।

३ बजे कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक शुरू हुआी। अिस बीच कार्यसमितिके सदस्योंके लिअे चाय, नाश्ता वगैरा तैयार करनेके लिअे बापूजीने मुझसे कहा। अिसलिअे मैं अुस काममें लगी थी।

यहांकी गरमी असह्य है। कार्यसमितिमें भी अच्छी गरमागरम चर्चा हुआी।

प्राथनामें आज भीड़ और गड़बड़ खूब थी। बापूजीने प्रवचनमें कहा:

"यहांसे जानेको तो अभी मुझे २० ही दिन हुअे हैं। परन्तु मुझे यह कल्पना थी कि शायद यहां जल्दी आना पड़ेगा। वैसे मेरा स्थान नोआखाली और बिहारमें ही है। अिसलिअे १५ दिनके लिअे मेरा ठहर सकना संभव नहीं था। परन्तु मैं तो जवाहरलालका कैदी हूं, अिसलिअे बिहार चला गया।

"मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैंने बिहार जाकर क्या किया। वहां बहुत काम हो रहा है। जनरल शाहनवाज अेक छोटे-से गांवमें बैठे हैं और अुन्हें अपने काममें सफलता भी मिली है। मुसलमान भी अब अपने गांवोंमें वापस आने लगे हैं। वहांके स्थानीय लोगोंने पुनर्वास करनेवाले हिन्दुओंको अपना मेहमान माना है और खुद ही अुन्हें खिलाने-पिलानेकी व्यवस्था करनेका भार लिया है। यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं है। परंतु अब लोग मुझसे पूछते हैं कि आपने शान्तिकी अपील की थी तो शांति क्यों नहीं होती? परन्तु जो हस्ताक्षर मैंने किये हैं, वे कोअी जिन्ना साहबसे मिलकर या अुनके साथ बातचीत करके नहीं किये। वाअिसरॉय साहबसे भी मैंने कहा था कि मैं हस्ताक्षर करनेवाला कौन हूं? मैं तो कांग्रेसका चार आनेका सदस्य भी नहीं हूं। मेरे हस्ताक्षरोंका मूल्य भी क्या? हां, कायदे आजम साहब बड़े नेता हैं और अुनके हस्ताक्षरका मूल्य है। फिर भी वाअिसरॉय साहबने आग्रह करके कहा कि जिन्ना साहब आपके हस्ताक्षर

चाहते हैं। मेरे हस्ताक्षरके विना जिन्ना साहव हस्ताक्षर करनेवाले नहीं थे। अिसीलिअे मैंने अिस शांतिकी अपील पर हस्ताक्षर किये।

"परन्तु मैं हस्ताक्षर करूं या न करूं, यह सब मेरे लिअे समान ही है। क्योंकि मैं तो सब जातियोंके लिअे काम कर रहा हूं। परन्तु जिन्ना साहवके हस्ताक्षर बहुत जिम्मेदारीकी वात कही जायगी, क्योंकि वे तो मुसलमानोंके प्रतिनिधि हैं। मैंने हिन्दुओंकी तरफसे अपने हस्ताक्षर हरगिज नहीं किये, क्योंकि मेरी कैदमें कोअी नहीं है। मैं तो अपनेको मानव-जातिका सेवक समझता हूं। यदि विहारमें हिन्दू पागल वनेंगे, तो भी मैं अुपवास करके मर सकूंगा। अिसी तरह यदि नोआखालीमें मुसलमान पागल वनेंगे, तो भी अुपवास करनेका अधिकार मुझे मिल जायगा।

"परन्तु जिन्ना साहव तो अेक वहुत वड़ी संस्थाके प्रतिनिधि हैं। मैं अुनसे नम्रतापूर्वक पूछता हूं कि शांतिकी अपील पर अुनके हस्ताक्षर होते हुअे भी किसी मुसलमानके हाथों अेक भी हिन्दू क्यों मरे? और अभी तक मुसलमान शांत क्यों नहीं हुअे हैं? डेरा अिस्माअिल खां और सीमाप्रांतमें क्या हो रहा है?

"सीमाप्रान्तके लोग लीगी होने पर भी यदि जिन्ना साहवकी बातें न मानें, तो मैं नम्रतापूर्वक कहूंगा कि वे सब कुछ छोड़कर पहले अुन लोगोंको शांत करनेका काम करें। क्या अिस तरह पाकिस्तान मिल जायगा? अगर पाकिस्तान लेना हो तो शांतिसे समझाकर लें। तलवारके जोरसे अगर कोअी आदमी कुछ लेना चाहे, तो अुससे वड़ी तलवारके जोरसे वह चीज छिन जायगी।

"परन्तु अव मैं वाअिसरॉय साहवसे पूछना चाहता हूं कि आपने हम दोनोंके हस्ताक्षर तो लिये, परन्तु अभी तक अुसका परिणाम क्यों नहीं दीखता? जिन्ना साहवसे आप कुछ भी क्यों नहीं कहते? अितने पर भी यदि हिन्दू-मुसलमान लड़ते ही रहें, सिक्ख लड़ते ही रहें, तो अंग्रेजोंको जरूर अलग हो जाना चाहिये।

"और अंग्रेजोंके सामने तलवारके वल पर तो हम टिक ही नहीं सकते। आज भी अंग्रेज आजादी देनेकी जो वातें करते हैं, वह तलवारके [illegible]रसे नहीं करते। वे कहते हैं कि हिन्दुस्तानने दुनियाको अेक नया मार्ग [illegible] है। यही हमारी आजादीका कारण है। मारकर मरनेमें न कोअी

वहादुरी है, और न सच्ची शहादत। परन्तु मारे बिना मरनेमें ही सच्ची वहादुरी है।

"मेरी आजकी वातों पर जिसे जो कहना हो सो कहे। परन्तु मैं अपने हृदयमें भरी हुअी वातें आपको सुना रहा हूं। डराकर तो कोअी अेक तिल-भर जमीन भी नहीं ले सकता। आप वहादुर वनिये। अगर आप वहादुर नहीं वनेंगे और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभी पागल वन जायेंगे, तो अंग्रेज हमें आजादी दे भी देंगे तो वह टिक नहीं सकेगी। हमें जो कुछ प्राप्त करना है अुसके लिअे समझाकर शांतिसे काम लेना है। तव तो हमारी खैरियत है। वर्ना हिन्दुस्तान वरवाद हो जायगा, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।"

प्रार्थनामें वापूजीने अपने हृदयमें भरी हुअी व्यथा अुंड़ेली। आज अुन्हें वेहद थकान है। कल रातकी रेलकी थकान तो है ही और सवेरे जवसे आये हैं तवसे वरावर धूमधाम चल रही है।

प्रार्थनाके वाद वापूजी थकानके कारण घूमने नहीं निकले। गोपू आया था, अिसलिअे अुसके साथ खेलमें थोड़ा समय विताया। गोपू भी 'दादा' कहता दौड़ता हुआ आता है। ७–३० से ९–३० तक फिर कार्यसमितिकी वैठक चली। १०–३० के वाद वापूजीके सोनेकी तैयारी की। वापूजीको अिस वारकी कार्यसमितिमें वहुत दिलचस्पी नहीं है। अुनका मन तो विहारमें लगा हुआ है। वापूजी सोते समय वोले, "कार्यसमितिके सदस्य व्यर्थ मेरे लिअे आग्रह रखते हैं। खास तौर पर जवाहरलाल अधिक आग्रहपूर्वक मेरी अुपस्थिति चाहते हैं। परन्तु मुझे अैसा नहीं लगता कि मेरी मौजूदगीसे वहुत फायदा होगा। क्योंकि अिस समयकी मेरी विचारसरणी विलकुल दूसरी है। परन्तु जवाहरके आग्रहके वश होना ही पड़ता है, अिसलिअे आ गया। वैसे मेरा मन विहारमें है। मालूम होता है यहां अव वहुत दिन नहीं रहना पड़ेगा। शायद कलकत्ते जाना पड़ेगा। कलकत्तेमें भी पूरी शांति तो हुअी ही नहीं है। छोटी-मोटी नअी घटनायें रोज होती रहती हैं।"

मैंने भाअीसाहवके साथ विहार और दिल्लीके वारेमें थोड़ी देर वातें कीं। वादमें यह डायरी पूरी की। अव रातके ११–३० वज रहे हैं।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
२–५–'४७

रोजकी भांति ३–४५ पर प्रार्थना। प्रार्थनाके वाद वापूजीने कुछ पत्र पढ़े। पटनेकी डाक तो खूब चढ़ गअी है। यहां वापूजीको अेक मिनटकी भी फुरसत नहीं रहती। ५–३० पर मुझे गीता पढ़ाअी। अितनेमें राजकुमारी वहन आ गअीं। अुनसे थोड़ीसी डाक लिखवाअी। ५–४५ पर राजेन्द्रवावू भी आये। कल रातको मुझसे जो वातें कही थीं, वे ही टहलते समय अुनसे कहते हुअे वापूजी वोले, "मेरी अिच्छा यहां वहुत दिन रहनेकी नहीं। मैं मानता हूं कि विहार या नोआखालीमें कुछ कर सकूंगा, तो देशका वहुत वड़ा काम हो जायगा। जव तक लोगोंके दिलोंमें शांति नहीं, तव तक स्वराज्य मिल जाय तो भी न मिलनेके वरावर है। और मैं मानता हूं कि मेरा काम यहांसे वहां अधिक है। परन्तु मैं जवाहर और सरदारकी कैदमें हूं। अुन्होंने मुझे छुट्टी दे दी तो मैं पहली ही गाड़ीसे जानेको अुत्सुक रहूंगा।"

मुझे काम होनेके कारण मैं वहुत समय तक घूम न सकी। वापूजीकी मालिश की और नहानेकी तैयारी करके कूकर रखा। मालिशमें वापूजी ठीक आध घंटे सोये। अिससे जान पड़ता है कि वे कितने ज्यादा थक गये हैं। किरणशंकर राय और विधानवावू आये। वे वंगालके विभाजनके विरुद्ध हैं। वापूजी भी विभाजन नहीं चाहते।

वापूजीने कहा कि वे (किरणशंकर राय) जिन्ना साहवसे मिलें तो अिसमें वुराअी नहीं है। अगर मिलें तो अच्छा ही है। और वापूजीने अुन्हें आश्वासन भी दिया कि, "यदि आपकी सलाह होगी और जरूरी जान पड़ेगा तो मैं यहांसे सीधा कलकत्ते जाअूंगा। मेरे लिअे वंगाल और विहारमें अेक ही तरहके कार्य हैं।"

स्नानके समय भी वापूजीने पांचेक मिनट नींदके झोंके ले लिये। आज हजामत करनेकी भी वारी थी। (वापूजीको दो मिनट मिल जायं तो भी वे चाहें तो सो सकते हैं। वापूजी कहते हैं, "यह रामजीकी मेहरवानी है। जिस दिन मेरी नींदमें विक्षेप होगा, अुस दिनसे जान लेना कि मेरा अंत अच्छा नहीं होगा। अगर रामजीने मुझे सोनेकी अैसी शक्ति न दी होती, तो मैं खतम ही हो गया होता।")

नहानेके बाद जयरामदासजी आये। सर दातारसिंहकी पुत्री कृपाल बहन भी आयीं। अुन्होंने मुझसे जबरदस्ती बापूजीके कपड़े ले लिये और खुद ही धोये। बापूजीको भोजन देकर मैं नहाओ। बापूजी दूध, टमाटरका रस और शाक सभी मिलाकर पी जाते हैं। मैं सोचती हूं यह सब बापूजीको कैसे भाता होगा। गरमी असह्य पड़ती है। मुझे नकसीर छूटना भी शुरू हो गया है।

१२ बजे जवाहरलालजी आये। अुनके साथ अिस विषयमें बातें हुअीं कि जिन्ना साहबके साथ मुलाकात की जाय या नहीं। करीब घंटे भर बैठे। वे अुठे तब बापूजीने अंतिम वाक्य कहा, "मैं तो तुम्हारी कैदमें हूं, अैसा समझो। तुम्हारा हुक्म मिलेगा तभी जाअूंगा।" यह है बापूजीकी नम्रता।

फिर शैलेनभाअीने अखबार सुनाये। डेढ़ बजे प्रकाशम्‌जी आये। २-३० पर खेर साहब आये। खेर साहब खास तौर पर प्रणाम करनेको आये थे। पांच-सात मिनटमें स्वास्थ्यके समाचार पूछकर चले गये।

३ से ५ तक कार्यसमितिकी बैठक हुअी। कार्यसमितिके बाद बापूजीने खानेमें अंगूर, दूध और अेक भापमें पकाया हुआ सेब लिया। पांच बजे वाअिसरॉय साहबका पत्र आया कि रविवारको अुन्होंने बापूजीके साथ मुलाकात तय की है।

गोपूके साथ बापूजी खूब खेले और फिर प्रार्थनामें गये।

आज प्रार्थनामें विक्षेप हुआ। अेक आदमीने 'हिन्दू धर्मकी जय हो। आज कुरान नहीं पढ़ा जायगा' कहकर आवाजें लगाअीं। अिससे प्रार्थना बन्द करा दी। भाषण हुआ। भाषणमें बापूजीने कहा :

"आज कुरानकी आयतें पढ़वाअी जा रही थीं, तब अेक भाअीने विरोध किया। अिसलिअे मुझे प्रार्थना रोकनी पड़ी। पुलिसवाले बीचमें पड़े, यह भी मुझे अच्छा नहीं लगा। रोज पुलिसके आदमी यहां आयें और अुनके बल पर मैं प्रार्थना करूं यह ठीक नहीं। अैसी प्रार्थना करना मुझे पसन्द नहीं। यदि आप मुझे राजीखुशीसे प्रार्थना करने देंगे, तो ही मैं प्रार्थना करूंगा। 'हिन्दू धर्मकी जय' कहनेसे हिन्दू धर्मकी जय नहीं हो जाती। परन्तु अिससे धर्म डूबता है। दूसरोंको प्रार्थना न करने देनेसे हिन्दू धर्मकी रक्षा कैसे होगी?

"मेरे धर्मकी रक्षा पुलिस कैसे करेगी? मेरे धर्मकी रक्षा करनेवाला तो अीश्वर ही है। मैं चाहता हूं कि यह युवक शान्त होकर मेरी बात सुने और अुस पर विचार करे। धर्मका पालन जोर-जुल्मसे नहीं कराया जाता। धर्मका पालन करनेके लिअे मरना पड़ेगा। दुनियामें अैसा कोअी धर्म नहीं, जिसमें बलिदान न दिये गये हों। हम मरनेका पाठ सीखेंगे तो ही धर्ममें ताकत आयेगी। जो अीश्वरका स्मरण करते हैं, अीश्वरका स्तवन करते हैं कि हे भगवान, तू हमें सच्चा मार्ग बता, वे महान पुरुष ही धर्मको कायम रखते हैं।

"अीसा या पैगम्बर साहबका अितिहास देखें, तो अुससे भी हम यही सीखेंगे कि कुरबानीसे ही धर्म अूंचा अुठा है। हिन्दू धर्म अैसा है जिसमें हत्या करना बिलकुल नहीं सिखाया गया है। अुसके शास्त्र भी अुतने ही अूंचे हैं। किन्तु अब अुसमें भी मारकाट करना शुरू हो गया है। धर्मके नाम पर आज मानव भयभीत हो गये हैं। हिन्दू, सिक्ख, सारा पंजाब आज व्याकुल हो गया है। दूसरी तरफ बंगाल भी अुतना ही भयभीत बन गया है। लोग कहते हैं कि पंजाब और बंगालके दो टुकड़े करो। अगर टुकड़े ही करने हों तो वाअिसरॉयके पास किसलिअे जाते हैं? क्या पाकिस्तान हिन्दुओं और सिक्खोंको मारकर निकाल देने और खूनकी नदियां बहानेको लेंगे।

"जिन्ना साहब तक मेरी बात पहुंच सके तो मैं अुनसे पूछना चाहता हूं कि आपने जो कहा था कि अल्पसंख्यकोंको संपूर्ण सुरक्षा देंगे, वह बात आज कहां गअी? जो कहते हैं वह करके क्यों नहीं दिखाते? सिंध जैसे प्रदेशमें तो केवल २५ फी सदी ही हिन्दू हैं। किन्तु वे भी वहां सुरक्षित क्यों नहीं हैं?

"जिन्ना साहब मुझसे पूछ सकते हैं कि बिहारमें हिन्दुओंने क्या किया? बात सही है कि वहां हिन्दुओंने भयंकर भूल की है। वही बिहार आज अपनी भूल स्वीकार कर रहा है और अुसका प्रायश्चित्त भी कर रहा है।

"अन्तमें अितना तो हम समझ लें कि हमारे हाथमें आजादी जैसी अेक पवित्र वस्तु आ रही है। अैसे वक्त हमें आपसका झगड़ा छोड़ना ही चाहिये। अिस झगड़ेसे बचनेका अेक यही मार्ग है कि हम केवल अीश्वरसे डरें। जो मनुष्य केवल अीश्वरसे ही डरनेवाला होगा अुसे तोप-बन्दूककी जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरी तो अहिंसामें अटूट श्रद्धा है। यही ताकत अंग्रेजोंकी शक्तिको मटानेवाली है।"

प्रार्थनासे आकर श्यामाप्रसाद मुकर्जीसे बातें कीं, जो बापूसे मिलने आये थे। अुनसे प्रार्थनामें होनेवाले विरोधके बारेमें बातें करते हुअे बापूजीने कहा, "यदि आपको हमारी प्रार्थनामें जो कुरान पढ़ा जाता है अुसमें कोअी आपत्ति न मालूम होती हो, तो आपका धर्म है कि आप अेक वक्तव्य प्रकाशित करें।" अुन्होंने अिसका कोअी स्पष्ट जवाब नहीं दिया।

बापूजीको मानसिक थकान बहुत रही। आज ब्लडप्रेशर भी अूंचा रहा। कुदरती और राजनीतिक गरमी सचमुच घबरानेवाली है।

बापूजी ११ बजे सोये। सोते समय आभा दीदीने यह शिकायत की कि मेरी तबीयत खराब रहती है। बापूजी बोले, "अिसका पेट सुधार सकूं तब तो कोअी गड़बड़ी न रहे। अिसकी आंतोंकी खराबीके कारण तबीयत खराब रहती है। परन्तु मुझमें और अिस लड़कीमें रामनाम जितना अंकित होगा, अुतनी अिसकी तबीयत सुधरनी ही चाहिये। यह लड़की मेरे यज्ञमें हिस्सेदार है। अिसलिअे अिसके मन, वचन और काया द्वारा जो कुछ होगा अुसका असर मेरे कार्य पर पड़ेगा और मेरे मन-वचन-कार्यमें जितनी शुद्धता या अशुद्धता होगी अुसका असर अिसके कामों पर पड़ेगा। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं। अिसलिअे मैं भी जितना हृदयगत रामनाम ले सकूंगा अुतना फायदा अुसे जरूर पहुंचेगा।" मुझे आज थोड़ा-सा बुखार था, अिसलिअे बापूजीने तुरन्त सुला दिया और प्रेमसे सहलाते हुअे अुपरोक्त बातें कहीं। प्रार्थनामें विक्षेप होता है, अिसका असर बापूजीके मन पर खूब रहता है। अिस पर मुझे बुखार चढ़ गया, अिसलिअे बापूजी और भी अुदास हो गये।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
३–५–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बंगालीका पाठ किया। . . . क्षितीशबाबूकी मृत्युके बारेमें (हिन्दीमें) पत्र लिखा:

"क्षितीशबाबूके स्वर्गवासकी खबर मैंने देहली आते हुअे रेल-गाड़ीमें पढ़ी। कल देहली पहुंचा और ठक्करबापाने भी तुम्हारा नाम बताया और ठिकाना भी।

"क्षितीशबाबू जैसे प्रखर कार्यकर्ताके जानेसे हम सबको बुरा लगना ही चाहिये। लेकिन हम अगर सब अुनका ही काम करते हैं, तब अुनका स्वर्गवास हो गया है अैसा हमें लगना तो नहीं चाहिये।

बापाने मुझसे कहा कि तुम्हारी वहन भी तुम्हारे साथ है। मेरी अुम्मीद है कि तुम दोनों अिस तरह सेवा करोगे कि क्षितीशवाबूका नाम हमेशाके लिअे तुम्हारे जीवनसे अमर हो सके।"

दूसरा पत्र साने गुरुजीको (हिन्दीमें):

भाअी साने गुरुजी,

आपका तार मिला। मुझे दुःख होता है कि मेरी सरल बात (आप) नहीं समझ सकते हैं। मूल बात तो चार-पांच आदमियोंकी टीकाके कारण अनशन करना था। अब मंदिर हरिजनोंके लिअे खुलनेकी बात होती है। अुसमें धर्म कहां है, मैं नहीं समझता हूं। मेरी तो फिर भी प्रार्थना है कि आप अनशन छोड़ दें।

शंकररावजी और बाबा साहेब आपके मित्र हैं, दुश्मन नहीं। आप अैसे मित्रोंकी बात भी सुनें। अीश्वर आपको सन्मति दे।

आपका
मो० क० गांधी

५–३० पर राजकुमारी वहन आअीं। अुनके साथ बापूजीने बड़ी शांतिसे बातें कीं। ६ बजे राजेन्द्रबाबू और हरेकृष्ण मेहताब आये। अुनके साथ भी विभाजनके सिलसिलेमें ही चर्चायें कीं। बापूजी तो अिस बात पर दृढ़ ही हैं कि हिन्दुस्तानके टुकड़े किसी भी हालतमें नहीं होने चाहिये। मैंने कल रातकी डायरी सुबह पूरी की। आजकल बापूजीके साथ घूमने जानेका मौका नहीं मिलता, क्योंकि मालिशकी तैयारीका, रसोअीका और बापूजीके घूमने जानेका अेक ही समय हो जाता है।

६–१५ पर बापूजी घूमने निकले। आध घंटे बाद लौटे। पैर धोकर मैंने अुनकी मालिश की। मालिशमें वे २० मिनट सोये। सुबह रामदास काकाका कान्हा आया। कान्हाने बापूजीको अखबार सुनाये। बापूजी कहीं-कहीं अुसके अुच्चारण सुधारते थे। बापूजी कहने लगे, "मैं तो शिक्षक ठहरा, अिसलिअे मुझे अपना धंधा हर हालतमें मिल ही जाता है।" बापूजी ८–३० बजे मालिश, स्नान वगैरासे निबट जाते हैं और ९ बजे तक भोजन भी कर लेते हैं। यहां पटनाकी अपेक्षा थोड़ा ज्यादा भोजन लेते हैं। फिर ी अेक पतला खाखरा, साग और दूधसे अधिक नहीं।

(आज आम आये थे, अुनका रस निकाला। परन्तु वापूजीने मुझे कहा कि पहले जांच करो कि अिन आमोंका मूल्य क्या है? मैंने समझा कि वापूजी मजाक कर रहे हैं, अिसलिअे अुनकी अिस वातको वहुत महत्त्व नहीं दिया। मुझे वापूजीके पत्रोंकी नकल करनी थी अिसलिअे मैं नकल करने लगी। थोड़ी देर वाद मैंने वापूजीके पास आकर दुवारा रस लेनेको कहा। अुन्होंने फिर मुझसे कहा, "मैं तो समझता था कि तुम आमोंकी कीमत पूछकर ही आओगी। आम आयें तव अुनकी कीमत पूछनेके वाद ही तुम्हें मुझे खानेके लिअे देना चाहिये। यह तुमने खुद तो नहीं किया, परन्तु मेरे पूछनेके वाद भी तुम जवाव नहीं लायीं। मेरे सुननेमें आया है कि अेक आमके दाम आजकल दस आने हैं। यदि यह सही हो तो मैं अिन फलोंको खाये विना जी सकता हूं। अैसा करनेसे मेरे शरीरमें खून वढ़ता नहीं, घटता है। अैसी असह्य महंगाअीमें और अितनी व्यथामें तुमने मुझे चार आमोंके रसका खासा गिलास भर कर दिया। यह गिलास अढ़ाअी रुपयेका हुआ। अिसे मैं किस मुंहसे पी सकता हूं?")

(यह वात वापूजी खूव गंभीरतासे कर रहे थे। अितनेमें वापूजीको प्रणाम करनेके लिअे अेक-दो निराश्रित वहनें अपने वालकोंको लेकर आअीं। वापूजीने तुरन्त ही अुन दोनों वालकोंको दो अलग अलग कटोरियोंमें वह रस पीनेको दे दिया। मुझसे कहने लगे, "अीश्वर मेरी मदद पर है, अिसका यह प्रत्यक्ष अुदाहरण है। मैं अपने मनमें खूव संकोच कर रहा था और विचार रहा था कि मैं कहां हूं? वर्ना अिस लड़कीको भी मेरे लिअे अितने महंगे आमोंका रस निकालनेकी वात कैसे सूझती? परन्तु भगवानने अिन वालकोंको भेज दिया और वे वालक भी अैसे आये जैसे मैं चाहता था। अीश्वरकी कैसी दया है सो तो तुम देखो!!")

वापूजीकी अिस व्यथासे मैं थरथर कांप रही थी। परन्तु अुनके मनकी वेदना समझी जा सकती थी। दस वजे मुन्शीजी आये। १२–३० वजे पण्डितजी आये और १–३० पर गये। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानकी नीतिकी वातें चलीं। वंगालके विभाजनके वारेमें भी वातें हुअीं। दो वजे वापूजीने मिट्टी ली। अुनके पैर दुख रहे थे, अिसलिअे थोड़ी देर मैंने दवाये। मुश्किलसे पाव घंटे वापूजी सोये। अितनेमें श्री वारडोलाअी आ गये। वलदेवसिंहजी तथा पन्तजीके जानेके वाद किरणशंकर राय आये। सवके

साथ बापूजी यही बात करते हैं कि देशके टुकड़े करनेमें अुसका अहित निश्चित है। बापूजीने अुनसे कहा, "अैसी खून-खराबी और हिजरत कराकर अगर अंग्रेज हमें स्वराज्य देना चाहते हों, तो वैसा स्वराज्य हमें नहीं चाहिये। जिन्ना साहबका प्रस्ताव है कि पाकिस्तानमें अल्पमतको पूरी तरह संरक्षण मिलेगा, परन्तु यह कहनेको ही है। आचरणमें तो शून्य है। तब अंग्रेजोंका यह धर्म हो जाता है कि अल्पसंख्यकोंके साथ जो अन्याय हो रहा है अुसका विरोध करें। वाअिसरॉय साहबको अैसा वक्तव्य भी प्रकाशित करना चाहिये। परन्तु अैसी कोअी हलचल तो मैं देखता नहीं। हो सकता है कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूं, अिसलिअे मेरी बुद्धि सठिया गअी हो। कहावत भी तो है 'साठी बुद्धि नाठी'। मेरा भी शायद यही हाल हो। अिसलिअे अपने पक्षमें अब मैं अकेला ही हूं। 'अेकला चलो रे' वाला गुरुदेवका भजन मुझे आश्वासन देता है। (अब अिसीमें जल जानेकी (करेंगे या मरेंगे) की मेरी अभिलाषा है। और कुछ नहीं तो अीश्वर मेरी अितनी प्रार्थना जरूर सुनेगा। याद रखिये कि आज आप हिन्दुस्तानके टुकड़े करेंगे, तो कल प्रांतों और छोटे छोटे राज्योंके टुकड़े होंगे। और राजपूताना, गुजरात, बिहार, दिल्ली, महाराष्ट्र तथा पंजाबके जुदा जुदा टुकड़े हो जायेंगे। अुसका असर हम शायद न भुगतें, क्योंकि हम तो अब मौतके किनारे पर आ गये हैं। परन्तु भावी सन्तान हमें क्षण क्षण पर गालियां देगी कि हमारे पूर्वजोंने यह कैसा स्वराज्य लिया?")

प्रार्थनामें गये और प्रार्थना शुरू करनेसे पहले ही बापूजी बोले:

"रोजकी तरह आप सबको शांति रखनी चाहिये। सारी प्रार्थना तो लोग शांतिपूर्वक करने देते हैं, परन्तु कुरानकी आयतके समय ही गड़बड़ होती है। अिसलिअे आज कुरानकी आयतसे आरंभ करके ही प्रार्थना शुरू करेंगे। 'मजहब नहीं सिखाता आपसमें वैर रखना'। किसी मजहबमें अैसा नहीं लिखा है कि आपसमें लड़ाअी-झगड़ा किया जाय। देशमें रत्न जैसे मुसलमान भी मौजूद हैं और अैसे हिन्दू भी हैं। आज हमारी स्थिति अत्यन्त नाजुक है। सारी दुनिया हमारी तरफ टकटकी लगा कर देख रही है।

"दूसरी बात मुझे खास तौर पर यह कहनी है कि हमारे अखबार विदेशी अखबारोंका अनुकरण न करें। अेक अखबारने हमारे मंत्रियों और वाअिसरॉयके बीच क्या बातें हो रही हैं और कार्यसमितिमें क्या हो रहा है,

अिसकी कल्पना करके सारा हाल प्रकाशित किया है। यह अखबार भी छोटा-मोटा नहीं है। अिस प्रकार झूठे-सच्चे अनुमान लगाकर अखबारोंमें गप्पें लगाने और लोगोंको अुकसाने जैसा और कोअी पाप नहीं है। मैं जानता हूं कि कुछ संवाददाता अैसे भी हैं जो थोड़ा यहांसे पूछते हैं, थोड़ा वहांसे पूछते हैं और अुस परसे अन्दाज लगाते हैं। मैं भी पिछले ५० वर्षसे अेक अखबारनवीस हूं, अिसलिअे मैं जानता हूं कि अखबारोंमें क्या चलता है।

"अंग्रेजोंने तो अेक अच्छेसे अच्छे और काबिल आदमीको यहां भेजा है। वे भरसक पूरा प्रयत्न करते हैं। यदि अिस प्रकार कल्पनाका भूत खड़ा करके अखबारोंमें अुनकी निन्दा की जायगी, तो जिस पवित्र वस्तुका आरंभ हो रहा है वह बिगड़ेगी। आप सबके द्वारा मैं अखबारवालोंसे कह देना चाहता हूं कि आपका पेट भरता नहीं हो तो अुसे फोड़ डालिये, परन्तु मेहरबानी करके अपने स्वार्थके लिअे देशके वातावरणको अुत्तेजित न बनाअिये; और बड़े-बड़े अक्षरोंमें बेसिर पैरकी खबरें छापकर लोगोंको अुल्लू न बनाअिये। अिंग्लैण्ड और अमेरिकाके गंदे तरीकेकी नकल आप न कीजिये।

"आज जवाहरलालने भी मेरे पास आकर अपना दुःख बताया। वे किस किससे अपने हृदयकी व्यथा कहें? मैं भी अुन्हें क्या दिलासा दूं? हम धर्मसे ही, सत्य और अहिंसासे ही, विजयी बने हैं; और अिसमें अखबार भरसक मदद करें, यही मेरी नम्र प्रार्थना है।

"वाअिसरॉय साहबने तो स्पष्ट कहा है कि 'कुछ भी हो ३० जून १९४८ के दिन हम अपना सब कुछ आपको सौंप कर जाने ही वाले हैं। हम नहीं चाहते कि जब हम सत्ता आपको सौंप दें, तब आप आपसमें लड़ाओ करते रहें। अगर आपको मेरा कुछ भी विश्वास हो, तो मैं जो कुछ करता हूं वह अपने अंतःकरणसे पूछकर ही करता हूं। यह बात सही है कि मैं अेक जहाजका कमाण्डर हूं और हिंसाकी शक्ति पर विश्वास रखता हूं। परन्तु जैसे आप अीश्वरको मानते हैं वैसे मैं भी अीश्वरमें संपूर्ण विश्वास रखता हूं। अीश्वरने मुझे जैसी बुद्धि दी है, अुसके अनुसार चलनेमें प्रयत्नशील रहता हूं। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि आप लोग शांति और मेलसे रहें। मैं अपने धर्मका भरसक पालन करनेमें नहीं चूकूंगा।'

"वाअिसरॉय साहबकी अिस वाणी पर हमें विश्वास रखना चाहिये। यद्यपि ये सारी बातें आपसे कहने जैसी नहीं थीं, परन्तु छिपानेकी भी कोअी बात नहीं थी। लार्ड माअुन्टबेटनके बारेमें कुछ भी झूठ कहना अुनके साथ अन्याय करनेके बराबर है।

"मेरी समझमें नहीं आता कि अेक धर्मकी दूसरे धर्मके साथ दुश्मनी क्यों है। हमारे शास्त्रोंमें विष्णु-सहस्रनामका बड़ा महत्त्व है। परन्तु अुसका अर्थ क्या है, यह कभी हमने सोचा है? दुनियामें जितने मनुष्य हैं, वे भगवानके ही नाम हैं। जिस ढंगसे हम अुस नाम-स्मरणकी पूजा करते हैं, अुसी ढंगसे हमें मानव-समाजकी पूजा करनी चाहिये। अीश्वर, खुदा, गॉड, अहुरमज्द कुछ भी कहिये, परन्तु अीश्वरकी दुनिया अितनी विशाल है कि अुसका अन्त ही नहीं है। तो फिर अुसका किसी भी रूपमें नाम लेनेमें क्या पाप हो गया, यही मैं नहीं समझ सकता। आपने मुझे भले प्रार्थना नहीं करने दी, परन्तु शांतिसे सुना तो है। अब हम दो मिनट मौनपूर्वक शान्ति रखकर अीश्वरका स्मरण करके बिखर जायंगे।"

प्रार्थना-सभामें आये हुअे लोगोंने संपूर्ण शांति रखी। वातावरण खूब भव्य हो गया था। प्रार्थनाके बाद बापूजी घूमे। बादमें सुचेता दीदीको बुखार आ जानेके कारण अुन्हें देखने गये। मैं भी साथ गअी थी। वहांसे आने पर भी लोग अेकके बाद अेक मिलने आते ही रहे। अिसलिअे ११ बजे बाद ही सो पाये। असह्य गरमीके कारण बापूजीको माथे पर दिनभर ठण्डे पानीकी पट्टी रखना पड़ती है। रातको मिट्टी ली। मैं ११॥ बजे अपना लिखना वगैरा पूरा करके सोने गअी। दिनभरमें आठ-दस बार मुझे नकसीर छूटती है।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
४-५-'४७

प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगाली पाठ किया और मुझे गीतापाठ कराया। आअी हुअी डाक देखी। राजेन्द्रबाबू, राजकुमारी बहन और हरेकृष्ण मेहताब आये। दूसरे दो पुलिसके आदमी भी थे। अुन सबके साथ बातें करते हुअे बापूजी बोले:

"मुझे स्वीकार करना चाहिये कि हमारी आजादीकी लड़ाअियां शुद्ध रूपमें अहिंसक नहीं थीं। यदि सभी कांग्रेसी प्रामाणिकतासे अहिंसाका पालन

करते, तो आज हमारी स्थिति जो निरंकुश जैसी हो गअी है वह न हुअी होती। हमने जिन्हें अहिंसक लड़ाअियां मान लिया वे अहिंसक नहीं थीं। यह मुझे अब दिनोंदिन अधिक दिखाअी देने लगा है। नहीं तो हममें साम्प्रदायिकताका भूत जागता ही नहीं, हममें से अस्पृश्यताका पूरी तरह अंत हो जाता, मालिक और मजदूरका भेद मिट जाता और जितना काम मजदूर करता अुतना ही मालिक भी करता। बहन-बेटियोंकी अिज्जत हमारे देशमें दिन-दहाड़े जैसी लूटी जा रही है, वैसी और कहीं लुटती नहीं सुनी। यदि हम सत्य और अहिंसाके रास्ते पर चले होते, तो अिस प्रकार मानवताको हमारे मानसमें से नष्ट हुअी हम न देखते, समाज सुव्यवस्थित होता और अीर्षाका नाम-निशान न होता। आज कोअी अच्छा चिह्न हमें दिखाअी नहीं दे रहा है। जहां-तहां कांग्रेसी धिक्कारे जाते हैं और अैसा लगता है मानो लोगोंका विश्वास हम परसे अुठ गया है। मुस्लिम लीगका भले हम पर विश्वास न हो, परन्तु देशी रियासतोंको भी हमारे प्रति अरुचि है। अिसमें कसूर-वार हम और शायद मैं हूं। यदि हमने सौ फीसदी सत्य, अहिंसा और त्यागको अपनाया होता, तो कांग्रेसको जनता तो क्या, अेक छोटा बच्चा भी आज पूजता। अुसके बजाय अुलटा ही वातावरण है। अिसलिअे अब भी हमें अपनी भूल ढूंढ़ निकालनी चाहिये और हम कहां भूल कर रहे हैं, यह जानकर अुसे सुधारनेका प्रयत्न करना चाहिये। नहीं तो केवल अेक दशकमें पिछले ६० वर्षका कांग्रेसका अुज्ज्वल अितिहास मिट जायगा।

"जब तक हम अपनेमें शुद्ध अहिंसा और सत्यकी ज्योति पैदा नहीं करेंगे, तब तक हम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। वह ज्योति पैदा करने पर अपने-आप हिंसावृत्ति नष्ट हो जायगी और हिंसक अुपद्रव भी काबूमें आ जायंगे।

"अितने पर भी अैसे विशाल राज्यमें और जब हिन्दुस्तानमें अनेक रंगवाली जातियां रहती हैं, मैंने यह नहीं मान लिया है कि पुलिसका स्थान यहां बिलकुल रहेगा ही नहीं। आजका वातावरण देखते हुअे हम सेनाके बिना भी जब अपना काम चलानेमें समर्थ नहीं हैं, तब पुलिसके बिना काम चलानेकी बात कहनेका साहस तो किस मुंहसे करें? अलबत्ता, पुलिसके बिना काम चलाया जा सकता है, अिस कल्पनाका चित्र जरूर मेरे दिमागमें

है। परन्तु 'पुलिस' शब्दको बदलकर मैं अुन्हें 'समाज-सुधारक' नाम दूंगा। वे लोगोंके सेवक होंगे, सरदार नहीं।

("जैसे हिंसाकी तालीमके लिअे मारना सीखना पड़ता है, वैसे अहिंसाको अपनानेमें मरना सीखना चाहिये। अहिंसामें डरका तो कहीं स्थान ही नहीं है। अितना ही नहीं, कुटुम्ब जाय, संपत्ति जाय या अपना शरीर भी चला जाय, तो अिसकी अुसे परवाह नहीं होगी। अितने अूंचे दर्जेकी त्यागवृत्ति पैदा करनी चाहिये। अहिंसादेवीके पुजारीको तो केवल अेक अीश्वरका ही डर होता है। बाह्य शरीरकी रक्षाके लिअे हिंसाकी जरूरत है। परन्तु हमें भान होना चाहिये कि शरीर तो क्षणभंगुर है, आत्मा ही असली चीज है। और आत्म-सम्मानकी रक्षा करनी हो, तो अहिंसाके सिवा अिसका और कोअी रास्ता नहीं है।)

"अैसी अहिंसाकी कोअी पाठशाला नहीं होती। अिसमें तो साहस करें तभी हमारी परीक्षा होती है। आज अिस तरह हमारी परीक्षा हो रही है। और मेरी दृष्टिसे हम अुसमें असफल साबित हुअे हैं। वर्ना अिन दंगोंमें कांग्रेसके चार आनेके अेक अेक सदस्यको या तो दंगे शांत करनेका प्रयत्न करना चाहिये या मर जाना चाहिये। अिसके बजाय पड़ोसमें भी कोअी कट रहा हो तो अुसे बचानेकी वे हिम्मत नहीं करते। अरे, अैसी बातें भी मेरे पास आती हैं कि अपने प्राण बचानेके लिअे लोग अपनी पत्नी, मां, बहन या लड़कीको जोखिममें डालकर भी भाग निकले हैं। यह सुनता हूं तब मेरा हृदय कांप अुठता है। यह हमारी कैसी कायरता है? खतरोंका सामना करके सच्चे अहिंसकको अपनी परीक्षा करनी चाहिये। अहिंसककी वीरता हिंसककी वीरतासे अनेक गुनी अूंची है। परन्तु मेरी कौन सुने? फिर भी अितनी आशा तो मैं रखता हूं कि मुझे कोअी मारने आये तो मैं जरा भी गुस्सा किये बिना अटल रहकर हंसते चेहरे अपने अिष्टदेवका स्मरण करता हुआ मरूंगा। मेरा विश्वास है कि अितनी शक्ति अीश्वर मुझे देगा। मुझमें भी भीतर ही भीतर कोअी खामी होगी, दम्भ होगा, तो अुसका सबूत मेरा अन्तकाल ही होगा। मैं १२५ वर्ष जीनेकी बातें करता था। वह श्रद्धा अब नहीं रही। क्योंकि प्रतिदिन चारों तरफ मुझे झूठ और दगा ही दिखाअी देता है। परन्तु अीश्वर मुझे अैसा अन्तकाल देगा, जो अहिंसकको शोभा दे। अिस श्रद्धामें मैं दिनोंदिन अधिक दृढ़ होता जा रहा हूं।"

आजकल कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक चल रही है। भारतकी राजनीति खूब अटपटी हो गअी है और जगह जगह दंगे फूट निकले हैं। अिन सब बातोंकी बापूजीके मनमें कितनी वेदना है! आज प्रातःकाल घूमते समय अुन्होंने अत्यंत गंभीरतासे बातें कीं।

मालिशके समय डॉ० जीवराज मेहताने बापूजीकी जांच की। मानसिक बोझ खूब है, अिसलिअे ब्लडप्रेशर अूंचा है।

भोजनमें चार बादाम, चार काजू, ६ औंस दूध और अुबला हुआ शाग लिया। घनश्यामदासजी बिड़ला सिर्फ मिलनेके लिअे आये। भोजनके बाद २० मिनट आराम किया।

१०॥ से १२॥ तक पंडितजीके साथ अेकान्तमें बातें कीं। वाअिसरॉयसे मिलने जाना था, अिसलिअे सलाह करने आये थे। २ बजे मद्रासके मुख्यमंत्री आये। ३ बजे कार्यसमितिकी बैठक शुरू हुअी। बापूजीको ४ बजे वाअिसरॉयसे मिलने जाना था अिसलिअे वे चले गये। परन्तु बैठक ५ बजे तक चली। ४-४५ पर बापूजी वापस लौटे।

हाथ-मुंह धोते धोते बापूजीने वाअिसरॉयसे हुअी बातोंका सार मुझसे कहा, "वे तो स्पष्ट कहते हैं कि हमने ३० जून १९४८ को जानेका निश्चय कर लिया है। मैं किसीके चलाये नहीं चलता। मेरी अिच्छा यह है कि अब मैं हिन्दुस्तानका अन्तिम वाअिसरॉय रहूं!" अितनी बात मेरी डायरीमें नोट कर लेनेको मुझसे कहा, ताकि कभी वाअिसरॉयकी वाणीकी तारीख और समयका अनुसंधान मिलाना जरूरी हो तो मिल जाय।

शामको सिर्फ ताजे अंगूर ही खाये। बादमें प्रार्थना-सभामें गये।

आज रविवार होनेसे प्रार्थनामें खूब भीड़ थी। लेकिन बापूजीने बोलना शुरू किया कि जनता शान्त हो गअी।

बापूजीने पूछा, "आज कुरानकी आयतसे प्रार्थना शुरू करनी है, परन्तु अुससे पहले मैं पूछूंगा कि यहां कोअी अैसा व्यक्ति है जो अितने बड़े जनसमुदायको प्रार्थना करनेसे रोके? प्रार्थना शुरू करने पर कोअी रोकेगा तो प्रार्थना तो बन्द हो जायगी, परन्तु वह बहुत असभ्य मालूम होगा। अिसलिअे जिस किसीको विघ्न डालना हो वह मुझे शुरूमें ही कह दे।

बापूजी अितना बोले कि अेक जवान भाअी अुठे। अुन्होंने कहा: "मेरा विरोध है।" बापूजीने कहा, "किसलिअे?"

अितनेमें तो जनतामें अुस भाअीके प्रति रोष फैल गया। कुछ लोग अुसे बिठा देनेका प्रयत्न करने लगे। बापूजीने जनताको शान्त रहनेकी और अुस युवकके साथ बात करने देनेकी प्रार्थना की। अन्तमें अेक भाअीको खुश करनेके लिअे बापूजीने प्रार्थना तो बन्द कर दी, परन्तु प्रवचनमें बोले:

("मैं यह बताना चाहता हूं कि हमारे धर्ममें सभ्यता और अहिंसाका पूरा स्थान है। आप मुझे रोज प्रार्थना करनेसे रोकते हैं। अिस तरह आप हिन्दू धर्मको नीचे गिराते हैं। आपको मेरी प्रार्थना सुनना अच्छा न लगता हो तो आप यहां न आअिये, परन्तु आप हजारों मनुष्योंको अीश्वर-भजन करनेसे रोकें और वह भी हिन्दू धर्मके नाम पर, अिसमें आप किस धर्मकी रक्षा करते हैं, यह मैं समझ ही नहीं सकता। मगर मैं तो अहिंसासे बंधा हुआ हूं, अिसलिअे अेक छोटेसे बालकका दिल भी दुखाना नहीं चाहता। मैं अितने समुदायमें प्रार्थना करूं और यदि यह युवक शोर मचावे तो शायद आप अिसे मारकर निकाल दें। अैसा वातावरण न बने, अिसीलिअे मैं प्रार्थना नहीं करता।)

"आज वाअिसरॉयके साथ डेढ़ घंटे तक मेरी बातचीत हुअी। वे तो कहते हैं कि, 'सुलह-शांतिसे सत्ता सौंपनेके लिअे मैं यहां आया हूं। १९४८ की ३० जूनको हमें यहांसे जाना ही है।' अिसके सिवा अुन्होंने कहा, 'हिन्दुस्तान गअी-गुजरी बातें भूल जाय। हम जानेके पहले साम्प्रदायिक अेकता होनेके लिअे प्रामाणिक प्रयत्न करेंगे। भारतमें साम्प्रदायिक कलह बना रहे, अिसमें अंग्रेजों या भारतीयोंकी शोभा नहीं है।'

"ये वाअिसरॉय अेक अच्छे जल-सेनापति हैं। वे अहिंसाको माननेवाले तो नहीं है, फिर भी अीश्वरमें पूर्ण श्रद्धा रखनेवाले हैं। अुन्होंने कहा, 'जिस समय हम जानेको तैयार हैं अुस समय यदि भारतकी भूमि पर दंगे जारी रहें, तो कानून और व्यवस्था कायम रखनेकी जिम्मेदारी हमारी है।'

"मेरा खयाल है कि हमें अुनकी अिस बात पर विश्वास रखना चाहिये और अुनकी अीमानदारी पर भरोसा करना चाहिये। अिसमें हम कुछ नहीं खोयेंगे। वे यदि धोखा देनेको अैसा कहते होंगे, तो अुन पर कलंकका ...क। लगेगा और अीमानदारीसे कहते होंगे तब तो वे अपना नाम अमर ... जायेंगे।

"परन्तु हिन्दू-मुस्लिम दंगे हम जारी रखेंगे, कत्ल चालू रखेंगे, तो अुसका अर्थ यह होगा कि अंग्रेज यहांसे नहीं जायेंगे। और हम पर अुनका यह अुपकार चढ़ेगा कि 'तुम्हें लड़ते छोड़कर हम नहीं जा सकते।'

"आज हमारे देशमें खुराक और अनाजकी असह्य तंगी है। और अुससे सभी जातियोंके मनुष्य पीड़ित होते हैं। सबको पेटका गड्ढा भरना और शरीर ढंकना ही पड़ता है। अगर हम आपसमें लड़ना छोड़कर मैत्री पैदा करें तो सबको अन्न-वस्त्र मिलेगा।

"कायदे आजम साहबने यदि संयुक्त अपील पर सच्चे दिलसे हस्ताक्षर किये हों, तो पंजाब और सरहदमें क्रूरताभरे जो कृत्य हो रहे हैं वे रुकने ही चाहिये। यदि मेरी आवाज अुन तक पहुंच सके, तो मैं अुनसे प्रार्थना करता हूं कि अुन्होंने जो हस्ताक्षर किये हैं अुन्हें केवल कागज पर ही न रहने देकर आचरणमें लायें, और जनतामें यह विश्वास पैदा करें कि जिन्ना साहब सचमुच शान्ति चाहते हैं।"

७॥ से ९॥ तक बापूजीने समाजवादी दलके भाअियोंके साथ बातें कीं।

बापूजीने अिन लोगोंको भी अच्छी तरह सुना दिया कि अिस समय देशको ध्यानमें रखकर मेलजोलसे ही काम करना चाहिये। दूसरोंकी भूलें बतानेसे पहले खुद सोचना चाहिये। और 'त्याग न टके रे वैराग्य बिना' अिस कड़ीकी भावनाका सूक्ष्मतासे मनन करनेकी सूचना की।

अुनके जानेके बाद बापूजीने मौन लिया।

१०–३० के बाद सोनेकी तैयारी। असह्य गरमी है, हवा बिलकुल बन्द हो गअी है। १२–३० पर बापूजीको बहुत गरमी लगनेसे पंखा किया और सिर पर मिट्टीकी पट्टी रखी। सिर पर मिट्टी रखवानेके बाद ही वे सो सके।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
५–५–'४७

नित्यकी भांति प्रार्थना। बंगाली पाठमें अेक बंगाली भजनका अनुवाद किया। मौनवार होनेसे राजेन्द्रबाबू जल्दी चले गये।

अेक आश्रमवासी भाअी मृत्युशय्या पर थे। अुन्हें बापूजीने लिखा:

"तुम्हारा कार्ड मिला। मृत्यु हमारा सच्चा और अचूक साथी है। सबको अपने समय पर ले जाती है। अिसलिअे जाना ही पड़े तो शांतिसे और दिलमें रामको रखकर हंसते चेहरे अुससे भेंट करना। . . . कहां है?

बापूके आशीर्वाद"

हरअेक शुभ कार्यमें सफलता छिपी ही रहती है। मुझे गीतापाठ कराया। ६ बजे घूमने गये। मालिश, स्नान वगैरा नियमानुसार। टण्डनजी आये थे। अुन्होंने भारतके विभाजनके बारेमें चर्चा की। अिंग्लैण्डमें बापूजीकी पुत्री जैसी अेक महिला जमुना बहनको और आस्ट्रेलियामें रहनेवाली सावित्री बहनको पत्र लिखा। ये दोनों बहनें अंग्रेज हैं। परन्तु बापूजीने अुनके नाम बदल दिये हैं।

सोहरावर्दी साहबका कलकत्तेके बारेमें पत्र आया। रॉयटरके संवाद-दाताके साथ बापूजीके जो सवाल-जवाब हुअे थे, वे अुन्होंने बापूजीकी जान-कारीके लिअे लिखित रूपमें भेजे। बापूजीने प्रश्नोंके जो अुत्तर दिये हैं, अुनसे आजकलकी राजनीति पर बापूजीके क्या विचार हैं, अिसकी अच्छी जानकारी मिलती है।

प्रश्न — हिन्दुस्तानमें विभाजन करना संभव है? और तब क्या सांप्रदायिक प्रश्नका अन्त हो जायगा और शान्ति स्थापित हो जायगी?

बापूजी — मैं विभाजन करनेके विरुद्ध था और अब भी मेरे विचारोंमें कोअी परिवर्तन नहीं हुआ है।

प्रश्न — मान लीजिये कि दंगे अिसी तरह होते रहें और ३० जून तक साम्प्रदायिक अशांति बनी रहे, तो क्या आप यह मानते हैं कि कानून और व्यवस्था कायम रखनेके लिअे और हिन्दुस्तानियोंकी रक्षाके लिअे अंग्रेजोंका भारतमें रहनेका धर्म अुत्पन्न हो जायगा?

बापूजी — हम पर अुपकार करनेके लिअे अुनके यहां रहनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। अंग्रेज भारतको जल्दीसे जल्दी छोड़कर चले जायं, अिसीमें हमारा लाभ है। वे जानेका समय जितना लंबाते हैं अुतना हमारा नुकसान होता । फिर भी मैं किसी प्रकारकी शंका नहीं करता और वाअिसरॉय साहबकी ेमें मुझे पूरा विश्वास है। क्योंकि मैं तो विश्वासी आदमी ठहरा।

'दगा किसीका सगा नहीं' अिस कहावतको मैं मानता हूं। अब भी १३ महीने तक क्यों लंबाते हैं? ब्रिटेनको भारत छोड़कर जानेके लिअे अितना लंबा अरसा किसलिअे चाहिये, यह मेरी समझमें नहीं आता। हमने बन्दूककी नोकसे या हिंसासे ब्रिटेनको नहीं हराया। परन्तु नैतिक बलसे ही हम जीते हैं। फिर भी अब तककी घोषणाके अनुसार यदि ब्रिटेन ३० जून १९४८ को भारतको मुक्त करेगा, तो भारतके अितिहासमें और सारी दुनियाके अिति-हासमें यह अुदारतापूर्ण कार्य स्वर्णाक्षरोंमें लिखने लायक होगा। परन्तु १३ महीनेके लंबे अरसेमें भारतको और भी मुश्किलें भोगनी होंगी, क्योंकि अंग्रेजोंका सैनिक संगठन यहां बहुत बड़ा है। साथ ही भारतवासियोंको ब्रिटेनकी मददकी राह देखनेकी तालीम मिली है। नोआखाली, बिहार और सरहदके अल्पसंख्यकोंने गोरी फौजकी सहायता मांगी है। अिसलिअे मैं चिल्ला-चिल्ला कर कहता हूं कि अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानसे जल्दीसे जल्दी चला जाना चाहिये। अितना ही नहीं, अिस समय जो अंधाधुंधी फैली हुअी है अुसके बारेमें मुझे यह कहनेमें हिचकिचाहट नहीं होती कि अंग्रेजोंका यहां रहना ही अुसके लिअे जिम्मेदार है। अुनके बिना हम आपसमें कट मरेंगे तो हम अधिक शुद्ध बनेंगे। और अुससे हममें अधिक साहस आयेगा। अिसे मैं पसन्द करता हूं। परन्तु अंग्रेजोंसे दयाकी भीख नहीं मांगता कि हमारी रक्षा करनेके लिअे वे यहां रहें।

प्रश्न — हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद आप अंग्रेजोंके साथ कैसा संबंध रखेंगे?

बापूजी — यदि अंग्रेज यहांसे हृदयसे और स्वेच्छासे जायेंगे, तो मेरी मान्यता है कि भारत और ब्रिटेनके बीच अत्यन्त गाढ़ मैत्री हो जायगी।

प्रश्न — संयुक्त राष्ट्रसंघकी अिस समय जिस प्रकारकी रचना हुअी है, वह क्या संसारमें स्थायी शांति कायम रख सकेगी?

बापूजी — मुझे नहीं लगता कि अुससे स्थायी शांति स्थापित होगी। बल्कि मेरे मनमें अुलटा यह डर है कि दुनिया अभी तक लड़नेसे थकी नहीं है। फिर भी मेरी धारणा है कि हिन्दुस्तानका मामला शांतिसे निबट जाय और यहां अहिंसक राज्य स्थापित हो जाय, तो भारत संसारका दीपक बनेगा और संसार लंबे समय तक शांति और सुखका अुपभोग कर सकेगा। फिर भी अिसका सारा आधार तो ब्रिटिश राजनीतिज्ञता पर ही है।

प्रश्न — फिलस्तीनके बारेमें आपकी क्या राय है?

बापूजी — फिलस्तीनका सवाल अटपटा बन गया है। अगर मैं यहूदी होअूं तो यह कहूं कि पागलपन छोड़ो और क्रूरतासे दूसरोंको अपने अधीन करनेकी आकांक्षा छोड़ो। राजनीतिक आकांक्षा हो तो अुसका मेरे लिअे कोअी मूल्य नहीं। यहूदियोंको फिलस्तीनमें जानेकी अिच्छा क्यों रखनी चाहिये? मानव-जातिमें वह भी अेक विशाल और अनोखी जाति है। दक्षिण अफ्रीकामें मैं यहूदियोंके साथ बहुत वर्ष तक रहा था। अनेक यहूदी मेरे मित्र और सहायक थे। और यदि अुनकी लगनका कारण धार्मिक हो, तब तो अुसमें आंतक फैलाने और हिंसा करनेका कोअी स्थान नहीं हो सकता। परन्तु मैं तो अुन्हें अेक मित्रके नाते सलाह देता हूं कि वे अरबोंके सामने जाकर अुनसे मिलें, अुनसे दोस्ती बढ़ायें और अमरीकों और अंग्रेजोंकी मदद पर आधार न रखें। वे केवल समझौता करें और दोनों पक्षोंके हितमें हो अैसा शांति और सुलहका मार्ग ग्रहण करें। अिसीमें सबका हित समाया हुआ है।

और सब बातें नियमानुसार हुअीं। २ बजे मिट्टी ली। सरदार दादा और मणिबहन आये। सरदार दादाने वाअिसरॉय और बंगालकी बातें कीं। पंजाबमें भी खूब अुत्तेजना है। बिहारके मुख्यमंत्री श्रीबाबू ३ बजे आये।

कुरानकी आयत औजबिल्लाहका अनुवाद कराया। अुसे प्रार्थनामें पहली बार सुनाना था। परन्तु प्रार्थनाके समय मूसलाधार बरसात टूट पड़ी, अिसलिअे शामियानेमें थोड़ेसे भाअी-बहनोंके बीच खड़े खड़े ही प्रार्थना हुअी। अिस प्रार्थनामें किसीने बाधा नहीं डाली।

५। बजे पंडितजी आये। पंडितजीकी बातों परसे अैसा लगता है कि बापूजीको २–४ दिनमें कलकत्ते जाना पड़ेगा। चारों तरफ दावानल जल अुठा है। अिसलिअे वे बहुत बेचैन हैं। वैसे मौन होनेके कारण सारे दिन वातावरण शान्त रहा।

बरसात होनेके कारण कमरेमें सोनेका अिन्तजाम किया। आज तो बापूजी ९। बजे ही सो गये। अिस प्रकार कअी दिन बाद जल्दी सो पाये। आजकल बापूजीको थकान भी खूब रहती है। वजन भी यहां दो पौंड घट गया है। गरमीके कारण बापूजी खुराक नहीं ले सकते। सारी रात हुअी। प्रवचन करनेकी बात तो आज थी ही नहीं।

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
६-५-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। बापूजीने बंगाली पाठ किया और मुझे गीतापाठ कराया। बादमें आशाबहनके साथ सेवाग्रामके संबंधमें नअी तालीम संबन्धी बातें कीं। घूमते समय नियमानुसार राजेन्द्रबाबू आये और साथ घूमे। फिर मौलाना साहब आये। आजकल अेक ही तरहकी हवा है। सब यही सोचने लगे हैं कि विभाजनका और जो दंगे फूट निकले हैं अुनका क्या किया जाय? अैसा मालूम होता है कि बापूजी भी आज प्रातःकालसे काफी गहन विचारोंमें लीन हैं।

खानसाहब सुबह १० बजे आये। मुझसे मिलते ही लिपट गये। सरहदके दंगोंकी दर्दभरी कहानी सुनाअी। अुनके हृदयको भारी आघात पहुंचा है।

चरखा कातते समय संवाददाताका काम करनेवाली अेक अंग्रेज महिला आयीं। अुनके साथ अम्माजान (सरोजिनी नायडू) आअीं। अुन्होंने बापूजीका चरखा बड़े ध्यानसे देखा। बापूजी अुनके अेक प्रश्नके अुत्तरमें बोले:

"हमारे लोगोंका अुद्धार करना हो और अभी चारों ओर जो हिंसा फूट पड़ी है अुससे बचना हो, तो हमारा यह 'सुदर्शनचक्र' ही जिसका अेकमात्र अुपाय है।

"हमारे कपासका अितिहास भी समझने लायक है। हमारे यहां कारीगर १५० वर्ष पहले जिस प्रकारका कपड़ा बनाते थे, अुसका नमूना तक अंग्रेजोंने नहीं रहने दिया। 'सांप चला गया मगर लकीर रह गअी' वाली बात है। यदि भारतमें अेक अेक मनुष्य चरखा चलाने लग जाय, तो अेक अिंच भी कपड़ा बाहरसे न लाना पड़े। हमारी सरकार कहती है कि बंगाल गरीब है, अुड़ीसा गरीब है। परन्तु यह बात मेरे गले ही नहीं अुतरती। हमारे देशमें रुअीकी जितनी पैदावार होती है अुतनी और कहीं नहीं होती। सही बात यह है कि हम गरीब नहीं, लेकिन आलसी हैं। यदि आलस्यको छोड़कर ज्ञानपूर्वक केवल आध घंटे ही यह चरखा चले, तो हमारी सर्जकशक्ति अपने-आप जाग्रत हो जाय। मैं खुराकके बिना काम चला सकता हूं, परन्तु यज्ञार्थ कताअीके बिना अेक दिन भी नहीं चला सकता। चरखेमें ही स्वराज्य और शांति है। मैंने जब पहला चरखा हाथमें लिया

तब अुसके पीछे कोअी खास ज्ञान नहीं था। परन्तु मेरे भतीजे मगनलाल गांधीने अिस चरखेके पीछे फकीरी ली और अुसने अनेक खोजें कीं। जिसके पास यह चरखा है, वह संपूर्ण स्वतंत्रताका अुपभोग करता है। जो मिलोंके कपड़े पर आधार रखते हैं, वे अपने-आप मिल-मालिकोंके गुलाम बन जाते हैं। प्रत्येक मनुष्यको अपनी आवश्यकताअें स्वयं ढूंढ़ लेनी चाहिये। अुन आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिअे खुद ही प्रयत्न करना चाहिये। जब बिलकुल असह्य हो जाय, तभी दूसरोंकी मदद लेनी चाहिये। जब तक प्रत्येक मनुष्यका मानस अिस प्रकारका न बन जाय और वह पूरा स्वावलंबी न हो जाय, तब तक स्वतंत्रताका सुख कभी नहीं भोगा जा सकता।"

कलकत्तेके समाचार बहुत खराब हैं। बापूजी अकेले हैं और सब कोअी अुन्हें बुलाते हैं। डेरा अिस्माअिलखांसे कुछ भाअी आये थे। बहादुर पठानोंकी आंखोंमें पानी आ गया और वहां अुन पर जो जुल्म हो रहे हैं अुनका ब्यौरा अुन्होंने रोते रोते सुनाया। बापूजीने अुन्हें आश्वासन दिया और बहादुर बननेको कहा। हिम्मत हारनेसे कुछ भी नहीं हो सकता।

आज दिनभर अिसी तरहकी दुःखभरी बातें सुननेको मिलीं। जिन बापूजीने साठ वर्ष तक लोगोंके सुखके खातिर, करोड़ोंको गुलामीसे मुक्त करनेके लिअे तथा भारतके अेक अेक बालक, स्त्री और पुरुषको मानवतापूर्ण जीवन प्राप्त करानेके लिअे तपस्या की है, जो अहिंसाके पुजारी हैं और जिनके कोशमें 'वैर' जैसा कोअी शब्द ही नहीं है, अुन बापूजीको आजादीके आरंभमें ही खूनकी नदियां बहती देखकर, चारों ओर छाया हुआ खून-खच्चरका वातावरण देखकर, 'वैर-वैर' के गूंजते हुअे नारे सुनकर तथा देशवासियों द्वारा अपने ही देशबन्धुओंको काटनेकी क्रूरतापूर्ण कहानी सुनकर कैसी व्यथा हो रही होगी, अिसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। अीश्वर भी बापूजीकी कड़ी परीक्षा ले रहा है।

आज दोपहरको मैं थोड़ी देर सो गअी थी। स्नानघरमें जाते हुअे बापूजीने मुझे नींदमें देखा। मैं जाग न जाअूं, अिस ढंगसे धीरे धीरे कदम अुठाकर वे अंदर गये। परन्तु मैं थोड़ी ही देरमें जाग गअी। बापूजी खुश हुअे और बोले, "तुम्हें सोते देखकर मेरा सेरभर खून बढ़ गया होगा। यदि दोपहरको आध घंटे सो जाया करो तो शरीर कभी न बिगड़े। जिसे सेवा करनी है अुसे अपना डॉक्टर खुद बनकर यह ढूंढ़ लेना चाहिये कि

खराबी कहां है और अुसका अुपचार समझकर और अुस पर अमल करके नीरोग रहना चाहिये। तभी अिस सेवाका मूल्यांकन हो सकता है।"

वाअिसरॉयने शिमला जानेसे पहले पंडितजीको संदेश भेजा कि "मुझे दुःख है कि मैं जानेसे पहले गांधीजीसे नहीं मिल सकता। यदि मेरे आने तक वे यहां होंगे तो मैं जरूर मिलूंगा।"

शामको जिन्ना साहबके बंगले पर मिलने गये। . . . को यह बहुत अच्छा नहीं लगा। प्रार्थनाके समय तक बापूजी वापस नहीं आये थे। अिसलिअे हम प्रार्थना शुरू करने गये। परन्तु कुरानकी आयतका विरोध होनेसे हमने प्रार्थना नहीं की। कल मौनमें बापूजीने जो लिखित संदेश तैयार किया था और जो बरसातके कारण पढ़ा नहीं जा सका था वही आज पढ़ा गया। कुरानकी आयतका अर्थ अिस प्रकार है:

'मैं पापात्मा शैतानके हाथोंसे बचनेके लिअे परमात्माकी शरण लेता हूं।

'हे प्रभो! तेरे नामका ही स्मरण करके मैं अपने तमाम कामोंका आरंभ करता हूं। तू दयाका सागर है, तू कृपालु है, तू अखिल विश्वका सरजनहार है, तू ही मालिक है। मैं तेरी मदद मांगता हूं। अन्तिम न्याय करनेवाला अेक तू ही है। तू मुझे सीधा रास्ता बता। मुझे अैसा रास्ता बता जिससे तेरी कृपा प्राप्त करनेके लिअे भाग्यशाली बनूं। जिस पर तेरी अकृपा हो, जो बुरे रास्ते पर हो, अुसका रास्ता मुझे कभी न बताना।

'अीश्वर अेक है। वह सनातन है, निराकार निरंजन है, अज और अद्वितीय है; सारी सृष्टिका सर्जक है।'

अर्थके बाद बापूजीने लिखा: कुरानशरीफमें से रोज जो आयत बोली जाती है अुसका यह अर्थ है। अैसे गूढ़ अर्थोंसे भरी प्रार्थनाके लिअे क्यों विरोध किया जाता है, यह मैं समझ नहीं सकता। अिस प्रार्थनाका अेक अेक वाक्य हृदयमें अंकित करने योग्य है। परन्तु जब तक हम अपनी अज्ञानता दूर न करें, तब तक हमारा किसी हालतमें अुद्धार नहीं होगा।

प्रार्थनाके बाद भी, ७-३० हो जाने पर भी, बापूजी अभी तक नहीं आये। अिसलिअे बड़ी चिन्ता होने लगी है। अनेक प्रकारके विचार मनमें आ गये।

(अन्तमें साढ़े आठ बजे बापूजी जिन्ना साहबके पाससे लौटे। मैं बड़ी चिन्तामें पड़ गअी थी। मैंने बापूजीको आते ही कहा कि अितनी अधिक देर जिन्ना साहबके बंगले पर हुअी और आप अकेले ही गये थे, अिसलिअे मनमें बहुत बुरे विचार अुठने लगे कि आपको किसीने कुछ कर दिया हो तो? बापूजी हंस पड़े और बोले: "ओ हो! जिन्ना साहबके देखते हुअे अुनके बंगले पर मुझे कोअी मार डाले, अैसा मेरा अहोभाग्य कहां?"

मैंने कहा, "बापूजी! आप तो अितने बड़े हैं। फिर जिन्ना साहबसे आप किसलिअे मिलने जाते हैं? अुनका यहां आनेका फर्ज नहीं है? अुम्रमें भी वे आपसे छोटे हैं!"

बापूजी बोले, "अुम्रमें छोटे हैं तो क्या हुआ? परन्तु ओहदेमें तो मुझसे बड़े हैं न? वे अेक संस्थाके बड़े अध्यक्ष हैं और मैं अेक छोटा-सा नागरिक हूं। अुनके पास बड़ी सत्ता है। मेरे पास कुछ भी नहीं। अिस प्रकार मैं तो अुनकी तुलनामें छोटेसे छोटा आदमी हूं। अिसलिअे मुझीको अुनसे मिलने जाना चाहिये न?"

मैंने कहा: "आप भी हमारे बड़े नेता हैं। आपको दुनिया 'महापुरुष', 'महात्माजी' जैसी पदवियां देती है। अुसका क्या?"

(बापूजी हंसते हंसते कहने लगे: "मैं तुम्हारा नेता जरूर हूं। बच्चोंका नेता तो कोअी भी बन सकता है। मैं अपनेको महापुरुष भी नहीं मानता और महात्मा भी नहीं मानता। वैसे तुम्हारे जैसे अज्ञानी और मूर्ख मुझे महात्मा मान लें तो मैं क्या करूं? दुनिया तो पलभरमें किसीको महान मान ले और पलभरमें अेक कौड़ीका कर दे। अिसकी जनतामें क्या कीमत? (और दुनियाके पदवियां देनेसे ही मनुष्य खुद मान ले कि मैं महान पुरुष और महात्मा हूं, तो अुस दिनसे अुस मनुष्यका पतन हुआ समझ लेना चाहिये। अीश्वरके सिवा किसीको यह पदवी लेनेका अधिकार नहीं है। मेरी शक्ति ही क्या है? जो कुछ होता है वह अीश्वर कराता है तो ही होता है। अुसकी अिच्छाके बिना अिस संसारमें अेक पत्ता भी नहीं हिल सकता। अिसके सिवा, मैं सेवक हूं अिसलिअे मुझे जिन्ना साहबके पास जरूर जाना चाहिये। वे मुझे यहां मिलने आयें तो मेरी शोभा क्या? अुदाहरणके लिअे, मान लो कि तुम बाहरसे किसीके यहां आकर रहती हो, तो तुम मुझे मिलने आओ यह शोभा देगा या मैं तुमसे मिलने आऊं यह शोभा देगा? अब तुम समझ गअी होगी कि जिन्ना साहब अेक बड़ी

संस्थाके अध्यक्ष हैं, नेता हैं। मैं तो किसीका भी नेता या प्रतिनिधि नहीं हूं। कांग्रेसका चार आना सदस्य भी नहीं हूं। अिसलिअे मुझे ही अुनसे मिलने जाना चाहिये।"

बापूजी हाथ-मुंह धोने स्नानघरमें आये, तब हमारे बीच ये बातें हो रही थीं। वहीं अेक अंग्रेज महिलाको बापूजीने समय दिया था। वे बहुत देरसे आकर बैठी थीं। अिसकी याद आते ही बापूजीने मेरी बात काट डाली और जल्दी हाथ-मुंह धोकर स्नानघरसे बाहर आये।

बापूजीने अुस महिलासे तुरन्त माफी मांगी और कहा कि जिन्ना साहबके पास सोचा था अुससे बहुत अधिक देर हो गअी। और अिधर मेरी तरफ अुंगली बताकर कहने लगे: "मैं जिन्ना साहबके पाससे देरमें आया, अिसलिअे अिस पागल लड़कीको चिन्ता हुअी कि मुझे किसीने मार तो नहीं डाला? अतः दो मिनट अिससे बातें करनेमें लग गये।" कमरेमें बैठे हुअे लोगोंने यह विचार सुना और सब खिल-खिलाकर हंस पड़े। मैं शरमा गअी।

अुन महिलाने केवल दो मिनट बापूजीसे मिलनेको मांगे थे, अिसलिअे घड़ी देखकर सिर्फ दो मिनट ही बातें कीं।

अुन्होंने कहा: "यूरोप तो अिस समय मशीनरीमें फंसा हुआ है। परन्तु क्या आपके खयालसे हिन्दुस्तान भी अुसमें फंस जायगा? मैं अभी जहां जहां गअी वहां मैंने अुद्योगीकरणकी ही बातें सुनीं।"

बापूजी बोले: "बात तो सच है। पश्चिमकी हवा आजकल यहां जोरोंसे चल रही है। अगर मैं यह कहूं कि अिस समय ग्रामोद्योगको माननेवाला मैं अकेला ही हूं तो गलत नहीं होगा। हां, मेरे दूसरे साथी हैं, जो सेवाग्राम आश्रममें प्रयोग कर रहे हैं। परन्तु करोड़ोंमें सौ या हजार आदमी ग्रामोद्योगोंको मानें, तो वे समुद्रमें बूंदके समान भी नहीं माने जायंगे। फिर भी मैं यह कहनेका साहस रखता हूं कि हिन्दुस्तानमें मिलोंकी या मशीनरीकी यूरोपके जितनी आवश्यकता ही नहीं है। और हिन्दुस्तान चाहे तो अुनसे बच सकता है। परन्तु अिस मोहसे छूटना कोअी आसान बात नहीं है।"

दो मिनट पूरे होते ही अुन्होंने तुरन्त बापूजीसे कहा: "मैंने दो ही मिनटकी मांग की थी। आपने अपने कीमती समयमें से मुझे दो मिनट दिये, अिसलिअे आपसे बातें करने और आपके दर्शन करनेका सौभाग्य मिला।

अिसे मैं कभी नहीं भूलूंगी। यह मेरा अहोभाग्य है। मैं अपने जीवनकी अिस अनमोल घड़ीका मीठा स्मरण लेकर अपने देशमें जाअूंगी।"

बापूजीने भी अुनका आभार माना कि अुन्होंने अीमानदारी और सावधानीसे दो ही मिनट लिये और कहा, "जैसे आपको आनन्द हुआ वैसे मुझे भी आपसे मिलकर आनन्द हुआ है।"

अुनके जानेके बाद बापूजी कहने लगे: "अिन लोगोंकी यही खूबी है। विवेक और अनुशासनमें वे लोग प्रथम हैं, यह हमें स्वीकार करना चाहिये।"

बादमें बापूजीने ६ औंस दूध और अंगूर लिये। तुरन्त ही समाजवादी भाअी आ गये। अुनके साथ बातें हो रही थीं, अितनेमें पंडितजी आ गये। ११॥ बजे बाद बापूजीके सोनेकी तैयारी हुअी।

खानसाहब अपने नियमानुसार बापूजीके पैर दबानेको जाग रहे थे। अुनकी तबीयत ठीक न होने पर भी बापूजीके पैर दबानेके लिअे ११॥ बजे तक वे जागे, तो मैंने कहा: "आपकी तबीयत ठीक नहीं है, आप किसलिअे जागते हैं?"

वे हंसते हंसते बोले: "तुम्हारी सीखके लिअे तुम्हें धन्यवाद देना चाहिये। परन्तु अब हम थोड़े ही समयमें विदेशी माने जायंगे। जिस आजादीके लिअे हम वर्षों तक लड़े अुसके बदले हमें थोड़े समयमें पाकिस्तानी हुकूमतके नीचे रखा जायगा। फिर कहां बापू होंगे? कहां तुम होगी? और कहां मैं हूंगा? अिसका किसे पता है? बापूजीके पास रहकर अुनकी जितनी सेवा करनेका मौका मिले अुसका तो सदुपयोग कर लूं!!"

खानसाहबकी बातोंमें बापूजीके लिअे असीम भक्ति और वर्तमान वातावरण तथा सीमाप्रान्तमें होनेवाले अत्याचारोंके लिअे अुनके मनमें अपार व्यथा भरी है। अिसलिअे मैं तो अितनी-सी बातके बाद अेकदम चुप हो गअी। परन्तु सोनेसे पहले जब मैं गरम पानीसे बापूजीके पैर धो रही थी, तब बापूजीने पूछा कि खानसाहबकी तबीयत कैसी है, अुन्होंने क्या खाया। यह जानकर बापूजीको दुःख हुआ कि वे अभी तक जाग रहे हैं। मुझसे कहा: "तुम्हें खानसाहबको सुला देना चाहिये।" तब मैंने मेरे और खानसाहबके बीच हुअी बातें सुनाअीं। अिस पर बापूजी कहने लगे: "वे सच्चे फकीर हैं! आजादी तो मिलेगी, परन्तु ये अुलटे गुलामीमें फंसेंगे। अुनकी स्थिति सचमुच गंभीर है।

परन्तु वे सन्त पुरुष हैं। कलसे अुनके खातिर ही मुझे जल्दी बिस्तर पर जाना पड़ेगा।"

दोनोंके बीच अेक-दूसरेके प्रति कैसी असीम भक्ति है!

भंगी-निवास, नअी दिल्ली,
७-५-'४७

नियमानुसार प्रार्थनाके समय बापूजीने मुझे जगाया नहीं। भाअी साहब (ब्रजकिशन चांदीवाला)ने दातुन कराया और प्रार्थना शुरू की। प्रार्थनाकी आवाजसे मैं जाग गयी, खड़ी हुअी और जल्दीसे दातुन करके प्रार्थनामें शरीक हो गयी।

प्रार्थना पूरी होनेके बाद मैंने बापूजीसे न जगानेके बारेमें पूछा तो वे बोले, "तुम रातको दो बजे नींदमें कराह रही थीं। मैंने अुठकर देखा तो तुम्हारा शरीर खूब तप रहा था। १०३ डिग्री तक बुखार होगा। फिर भी तुम गहरी नींदमें थीं अिसलिअे मैंने अुस समय नहीं जगाया।" बापूजीने किस समय मुझे देखा अिसका मुझे पता नहीं चला। और अितना अधिक बुखार होगा अिसकी भी कल्पना नहीं थी। रातको सिर जरूर दर्द कर रहा था। बापूजी अिस तरह मेरी संभाल रखते हैं।

गरम पानी और मोसम्बीका रस बापूजीको दिया। अुन्होंने मुझे सो जानेका हुक्म दिया। दक्षिण अफ्रीकामें गैर-युरोपियनोंको कानूनसे मिलनेवाले हकोंके लिअे अयोग्य ठहराया जा रहा है, अिसलिअे वहां अेक संयुक्त परिषद् हो रही है। अुसके लिअे सेठ काछलिया (ट्रांसवाल भारतीय कांग्रेसके मंत्री) ने संदेश मांगा। अिस पर बापूजीने लिखा :

"दक्षिण अफ्रीकाका यह सवाल अटपटा है। केवल भारतीयोंकी अयोग्यताका पूर्ण रूपसे विचार करें, तो भी यह सवाल आसानीसे हल होता नहीं दीखता। लड़ाअी बहुत अूंचे स्तर पर चलाअिये। अगर सत्य और अहिंसाकी बुनियाद पर लड़ाअी नहीं चलायेंगे तो अुसमें खतरा है। मैं अिस परिषद्के नेताओंसे अेक खास सिफारिश करता हूं कि आप सिर्फ जोशीले भाषण ही न दीजिये और लोगोंको झूठे वचन देकर या किसी भी तरहका लालच देकर न बहकाअिये। परन्तु संयमसे सच्ची बातें अुनके सामने पेश कीजिये। जगतका अुद्धार सत्य और अहिंसाके मार्गसे ही होगा। यह मैं अपने ६० वर्षके अनुभवके बाद कहता हूं। अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग नहीं है।"

बापूजीने घूमने जाते समय मुझे ६–३० पर अुठाया और घूमने गये। राजेन्द्रबाबू और राजकुमारी बहन साथ हैं। मैंने सुबहका कामकाज निबटाया और बापूजी द्वारा लिखे गये संदेशकी नकल की। खानसाहबको चाय-नाश्ता तैयार करके दिया। आज शामको हमारे कलकत्ते जानेका निश्चय हुआ है।

(दिल्लीसे पटना होकर जानेवाली गाड़ीमें रातको ९ बजे बापूजी वाअिसरॉयको पत्र लिख रहे हैं, और मैं आजकी बाकी डायरी लिख रही हूं।)

बापूजीने मालिशसे पहले मौलाना साहबके साथ बातें कीं। प्रार्थना-सभामें बाधा पड़ती है और कलकत्तेकी चिन्ता है, अिन दो विषयों पर बातें चलीं। मालिश, स्नान और भोजन वगैरा नियमानुसार हुआ। पद्मजाबहन नायडू, मावलंकरजी और राजकुमारी बहन आअीं। मुख्यत: भारतके विभाजनके विषयमें ही बातें हुअीं। बापूजी अपने विचारों पर दृढ़ हैं। अिस बीच स्थानीय मुसलमानों और दिल्लीकी दो सामाजिक संस्थाओंके प्रतिनिधि आ गये। अुनके साथ बातें करते हुअे बापूजीने कहा :

"पाकिस्तान क्या है, यही मैं नहीं समझ पाता। अैसी खूनकी नदियां बहाकर पाकिस्तान लेना है? मैं तो अपने विचारोंमें अकेला ही हूं। शायद बूढ़ा हो गया हूं, अिसलिअे मेरी बुद्धि सठिया गयी हो! फिर भी सच्ची बातें कहे बिना कैसे रह सकता हूं? मैं अपनेको जनताका सेवक मानता हूं। अिसलिअे हृदयमें जो भरा हो वह न कहूं, तो जनताके प्रति बेवफा साबित होअूं। मैं तो कहूंगा कि प्रान्तोंका विभाजन किया जाय या नहीं, अिस बारेमें अंग्रेजी सत्ताके चले जानेके बाद हमें (लोगोंको) आपसमें मिलकर शान्ति-पूर्वक निर्णय करना चाहिये। अंग्रेजोंको क्यों बीचमें रखें? अुन्हें बीचमें रखना हमारी कायरताको और परस्पर अविश्वासको जाहिर करता है। दो भाअियोंका झगड़ा कोअी तीसरा आदमी सुने या अुसका न्याय करे, तो क्या यह सगे भाअियोंके लिअे शोभास्पद होगा? और वे हमारी अिस कमजोरीका कैसा लाभ अुठायेंगे, अिसकी कल्पना किसीको क्यों नहीं होती? अिसीका मुझे आश्चर्य होता है। हर मामलेमें ब्रिटिश हुकूमतका मुंह ताकनेसे हमारी ताकत कमजोर पड़ती है, हम अपंग बन जाते हैं। मैं तो देशी रियासतोंके लिअे भी यही कहूंगा। अुनकी तो आज अितनी पंगु स्थिति है कि अुन पर दया आती है। अंग्रेज अुनके छत्रकी तरह थे। परन्तु अब यदि अुन्हें सुखी होना हो तो

हिन्दुस्तानका अंग बनना पड़ेगा और अपनी सत्ता प्रजाको सौंपकर प्रजाके सेवकके रूपमें रहना पड़ेगा।

"दो दिनसे मेरे पास समाजवादी आ रहे हैं। अुन्हें भी मैं यही बात कह रहा हूं कि यदि आपको भारतमें समाजवाद लाना है, तो व्यक्तिगत राग-द्वेषको भूल जाओ, श्रम करो, अपने निजी तथा बाह्य जीवनकी पूरी तरह जांच करके चरित्र-बल बढ़ाओ। समाजवाद कभी कुरसी पर बैठनेसे या मंच पर भाषण देनेसे नहीं आयेगा। सवेरे अुठनेसे लेकर रातको सोने तक अपने जीवनके प्रत्येक क्षणकी परीक्षा करो। आपको अपना ध्येय स्पष्ट और सर्वांग-संपूर्ण रखना पड़ेगा। और अुसमें यदि सत्य और अहिंसाका सूक्ष्म रूपमें पालन नहीं हुआ, तो आप जो समाजवाद लाना चाहते हैं वह न मालूम कहां चला जायगा और आपका नाम-निशान भी नहीं रहेगा। यही बातें कांग्रेस पर लागू होती हैं। यदि कांग्रेस अथवा समाजवादी, जिनके नाम और अर्थ बहुत सुन्दर हैं, अपने सिद्धान्तोंके अनुसार नहीं चलेंगे, तो देशमें विद्रोह फूट पड़ेगा और साम्यवाद घुस जायगा। मैं तो यह देखनेको जिन्दा नहीं रहूंगा, परन्तु भावी पीढ़ी आपको गालियां न दे, यह बात खास तौर पर ध्यानमें रखकर आप अपनी प्रवृत्तियोंका विकास करें।

"जिस दिन सब धर्मको भूल जायेंगे, अुस दिन हमारा पतन होगा। आज हिन्दू और मुसलमान अपना धर्म भूल गये हैं। परन्तु मुझे आशा और श्रद्धा है कि जैसे नदियोंमें बाढ़ आने पर पानीमें अुथल-पुथल मच जाती है, वह अपने साथ बहुतसी गंदगी बहा लाता है, और बाढ़का वेग मिटने पर खूब स्वच्छ हो जाता है, अुसी तरह आजके समाजमें यह अेक बाढ़ आओी है। अिस बाढ़के शान्त होने पर स्वच्छ सरिताकी भांति वह बहेगा और संसारको प्रफुल्लित करेगा। क्योंकि हमें धर्मके पालन और तपस्यासे आजादी मिलेगी।

"अेक समय अैसा था जब ब्रिटेन समुद्रोंकी रानी माना जाता था और अुसके विरुद्ध किसीको शिकायत नहीं थी। अिसलिअे यदि ब्रिटेन भारतके साथ सच्ची और प्रामाणिक मैत्री रखेगा, तो दुनियामें आध्यात्मिक सद्‌गुणोंमें अुसका नम्बर पहला होगा और जगत अुसे वन्दन करेगा। अितना ही नहीं, अुसे महारानीसे भी बड़ा पद मिलेगा। जगतका भविष्य निर्माण करनेके लिअे सबको अुसके पास जाना पड़ेगा। क्योंकि अंग्रेजोंमें यह गुण

और शक्ति मौजूद है; अैसा मैंने अनुभव किया है। मैं वर्षों तक
बीचमें रहा हूं। अनेक अंग्रेज स्त्री-पुरुष मेरे मित्र हैं।"

अिस मण्डलीमें दो अंग्रेज सज्जन भी थे। अिसलिअे अुनके
बापूजीने अुपरोक्त बातें कीं।

बापूजी अपने विचारोंमें अकेले होने पर भी राजाओं, हिन्दुओं, मु
अंग्रेजों, 'वाद' वालों, व्यक्तियों अथवा स्त्रियोंको जिस स्पष्ट वाणी
बात कहते हैं, वह वाणी आज नहीं तो कुछ वर्ष बाद लोगों
दीपस्तंभ बने बिना नहीं रहेगी। बापूजीके पास संसारके भांति भांति
आते हैं, तब अैसा लगता है कि भंगी-निवासके झोंपड़ेमें बैठे हुअे ७
मुट्ठीभर हड्डियोंवाले अिस बूढ़ेकी तरफ ही अन्तमें सबकी नजर जाती
अुसके द्वारा दुनिया हिन्दुस्तानको पूजती है। क्योंकि बापूजीने नरसिंह
अिन वचनोंको जीवनमें गूंथा है :

'हुं करुं हुं करुं, अे ज अज्ञानता;
शकटनो भार जेम श्वान ताणे.'

सब कुछ स्वयं करने पर भी वे मानते हैं कि मैंने कुछ नहीं किया।

आज बापूजी जानेवाले हैं, अिसलिअे अेकके बाद अेक मुलाका
ही रहते थे। २ बजे जवाहरलालजी, सरदार दादा, अम्माजान (
नायडू), मौलाना साहब, राजाजी, राजेन्द्रबाबू वगैरा आये। वे
बजे तक रहे। अिन लोगोंके लिअे दोपहरके चाय-नाश्तेकी व्यवस्था
बापूजीने मुझसे कहा था, अिसलिअे मैं अुसमें लग गअी थी। दोपहरके
लिअे खाखरे बनाये। सामान बांधा।

३॥ बजे अेक महिला मुझे अेक (हिन्दी) पत्र बापूजीके पास प
लिअे दे गअी। वह पत्र अिस प्रकार था :

श्रीयुत महात्माजी,

मैं आपको यह सूचित कर देना चाहती हूं कि अंतरात्माकी
मैं आपके साथ प्रार्थनामें कुरान पढ़नेका निम्न कारणोंसे विरोध
१. मंदिरमें कुरान पढ़नेसे अुसकी पवित्रता और मर्यादा नहीं
है। २. कुरानको धर्मग्रंथ माननेवालोंने बंगाल, पंजाब आदिमें
अत्याचार किये हैं। अुसे देखते हुअे कुरान पढ़ना-पढ़ाना हि

लिअे मैं महान पाप समझती हूं। किसी मस्जिदमें गीता या रामायण पढ़नेका साहस आज तक आपने किया है, अैसा मालूम नहीं होता।

हिन्दू-धर्म-सेविका
अुमादेवी

यह पत्र सारी मंडली बैठी थी अुसी वक्त मैं बापूजीको दे आयी। कदाचित् बापूजीको अिस संबंधमें कुछ कहना हो। बापूजीने यह पत्र सबको पढ़नेके लिअे दिया।

बापूजी आज तक अपनी अहिंसाके प्रति वफादार रहनेके लिअे हजारों आदमियोंके प्रार्थना करनेके पक्षमें होने पर भी अेक आदमीकी अिच्छाको पूरा करते थे। बहुत लोगोंके होते हुअे भी अेकको दवा देनेमें बापूजी अपनी दृष्टिसे अपराध मानते थे। परन्तु आज अेक महिलाने जब आपत्ति की, तब बापूजीको बात चुभ गअी। क्योंकि बापूजीने हमेशा स्त्रियोंको अूंचा अुठाया है; अुनको त्याग और समर्पणकी मूर्ति कहा है। वे हमेशा यह मानते आये हैं कि नैतिक क्षेत्रमें स्त्रियोंका स्थान बहुत अूंचा है।

आज कार्यसमितिकी बैठकमें खूब गरमागरम चर्चाअें हुअीं। खानसाहब बेहद दुखी हैं। शामको बापूजीने भापसे पकाया हुआ अेक सेब और ६ औंस दूध ही लिया।

प्रार्थनामें जाते समय बापूजीने अुमादेवीका पत्र साथमें लिया और जाते ही पूछा, "अुमादेवी आअी हैं? यदि आअी हों तो वे यहां आ सकती हैं।" दूसरे २० आदमियोंने अपने हस्ताक्षर करके अेक पत्र दिया था।

बापूजीने कहा :

"अीश्वरके सिवा मुझे कोअी रोक सकनेवाला है ही नहीं, परन्तु मुझे धीरज रखना है। धर्मका पालन धैर्यसे ही होता है। हिन्दू धर्ममें सहिष्णुताको बहुत महत्त्व दिया गया है। शंकराचार्यजीने तो यहां तक कहा है कि समुद्रमें से अेक अेक बूंद पानी लेकर दूसरे खड्डेमें डालें और अिस तरह समुद्रको खाली करें, तो अिसमें जो धीरज चाहिये अुससे भी अधिक धीरज मनुष्यको अपनेमें बढ़ाना चाहिये। हम तो मुमुक्षु हैं। मुमुक्षुको अैसा धीरज रखना चाहिये। हम यहां अीश्वरकी प्रार्थना करनेके लिअे जमा हुअे हैं। सच तो यह है कि प्रार्थना भीतरसे ही होती है। यहां हम कितने ही घंटे बजाकर

प्रार्थना करें और हमारे हृदयमें किसीको मारनेकी अिच्छा अुत्पन्न हो, तो अीश्वर अैसा भोला नहीं कि हमारी प्रार्थना मान लेगा। अेक बालक भी यहां प्रार्थनाका विरोध करे और हम अुसे दबा दें या पुलिसके सुपुर्द कर दें और फिर प्रार्थना करें तो अिसमें हमारी शोभा नहीं है। परन्तु अब मैं अुमादेवीके पत्रका जवाब दूंगा।

१. पत्रमें जो कुछ लिखा है अुससे पता चलता है कि हिन्दू धर्मके असली रहस्यका अुन्हें ज्ञान नहीं है। और अिस प्रकार धर्मको बचानेकी जो चेष्टा की गअी है, वह वास्तवमें धर्मका नाश निमंत्रित करनेके बराबर है। मैं तमाम हिन्दू और सिक्ख भाअियोंसे प्रार्थना करता हूं कि आप अैसे गलत रास्ते न जाअिये।

२. मैं यह नहीं मानता कि मन्दिरमें कुरानके अैसे सुवाक्योंका मनन करनेसे मंदिर अपवित्र हो जाता है। अीश्वरकी स्तुति किसी भी भाषामें करनेसे वह अपवित्र हो जाती है, अिसका क्या प्रमाण है? कल ही आपको कुरानकी आयतका हिन्दीमें अनुवाद सुनाया गया। अुस पर किसीने अपना विरोध नहीं बताया। कोअी गीताका अनुवाद अरबीमें करें, तो क्या वह अधर्म हो जायगा? अगर कोअी अैसा मानता हो तो वह ज्ञानी नहीं, पूरा अज्ञानी है। यहां मेरे साथ खानसाहब हैं। वे नमाज पढ़ते हैं और अुस समय अपने अिष्टदेवका स्मरण करते हैं। तो मंदिर अपवित्र हो गया या भ्रष्ट हो गया, यह कहनेमें निरी मूर्खता ही है।

३. कदाचित् आप यह मानते हों कि मुसलमानोंने पाप किया है, तो मैं आपसे पूछता हूं कि हिन्दुओंने पाप करनेमें क्या कमी रखी है? बिहारमें हिन्दुओंने जो किया है वह आपको जानना चाहिये। वहां हिन्दुओंने मुसलमान स्त्रियोंकी हत्या की है, बच्चोंको मारा है, अुनकी बेअिज्जती की है, मकान लूटे हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि कोअी मुसलमान आकर मुझे कहे कि भगवद्गीताका पाठ करनेवाला पापी है तो वह कितनी बेहूदी मान्यता है? मैं जानता हूं कि मुसलमानोंने अत्याचार किये हैं, पाप किये हैं। परन्तु कुरानको पढ़नेवाला पापात्मा है, अिसलिअे कुरानशरीफ पापी ग्रंथ है — अुसकी आयत पापी है, यह बात मैं नहीं समझ सकता। तब तो गीता, अुपनिषद्, रामायण, ग्रंथसाहब आदि हमारे धर्मग्रंथ भी पापी ठहरेंगे। गीताके भी अनेक निकलते हैं और गीताके पाठक कहते हैं कि गीतामें अैसा लिखा है कि

आततायीको मारा जाय। परन्तु मैं अुसका अहिंसात्मक अर्थ करता हूं, क्योंकि वह अर्थ मुझे सही लगता है।

"मैंने मस्जिदमें कभी गीता नहीं पढ़ी, क्योंकि मुझे खास तौर पर अैसा मौका नहीं मिला। परन्तु आप जानते होंगे कि मैं मुसलमानोंके घरोंमें घूमा हूं, रहा हूं। अुनके यहां मैंने प्रार्थना की है, गीतापाठ किया है, और मस्जिदमें तो नहीं परन्तु मस्जिदके बिलकुल नजदीक रामधुन तालके साथ गाअी है। अिस लड़कीने, जो यहां कुरानकी आयत पढ़ती है, रामधुन और कृष्णधुन मुसलमानोंके बीचमें गवाअी है। मैं मुसलमान भाअियोंसे कहता था कि जैसे आप 'रहीम' का और 'करीम' का नाम लेते हैं, वैसे हम 'कृष्ण' का और 'राम' का नाम लेते हैं। और मुझे कहना चाहिये कि नोआखालीमें कहीं भी अिस प्रकारका विरोध नहीं हुआ।

"आप अत्याचारोंकी बात करते हैं, परन्तु मैं तो नोआखाली और बिहार दोनों जगह गांव गांव और घर घर घूमा हूं। मैं आपसे कहता हूं कि बिहारने नोआखालीको मात कर दिया है।

"फिर, अुमादेवी लिखती हैं कि मैं मुसलमानोंके पास जाकर प्रार्थना नहीं कर सकता, परन्तु बेचारी अुमादेवी क्या समझे कि गांधी किन संस्कारोंका बना है? मुझे अपनी यह बात कहते हुअे शर्म भी आती है कि अुमादेवीके पति दैनिक . . . के सम्पादक हैं और . . . राज्य हिन्दू महा-सभाके मंत्री हैं, फिर भी वे अितनी अज्ञान कैसे हैं? अिससे मुझे तो अुमा-देवी पर दया आती है। परन्तु समुद्रमें ही आग लग जाय, तब आगको कौन बुझाये?

"सच बात तो यह है कि यह विरोध कुरानकी आयतके लिअे नहीं है, अुसके अरबी भाषामें होनेके कारण है। क्योंकि कल जब आयतका अनु-वाद सुनाया गया, तब किसीने अुसका विरोध नहीं किया था।"

अितना कहकर कलका सारा अनुवाद बापूजी पढ़ गये। बादमें बोले: "आप किसीने और खास तौर पर अुमादेवीने विरोध क्यों नहीं किया? और मुझे चुप क्यों नहीं कर दिया?

"हमारे अेक श्लोकमें भी कहा गया है कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। वही अरबी भाषामें है। अिसलिअे जब अेक धर्मसेवककी पत्नी अितना नहीं समझ सकती और विरोध करती है, तब मुझे दुःख होता है।

"कल मैं जिन्ना साहबके पास गया था। हमारे बीच राजनीतिक विरोध बहुत ज्यादा है। वे पाकिस्तान मांगते हैं, मैं अुसका विरोधी हूं। परन्तु कांग्रेसवालोंने लगभग निर्णय कर लिया है कि पाकिस्तानकी मांग पूरी कर दी जाय। हां, पंजाब और बंगालके जिन अिलाकोंमें हिन्दुओंका बहुमत है, वे पाकिस्तानको न मिलें। केवल वे ही प्रदेश पाकिस्तानमें जायंगे जहां मुसलमानोंका बहुमत है।

"मैं तो अिसके भी विरुद्ध हूं। देशके टुकड़े करनेकी बातसे मैं कांप अुठता हूं। परन्तु यह विचार रखनेवाला मैं अिस समय अकेला हूं। मैं किसी भी पक्षका समर्थन नहीं करता। जिन्ना साहको भी मैंने साफ कह दिया है कि मैं तो हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिक्ख, जैन, ओसाअी आदि तमाम जातियोंका सेवक हूं, ट्रस्टी हूं। अिसलिअे पाकिस्तानके निर्माणमें मैं दिलचस्पी नहीं लूंगा, और अुसकी स्वीकृति पर मैं हस्ताक्षर नहीं करूंगा।

"मैंने जिन्ना साहबको यह भी नम्रतापूर्वक बताया कि आप हिंसाके जोरसे या अैसे नामर्दीभरे रवैयेसे पाकिस्तान नहीं ले सकते। समझाकर शांतिसे सारा देश भले ही आपको सौंप दिया जाय, अुससे मैं खुश होअूंगा। अैसा होगा तो सबसे पहली बधाअी मैं दूंगा।

"आपको मुझे यह भी बता देना चाहिये कि मैं जिन्ना साहबके पास गया, यह बहुतसे मित्रोंको अच्छा नहीं लगा। सब मुझसे पूछते हैं कि जिन्ना साहबके पास जाकर क्या लाभ हुआ? मैं अुनके पास कुछ लेने नहीं गया था। मैं तो सिर्फ अुनके दिलकी बातें ही जानने गया था। भले मैं वहांसे कुछ नहीं लाया, लेकिन वहां जाकर मैंने कुछ खोया भी नहीं।

"मैं तो आप सबसे प्रार्थना करता हूं कि सबको मिलजुल कर रहना चाहिये। जो पाकिस्तान लेना चाहते हैं अुनसे मैं कहता हूं कि आप मुझे समझाअिये कि पाकिस्तानसे क्या फायदा है? अिसी तरह जनताको भी समझाअिये। परन्तु जबरदस्ती करके पाकिस्तान मांगेंगे तो तिलभर जमीन भी नहीं मिलेगी।

"आज मैंने आपसे बहुत बातें कहीं। मैं यह भी आपको समझा सकता हूं कि मैं पाकिस्तानका विरोधी किसलिअे हूं। परन्तु अब समय नहीं है।

"आज तो मैं कलकत्ते जा रहा हूं। वहां जाकर क्या करूंगा, यह मुझे पता नहीं है। परन्तु जब आप मुझे बुलायेंगे, तब हाजिर हो जाअूंगा। अितने

समयमें आप अिस बात पर विचार करना कि मुझे प्रार्थना करनेसे रोकनेमें कोअी फायदा नहीं है। अब २ मिनटकी शांति रखकर आंखें बन्द करके मनमें प्रार्थना कीजिये।"

दो मिनटकी शांतिके बाद प्रार्थना पूरी हुअी। प्रार्थनाके बाद जयरामदास भाअी, खानसाहब, सुचेताबहन, ओमियोबाबू और दूसरे लोग आये। अन्तिम दिवस होनेके कारण बापूजीका दरबार भरा हुआ था। ८॥ बजे हम स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। गाड़ीमें ७ मिनटकी देर थी। अिसलिये बापूजीने टहलते-टहलते देवदासकाकाके साथ मौजूदा परिस्थितिके संबंधमें बातें कीं।

खानसाहब आज पेशावर गये। वे भी बापूजीको पहुंचाने आये थे। अुन्होंने गद्‌गद कण्ठसे बापूजीको कहा :

"महात्माजी, मुझको आपके सिवा और किसीका सहारा नहीं है। हम तो सैनिक हैं। आप जो हुक्म हमारे लिअे करेंगे वह हम मान लेंगे। आप जो कुछ करेंगे अुस पर हमको पूरा अितमीनान है।"

बादमें मैंने खानसाहबको प्रणाम किया। अुन्होंने मुझे आशीर्वाद देकर आलिंगन किया और वात्सल्यसे कहने लगे :

"बेटी! पता नहीं अब तुम्हें मिलनेका मौका मिलेगा या नहीं। मगर तुमने मेरी जितनी सेवा की है अुसका बदला मैं नहीं दे सकता। बेटी, खुदा तुम्हें महात्माजीकी खूब सेवा करनेकी ताकत दे, यही दुआ करूंगा। . . ."*

---

* आज अुनके ये शब्द जब मैं अपनी डायरीमें पढ़ती हूं, तब अुस दिनका दृश्य आंखोंके सामने खड़ा हो जाता है। क्योंकि हमारी यह मुलाकात सचमुच ही आखिरी साबित हुअी। पूज्य खानसाहब पूज्य बापूसे फिर कभी न मिल सके! वह दृश्य आज अेक दुःखद घटना बन गया है। हमारे अेक गांधी तो भगवानके दरबारमें पहुंच गये और दूसरे 'गांधी' (सरहदके गांधी) की पाकिस्तानमें भयंकर परीक्षा हो रही है। समय कैसा बदल जाता है! अीश्वरसे प्रार्थना करें कि प्रभु सबको सन्मति दे और हमारे दूसरे 'गांधी', दूसरे 'फकीर' और अहिंसाके दूसरे बहादुर पुजारीको भगवान अुन कष्टोंमें मुक्त करे और हमारा तथा संसारका मार्गदर्शन करनेके लिअे अुन्हें स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु प्रदान करे।

मैंने अपनी डायरी पूरी की। ११॥ बज गये हैं। प्रत्येक स्टेशन पर लोग दर्शनोंके लिअे तो आते ही हैं। बापूजी १०॥ बजे सो गये। अभी तक तो दो स्टेशनों पर लोगोंने शांतिसे दर्शन किये।

(दिल्लीसे पटना होकर कलकत्ते जाते हुअे गाड़ीमें,)
८–५–'४७

आज रातको स्टेशनों पर बहुत भीड़ नहीं थी। मैं ५-७ बार अुठी थी, परन्तु लोग बहुत ही शान्त थे। कानपुर और अलाहाबादमें भी हजारोंकी संख्यामें लोग आये। परन्तु शान्ति रखी गअी और हरिजन-कोष भी जमा हुआ। परन्तु मअी मासकी अिस तरफकी असह्य गरमीने सबको काफी घबरा दिया है। बापूजीके माथे परका गीला रूमाल तो दो दो मिनटमें गरम हो जाता है। लू भी खूब चल रही है।

प्रातःकालकी प्रार्थना वगैरा नियमानुसार हुअी। रास्तेभर बापूजीनें लगभग बंगाली पढ़नेमें ही समय विताया। थोड़ी-सी आअी हुअी डाक मैंने छांट कर दी वह पढ़ी। गाड़ीकी आवाज होनेसे मेरा गीतापाठ आज बन्द रखा। अलाहाबादमें हुनरभाअी और मृदुलाबहन आये। मेरे लिअे हुनर-भाअी भोजन लाये और बापूजीके लिअे बकरीका दूध और कच्चा साग लाये।

बापूजीके लिअे प्राअिमस पर साग अुबाला। आज बापूजीने दो खाखरे खाये। मृदुलाबहनने बिहारके बारेमें खूब बातें कीं। मेरे साथ दिल्लीके वातावरणके बारेमें बातें कीं। मुगलसरायके बाद बापूजीने मिट्टीकी पट्टी ली और आराम किया। मैंने काता और बापूजीका सूत अुतारा। बापूजीनें ४॥ से ५॥ तक (पटना आने तक) काता।

पटनामें मंत्रि-मंडलके सब मंत्री आये थे और स्टेशन पर मानव-समुद्र हिलोरें ले रहा था। रेलकी खिड़कीसे नजर बाहर डालने पर काले सिर चींटियोंकी भांति दिखाअी दे रहे थे। स्त्रियां और बच्चे भी अितने ही थे। शामका ५॥ बजेका समय था, अिसलिअे घूमनेके बहाने भी सबको बाहर निकलनेकी अनुकूलता मिली होगी। खूब चन्दा अिकट्ठा किया और दिल्लीसे पटना तकका जितना चन्दा आया सब (बिना गिना हुआ) देव-भाअीको सौंप दिया। वे गिनकर यहांके बैंकमें खोले हुअे खातेमें जमा करा आयेंगे।

बापूजी सब मंत्रियोंके साथ बातोंमें मशगूल थे। रेलके रवाना होनेका समय हो रहा था। परन्तु स्टेशन मास्टर बेचारे नौकर आदमी ठहरे। वे बापूजीके डिब्बेमें आकर पूछने लगे, "रेलके चलनेका समय तो हो गया है, परन्तु आपको जरूरत हो तब तक रोकूं और जिस समय कहें गाड़ी रवाना करूं।" अन्य किसीके जवाब देनेसे पहले ही बापूजी बोले:

"आप यह पूछने आये हैं, असमें मैं आपका दोष नहीं पाता। आपको तालीम ही अिस प्रकारकी मिली है। आप जैसे यहां पूछने आये, वैसे हर डिब्बेमें पूछने जायेंगे? यदि वहां न जायें तो आपको यहां भी नहीं आना चाहिये। मैं कोओी हाकिम नहीं हूं। ये मंत्री आपके हाकिम जरूर हैं, परन्तु मुझे सत्ताके भावसे मिलने नहीं आये हैं। कौटुम्बिक भावनासे आये हैं। न आये होते तो मैं अिनका कुछ कर नहीं सकता था। परन्तु हम वर्षोंके पुराने साथी हैं। अिसलिअे जैसे अिस सारी गाड़ीमें कितने ही असे लोग होंगे, जो स्टेशनसे गुजरनेवाले अपने परिचित मित्रों, सगे-सम्बन्धियों वगैरासे मिलने आये होंगे, वैसे ही ये लोग भी मुझसे मिलने आये हैं। आपका फर्ज है कि आप कानूनकी रूसे जब गाड़ी रवाना करनी हो तब सीटी बजा ही दें। फिर भले कितने ही बड़े हाकिम क्यों न हों। हां, आपके अफसरोंने किसी कारणसे आपको कोओी लिखित कार्यक्रम दिया हो तो बात अलग है। परन्तु यदि असा न हो तो आपको अपना मामूली काम करते रहना चाहिये। अिससे आपको भी शिक्षा मिलेगी, अिन मंत्रियोंको भी मिलेगी और लोगोंको भी मिलेगी। मंत्रियोंको देखकर आपको घबराना न चाहिये। ये तो जनताके सेवक हैं। अिसलिअे अुलटे आपको अिनके सामने निडर बनना चाहिये। मंत्रियोंको भी अपने विभागमें जो लोग काम करते हों अुन्हें नौकर न समझकर छोटे भाओी समझना चाहिये। तभी हम सुखी होंगे और सच्चे लोकतंत्रका आनन्द लूट सकेंगे। आज जो नियम जिन रेल-गाड़ीमें मुसाफिरोंके लिअे लागू होता है वही नियम मेरे लिअे लागू होगा। हां, मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि अुस नियमका पूरी तरह पालन नहीं होता। अुदाहरणके लिअे, हम दो-तीन आदमियोंके वास्ते यह डिब्बा सुरक्षित रहता है (तीसरे दर्जेमें सफर करने पर भी)। परन्तु अिसके लिअे मेरे पास अुपाय नहीं है, क्योंकि असा न हो तो सभी लोग अिस डिब्बेमें चढ़ने लगें। अिसलिअे अंग्रेजोंके समयसे मुझ पर अुनकी अिस मेहरबानीको

रूढ़ि चली आ रही है। मैं आपको अुलाहना नहीं देता। आप दुःख न मानिये। परन्तु यह हम सबको शिक्षा देनेवाला अेक मौका मिल गया, अिसलिअे अिस सम्बन्धमें मैं न कहूं तो आपको क्या पता चले? और (विनोदमें) मैं तो शिक्षक ठहरा। अिसलिअे मेरे स्वभावमें ही यह चीज है कि जहां मेरी अन्तरात्माको भूल मालूम हो, वहां अुसे सुधारे बिना मुझसे नहीं रहा जाता। चलिये, आपको अितने मिनट दिये। अब आप अपनी सुविधासे अपनी गाड़ी रवाना करनेमें संकोच न कीजिये। आप भावनापूर्वक कहने और शिष्टता बताने आये हैं, यह मैं समझता हूं। फिर भी मेरे मनमें अितनी बातें कहनेकी आयी अिसलिअे कह दीं।

अुन भाअीने बापूजीको प्रणाम किया। वे खुश होकर बोले: "महात्माजीकी कैसी महानता और विशालता है! प्रत्येक विभागमें अितना कड़ा नियम-पालन करनेवाला केवल अेक ही अधिकारी हो, तो हम नौकरी-पेशा लोगोंके संस्कार, कामकी सरलता और निडरता कितनी बढ़ जाय? तब हमें भारत अपना देश लगेगा और हमारे अधिकारी या मंत्री सत्ताधीश न लगकर हमारे बुजुर्ग लगेंगे। परन्तु अनेक नौकरीपेशा लोगोंके जीवनमें अैसे प्रसंग आते हैं जब हमारे अधिकारियोंकी व्यक्तिगत सुविधाका खयाल न रखा जाय तो छोटे नौकर बेहाल हो जाते हैं। अिसलिअे हमें अपने अधिकारियोंकी सुविधाका खयाल रखनेकी, बिलकुल पसन्द न हो तो भी, आदत पड़ जाती है। नौकरीसे लगनेके बाद अपनी ४५ वर्षकी अुम्रमें अैसी निडरता और कड़े अनुशासनका यह पहला ही अुदाहरण है। अिसीलिअे तो महात्माजी देशके राष्ट्रपिता कहलाते हैं।" क्षणभर तो अिस घटनासे अेकदम शांति छा गअी। और सत्ताधीशोंके बीच यह घटना हुअी, अिसलिअे बापूजीने अिस निमित्तसे सबको अेक पाठ दे दिया।

पटना छोड़नेके बाद प्रार्थना की। परन्तु पटनाके बादके स्टेशनों पर लोग बापूजीके दर्शनोंके लिअे पागल बन गये। जयघोषकी आवाजसे कान फटने लगे। यह डायरी रातको १० बजे लिख रही हूं। परन्तु छोटे स्टेशनों पर, जहां हमारी गाड़ी खड़ी नहीं रहती, लोग डंडे लेकर पटरी पर खड़े रहते हैं और बापूजीके दर्शन करनेके बाद ही गाड़ीको चलने देते हैं। अिसलिअे बापूजीके प्रतापसे गाड़ी काफी देरसे कलकत्ते पहुंचेगी, और अैसा लगता है कि आज सारी रात जागना पड़ेगा।

१० वजे वाद वापूजीके लिअे गरम पानी (सुवहके लिअे) करके थरमॉस भरा। कल और आज दिनमें भी मुझे सोनेको नहीं मिला था, असलिअे कॉफी बनाकर पी जिससे रातको जागा जा सके। ओमियोवावूके भी मेरे जैसे ही हाल हुअे। और विसेनभाअी तो अेक मिनट भी विस्तर पर लेट नहीं सके।

(सुवह पांच वजे गाड़ीमें)
९-१-'४७

सारी रात जागना पड़ा। पटनासे कलकत्ता आते हुअे काफी परेशान हुअे। विसेनभाअीकी मददके विना जनताको रोकनेमें मेरे क्या हाल होते, अिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। परन्तु विसेनभाअी खूब सहायता करने-वाले और जवरदस्त आदमी हैं। अेकसे दूसरे स्टेशनके वीच चलती गाड़ीमें मैं थोड़े हाथ-पांव फैला लेती थी। अेक स्टेशनका चंदा पूरा न गिना जाता कि दूसरा स्टेशन आ जाता। परन्तु वे चंदा गिनकर हिसाव लिख डालते थे। अिस प्रकार अुन्होंने अिस वार खूव मेहनत की।

निर्मलदा रातको अढ़ाअी वजे अचानक हमारे साथ हो गये और अुसके वाद अुन्होंने जनताको संभालनेका चार्ज ले लिया। हम वहुत समय वाद मिले, अिसलिअे वे मुझ पर प्रेमकी वर्षा करने लगे। अढ़ाअी वजेसे प्रार्थनाके समय तक तो हमने खूव वातें कीं। प्रार्थनाके समय वापूजी जागे तव निर्मलदाको देखकर खुश हुअे।

प्रार्थनासे पहले दातुन करते करते वापूजीने कलकत्तेके सारे हाल निर्मलदासे सुने।

निर्मलदा भी कड़ाअीसे अनुशासन पालन करनेवाले हैं। अुनकी वहन और माताजी वर्दवान स्टेशन पर ४॥ वजे आअी थीं। जैसे दूसरे स्त्री-पुरुष खिड़कीमें से वापूजीके दर्शन करते थे, वैसे ये दोनों भी कर रही थीं। अितनेमें निर्मलदा मुझे कहने लगे: "ये अम्माजी तुमसे कुछ पूछना चाहती हैं।" माजी और वहनको निर्मलदाने मेरा परिचय कराया कि यह लड़की गांधीजीकी पोती है। नोआखालीका हालचाल और दूसरी वातें कहीं। परन्तु मुझे अुनका परिचय नहीं दिया। मैं समझी कि निर्मलदा अवसर वहनोंसे जिस प्रकार कहते हैं; अिन वहनोंने भी मेरे वारेमें कुछ पूछा होगा, अिसलिअे वे मेरा परिचय अुन्हें देते होंगे। माजी तथा वहनने भी नहीं कहा कि यह मेरा

लड़का है या भाओी है। वर्दवान स्टेशन छोड़नेके वाद — गाड़ी चलनेके वाद — निर्मलदा बोले, "वुद्धू! (निर्मलदा मुझे दिनोदमें लाड़से वुद्धू कहते थे) तुमको अेक वात वताअूं। जिनके साथ मैं बातें करता था, वे मेरी माताजी और दीदी थीं।" मैं तो अवाक् रह गओी। मैंने कहा: "क्या कहते हैं आप?" अुन्होंने कहा: "वापूजीके दर्शन करने आओी थीं।" मैं जरा नाराजीसे वोली: "आपने अैसा क्यों किया? वापूजी अुनसे मिलकर कितने खुश होते!" वे वोले: "अितनी अधिक भीड़में दूसरे सब भाओी-वहनोंको जिस ढंगसे दर्शन होते हैं, अुसी तरह मेरी माता और वहनको हों, अिसीमें मेरी और वापूजीकी शोभा है। मैंने भी अुन्हें मना कर दिया था कि तुम मनुको कोओी परिचय न देना। तुम्हारी वातें मैंने अुनसे कही थीं, अिसलिअे वे तुम्हें देखना चाहती थीं। अिसलिअे तुम्हारी मुलाकात करा दी। तुम्हारी भी तो अुनसे मिलनेकी अिच्छा थी न?" निर्मलदाके प्रति मुझे आदर तो था ही, परन्तु अिस प्रसंगसे तो अुनके प्रति मनमें वड़ा पूज्यभाव अुत्पन्न हो गया। मैंने वापूजीसे वात कही तो वापूजी वोले: "मैं अैसे ही साथियोंकी खोजमें हूं। तुमने कल अुस स्टेशन मास्टरका प्रसंग देखा, और आज यह निर्मलवावूका प्रसंग देखा। निर्मलवावू तो त्यागी आदमी हैं, अिसलिअे अुन्हें यही शोभा देता है।"

प्रार्थनाके वाद अपने वंगालीके गुरु निर्मलदाके साथ वापूजीने वंगाली पाठ किया और वंगालीमें प्रगति की है या नहीं, अिसकी अेक विद्यार्थीकी तरह अपने गुरुके सामने परीक्षा दी। निर्मलदा वापूजीकी वंगालीमें हुओी प्रगतिसे वड़े खुश हुअे।

वापूजीने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर दिये:

प्रश्न — आपकी अहिंसा जिनके गले अुतर गओी है अुन भारतीयोंको लीगवाले मुसलमान मार डालेंगे, क्योंकि लीगके नेता अिन गुंडोंको काफी मात्रामें हथियार मुहैया करते हैं। अिसलिअे वे गुंडोंके सामने जरूर हार जायंगे।

वापूजी — यह मान ली गयी काल्पनिक वात है। पहलेसे भयंकर कल्पना कर ले तव तो मनुष्य कभी भी आगे नहीं वढ़ सकता। और अिसमें यदि कोओी सत्य हो, तव तो वह प्रान्तीय सरकारके अिन्तजाम पर आलोचनाका रूप ले लेता है। परन्तु अिस प्रकारकी मान्यता या मेरे पास आये हुअे

तथ्योंके वावजूद मेरे विचार जरा भी कमजोर नहीं पड़ते। अुल्टे मैं अपने विचारोंमें दृढ़ होता जा रहा हूं। क्योंकि अहिंसा जैसे हथियारमें जो प्रबल शक्ति है, वह अणुबमकी अन्तिम खोज होने पर भी अुसमें नहीं है। और मैं जो कहता हूं अुसका लोगोंके हृदय पर प्रभाव पड़े तब तो मैं खुशीसे नाचूं। परन्तु अैसी बात नहीं है। अितने पर भी मेरे सिद्धान्तोंका मनमाना अर्थ करके पालन किया जाय तो अिसमें मैं क्या करूं? अिसके लिअे अुपदेशककी जिम्मेदारी नहीं। अधिकसे अधिक आप यह कह सकते हैं कि मुझमें अहिंसा सिखानेकी आवश्यक शक्ति नहीं है। अिसमें तो अितना ही हो सकता है कि हम औश्वरसे प्रार्थना करें कि मेरे बाद आनेवाला अुपदेशक अधिक शक्तिशाली हो और अपने कार्यमें सफलता प्राप्त करे।

प्रश्न — अंग्रेज भारतसे जायेंगे, अिसलिअे अुनकी सेना भी जायगी। फिर तो चारों ओर अंधाधुंधी फैल जायगी। अिसलिअे क्या आप यह नहीं मानते कि भारतके राष्ट्रवादियोंको तुरंत ही हथियार चलानेकी तालीम लेनी चाहिये? नहीं तो यह भय है कि पाकिस्तान बने या न बने, फिर भी लीगके जुल्मसे हमें दब जाना पड़ेगा। और साम्यवाद मुंह निकाल रहा है, जो अिस अंधाधुंधीका लाभ अुठायेगा। अुस समय आप व्यक्तिके निजी बचावके लिअे हथियार काममें लेनेकी छूट क्यों नहीं दे सकते? अथवा आप अपनी अहिंसामें सुधार करके अुसे कोअी नया स्वरूप दें तो?

बापूजी: "पहली बात तो यही है कि राष्ट्रवादी नेता यदि मुस्लिम लीगसे डरते हों, तो मुझे कहना चाहिये कि यह शर्मनाक बात है। अैसा करके वे अपने गौरवपूर्ण नामको लजाते हैं। मुसलमान भी भारतीय ही हैं। दूसरे भारतीयोंमें जो राष्ट्र-भावना है वह मुसलमानोंमें भी फैले, अैसी राष्ट्रवादी नेताओंकी प्रवृत्ति होनी चाहिये। अथवा नेताओंको कह देना चाहिये कि अुनका अहिंसा परसे विश्वास अुठ गया है। तो फिर अुन्हें अपनी प्रवृत्ति — राजनीतिक व्यवस्था — भिन्न प्रकारकी बनाकर अुसके अनुसार चलना चाहिये। परन्तु धोबीके कुत्तेकी तरह न घरका न घाटका तो हरगिज न होना चाहिये। मेरे अपने लिअे तो, जैसा मैंने अूपर कहा, मेरे विचारोंमें किसी भी प्रकारका परिवर्तन हुआ ही नहीं है। परन्तु यह भयंकर हिंसा देशमें जितने जोरसे चल रही है, अुतने ही जोरसे अहिंसाकी श्रद्धा मेरे मनमें तीव्रतासे अुत्तरोत्तर दृढ़ होती जा रही है। अहिंसा केवल तात्त्विक

सिद्धान्त नहीं है, परन्तु पिछले साठ वर्षमें अनुभव की हुआी निश्चित वस्तु है। जिस आदमीने सुन्दर मीठा आम खाया हो और अुसकी मिठास अनुभव की हो, अुसे अुस फलको कड़वा बतानेके लिअे किस तरह समझाया जा सकता है? जो लोग कहते हैं कि आमके फल कड़वे हैं, अुनके लिअे अितना ही कहा जा सकता है कि अुन्होंने आम नहीं खाया, बल्कि अुसके जैसा कोअी और फल खाया होगा और अुसे आम मान लिया होगा। साम्राज्यवादी छिपे तौर पर काम करते होंगे और अंधाधुंधीका दुरुपयोग करनेका छिपे तौर पर प्रयत्न करते होंगे। यह बात मैं कदाचित् मान भी लूं, तो भी मैं तो पुकार-पुकार कर कहूंगा कि अहिंसा किसीसे नहीं घबराती।"

हमारी गाड़ी प्लेटफार्म खाली न होनेसे हावड़ा स्टेशनके पास लगभग घंटे भर खड़ी रही। अिस बीच मैंने सामान ठीक कर लिया और जाते ही साथ रखनेका जरूरी सामान अलग कर दिया। बापूजीके दिये हुअे अुत्तर लिखे। जहां समझमें नहीं आता था, वहां निर्मलदाकी सहायता मिली, अिसलिअे जल्दी लिख लिये गये।

अिसके बाद डॉ० दादू और डॉ० नायकरके मारफत दक्षिण अफ्रीकाकी प्रजाको अेक लिखित संदेश भेजा:

"फील्ड मार्शल स्मट्स दक्षिण अफ्रीकामें पाश्चात्य संस्कृतिके ट्रस्टी हैं। परन्तु मुझे आशा है कि वे दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले अेशियाअियों और अफ्रीका-निवासियोंको कुचलकर अिस संस्कृतिको कायम रखनेका प्रयत्न हरगिज नहीं करेंगे। सच पूछें तो दक्षिण अफ्रीकाको अिन तीनों संस्कृतियोंके सुन्दर मेलका आदर्श नमूना दिखाना चाहिये।

"वहां रहनेवाली युरोपियन प्रजासे मैं अच्छी तरह परिचित हूं। और अुनमें से बहुतसे मेरे मित्र हैं। अुनसे भी मैं नम्रतापूर्वक विनती करूंगा कि आप रंगके विरुद्ध अपना पूर्वग्रह छोड़ दें और अपने प्रतिनिधियोंको विषम स्थितिसे बचायें। मैं तो मानता हूं कि गोरे लोग परदेमें रहकर अफ्रीकाके दूसरे लोगोंसे अलग रहना चाहेंगे, तो भविष्यमें परिस्थिति पर अुनका नियंत्रण नहीं रहेगा। और अैसे अनुचित रवैयेसे तीसरा विश्वयुद्ध फूट निकलेगा, जब कि समझदार लोग अिस सिर पर झूलती विपत्तिसे बचनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

"यदि दक्षिण अफ्रीकाके लोग सहयोग देंगे और सत्य तथा अहिंसाके मार्ग पर चलेंगे, तो अुससे सबको मार्गदर्शन देनेवाला भाओीचारा अुत्पन्न करनेका यश अुन्हें मिलेगा। परन्तु वहां रहनेवाले जो भारतीय अपनी जातिकी अेकता और व्यवहारमें फूट डालनेकी कोशिश करेंगे, वे अपने-आपको और अपने देशको तथा अपनी जातिको भयंकर हानि पहुंचायेंगे और सत्याग्रहकी लड़ाओी जिनके लिअे छेड़ी गओी है अुन्हें तथा स्वतंत्रताको लजायेंगे। अिसलिअे जिन्होंने सत्याग्रहकी लड़ाओीमें भाग लिया है अुन्हें भी मेरी सलाह है कि अिस भव्य शब्दको, जिसका अर्थ सत्यका आग्रह होता है, अिसके सिद्धान्तको सूक्ष्मतासे पकड़े रहें। अैसे सत्याग्रही कभी हारते ही नहीं हैं। और भारतीयोंके स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे यह लड़ाओी जिन्होंने वर्षोंसे छेड़ी है, अुन सत्याग्रहियोंकी मदद पर भारत सदा खड़ा ही है।"

[अूपरकी डायरी सुबह गाड़ीमें लिखी थी। और अब आगे रातके बारह बजे सोदपुर पहुंचनेके बाद लिख रही हूं।]

सवा छह बजे हम हावड़ा स्टेशन पर पहुंचे। सतीशबाबूके भाओी क्षितीश बाबू और सोदपुर आश्रमके दूसरे कार्यकर्ता बापूजीको लेने आये थे। तीन जगहोंसे बापूजीके रहनेके लिअे निमंत्रण आया था। शरदबाबूके यहांसे, बिड़ला पार्कसे और डॉ० बिधानचन्द्र रायके यहांसे। क्योंकि प्रार्थनामें सोदपुर आना लोगोंको बहुत दूर पड़ता है और कर्फ्यू होनेके कारण कदाचित् अुन्हें परेशानी अुठानी पड़े। परन्तु बापूजीने सोदपुरमें ठहरना पसन्द किया। वहां जाते ही बापूजी घूमने लगे, क्योंकि दो दिनसे गाड़ीमें रहनेके कारण घूमे नहीं थे। मैंने मालिश और स्नानकी तथा दूसरी तैयारियां कीं। घूमनेमें चारुदा, मां (सतीशबाबूकी पत्नी), संतोक काकी (मगनलाल गांधीकी पत्नी), क्षितीश बाबू, सतीशबाबूकी पुत्री और पौत्रियां आदि बहुत लोग साथ थे।

सुशीलाबहन पै भी नोआखालीसे आओी हैं। वे बम्बओी जायेंगी। मालिश और स्नानके बाद भोजनके समय भी बहुत लोग बापूजीके आसपास बैठे थे। अुन लोगोंसे बापूजीने कलकत्तेके दंगोंके बारेमें बातें सुनीं। मैं बहुत काममें थी और रास्तेके कपड़ोंका ढेर धोनेको था, अिसलिअे बापूजीको खाना देकर चली गओी। भोजनमें बापूजीने दो खाखरे, साग और आठ औंस दूध लिया।

मदालसाबहन (जमनालालजी बजाजकी पुत्री) यहां रहने आओी हैं। बड़ी मिलनसार हैं और मुझे सहायता देनेका ध्यान रखती हैं। अुनके साथ खूब

बातें भी कीं। अुन्होंने दोपहरको बापूजीके पैरोंमें घी मला। बापूजी केवल आध घंटे ही आराम कर सके। लोग अेकके बाद अेक आते ही रहे। प्रफुल्लदा और बिड़लाजी आये। चार बजे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य आये। आज मैं किसीके साथकी बातें सुन न सकी, क्योंकि दोपहर तक मुझे खूब काम रहा। दोपहर बाद यहां रहनेवाले कुटुम्बीजन मुझसे मिलने आये। अिसलिअे अुनके साथ गपशप करने भी बैठना पड़ा।

शामको बापूजीने केवल दूध ही लिया। वैसे, कातना वगैरा नियमानुसार चला। आज कविवर टागोरकी जन्म-जयन्ती है, अिसलिअे भी लोग खूब आ रहे हैं। प्रार्थना-सभामें गुरुदेवकी तसवीर रखी गअी। बंगाली लोग कलाके लिअे प्रसिद्ध हैं। सुन्दर ढंगसे चौक पूरे गये थे।

प्रार्थनामें गुरुदेवके 'हिंसाय अुन्मत्त पृथ्वी' और 'अेकला चलो रे' भजन गाये गये।

बापूजीने कहा :

"यहां अचानक ही मेरा आना हो गया। यहां आनेका मेरा पहलेसे कोअी कार्यक्रम नहीं था। परन्तु यहांसे अनेक मित्रोंका आग्रह हुआ कि मैं कलकत्ते आअूं। अिसलिअे मुझे भी लगा कि नोआखाली और बिहारमें जो काम करने मैं गया था, अुसी कामको आगे बढ़ानेके लिअे कलकत्ते जाना मेरा धर्म हो जाता है।

"यहां जिनके चित्रको कलापूर्ण ढंगसे सजाया गया है, अुन गुरुदेवकी आज जन्मतिथि है। अभी आपने अुनके लिखे हुअे दो गीत सुने। महापुरुषोंकी मृत्यु कभी नहीं होती। अुनके शुरू किये हुअे काम जारी रखकर अुनके नामको अुज्ज्वल रखना हम सबका फर्ज है। आजका भजन अुन परिस्थितियोंके अनुरूप है, जिनमें से हम अिस समय गुजर रहे हैं। भजनमें कवि अीश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो, तू हमें अंधेरेसे प्रकाशमें ले जा, असत्यमें से सत्यमें ले जा और दुःखमें से आनंदमें ले जा। यही मंत्र बोलकर अुन्होंने दीनबंधु अेण्ड्रूज और पियर्सनको दक्षिण अफ्रीका जानेके लिअे विदा किया था। सारी दुनियामें गुरुदेवके अनेक भक्त और शिष्य होंगे। अुन सबमें ये दो सज्जन प्रमुख थे। हमारे देशमें अनेक अृषि, मुनि और विद्वान हो गये हैं। वे हमें अनेक श्रेष्ठ बातें और अुपदेश दे गये हैं। यदि हम

अुनके कहे अनुसार चलें तो भारत अेक शान्तिकी भूमि बन जाय। आप सब जानते हैं कि अेक शान्ति-पत्रिका पर मैंने और जिन्ना साहबने हस्ताक्षर किये हैं। बिहारके हिन्दू और नोआखालीके मुसलमान याद रखें कि यदि अुन्होंने शांति नहीं रखी, तो आमरण अनशन करना मेरा फर्ज हो जायगा। क्योंकि भारतमें मैंने मुसलमानोंकी हार्दिक सेवा की है और अब भी मेरा दावा है कि मैं अुनकी हार्दिक सेवा कर रहा हूं। अिसलिअे वह अधिकार मुझे अपने-आप मिल जाता है। कवि अिकबालकी यह बात याद रखिये कि 'मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना'। अिस पदको हृदयमें रख कर और आचरणमें लाकर भारतको भाअीचारे और सुख-शांतिकी भूमि बनाअिये।

"अंग्रेज अब सत्ता छोड़कर जानेवाले ही हैं। तब मैं आप सबको खास तौर पर सुझाता हूं कि हमारे बीच कुछ भी मतभेद हो तो साथ बैठकर हम चर्चा करें और अुचित ढंगसे अुसे दूर करें। अिसीमें हमारी शोभा है। परन्तु हम अपने भाअी-भाअीके झगड़े अंग्रेजोंके पास ले जायं अिसमें हमारी शोभा नहीं। अिससे हमारी कायरता और कमजोरी जाहिर होगी और अिससे हमें कितना नुकसान होगा, यह समझदार नेता विचार करेंगे तो तुरंत समझमें आने जैसी बात है। अंग्रेजोंसे भी मैं नम्रतापूर्वक कहूंगा कि आप यहांसे जितनी जल्दी जा सकें चले जायं। अिसीमें आपका और हमारा श्रेय है। हम अपने घरमें आपसमें निबट लेंगे। आप मेहरबानी करके हमारे भारतमें न रुकें।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़ी देर घूमे। ६॥ बजे शरदबाबू आये। अुन्होंने रातके दस बजे तक बापूजीके साथ अकेलेमें चर्चा की। बातोंका सार यही था कि, "अब किसीके प्रति भी पूर्वग्रह न रखकर सबको देशके हितकी बात सोचना चाहिये। छिपी हुअी छुरियां निर्दोषोंको भोंकी जाती हैं, यह सब 'वादों' का ही प्रताप है। अुसमें निर्दोषोंको कष्ट सहने पड़ते हैं, क्योंकि जो दलोंके नेता हैं अुन्हें कोअी मारने नहीं जाता। यदि वे अिस तरह मरते हों तो मुझे आपत्ति नहीं है। तब भले ही वे दंगे करायें। परन्तु आज जो चल रहा है, वह तो नामर्दीका लक्षण कहा जायगा।"

मैं अपना काम निबटाकर दो दिनकी सफरकी थकानकी वजहसे सो गअी थी। शरदबाबूके जानेके बाद बापूजीने मुझे अुठाया और पैर धोते हुअे अूपरकी बात डायरीमें दर्ज कर लेनेको कहा।

लगभग ११ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। अुनके सिरमें मैंने तेल मला। मदालसाबहन और सतीशबाबूकी पुत्री दीदीमणिबहन और पौत्री शुक्लाबहनने अुनके पैर दबाये।

मैंने अेक नींद ले ली थी, अिसलिअे अुठनेके बाद बापूजीका सूत अुतारा, अपना गीतापाठ लिखा, बापूजीकी डायरीकी नकल की और अपनी डायरी पूरी की। १२-१५ हो गये हैं। अब सोने जा रही हूं।

सोदपुर आश्रम (कलकत्ता),
१०-५-'४७

नियमानुसार प्रार्थना। आज प्रार्थनामें भजन सतीशबाबूकी पौत्री शुक्लाबहनने गाया। बाकी सारी प्रार्थना और गीताजीका पाठ वगैरा सब नियमानुसार मैंने कराया। प्रार्थनाके बाद बापूजीने डाकके कुछ पत्र देखे। शहीद सुहरावर्दी साहबने लंबा पत्र लिखा है सो देखा। मैंने अपना दैनिक कामकाज पूरा किया।

मुस्लिम लीगके मंत्री और अुनके साथ दूसरे दो विद्यार्थी आये। अुन्होंने बापूजीसे कहा, "आप तो बुद्ध भगवान और पैगम्बर साहबने अहिंसाका जो काम किया वैसा ही काम कर रहे हैं और लोग आपको अुनके अवतार मानते हैं। आपको कलकत्तेकी अशांति मिटानी है। बिहारमें भी हमारे भाअियोंको शांति मिले, अैसा काम करना है।"

बापूजी — पहली बात तो यह है कि आप मुझे दूसरे बुद्ध या पैगम्बर कह रहे हैं यह भूल है। मैंने अैसा दावा कभी किया ही नहीं। मैं तो अेक मामूली आदमी हूं। हां, हमारे धर्मशास्त्रों और महापुरुषोंने जीवनके जिन सिद्धान्तोंका अुपदेश दिया, अुनके अनुसार चलनेकी मैं जरूर कोशिश करता हूं। और कुछ अंशोंमें मैं अुसमें सफल भी हुआ हूं। फिर भी मेरा यह दावा नहीं है कि मैं कोअी दैवी पुरुष हूं अथवा आपसे अूंचा मनुष्य हूं। मैं तो हिन्दू कहो या मुसलमान अथवा मानवमात्रका सेवक हूं। मेरी यह अिच्छा जरूर है कि अिस समय जो खूंखार लड़ाअी अेक ही देशके भाअी-बहनोंमें हो रही है अुसे मिटानेकी शक्ति मुझमें पैदा हो जाय। अैसा हो तो मैं बेशक प्रसन्न होअूंगा। कृष्ण भगवान या बुद्धदेव जैसे अनेक महापुरुष अीश्वरावतार हो गये और अुनमें शांति तथा सुख लानेकी दैवी शक्ति थी अैसा हमारे शास्त्र कहते हैं। परन्तु मैं अभी तक शांति स्थापित नहीं कर सकता,

अिससे आप सहज ही समझ सकेंगे कि मैं दैवी पुरुष नहीं हूं। यदि मैं आपकी वातोंसे फूल जाअूं, तो मैं अेक मिनट भी दुनियामें टिक नहीं सकता। सत्य और अहिंसा आदिके जो व्रत मैंने लिये हैं, अुनकी कसौटी पर मैं जरूर अिस समय चढ़ा हुआ हूं। अिसीलिअे तो मैं नोआखाली, विहार और दिल्ली घूमकर यहां आया हूं। वहीं या तो मुझे कुछ करना है या मरना है। आपका अगर यह विश्वास हो कि गांधी जो कर रहा है वह ठीक है और गांधीकी कलकत्तेमें जरूरत है, तो सबसे पहले मेरी अेक नम्र प्रार्थना कहिये अथवा सूचना कहिये, मैं आपके सामने रखता हूं।"

अुन लोगोंने कहा, "हां, आप हमें जो हुक्म देना चाहें दे सकते हैं।"

वापूजी — तो पहली बात यह है कि आप जिस संस्थाके प्रतिनिधि या कार्यकर्ता हैं, अुसके प्रति यदि वफादार रहना चाहते हों तो आपको जिन्ना साहवसे पूछना चाहिये कि पंजाव, सीमाप्रान्त और नोआखालीमें हजारों हिन्दू मर रहे हैं, हजारों वहनोंकी लाज लूटी जा रही है और आपने गांधीके साथ शांति-पत्रिकामें हस्ताक्षर किये है, तो फिर आप दिल्लीमें किस लिअे वैठे हैं? आपकी संस्थाका अेक-अेक कार्यकर्ता हिन्दुओंकी रक्षाके लिअे क्यों खड़ा नहीं हो जाता? यदि आपको मुसलमानोंको वचाना हो, तो अिन सव हिन्दुओंकी रक्षा करनी ही होगी। और आपको तो, जिन्ना साहवका हुक्म आये या न आये, नोआखालीमें जाकर वैठना चाहिये। वहांके हिन्दुओंको आप यह विश्वास दिला दीजिये कि आप हमारे भाअी-वहन हैं; और यदि कोअी मुसलमान धर्मके नाम पर आपको मारेगा तो पहले हम मरेंगे, परन्तु आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगे। आपकी मां, वहन और लड़की हमारी मां, वहन, लड़की है। यह वात अुन्हें केवल मुंहसे कह कर नहीं परतु आचरणमें लाकर यदि आप कर दिखायें, तो मैं आप तीनोंसे यह कहता हूं कि आप अपने धर्मकी रक्षा करेंगे, अपनी संस्थाको अुज्ज्वल वना देंगे। अिसका असर सारे देशमें होगा और आपके नेता आपके अैसे सुन्दर कार्योंसे सुशोभित होंगे। आज आपके नेता — आपकी संस्था दुनियामें अप्रिय हो गअी है। अुसे यदि आपको मजबूत करना हो, भारतके मुसलमानोंको सुख, अेकता और शांतिसे रहने देना हो, तो अुसका अेक यही रास्ता है, दूसरा नहीं। मैं जानता हूं कि आपको मेरी वातें पसन्द नहीं आयेंगी। लेकिन जो मुझे सच मालूम हो वह न कहूं, तो मैं आपके प्रति वेवफा

साबित हूंगा। क्योंकि मैं तो आप सबको अपने मित्र और भाओी ही मानता हूं। अिसलिअे मित्रका धर्म और भाओीका धर्म मुझे सच कहनेको मजबूर करता है।"

बापूजीने सुबह ही सुबह अिन लोगोंको साफ साफ बातें सुना दीं। वे अेक शब्द भी बोले बिना सुनते रहे और बापूजीकी बात पूरी होते ही अेकदम खड़े हो गये। अुन्होंने बड़ी मुश्किलसे अितना स्वीकार किया कि, "हम भरसक अपनी सेवा देंगे।" कहीं गांधीजी और कुछ सुना दें तो? अैसा डर भी शायद अुनके मनमें होगा! अिसलिअे 'आदाब' करके वे चले गये।

मैंने स्नानके समय बापूजीसे कहा: "आपने अिन लोगोंको अितना समझाया, परन्तु किसीने यह भी कहा कि लाअिये, हम अभी जिन्ना साहबको आपके सामने ही लिख देते हैं? और यहां आपकी खुशामद करने आते हैं कि आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। मुंहसे ही अच्छी लगनेवाली बातें करते हैं।"

बापूजी बोले: "अिस प्रकार अच्छी लगनेवाली बातें न करें और काम करने लगें, अिसीलिअे तो आज अुनसे मैंने स्पष्ट कहा। अब यद्यपि वे काम तो नहीं करेंगे, परन्तु यहां आकर मुझे बुद्ध या पैगम्बरकी अुपमा देकर अपने अूपरका बोझ बिलकुल अुतार तो नहीं फेंकेंगे। मेरे मनमें भरा हो सो मुझे कहना ही चाहिये। मैं कामका भूखा हूं, प्रशंसाका नहीं। हमेशा जो आदमी मुंह पर बहुत प्रशंसा करता है, अुस पर बहुत विश्वास नहीं करना चाहिये। अुसके बजाय जो मेरी आलोचना करते हैं अुनको मैं अपना हितेच्छु मानता हूं। क्योंकि मेरी भूलकी आलोचना करके वे मुझे सचेत करते हैं और अुसीसे दोनों पक्षोंको आपसमें फायदा पहुंचता है। या तो आलोचना करनेवाला सुधर जाता है अथवा जिसकी आलोचना होती है वह यदि भूल कर रहा हो तो स्वयं सुधर जाता है।"

फिर हिंसा-अहिंसाकी बात निकलने पर बापूजी कहने लगे, "जिसे अपने रोजके जीवनमें वीरोंकी अहिंसा अपनानी हो, अुसे अपने भीतरसे निराशा या कायरताके विचारोंको बिलकुल निकाल देना चाहिये, और बारीकसे बारीक बातमें भी सावधान रहना चाहिये। किसीके डराने-धमकानेसे वह हरगिज न दबेगा। भारतमें अैसे वीरोंकी कोअी कमी नहीं है। तो भी दुनिया आज यह कह सकती है कि हिन्दुस्तानियोंके पास हथियार नहीं थे,

अिसलिअे हथियारोंका अिस्तेमाल करना अुन्हें कैसे आये? परन्तु मारनेके बजाय मरनेमें कितनी बहादुरी है? हमें विदेशियोंने कायर ठहराया है, अिसलिअे अुस मान्यताको हमें दूर करना ही चाहिये। परन्तु अिसके बजाय आजकल अुलटा ही हो रहा है। मनुष्यका मन अैसा है कि अक्सर अुसको जैसा कहा जाता है वैसा न होने पर भी जबरन् ठोक-पीटकर बैठाओी हुअी बातें अुसके दिमाग पर असर करती हैं और अंतमें मनुष्य वैसा ही बन जाता है। अंग्रेजोंने हम पर डेढ़ सौ वर्ष राज्य करके हमें शक्तिहीन कहा और वीर होते हुअे भी हमें शक्तिहीन बना दिया है। अुन्होंने हमारा आत्म-विश्वास नष्ट कर दिया है।"

दो बजेसे लोग आने लगे हैं। शरदबाबू, मनुभाओी भीमानी, बालभाओी और बिड़ला-परिवार आया था। बिड़ला-परिवारकी महिलाअें ६३०० रुपये नोआखाली कोषके लिअे दे गअीं। मैंने तुरन्त चारुदाको सौंप दिये। बाल-भाओी (काका कालेलकरके पुत्र) के साथ बापूजीने अेक घंटे बातें कीं। आज मेरे पेटमें दाअीं ओर सख्त दर्द रहा। शामको थोड़ा-सा बुखार भी रहा। अिसलिअे शरदबाबूके साथ हुअी बापूजीकी बातचीतके समय मैं बैठी नहीं थी।

प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने दो प्रश्नोंका अुत्तर दिया:

प्रश्न — हिन्दुओं और मुसलमानोंमें दिन-दिन वैमनस्य बढ़ता जा रहा है। अुसे देखते हुअे क्या दोनों जातियां परस्पर भाओीचारेसे रह सकेंगी?

बापूजी — आज दोनों जातियोंके बीच जो शत्रुता पैदा हो गअी है, वह सदाके लिअे कभी टिकी नहीं रह सकती। आज दोनों जातियों पर थोड़े समयके लिअे पागलपन सवार हो गया है। फिर भी हिन्दू-मुसलमान अन्तमें तो भाओी ही हैं। अगर दोनों भाओी-भाओी बनकर नहीं रहेंगे, तो हिन्दुस्तानमें दोनों धर्म नष्ट हो जायंगे और दोनों जातियां अिस तुच्छ प्रलोभनमें आजादीके कीमती रत्नके टुकड़े कर डालेंगी।

बंगालके यदि टुकड़े होंगे तो अुसके लिअे बंगाली मुस्लिम बहुमत जिम्मेदार रहेगा। अितना ही नहीं, अभी जो मुस्लिम सरकार है, अुसकी भी अिसके लिअे जिम्मेदारी रहेगी। सुहरावर्दी साहबकी जगह अगर मैं मुख्यमंत्री होअूं, तो अपने भाअियोंसे भूतकालकी घटना भूल जानेको ही कहूं। मैं कहता हूं कि जैसे आप बंगाली हैं वैसे ही मैं भी बंगाली हूं। हमारे

धर्म अलग होनेसे हम अलग नहीं हो जाते। आप और मैं अेक ही भाषा बोलते हैं। हम दोनोंको अेक ही संस्कृतिकी विरासत मिली है। जो बंगालका है वह हम सबका है और अुसके लिअे हम सबको समान गौरव अनुभव करना है। बंगाल बंगाल ही है, पंजाब नहीं, बम्बअी नहीं; और कुछ भी नहीं। अगर सुहरावर्दी साहब यह रवैया अख्तियार करें, तो मैं बंगालमें सब जगह अुनके साथ घूमनेकी जिम्मेदारी लेने और सब स्थानों पर हिन्दुओंके साथ चर्चा करने और अुन्हें समझानेका प्रयत्न करनेको तैयार हूं। हिन्दू और मुसलमान लॉर्ड कर्जनके समयमें कैसी बहादुरीसे लड़े थे? अुसके कारण लॉर्ड कर्जनको अपनी बनाअी हुअी योजना छोड़नी पड़ी थी। और अिस अेकताका विरोध करनेवाला अेक भी हिन्दू नहीं मिलेगा। अगर मैं अपनी आवाज सुहरावर्दी साहब तक पहुंचा सकूं, तो अुन्हें अपना नम्र सुझाव दूंगा कि आप अपने कहे अनुसार अगर भारतके प्रति वफादार रहना चाहते हैं, तो मुसलमानोंसे कहिये कि तुम हिन्दुस्तानके टुकड़े करना चाहते हो तो खुशीसे करो, परंतु अुससे पहले मेरे शरीरके टुकड़े कर दो। आज सुबह मेरे पास लीगके मंत्री आये थे, अुनसे भी मैंने यही बात कही थी। बंगालके हिन्दुओंमें डर पैठ गया है, जैसा बिहारके मुसलमानोंमें पैठ गया है। परन्तु बिहारने तो प्रायश्चित्त करना शुरू कर दिया है। जहां प्रेम है, वहां किसी प्रकारके भेदभावके लिअे स्थान ही नहीं होता।

प्रार्थनासे आनेके बाद बापूजीने सुहरावर्दी साहबको पत्र लिखवाया। अुसमें अत्यन्त स्पष्ट शब्दोंमें अुन्हें अपनी जिम्मेदारी बताअी।

रातको निर्मलदाके अेक मित्र ५००० रु० दे गये। अपना नाम देनेसे अुन्होंने अिनकार कर दिया और बापूजीकी अिच्छानुसार किसी भी काममें अुनका अुपयोग करनेकी सूचना की।

बापूजी १०–३० के बाद अपने कामसे निबटे। बादमें थोड़ेसे बंगाली शब्द लिखे और शुक्लाबहन तथा अुनकी छोटी बहनके साथ बंगालीमें बातें कीं। पांचेक मिनट खूब दिल्लगी की। बच्चोंको बंगालीमें बातें कराकर बापूजीने खुश कर दिया। कुछ देरके लिअे हास्यसे कमरा गूंजता रहा। पांच मिनट पहले अिसी कमरेमें सुहरावर्दी साहबको पत्र लिखा जा रहा था। तब जो गंभीर वातावरण था वह अेकदम पलट गया। (बापूजीकी खूबी ही यह है कि वे प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक वातावरणके अनुकूल बनकर अुसका

लाभ अुठाते हैं और दूसरोंको अुठाने देते हैं।) ये बच्चे वापूजीके पैर दवाने आये थे, अिसलिअे अुनके साथ वापूजीने विनोदमें वंगालीमें वार्तालाप किया। खुदने वोलना सीखा, वालकोंको आनंदित वनाया और केवल पांच मिनटमें सव विदा हो गये।

ग्यारह वजे सोनेकी तैयारी। वापूजीको सुलानेके वाद मैंने अपनी डायरी लिखी। अव ११–३० हो रहे हैं और मैं भी सोने जा रही हूं।

खादी-प्रतिष्ठान, सोदपुर (कलकत्ता),
११–५–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। आज निर्मलदा लगभग सारी रात काम करते रहे। सुशीलावहन पै भी यहीं हैं। अिसलिअे खूव आनंद आ रहा है और वापूजीको भी अच्छा लगता है।

प्रार्थनाके वाद डाक लिखवाअी। . . . के मंत्रीको (हिन्दीमें) लिखा:

"तुम्हारा पत्र . . . के वारेमें मिला। मुझे अंग्रेजीमें क्यों लिखते हो? जो तुम्हारी मातृभाषा है, वह मेरे लिअे राष्ट्रभाषा है। अिसलिअे अंग्रेजीमें लिखनेकी आपत्तिमें हम क्यों गिरें? हां, यह कह सकते हो कि अंग्रेजीमें लिखनेके साधन मंत्रियोंकी आफिसमें तैयार पड़े हैं। अंग्रेजीके वदलेमें हिन्दुस्तानीमें लिखनेवाले क्लार्क रख सकते हैं। अुससे खर्च भी कम होगा और प्रजाजनके लिअे सहूलियत होगी। आखिरमें अंग्रेजी जाननेवाले हिन्दुस्तान भरमें अिने-गिने लोग हैं। स्वदेशी राज्य-तंत्र कुछ अुनके लिअे नहीं चल सकता है। आज जो भी करोगे सो अंग्रेजी तंत्र जड़मूलसे जानेके वाद होनेवाला है। यह भी याद रखो कि तुम्हारे तो सवसे ज्यादा गिरे हुअे दलितोंकी सेवा करना है और अुनका प्रतिनिधित्व सुशोभित करना है।

"अव हमारे खतके मुद्दे पर आता हूं। संयुक्त प्रान्तका ग्राम-पंचायत विल मैंने पढ़ा नहीं है। चुनी हुअी संस्थाओंमें सवकी सवमें हरिजन होना ही चाहिये अैसा मैं नहीं मानता, न तो तुम्हें मानना चाहिये। अैसी संस्थाओंके लिअे योग्यता न हो, तो भी हम हरिजनोंको रखें ही अैसा कहना अुचित नहीं होगा। अैसे प्रश्नोंका हल करनेमें सवसे वड़ी वात यह होती है कि हम हरिजनोंके ज्ञानकी शक्ति

बढ़ावें। लेकिन यह तो मैंने तात्त्विक वस्तु लिख दी। . . . ।"

दूसरे पत्रमें :

"... श्री ... को तुमने जो खत लिखा है, वह अुन्होंने मुझे भेजा है। तुमने अंग्रेजीमें क्यों लिखा ? तुम्हारी और . . . की मातृ-भाषा अेक ही है। अंग्रेजी भाषाका तुम्हारा ज्ञान कच्चा है, अैसा मैं तुम्हारे खतसे देख पाता हूं। . . ."

. . . के मुख्यमंत्रीको (हिन्दीमें) :

"... ने पंचायत-राज बिलके बारेमें श्री . . . को लिखा है। . . . अुन्होंने दोनों खत मुझे भेजे हैं। खूबीकी बात है कि सब खतोंकी लिखावट अंग्रेजीमें है। और . . . की अंग्रेजी नमूनेदार है। अुन्होंने कांग्रेस पार्टीको खत लिखा है सो भी अंग्रेजीमें। हमारे कायदे भी अंग्रेजीमें। अंग्रेजी साम्राज्यसे संभव है कि हम निकल रहे हैं, लेकिन अंग्रेजी भाषाके साम्राज्यसे नहीं निकलेंगे। अगर हम नहीं निकले तो करोड़ों गरीबोंका क्या? अथवा हमारा सब प्रयत्न हिन्दुस्तानके समुद्रमें अिने-गिने अंग्रेजी भाषाके जाननेवाले हैं अुनके लिअे ही है? यह तो हुअी अप्रस्तुत बात।

"प्रस्तुत बातके बारेमें कुछ भी अभिप्राय दे सकूं अुसके पहले आपका बिल क्या है, और . . . का अुत्तर क्या है सो मुझे जानना चाहिये।"

टहलते समय बापूजीने कुछ भाअी-बहनोंके साथ बातें करते हुअे कहा :

"अैसी भद्दी घटनाअें होती हैं तब हम करनेवालोंको गुंडा कहते हैं। परन्तु ये गुंडे आखिर हैं कौन? हमारे ही भाअी हैं। अुनके कामको हम गुंडागिरी कहकर अुसकी निन्दा करते हैं, पर अुसका लांछन हमें भी लगता है। जो भी लोग अच्छा काम या बुरा काम देशके लिअे करते हैं, अुस सबके भागीदार देशके तमाम भाअी-बहन हैं। हमारी खुराक, हमारी निद्रा और हमारी दूसरी सारी क्रियाओंमें और पशुओंकी प्रक्रियाओंमें कोअी फर्क नहीं है। परन्तु मनुष्य और पशुमें भेद अितना है कि मनुष्यमें बुद्धि होनेके कारण यदि वह नैतिक जीवन जीनेका प्रयत्न करे, तो मनुष्य और पशुमें फर्क हो जाता है। 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने'। अहिंसामें अैसी वीरताकी जरूरत है। परन्तु आज लोगोंने अुसे कायरता मान

लिया है। हरिका मार्ग सत्य और अहिंसाका मार्ग है। परन्तु अिसमें कहीं न कहीं भूल रह गअी होगी। मैं स्वयं तो मुझसे भूलें हों तब अुनको स्वीकार करके अुन्हें सुधारनेमें विश्वास रखनेवाला आदमी हूं। अपनी भूल स्वीकार करनेसे मनुष्यकी आत्मशुद्धि होती है। सच्ची अहिंसा केवल मार खानेमें ही समाअी हुअी नहीं है। परन्तु समय आने पर हमें जो सच्ची बात लगती हो अुसे कहना और अुसके अनुसार व्यवहार करना चाहिये। अिसीलिअे मैं यहांकी सरकारको दो दिनसे सच्ची बातें कह रहा हूं। अिस समय चुप रहना नामर्दीका लक्षण है। और अिससे अहिंसा लजायेगी। अहिंसक मनुष्यको यह हिम्मत पैदा करनी ही चाहिये। अिसके लिअे मनुष्यको अनासक्त होनेकी भी जरूरत है।"

नियमानुसार मालिश, स्नान वगैरा हुआ। ९॥ बजे पंडितजीका तार आया कि १६ तारीखको कार्यसमितिकी बैठक है, अुसमें बापूजीको अुपस्थित रहना पड़ेगा। साने गुरुजीके अुपवास छोड़नेके समाचार भी मिले। बापूजीकी अिच्छा दिल्ली जानेकी बहुत ही कम है। परन्तु कोअी छोड़ते नहीं मालूम होते। बापूजी बोले:

"फिर दिल्ली जाना है। हम तो मुसाफिर हैं। अीश्वरने दुनियाकी यात्राके लिअे हमें जन्म दिया है। अिसलिअे हमें देशकी यात्रा करनी है। फिलहाल तो जीवनमें स्थिरता आयेगी ही नहीं। स्थिरता तभी आयेगी जब या तो मैं मर जाअूं या भारतवासी समझ जायं। तुम्हें पता है कि स्वराज्य लेना मुझे आसान लगता था। परन्तु अुसे कायम रखना मुश्किल हो जायगा। आजकलके ये सारे आसार अच्छे नहीं हैं। परीक्षाका समय तो अब ही है। सबके त्यागकी परीक्षा भी अिसी समय होनेवाली है। न मिलने पर स्वाभाविक ही सादा जीवन बिताना पड़ता है। परन्तु मिलने पर भी अैसा व्यवहार करना कि यह हमारा नहीं, परन्तु अीश्वरका है, बहुत कठिन है। हमारी प्रार्थनामें पहला ही श्लोक है:

> अीशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
> तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

"अिस श्लोकको रटनेवालेको सबसे पहले तो अपने पास जो कुछ हो अुसे अीश्वरको सौंप देना चाहिये और बादमें जितना खुदको चाहिये अुतना ही काममें लेना चाहिये। अपने रोजके व्यवहारमें जितना चाहिये अुससे

अधिक अुपयोगमें लेना पाप है। जैसे कोअी पराअी चीज लें तो हम चोर ठहरते हैं, वैसे यहां भी सब चीजें अीश्वरकी सम्पत्ति हैं; अुनमें से अधिक लें तो हम अीश्वरके अपराधी हैं। अिस प्रकार सच्चे त्यागका तो अिसी समय पता चलेगा। हम करोड़ों अुपाय क्यों न करें, वैराग्यके बिना त्याग नहीं टिक सकता।"

दिल्ली जानेकी बातों परसे बापूजीने अीश्वरार्पण-भावनाकी सात्त्विक बातें कहीं। बापूजी जब अैसी आध्यात्मिक बातें कहते हैं, तब अैसा लगता है कि सुनते ही रहें और बापूजी बोलना बन्द न करें तो कितना अच्छा हो? परन्तु बापूजीका समय मशीनरीकी तरह कामसे भरा रहता है। और वे केवल अुपदेश देनेमें विश्वास नहीं रखते, परन्तु कर्मयोगमें विश्वास रखते हैं। अिसलिअे अुसे आचरणमें लाकर भूमितिके अुदाहरणोंकी भांति सिद्ध करके दिखाते हैं।

स्नान करके बाहर निकले तो हजारों आदमी दर्शन करनेके लिअे खड़े थे। बापूजी वहां गये। बिड़ला-मिलके मजदूरोंने आज हड़ताल कर दी है। वे दंगे-फसाद पर अुतारू हो गये हैं; बापूजीके पास न्याय मांगने आये हैं। बापूजीने मजदूरोंको समझाया:

"हम हड़ताल कब करें और किसके विरुद्ध करें, अिसका हम स्पष्ट न्याय नहीं करते। आजकल हिन्दुस्तानमें हड़ताल करना अेक बड़ा बहादुरीका काम मान लिया गया है। बात बातमें मिलोंमें हड़तालें हो जाती हैं। जरा-जरासी बातमें विद्यार्थी स्कूल-कॉलेजोंमें हड़ताल कर देते हैं। अिसमें नुकसान किसका ज्यादा होता है, अिसका कभी आपने विचार किया है? मजदूरों और विद्यार्थियोंका ही होता है। रुपयेवालोंका, सरकारी पाठशालाओं या कॉलेजोंका नुकसान नहीं होता। मिल-मालिकोंकी मिल अेकाध दिन या महीनाभर बन्द रहेगी तो अुन्हें रोटीकी तकलीफ नहीं होगी। परंतु आप रोज लाकर रोज खानेवाले हैं। आपका क्या होगा? अिसी तरह सरकारी विभागोंमें कारकुन और चपरासी हड़ताल कर देते हैं। मैं सबको बराबर दर्जेकी मजदूरी मिलनेमें विश्वास रखता हूं। अेक भंगीको दिन भरमें केवल चार आने और अेक वकीलको सौ रुपये क्यों मिलें? परन्तु बात यह है कि दुनिया अभी अुस आदर्श तक नहीं पहुंची है। वकीलों और बैरिस्टरोंको लोग कअी तरहकी गरज होनेसे रुपया देते ही हैं। समाजमें

कमाअीका स्तर अेकसा वनानेमें अभी कअी वर्ष लगेंगे। आपके साथ अन्याय होता हो तो आप सोच-समझकर अपने मालिकके पास जाअिये, अुसे समझानेकी कोशिश कीजिये; परन्तु आपको लोग अपने-अपने दलों और वादोंके प्रचारके लिअे हड़तालका जोश चढ़ायें तो आप हड़ताल न करें। ये दल और वाद तो आजकल नये नये पैदा होते जा रहे हैं। आप अपढ़ लोग हैं, मजदूरवर्ग हैं, अिसलिअे अिसका अच्छी तरह ध्यान रखना कि वे आपका दुरुपयोग न करें। मैं मानता हूं कि अब मिल-मालिकोंको भी परिस्थिति समझनी ही पड़ेगी। अगर वे मजदूरोंका खून चूसेंगे तो मिलें भस्मीभूत हो जायंगी। अुनके वंगले, मोटर वगैरा सब आपकी मेहनतके फल हैं। परन्तु जहां तक मैं जानता हूं, मिल-मालिकोंका वड़ा हिस्सा समझदार है। मैं आशा रखता हूं कि वे देशकी स्थितिको समझकर मजदूरोंके साथ न्यायका वरताव करेंगे। मालिक और मजदूरके वीच वाप-वेटे जैसा संवंध आज नहीं तो वरस दो वरसमें कायम करना ही पड़ेगा। अिसीमें दोनोंका कल्याण है। नहीं तो दोनों नष्ट हो जायंगे, अिसमें मुझे जरा भी शक नहीं है। अिसलिअे मेरा तो आपसे नम्र निवेदन है कि आप सब काम पर चले जायं। आप अपनेमें से पांच आदमियोंकी, जो आपको प्रामाणिक लगें, अेक कमेटी वना दें। वे पांचों आदमी मालिकोंके पास जायं और आपका सारा केस अुनके सामने पेश करें; अुनकी कठिनाअी आप समझें, आपकी वे समझें। अिस प्रकार आपसमें समझौता करके अुचित मार्ग अपनायें, यही दोनों पक्षोंके लिअे हितकर है।"

प्रार्थनासे पहले सुहरावर्दी साहव, फजलुल हक रहमान और अुनके मंत्री आये। सुहरावर्दी साहव कहने लगे कि, "अब शांति हो रही है और हमारी सरकारमें कुछ भी वेअिन्साफी नहीं रही।" जब वे यों वोलते हैं, तब क्षणभरके लिअे मुझे वहुत ही वुरा लगता है।

वापूजीने मुझसे कहा: "जबरदस्त दिमागवाले लोग हैं। हड्डी तो मानो अिनकी जवानमें है ही नहीं!"

सुहरावर्दी साहव कहने लगे, "हम नया वंगाल वनाना चाहते हैं। अुसमें अेक जाति दूसरी जाति पर जुल्म नहीं कर सकती।"

वापूजी: "भविष्यमें वनाना चाहते हैं। परन्तु आप जानते हैं न कि भविष्य वर्तमानके संयोगोंके आधार पर अवलंवित है? वर्तमान कैसा खराव है? आप कलकत्तेको भविष्यमें आदर्श वनाना चाहते हैं। परन्तु अुसके आसार

आजसे ही अुलटे हैं अिसका क्या? अिसलिअे आपको अपनी अिच्छा पूरी करनी हो तो अभी जहां दंगे हो रहे हैं वहां आप जाअिये। कोअी आपको काट डाले तो कट जाअिये। परन्तु अपने भाअियोंको आप समझाअिये। यदि आप अितना अेक दिन तो क्या, अेक घंटेके लिअे भी करेंगे तो सच-मुच कलकत्ता और कलकत्तेके मुख्यमंत्री भारतके दीपस्तंभ बन जायंगे।"

बापूजीने मुख्यमंत्रीको खूब सुनाया और जोश दिलाया। अुन्हें चाय-नाश्ता भी कराया। स्वयं भी अुनके साथ थोड़ेसे अंगूर लिये। बादमें सी० आर० दासकी पत्नी और अुनकी पुत्रियां आअीं। अुनसे परिवारके हालचाल पूछे। अितनेमें प्रार्थनाका समय हो जानेसे प्रार्थनामें गये।

प्रार्थना-सभामें बापूजीने सुहरावर्दी साहबकी मुलाकातका जरा-सा अुल्लेख करते हुअे कहा, "सोदपुरमें (यहां) वे मुझसे मिलने आये थे। मुझे अुनके घर जाना था, परन्तु वे मुझे अपने घर कैसे आने देते? वे खुद ही यहां आ गये। यह मेरे प्रति अुनकी अुदारता है और अिसके लिअे मुझे अुनका आभार भी मानना चाहिये।"

बंगालके विभाजनके बारेमें बोलते हुअे बापूजी कहने लगे: "बंगालका भविष्य तय करनेके लिअे तीसरा कोअी न आये; बंगालके हिन्दू और मुसलमानोंको अिस बारेमें निर्णय करना पड़ेगा। और हिन्दुस्तानके टुकड़े होंगे, यह अभी तो मेरी कल्पनामें नहीं आता। परन्तु मान लीजिये कि अैसी करुण घटना होनेका अवसर भारतके भाग्यमें लिखा हो, तो भी बंगालियोंको बंगालीके नाते निर्णय करना है, हिन्दू-मुसलमानके नाते नहीं।" बादमें खास तौर पर बापूजीने अेकता पर ही जोर दिया। प्रार्थना-सभा बहुत ही विराट थी।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने थोड़े चक्कर लगाये। मौन ले लेनेके कारण बिलकुल शान्ति है। पैर धोनेके बाद अुन्होंने प्रवचन सुधारा। अितनेमें बाल-मंडली अिकट्ठी हो गअी। मौनमें बापूजी बोल नहीं सकते थे, अिसलिअे थोड़ेसे शब्द अुन्होंने बंगालीमें लिखे और अिन बालकोंसे पढ़वाये। ग्यारह बजे सोनेकी तैयारी हुअी।

खादी-प्रतिष्ठान (कलकत्ता),
१२-५-'४७

आज सोमवार होनेसे गीताके अध्यायोंमें प्रार्थना लंबी चली। दो भजन भी शुक्लाबहनने गाये। प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी और रस देकर

मैं बुखार होनेके कारण सो गअी। घूमने जानेके समय अर्थात् सात बजे वापूजीने मेरा बुखार देखा। १०३ डिग्री था। मलेरिया लगता है। मैं वापूजीके साथ घूमने नहीं गअी। अिसके बजाय धीरे-धीरे वापूजीकी मालिशकी तैयारी की। साग और खाखरे बनाये।

मुझे बुखार होनेके कारण मालिश निर्मलदाने की और दूसरा सब काम मैंने किया। वापूजीका काम तबीयत खराब होनेके कारण छूट जाता है, तब खूब आराम मालूम होता है। वापूजीने चिट्ठीमें लिखा :

> "तुम जितना ज्यादा आराम लोगी अुतनी जल्दी अच्छी होगी। रामनाम हृदयगत करनेका प्रयत्न करो। अिससे मेरा कोअी काम नहीं छूटेगा। आरामको भी तुम मेरे कामका अेक भाग ही समझो। तुमने जब अपना सर्वस्व मुझे अर्पण कर दिया है, तो मैं कहूं तब तक तुम्हें सोये ही रहना चाहिये। अिसके बजाय तुम काम करती हो, अिसलिअे तुम्हें गीताका अर्थ समझाता हूं। तुम रोज प्रार्थनामें भी 'अीशावास्य' का श्लोक बोलती हो। लेकिन अुसके अनुसार आचरण नहीं करतीं। अितने बुखारमें तुम खाखरे बनाओ, मेरा दूसरा काम करो, तो शरीर कैसे सहन कर सकता है? यह शरीर तुम्हारा नहीं, अीश्वरका है। जिस प्रकार किरायेके मकानमें रहकर भी अुसे अपने स्वार्थके खातिर साफ-सुथरा रखना चाहिये, अुसी प्रकार शरीरको भी रखना चाहिये। अिसलिअे शरीरसे ज्यादा काम लेकर अुसे बिगाड़ना भी अीश्वरका अपराध है।"

वापूजीके पास मैं जब खानेकी थाली ले गयी, तब अुन्होंने अूपरकी बातें लिखीं और मेरा कान खींचा। मेरी आंखोंमें से पानीकी धारा बह चली। अुन्होंने अपनी गादीके पास ही मुझे सुलाया। दायीं ओर मेरे पेटमें दर्द रहता है, अिसलिअे वापूजीको डर है कि कहीं अेपेंडिसाअिटिस न हो।

मिलने आनेवालोंमें मुख्य तो सी० आर० दासका कुटुम्ब था। वैसे शहरके सार्वजनिक कार्यकर्ता भाअी-बहन काफी संख्यामें आते-जाते रहे। नाम मैं किसीके दर्ज नहीं कर सकी। कलकत्तेसे सोदपुर वापूजीके दर्शनोंके लिअे बहुत आदमी आते हैं। सबको बाहर बिठाते हैं और हजारोंकी संख्या हो जाती है, तब वापूजीसे कहा जाता है। वे बाहर जाकर लोगोंसे मिल आते हैं। आज वापूजी अिस प्रकार चार बार बाहर गये।

वैसे तो मौन होनेके कारण लगभग सब कुछ शान्त ही है। बापूजीने प्रार्थना-प्रवचनमें लिखित संदेश दिया :

"आज जो गुंडाराज हम पर तेजीसे छाता जा रहा है, अुसके विरुद्ध क्या किया जाय, अिसीका मन्थन रात-दिन मेरे मनमें चल रहा है।

"हिन्दू यह मान लेनेकी गफलतमें न रहें कि हमारी जातिका अिसमें भला है। अिसी प्रकार मुसलमान कौम भी अैसा न मान बैठे। मैं सच्चा हिन्दू होनेका दावा करता हूं और अुस दावेके आधार पर सबसे विनयपूर्वक यह कहता हूं। हम शेखचिल्ली जैसे विचार बना लेंगे, तो जैसे शेखचिल्लीके घीका घड़ा फूटकर सारा घी बिखर गया, अुसी प्रकार हमारी सारी मेहनत पानीमें चली जायगी। हमें अितना तो अच्छी तरह समझ ही लेना होगा कि गुंडागिरी या गुंडाराज विदेशी हुकूमतका स्थान कभी नहीं लेने पायेगा।

"प्रार्थनामें जो हस्तक्षेप होता है, अुसे आप छोटी-मोटी बात न समझिये। असहिष्णुता भी अेक प्रकारकी गुंडागिरी ही है। हिन्दू या मुसलमान, सभी राजनीतिक कार्यकर्ता अपने दिलोंको खूब टटोलें और सोच-विचार कर ही कदम अुठायें। भावी पीढ़ी हमारे बारेमें यह न कहे कि पूर्ण स्वराज्य मिलनेसे पहले ही हम अुसे गंवा देनेकी व्यवस्था करने लगे थे!

"शिक्षाशास्त्रियों और भारतके प्रत्येक छोटे-बड़े शिक्षकसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि अुनके हाथमें अेक अच्छीसे अच्छी सेवा विद्यमान है। अब थोड़े ही समयमें अुन पर अंग्रेज अधिकारी पहरा लगानेको नहीं रहेगा। अुन सबका धर्म हो जाता है कि वे अपनी जानको खतरेमें डालकर भी बच्चोंको सच्ची शिक्षा दें। क्योंकि अुन पर बालकोंको शिक्षा देने अथवा अुनका निर्माण करनेकी अेक बड़ी जिम्मेदारी है। निर्माताका जो गौरवपूर्ण अधिकार अुनके पास है, अुस अधिकारको सुशोभित करनेका अब अुन्हें अवसर मिला है। क्योंकि अब विदेशी हुकूमतके हुक्मके मुताबिक नहीं चलना है। मैं जानता हूं कि शिक्षक या मास्टरका धंधा कुछ लोगोंको तुच्छ या निकम्मा लगता है, जब कि 'शिक्षक' ही अेक अैसा व्यक्ति है जो यह निश्चय कर सकता है कि भारतकी शोभा और शान कैसे बढ़ाअी जाय। हममें यह कहावत है कि बचपनमें जो संस्कार पड़ जाते हैं, वे ही हमेशाके लिअे कायम रहते हैं। अिसलिअे हाअीस्कूल या कॉलेजके शिक्षकोंके बजाय मैं तो प्राथमिक पाठशालाओंके शिक्षकोंको देशके बालकोंका निर्माण करनेका

अमूल्य पुण्य और सेवाकार्य मिलनेके लिअे बधाअी दूंगा। कॉलेजके प्रोफेसरोंको ५०० रुपये मासिक वेतन मिलता है, हाअीस्कूलके मास्टरोंको २०० रु० माहवार मिलते हैं, और बेचारे प्राथमिक पाठशालाके मास्टरको मुश्किलसे २५ रु० मिलते होंगे। मेरे बचपनमें तो १० रु० मिलनेकी बात मुझे अभी तक याद है। परन्तु मेरी चले तो मैं अिस तरीकेको अिसी समय बदल डालूं। क्योंकि जड़ मजबूत करनेकी बड़ी जरूरत है। और अिसीमें मेहनत करनी होती है। अिसलिअे प्राथमिक पाठशालाके शिक्षकको मैं ५०० रुपये दूंगा। अिस बातसे आप सबको हंसी आयेगी कि यह बूढ़ा पागल हो गया है। मेरी बात कोअी मानेगा नहीं। फिर भी मेरे मनमें प्राथमिक पाठशालाके शिक्षककी ५०० रु० की कीमत है, भले यह कीमत मैं दे न सकूं। अिसलिअे मैं बार बार कहता हूं कि समाज-व्यवस्थाकी जिम्मेदारीको सही दिशा देनेकी बातों पर आप जाग्रत रह कर विचार कीजिये और भावी सन्तानका निर्माण कीजिये। केवल पाठशालामें ११ से ५ तक नौकरी करने और बालकोंको पाठ रटवानेका जमाना अब चला गया है। अब पुस्तकोंके पाठ रटवानेकी बात भूलकर आप विद्यार्थियोंको जीवनके पाठ रटवाअिये। और अिस प्रकार देशके अुत्थानमें अपना महत्त्वपूर्ण भाग अदा कीजिये।"

रातको आठ बजे सुहरावर्दी साहब आये। अुनके साथ अब्दुलहकीम साहब, अर्थमंत्री मुहम्मदअली साहब, और प्रान्तीय लीगके मंत्री अब्दुल-हाशिम साहब आये।

अिनके साथ बापूजीके वार्तालापके समय मैं अपनी फूफी वगैराके साथ बैठी थी जो मिलने आअी थीं। वे प्रार्थनाके समयसे आअी हुअी थीं, परन्तु आठ बजने तक मैं अुनके पास बैठ नहीं सकी थी।

यह मंडली ९-३० के बाद अुठी। पैर धोते समय बापूजीने अुस वार्तालापका सार सुनाया :

"ये लोग तो यही बात कहते हैं कि हमारी निगाहमें हिन्दू और मुसलमान बराबर ही हैं। हमारी सरकारमें किसी प्रकारका भेदभाव नहीं है। परन्तु मैंने बताया कि जिन्ना साहब जो कहते हैं, अुसे करके नहीं दिखाते। वे लीग जैसी बड़ी संस्थाके अध्यक्ष हैं, अिसलिअे चाहें तो गुंडा-शाहीको मिटा सकते हैं। मैं तो किसीका भी प्रतिनिधि नहीं हूं। मेरे हाथमें कोअी सत्ता नहीं है। हां, अेक बात है कि हिन्दू मुझे अपना सेवक समझते

हैं, मुझमें विश्वास रखते हैं। अिसीलिअे बिहारके हिन्दू कितने शान्त हो गये हैं? आज भी वे लोग कितना प्रायश्चित्त कर रहे हैं? तो अिस न्यायसे भी जिन्ना साहब और आप सब जो चाहें सो कर सकते हैं। और मुझे कहना चाहिये कि आपने अिस समय गुंडागिरीका पोषण करनेकी नीति अपनायी है; मैं आप पर यह अिलजाम लगाता हूं। आपके द्वारा मैं जिन्ना साहबको अपने दिलकी अिस दर्दभरी कहानीका संदेश भेजता हूं, क्योंकि मैं अपने-आपको अुनका वफादार मित्र मानता हूं। आप लोग जो कहें अुसका पालन करके बतायें, तो अुसमें अिस्लामकी जय है, अिस्लामकी रक्षा है और सबका भला है। परन्तु अब तो अैसा लगता है कि भगवान वह दिन दिखायेगा तभी अैसा होगा। मुझे विश्वास है कि यदि मंत्रि-मंडल मेरे कहे अनुसार चले, तो जिन्ना साहबको अपनी कही हुअी बातोंका पालन करना ही पड़ेगा। मैं सोचता हूं कि जिन्ना साहब और अुनके साथी जब अैसा झूठा प्रचार कर रहे हैं, तो हमारे देशकी नैया कहां जाकर खड़ी होगी? अंग्रेजोंके समयमें असहयोगकी लड़ाअियोंमें हम जेल जाते और लाठियां खाते थे। अनेक नौजवानोंने गोलियां भी खाअीं। आजके मुकाबले मेरे खयालसे वह ज्यादा आसान था। हिन्दू-मुसलमानोंकी सेवा करना तो मैंने बचपनसे शुरू कर दिया था। मैं अपना पेट भरनेके लिअे अेक मुसलमान व्यापारीके यहां मुन्शीके तौर पर ही दक्षिण अफ्रीका गया था। अुन्होंने मेरे बालबच्चोंका, मेरे कुटुम्बका ध्यान रखा था। और दक्षिण अफ्रीकाके अनजान प्रदेशमें मैं अेक कट्टर मुसलमान परिवारके साथ ही गया था। अुन मुसलमानोंका मैं दुश्मन कैसे बन सकता हूं? जिन्ना साहब मानते हैं कि मैं अुनका बड़ा दुश्मन हूं, परन्तु मेरी आत्मा अिसे कैसे स्वीकार करे? दुश्मनीका कोअी सबूत तो वे मुझे बतायें। परन्तु हम सब अेक ही खुदाके बन्दे हैं, अिस सूत्रको जीवनमें ओत-प्रोत कर लें तो ही हम चैनसे रह सकते हैं। मुझे आपको जो कड़वे शब्द कहने पड़ते हैं, अुनके कारण आप मुझ पर नाराज होंगे, गुस्सा करेंगे, कदाचित् मुझे गालियां भी देंगे। परन्तु अुसका मुझ पर कुछ भी असर नहीं होगा। क्योंकि मैं मानता हूं कि मेरा काम पूरा होने पर भगवान मुझे अपने पास बुला लेगा। यह जगत भगवानकी अिच्छाके अधीन है। मैंने अनेक बार अपने जीवनमें यह अनुभव किया है। अिसलिअे अिसकी मुझे चिन्ता नहीं है। मैं अितना ही कह सकता हूं कि मुसलमान यह मानते

हों कि हिन्दुओंको मारपीट कर सब कुछ ले सकते हैं, तो अिस तरह वे कुछ भी नहीं ले सकेंगे। परन्तु शान्तिपूर्वक लेना चाहेंगे तो सारा हिन्दुस्तान ले लेंगे

"खिलाफतके जमानेमें देशमें अद्वितीय जागृति आ गयी थी। और आज मुसलमानोंमें लीगवालोंने अैसी घृणा पैदा कर दी है कि वे हिन्दुओंके साथ बात करनेमें पाप समझते हैं। परन्तु मैं केवल हिन्दुओं और मुसलमानोंसे ही नहीं अंग्रेजों और मानव-मात्रसे कहता हूं कि हम सब अेक ही तरहसे पैदा हुअे हैं औश्वरने सबको जीनेके लिअे समान शक्ति दी है। तो हमें अेक-दूसरेके दुश्मन नहीं बनना चाहिये। और मैं आपसे यह भी कह देता हूं कि अंग्रेज आपको भड़काते हों, तो भी आप सावधान रहिये। ये लोग हमें अिस तरह लड़ा कर अगर अपनी हुकूमत जमानेके लिअे प्रयत्नशील हों तो यह आकाश कुसुमकी-सी बात है। और कोअी अैसा विचार भी करता हो तो वह निरी बेवकूफी है। अिस मण्डलीको मैंने यह भी कहा कि जिन्ना साहब कहते हैं कि पाकिस्तान दे दो तो सब जगह अमन-चैन हो जायगा। परन्तु आज जहां भी लीगकी सरकार है, वहां क्या हाल हो रहा है? हम अपनी ही नजरके सामने अिस शहरमें देखें तो क्या हो रहा है? सच्चा पाकिस्तान क्या है यह तो कोअी नहीं जानता। मैं कुरानशरीफका विद्यार्थी हूं। अनेक विद्वान मुसलमानोंके सम्पर्कमें आया हूं। किसीने यह नहीं कहा कि अिस्लाम धर्ममें यह कहा गया है कि बेगुनाहोंको मारा जाय, स्त्रियोंकी लाज लूटी जाय और हत्या की जाय, सुखी परिवारोंको तंग और परेशान किया जाय तथा बेघरबार कर दिया जाय, रातको घरोंमें घुसकर लोगोंका माल-असबाब लूट लिया जाय और खूनकी नदियां बहाअी जायं।"

बापूजी अन्तमें बोले, "रोज तो सुहरावर्दी साहब खुद ही अितना बोलते हैं कि मुझे बोलनेका समय ही नहीं रहता। बड़े चतुर आदमी हैं। वे जानते हैं कि मैं कुछ कहे बिना नहीं रहूंगा, अिसलिअे रोज मेरे पास अिधर-अुधरकी बातें करके और मुझे कुछ कहना हो तो मेरी बातको काट कर भी घंटा भर निकाल देते हैं। आज मैंने पहले ही कह दिया कि आज आपको चुप रहना है। मुझे आपसे अपने दिलकी बातें करनी हैं। अिसलिअे मैंने खूब बातें सुनाअीं।"

१०॥ के बाद बापूजी बिस्तर पर लेटे। मेरी फूफीजी बेचारी ५ बजेसे आअी हुअी थीं, तो भी बापूजीको प्रणाम करने न जा सकीं। मैंने बापूजीसे

वात कही तो अुनके कहनेसे वे रातको रुक गअीं। आज रातको वापूजीके सिरमें तेल अुन्हींने मला। मैंने पैर दवाये। आज देर हो जानेसे वापूजीकी वाल-मंडलीके वालक घवरा कर अेकके वाद अेक सोने चले गये। मदालसावहन भी यहीं हैं। अुनका पुत्र छोटा-सा भरत भी अूवकर सो गया। वापूजी अुसे रोज चिढ़ाते हैं। भरत (प्रो० श्रीमन्नारायण अग्रवालका पुत्र) की अटक 'अग्रवाल' है। वापूजी अुसे 'पीछेवाल' कहकर विनोद करते है। वह वापूजीके साथ खेलता है। परन्तु आज वेचारा सुहरावर्दी साहबकी मण्डलीके जल्दी न अुठनेके कारण सो गया। शामके वाद मेरा वुखार अुतर गया। दिनकी डायरी भी लगभग लिख ली। अिस मंडलीके साथ हुअी वातें भी लिखीं। अभी तक वापूजी मेरी फूफीजीके साथ वातें कर रहे हैं। ११-१५ वजे हैं। मैं भी सव काम पूरा करके सोने जा रही हूं।

खादी-प्रतिष्ठान, सोदपुर (कलकत्ता),
१३–५–'४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद वापूजीने मेरी फूफीजीके साथ कुटुम्वकी वातें कीं और चिन्तापूर्वक सवकी खवर पूछी। रातको खास वातें नहीं कर सके। मेरे वारेमें भी थोड़ी-सी वातें कीं। फूफीजी बापूजीसे कहने लगीं: "मुझे मनुसे अीर्ष्या होती है।"

वापूजी वोले: "वात सही है। मेरे पास वहुतसी लड़कियां आ चुकी हैं। वहुत लड़कियोंको मैंने पाला है। परन्तु अिस लड़कीको मैं जो दे रहा हूं, वह अितनी छोटी अुम्रकी किसी लड़कीने मुझसे पाया हो अैसा याद नहीं आता है। और यह भी अितनी हिम्मत करके मेरे साथ नोआखालीमें रही। मेरा खयाल था कि यह मेरे यज्ञमें टिक नहीं सकती। कअी वार मैंने अिसकी कड़ीसे कड़ी परीक्षा की है। क्योंकि मैंने अिसकी मां होनेका दावा किया है और अिसने मुझे मांकी तरह माना है। आगाखां महलमें तेरह-चौदह वर्षकी छोटी अुम्रमें जेलमें आकर अुसने वाकी जो सेवा की, अुसे देखकर मेरी अिच्छा हुअी कि अिस लड़कीको शिक्षा दे सकूं तो दूं। मगर मनुष्यकी सभी अिच्छाअें भगवान पूरी नहीं करता। वा गअी और मैं वीमार पड़ा। मुझे सरकारने छोड़ दिया। परिस्थितिवश यह लड़की भी मुझसे अलग हो गअी। अिसका यही खयाल था कि वापूने मेरे साथ अन्याय किया है। अिसकी वात अव मुझे सच्ची लगती है। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि यदि मैंने

अिसे नोआखाली न वुलाया होता और कसौटी पर अितना कसा न होता, तो मैं अिसे पहचान न पाता। और मुझ पर अिसका अुलाहना शायद हमेशाके लिअे रह जाता, क्योंकि मुझे पता नहीं कि मैं अिस दावानलसे कव निकलूंगा। अव तो जव तक मैं न निकलूं, तव तक मनुड़ी भी नहीं निकल सकती। यज्ञमें होमनेके वाद अिसका मनोवल मजवूत करनेके लिअे मैंने पहलेसे ही अिसे कह दिया है कि तुम अपने कुटुम्वियोंसे तभी मिल सकोगी जव या तो मैं मरूं या कुछ करूं। तव तक तुम्हारे पिता या वहनोंसे खास तौर पर न मिलने जा पाओगी और न अुन्हें वुला सकोगी। (मेरी फूफीजीको संवोधन करके) तुम तो अपने कामके लिअे अचानक ही आ गअीं अिसलिअे मिल सकी हो। मनुके वारेमें अितनी वात तुम्हारे साथ कर सकूं, अिसके लिअे तुम्हें यहां रातको रहनेकी मैंने अनुमति दी। वह मेरे काममें मस्त है। परन्तु मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि मैं शायद अुससे वूतेसे वाहर काम लेता हूं और अुसकी लापरवाही अभी गयी नहीं है। अिसलिअे समय समय पर अुसे वुखार आ जाता है। आज ही १०३ डिग्री वुखार था, फिर भी मेरा लगभग सारा काम अुसने किया। तुम अुसकी वुआ हो। अिसलिअे तुम्हारी सीख माने तो थोड़ी सीख तुम अुसे दो।"

फूफीजी वोलीं: "वापू, आप अुसकी कितनी अधिक संभाल रखते हैं! अुसकी मां भी जिन्दा होती तो अितनी संभाल रखती या नहीं, अिसमें मुझे शंका है। यह आपके पास है, अिससे हम सव कुटुम्वियोंको यह सोचकर आश्वासन मिलता है कि हमारी लड़की वापूकी सेवामें है, यह हमारा सौभाग्य है।"

(मेरी फूफीजीकी पुत्री कलकत्तेमें रहती है। अिसलिअे वे निजी कामसे कलकत्ते आअी थीं।)

वापूजीको समाजकी गंदगीकी समस्या भी हल करनी थी। वापूजी मानते थे कि "समाज आज अेक प्रकारकी गंदगीमें फंसा हुआ है। अुसे अूंचा अुठाना हो तो पुरुषोंको अपनेमें मातृ-हृदयका विकास करना पड़ेगा। परन्तु वे कभी 'परोपदेशे पांडित्यम्' में विश्वास नहीं रखते थे। वे अपने विचारोंको स्वयं आचरणमें लानेके वाद ही दूसरोंको अुपदेश करते थे। अुन्होंने मुझे अिस तरह तालीम दी जैसी सगी मां भी नहीं देती।(अिस वात्सल्यकी साक्षी देनेवाले अुदाहरणोंका शब्दोंमें वर्णन करना मेरे लिअे असंभव है। वापूजी मातृस्नेहकी पराकाष्ठाको पहुंच गये थे।)

अिस प्रकार फूफीजीके साथ बातें करनेमें सुबहका समय गया। बापूजीने सुहरावर्दी साहबको अेक पत्र लिखा था। अुस पर हस्ताक्षर किये। वह पत्र सुहरावर्दी साहबको हाथोंहाथ देनेके लिअे निर्मलदा अेरोड्रोम जा रहे थे। अिसलिअे फूफीजी भी अुनके साथ घर गयीं।

हमें कल शायद यहांसे पटना जाना होगा। बापूजीका बाकीका सारा कार्यक्रम नियमानुसार चला। आज मुझे बुखार नहीं था और निर्मलदा डाक देने गये थे, अिसलिअे बापूजीकी मालिश नित्यकी भांति मैंने ही की। स्नानमें बापूजी दस मिनट सो गये। मैं हाथ-पैरमें तेल मल रही थी, अुस बीच बापूजी आंखें बन्द करके गरम पानीके टबमें लेटे थे। दो ही मिनटमें अुनके नथुनोंकी आवाज सुनाअी दी। ठीक दस मिनटमें अुठे। बापूजीका नींद पर अैसा अद्भूत काबू है! यहां बहुत श्रम होता है। मानसिक और शारीरिक दोनों तरहकी थकावट मालूम होती है, क्योंकि दो दो चार चार दिनमें सफर करना पड़ता है। काम और मुलाकातें भी अुतनी ही रहती हैं।

बापूजी जागे तो बोले: "देखो, दस मिनटमें मैं ताजा हो गया। और जब तक अीश्वर सोनेकी यह शक्ति मुझे देगा तब तक मेरी खैरियत है। जिस दिन सोनेकी यह शक्ति क्षीण हो जायगी, अुस दिन समझ लेना कि मेरी अना-सक्ति कम हो गअी है और अब मेरा पतन होगा। यह मैं तुम्हें कह रखता हूं, क्योंकि तुमने मेरे साथ अन्त तक रहनेका वचन दिया है। बाने भी जेलमें जाते समय मेरे हाथके सूतकी साड़ी ओढ़ानेकी सिफारिश तुमसे ही की थी न? तदनुसार मैं भी जब जब अैसा कुछ कहूं, तब तब याद रखकर तुम नोट कर लेना, क्योंकि पूर्ण स्थितप्रज्ञ और पूर्ण अनासक्त होनेकी स्थितिमें पहुं-चनेकी मेरी अिच्छा है — मेरा प्रयत्न है। अिस प्रयत्नकी सफलता तो मेरी मृत्यु पर ही निर्भर है। तब तक मनुष्यके लिअे कुछ भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि मनुष्य भले बूढ़ा हो जाय, परन्तु अुसका मन कभी बूढ़ा नहीं होता। अिसलिअे आज मैं घोषणा कर दूं कि मैं पूर्ण स्थितप्रज्ञ और अनासक्त हूं, तो मेरे जैसा मूर्ख कोअी नहीं। अुलटा मैं अहंकारी माना जाअूंगा। परन्तु अंत समय रामजीका नाम रटनेकी अीश्वर सुझाये, तो समझ लेना कि मैं अपने प्रयत्नोंमें सफल हुआ हूं। और जैसे तुम अिस यज्ञकी साक्षी हो, वैसे ही मेरी यह अिच्छा भी है कि तुम पहले न जाकर अिसमें भी मेरी साक्षी रहो। अिस यज्ञमें अनेक व्यक्तिगत और वर्षों पुराने

मित्रोंके और मेरे विचारोंमें फर्क पड़ जाने पर भी मैं अपने कार्यमें, अपने विचारोंमें अधिक दृढ़ता अनुभव करता हूं, अिसलिअे मेरा मन खूब प्रसन्नता और संतोष अनुभव करता है।"

वापूजीने वहुत दिन वाद आज अिस तरह बातें कीं। भोजन, मिट्टी, कताअी वगैराका क्रम नियमानुसार रहा।

चार वजे स्थानीय कार्यकर्ताओंके साथ हुअे वार्तालापमें वापूजीने कहा :

"अब स्वतंत्रता तो लगभग आ ही गअी है, परन्तु वह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता है। अंग्रेज भारतसे चले जायंगे तो हमारी सुख-सुविधाअें वढ़ जायंगी और अिसलिअे रचनात्मक कार्यकी जरूरत नहीं रहेगी, अैसा कोअी न मान वैठे। परन्तु आजकल मैं जो वातावरण देख रहा हूं, अुससे मालूम होता है कि स्वतंत्रता आनेके वाद अेक दशक तक तो हमारी दशा ज्यादा खराव होनेवाली है। राजनीतिक स्वतंत्रताके आनेसे वे अंकुश हट जायंगे जो हम पर थे और हम सोचा हुआ काम पूरा करके दिखा सकेंगे। स्वतंत्रता मिलनेके वाद ही असली परिश्रम करना होगा। गरीवी और वेकारीका जब तक भारतसे नाश नहीं होगा, तब तक मैं नहीं मानूंगा कि स्वतंत्रता मिल गयी है। हीरा, मोती, जवाहरात या रुपया कोअी सच्ची सम्पत्ति नहीं है। सच्ची सम्पत्ति तो यही है कि प्रजाके अेक-अेक वच्चेको खाना, कपड़ा, आरोग्य और निवासकी सुविधायें पूरी तरह मिलें। अेक मनुष्यको जितना चाहिये अुतना आसानीसे मिले, तभी भारत समृद्ध और स्वतंत्र देश कहा जा सकता है। परन्तु आज तो अेक तरफ अैश-आरामसे रहनेवाले लोग हैं और दूसरी ओर लोगोंके पास लाज ढंकनेको पूरे कपड़े नहीं हैं, अुनके पेटमें गहरा खड्डा है। मनुष्य आज कामके बिना वेकार वैठे हैं। प्रत्येक मनुष्यको अपना विकास करनेका पूरा अवसर तो मिलना ही चाहिये। और यह अवसर तभी मिलेगा जब रचनात्मक कार्यकर्ताओंमें जागृति आयेगी। देशमें राजनीतिज्ञ मनुष्योंकी जरूरत तो है। परन्तु आज जब देशका अुत्कर्ष करनेकी साधना करनी है तब सच्चे रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी ज्यादा जरूरत है। मेरा विश्वास है कि लोग आज मशीनरीकी तरफ मुड़े हैं, लेकिन अिसमें वे धोखा खायेंगे। सबको, भले थककर ही सही, घर घर चरखा चलाना ही पड़ेगा, अपने हर काममें स्वावलंवी वनना होगा। लोग अपनी समझसे नहीं वनेंगे, तो समय और परिस्थितियां जरूर अुन्हें काम

करनेवाला बनायेंगी। परन्तु आज स्वतंत्रताका जिस प्रकार अपक्रम हो रहा है, अुसे देख कर घबराहट होती है और कहीं प्रकाश दिखाओ नहीं देता। क्योंकि जब अंग्रेज सत्ता सौंपनेकी तैयारी कर रहे हैं, तब भारतमें जो अनेक कौमें हैं वे सब चाहती हैं कि हम सत्ता लें। परन्तु यदि हम अपना कर्तव्य पालन नहीं करेंगे तो प्रजाको हम यह कहनेका मौका देंगे कि अिस आजादीसे तो गुलामी अच्छी थी। निर्भयता और निडरता रचनात्मक कार्यकर्ताओंमें होगी, तो अुसका असर अुनके काम पर पड़ेगा। और कामके जरिये ये दोनों गुण हवामें फैलेंगे। जनता अैसी स्वास्थ्यप्रद हवामें सांस लेगी तो स्वाभाविक रूपमें ही स्वस्थ बनेगी। अिसलिअे प्रत्येक रचनात्मक कार्यकर्ताके लिअे अब कमर कसकर काम करनेका समय आ गया है। वह अिस समयका सदुपयोग कर ले और भगवानने जो मनुष्य-अवतार दिया है अुसे सार्थक बना ले।"

सतीशबाबूकी तबीयत खराब होनेकी खबर आने पर चारुदा, अजित-भाओी तथा नरेनभाओीको बापूजीने काजीरखील (नोआखाली) भेजा। मां* यहीं हैं। बापूजी अुनके यहां मेहमान हैं अिसलिअे वे नहीं गओीं। बापूजीने कहा: "हेमप्रभादेवी और सतीशबाबू दोनों अपना कर्तव्य जरा भी चूकने-वाले नहीं। मैं यहां हूं अिसलिअे अपने पतिकी बीमारीकी खबर आने पर भी वे जरा नहीं घबराओीं। स्वयं ही जानेसे अिनकार कर दिया। अुन्होंने कहा: 'चारुबाबू जो अुनके लड़केके समान हैं; वे जायंगे और मैं यहीं रहूंगी। यही अुन्हें (सतीशबाबूको) अच्छा लगेगा। आप यहां रहें और मैं अुनके पास जाअूं तो वे ज्यादा दुखी होंगे।'"

बाहर दर्शनार्थी अेक अेक घंटेमें अुमड़ आते हैं, अिसलिअे बापूजीको बार-बार बाहर जाना पड़ता है।

शांतिकुमारभाओी (शांतिकुमारभाओी न० मोरारजी) का आज जन्म-दिवस होनेके कारण अुन्होंने बापूजीको तार द्वारा प्रणाम भेजे। बापूजीने अुन्हें तुरन्त आशीर्वादका कार्ड लिखा।

---

* श्री सतीशबाबूकी पत्नी श्री हेमप्रभादेवी।

प्रार्थनामें भी आज बेशुमार भीड़ थी। प्रार्थना-प्रवचनमें आज बापूजीने दो प्रश्नोंके अुत्तर दिये :

प्रश्न — हिन्दुओं या मुसलमानोंको खुद अपनेको अथवा अपनी संस्कृतिको बचाना हो तो वे क्या करें ?

बापूजी — आपके मनमें यह मान्यता हो कि कोअी दूसरे लोग हमारी संस्कृतिकी रक्षा करेंगे, तो आप बहुत बड़ी भूलमें हैं। हमें स्वयं ही अपने सिपाही बनकर अुसकी रक्षा करनी है। प्रत्येक मनुष्यको, जिसने जन्म लिया है, मृत्युके अधीन तो होना ही है। फिर वह राजा हो या रंक, डॉक्टर हो या वैद्य। वह भी अवश्य मरता है। तो फिर मरनेका डर क्यों रखा जाय ? स्वतंत्रता और संस्कृतिको बचानेके लिअे निर्भयता पैदा करनेकी सबसे पहली जरूरत है। हमारी संस्कृतिका नाश हमारी बेवफाअी और कायरताके द्वारा हमीं करेंगे। बंगालकी संस्कृति अेक हो, अैसा अगर बंगालियोंको लगता है, तो अुसकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी भी बंगालके लोगोंकी ही है।

हमने पंडित नेहरूको अपना प्रधान मंत्री बनाया है। परन्तु सच पूछें तो अुन्हें आधार देनेवाले हम ही हैं। हम अुनके हाथ-पैर न बनें, तो अुनकी शक्तिका लाभ नहीं अुठा सकेंगे। भारतका सौभाग्य है कि पंडित नेहरू जैसा पुरुष हमारा प्रधान मंत्री है, जिस पर सारी दुनियाके लोग फिदा हैं। परन्तु अब तो लोकतंत्रका युग आनेवाला है। आप जिसे चाहें अुसे अपने देशकी बागडोर सौंप सकनेका अधिकार आपको प्राप्त हुआ है। अगर वे सीधे न चलें तो आप कान पकड़कर अुन्हें हटा सकते हैं। परन्तु प्रजा अज्ञान रहेगी तो कुछ भी नहीं होगा। (प्रजा यदि अितना समझ ले कि बुनियादकी मजबूती पर ही बड़ी अिमारतका आधार होता है, तो ही अुसका कल्याण होगा।)

मैं अपनेको किसीका प्रतिनिधि नहीं मानता। मैं केवल अपना ही प्रतिनिधि हूं। मैं सिर्फ अपने वर्षोंके अनुभवके आधार पर आपको सलाह दे रहा हूं। अुसे स्वीकार किया जाय या नहीं, यह आपके सोचनेकी बात है। अिसलिअे बंगालके टुकड़े करना या अुसे अेक रखना, यह आपके ही हाथकी बात है।

प्रार्थनासे आनेके बाद बापूजी थोड़ा घूमे। मुझे कमजोरी होनेके कारण मैं घूमने नहीं गयी। पिछले तीनेक दिनसे बापूजीने मुझे तरल पदार्थों पर ही रखा है।

बापूजीने घूमकर लौटने पर सिर्फ अंगूर ही लिये। रातको श्यामाप्रसाद मुकर्जी आये। १०–३० के बाद बापूजीका काम पूरा हुआ। श्यामबाबूने हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारोंका वर्णन किया और सुहरावर्दी साहबकी खूब शिकायतें कीं। बापूजीने अुन्हें सारी शिकायतें लिखकर देनेको कहा।

रातको निश्चय किया है कि कल शामको यहांसे पटना जाना है। अिस बार मदालसाबहन, भरत और श्रीमन्जी तथा संतोक काकी साथ चलेंगी। मगनलाल काका (मगनलाल गांधी) पटनामें गुजर गये थे, अिस लिअे संतोक काकीकी पटना चलनेकी अिच्छा है।

बापूजीने 'हरिजन' के लिअे लिखना शुरू किया है। अिस सप्ताह तो केवल प्रश्नोत्तर ही दिये हैं। परन्तु अब शायद नियमित रूपसे लेख देंगे। तब बापूजीका काम खूब बढ़ जायगा।

रातको अखबार सुने, बच्चोंके साथ बंगालीमें बातें कीं और नियमानुसार गरम पानीसे पैर धोये। यह सब करके बिस्तर पर लेटते लेटते ग्यारह बज गये। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और अुनके पैर दबाकर मैंने बापूजीका सूत अुतारा और अपनी डायरी पूरी की। अब बापूजीके लिअे दातुन कुचल कर तथा थोड़ा फुटकर काम करके सोने जाअूंगी। ११–३० हुअे हैं। बापूजी गहरी नींदमें सो गये हैं। आज वे बिस्तर पर लेटे तब कोअी खास तौर पर बातें करनेवाला नहीं था। मैं सिरमें तेल मलकर पैर दबा रही थी, तभी वे लगभग सो जानेकी तैयारीमें थे।

खादी-प्रतिष्ठान, सोदपुर आश्रम,
१४–५–'४७

रातको दो बजे मुझे अेकाअेक ठंड लगी, अुलटी भी हुअी। पेटमें दर्द भी बढ़ता गया। मैं धीरेसे अिस ढंगसे अपनी खाटसे अुठकर अुलटी करने गयी कि बापूजी जाग न पड़ें, परन्तु वापस लौटी तब बापूजी अपने बिस्तरमें मेरे बिस्तरकी तरफ देखनेके लिअे अुठ बैठे थे।

कहने लगे: "मैं अेकाअेक अुठ गया और तुम्हारी मच्छरदानी हवामें अुड़ती देखी, तो मुझे लगा कि अिस लड़कीने मच्छरदानी अच्छी तरह नहीं दबाअी, अिसलिअे बिस्तरके नीचे दबा दूं। परन्तु नजर डाली तो तुम अन्दर न थीं। मुझे लगा कि तुम भूलसे यह मानकर अुठ तो नहीं गअीं कि प्रार्थनाका समय हो गया?"

मुझे सख्त सर्दी लग रही थी। अिसका वापूजीको पता न चलने देनेके लिअे मैं वापूजीके साथ अुस समय वातें नहीं करना चाहती थी। परन्तु मेरी चली नहीं और वापूजी समझ गये। वोले: "क्यों, सर्दी लग रही है न?" तुरंत वापूजीने मुझे प्रेमसे सहलाया। मैं तो जो कुछ हाथमें आया अुसे ओढ़कर सो गअी। हमारे पास गद्दे-रजाअी तो कहांसे होते? खुद वापूजी ही अेक विलकुल रजाअी जैसी पतली गद्दी विछवाते हैं। मेरे पास विछानेको अेक शतरंजी और ओढ़नेको गरम शाल तथा चादर ही है। वड़े विस्तरे लेना रोजके मुसाफिरोंके वसका काम नहीं और वह भी जव वापूजीके साथ घूमना हो। अेक मोटी शतरंजी, जिसमें वापूजीका विस्तर वांधती हूं, ओढ़नेको ली। वापूजीके कमरेमें विछा हुआ छोटा-सा वैठनेका अूनी गलीचा भी ओढ़नेके अुपयोगमें ले लिया। रातके दो वजे और क्या हो सकता था?

प्रार्थनाके समय मेरा वुखार कम हो गया। ठंडके वजाय पसीना आ गया। वत्ती जलाकर मैं वापूजीको दातुन करानेके लिअे खड़ी हुअी। विछानेकी चीजोंको ओढ़नेके अुपयोगमें लेनेसे मेरे विस्तरका दृश्य वहुत अजीव हो गया था। अुसे देखकर वापूजीने मजाक किया: "मनुष्य कैसे नखरे करता है? यों ही अगर तुम्हें यह विछौना ओढ़नेको दिया होता, तो तुम कहतीं कि जिस पर सबके पैर पड़े हों वह चीज ओढ़ना अच्छा नहीं लगता। परतु रातको ठंड लगी तव तुम्हें ये विछानेकी चीजें कितनी मीठी लगी होंगी? खानेमें भी हम अैसा ही करते हैं। हम भूखके विना खाते हैं तो हमें नखरे सूझते हैं। यह खट्टा है, यह कड़वा है, यह नहीं भाता, वह नहीं भाता! परन्तु सच्ची भूख होने पर यदि सूखी रोटी मिले तो अुसे भी मनुष्य मिठाअी समझकर खा लेता है। अिससे हमें समझना चाहिये कि जव सच्ची आवश्यकता हो अुसी समय कोअी वस्तु काममें लेनी चाहिये। अिससे सवको कितना लाभ हो सकता है?"

दातुन करते समय वापूजीने ये वातें कहीं। नियमानुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके वाद मेरा गीतापाठ दस मिनट हुआ। वापूजीको गरम पानी और रस देकर मैं थोड़ी देर सो गअी। वापूजी भी आज लिखते-लिखते सो गये थे। साढ़े छह वजे अुठे। घूमने गये। अुस समय दूसरा कोअी न था। आज वहुत दिनोंमें मैं और वापूजी घूमते समय अकेले थे। वापूजी मेरे स्वास्थ्यकी खास तौर पर चिन्ता कर रहे थे। अिसलिअे टहलते समय अुसके सम्वन्धमें वातें कीं। आज कमजोरी ज्यादा लगनेसे दूध लेनेको कहा। आज शामको पटना जाना है। अिसलिअे तैयारी करनेकी वातें भी कीं। हम दस मिनट घूमे, अितनेमें

अेकके बाद अेक आदमी आने लगे। शुक्लाबहन और मदालसाबहन बापूजीकी लकड़ी बनीं और मैं मालिशकी तैयारी करने गअी। मालिशके समय डॉ० विधानबाबू आये। अुन्होंने बापूजीकी जांच की। अुन्हें बहुत थकान मालूम होती है और अुसके कारण कमजोरी भी है। हो सके तो अेक दो दिन मुलाकातें बन्द करके मौन लेने और आराम करनेकी डॉ० रायने बापूजीको सलाह दी।

बापूजी बोले, "चारों ओर आग जल रही हो, तब अिस प्रकार आराम करके जीनेकी अिच्छा नहीं होती।"

डॉ० रायने दलील की: "आपको अपने लिअे कहां आराम लेना है? जनताकी अधिक सेवा कर सकनेके लिअे आराम लेना क्या आपका धर्म नहीं हो जाता?"

बापूजी: "हां, यदि लोग मेरी कुछ भी सुनें और मैं लोगों तथा सत्ताधीशोंके लिअे किसी भी अुपयोगका होअूं तब तो जरूर अैसा करूं। परन्तु अब मुझे नहीं लगता कि मेरा कहीं भी कोअी अुपयोग है। कदाचित् मेरी बुद्धि मन्द हो गअी हो! फिर भी अिस संकटके काममें मैं आराम लेना पसन्द करनेके बजाय 'करना या मरना' ही पसन्द करूंगा। मेरी अिच्छा काम करते-करते और राम-रटन करते करते मरनेकी है। और मैं अनुभव करता हूं कि मेरी श्रद्धा अिस यज्ञमें अितनी दृढ़ होती जा रही है कि अीश्वर मेरी यह अिच्छा पूरी करेगा। अपने अनेक विचारोंमें मैं अकेला हूं। फिर भी गुरुदेवका 'अेकला चलो रे' भजन मुझे खूब बल दे रहा है। अिसलिअे मैं अकेलापन महसूस नहीं करता और अनेक मित्रोंके साथ दृढ़तासे भिड़नेका साहस अीश्वर मुझे दे रहा है। यही मेरे लिअे अीश्वर-दर्शन है, अीश्वरीय सहायता है। अीश्वर-दर्शनका अर्थ कोअी हाथ-पैरोंवाला या चित्रमें दिखाअी देनेवाला अनेक साजोंसे सजा हुआ पुरुष नहीं; परन्तु प्रत्येक क्षणमें हममें जाग्रत रहनेकी शक्ति आये और अुसके द्वारा हम सीधे रास्ते पर चलें, यही अीश्वरकी सहायता है — अीश्वरका साक्षात्कार है।"

फिर मेरे स्वास्थ्यकी परीक्षा करनेको डॉ० रायसे कहा और रातको बुखार चढ़ने वगैराका सारा हाल सुनाया। मुझे अिस यज्ञकी साक्षी कहकर बापूजी बोले, "यदि अिसके हृदयमें रामनाम अंकित हो जाय, तो अिसे बार-बार बुखार हरगिज न आये। परन्तु मुझमें भी अभी तक अैसी अनासक्ति शायद नहीं आअी होगी; नहीं तो यह लड़की चौबीसों घंटे मेरे साथ रहती है, भावनापूर्वक मेरी सेवा करती है, अिसे बीमार पड़ना ही नहीं चाहिये।

क्योंकि मैंने अिसे अिस 'यज्ञ' में भागीदार बनाया है। मेरे हृदयमें रामनाम अंकित हुआ हो, तो अुसका रोग चला ही जाना चाहिये।"

बापूजीने डॉ० राय जैसे बड़े डॉक्टरके साथ आध्यात्मिक बातें कीं। डॉक्टरने मुझे देखनेके बाद कहा, "मुझे अेपेंडिसाअिटिसकी शंका होती है। अगर तुम यहां मेरे पास रह जाओ तो अच्छी तरह जांच करके तुरन्त हमेशाके लिअे तबीयत ठीक कर दूं। क्योंकि पूरी परीक्षा किये बिना मुझे पता नहीं चलेगा। और यदि अेपेंडिसाअिटिस पक जायगा तो जैसे बापूजी परेशान हुअे थे वैसे तुम भी होगी।"

बापूजीने कहा, "मनु मान जाय तो आप रख लें।"

मैंने कहा, "मेरे डॉक्टर तो बापूजी ही हैं। अिसलिअे बापूजीसे अलग होकर अन्य किसीकी देखरेखमें रहना मैं पसंद नहीं करूंगी।"

बापूजीसे भी अुन्होंने बात की। बापूजीने कहा, "अब पटना जाकर देखेंगे।" यहांके डॉक्टरोंके दो मत हैं; प्राकृतिक चिकित्सक कुलरंजनबाबू कहते हैं कि अैसी कोअी बात नहीं है और विधानबाबूकी दूसरी ही राय है। अिसलिअे बापूजी विचारमें पड़ गये हैं।

मालिश-स्नानके बाद भोजन वगैरा नियमानुसार हुआ। बापूजीके पैर आज मदालसाबहनने मले।

१२–३० के बाद कॉलेजके आठ-दस विद्यार्थी भाअी-बहन आये। अुनके साथ बातें करते हुअे बापूजी बोले :

"विद्यार्थी ही देशके असली वारिस हैं। वे लोग अच्छे नागरिक बनेंगे तो ही अिस देशके लोगोंका अुद्धार होगा। अभी तक आपको दी जानेवाली शिक्षा अब बिलकुल निकम्मी है। अंग्रेजोंने जो शिक्षा जारी की अुसमें अुनका स्वार्थ था, क्योंकि अुन्हें आप पर राज्य करना था। अुन्होंने आपको अैसी शिक्षा देकर तैयार किया। जैसे किसी दफ्तरके क्लर्कोंको अपने साहबोंके मातहत रहना पड़ता है, वैसे अिस शिक्षा द्वारा हम अपने-आप अंग्रेजोंके गुलाम रहें, यह अुनकी अेक प्रकारकी राज्य करनेकी युक्ति थी। परन्तु यदि मेरी चले अथवा मैं अपने शब्द सबके कानों तक और हृदय तक पहुंचा सकूं, तो मैं कहूंगा कि भारतमें आजादी आनेके साथ ही शिक्षामें सबसे पहले जड़मूलसे परिवर्तन करो और नअी तालीमकी दृष्टिसे शिक्षा दो, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी स्वावलम्बी बने और

पढ़नेके बाद अुसके सामने यह प्रश्न न रहे कि अब मैं क्या करूंगा? आजकलकी शिक्षामें विद्यार्थियोंका पुस्तकों पर तो बेहद खर्च होता ही है, परन्तु अुससे भी ज्यादा होनेवाले कॉलेजके विद्यार्थीके रहन-सहनके खर्चका हिसाब तो आपने निकाला ही होगा!! अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया कि विद्यार्थीको कोट, पतलून, बूट, मोजे, पेन, घड़ी, सुगंधित तेल वगैरा नयेसे नये ढंगके चाहिये। यह अेक स्वाभाविक बात हो गयी है। परन्तु अब हिन्दुस्तानको स्वतंत्रता मिल गयी है, अिसलिअे भारतवासियोंका निर्माण राज्य जैसा चाहे कर सकता है; अब किसी तरहका अंकुश नहीं रहा। मैं सुझाअूंगा कि विद्यार्थी अक्षरज्ञान, भाषा, गणित, अितिहास, भूगोल आदि सारे विषय खेतीके द्वारा — श्रमके द्वारा सीख सकते हैं। विद्यार्थीके हाथोंमें फावड़ा-कुदाली देंगे तो अपने-आप अुसके कोट-पतलूनका खर्च बच जायगा, क्योंकि विद्यार्थी ये कपड़े पहनकर खोदनेका काम कर ही नहीं सकेगा। परन्तु सादी चड्डी और कुर्ता पहनकर खोदनेका काम वह आसानीसे कर सकता है। अिस प्रकार विद्यार्थीके रहन-सहनमें अपने-आप ही तबदीली आ जायगी। अिसी तरह किस तरहका बीज किस प्रकार बोया जाता है और अुसकी फसल कहां अच्छी होती है? कौनसी सदीमें और किस राज्य-शासनमें रुअी, अनाज, तिलहनकी अच्छी पैदावार होती थी? क्यों होती थी? कितनी मात्रामें होती थी? — वगैरा विषयोंमें प्रत्येक प्रकारका ज्ञान विद्यार्थियोंको मिल ही जाता है। यह तो मैंने आपको अेक सामान्य अुदाहरण दिया है। परन्तु यदि नअी तालीमकी दृष्टिसे शिक्षामें फेरबदल किया जाय, तो मुझे विश्वास है कि बारह वर्षके लड़के या लड़कीमें अपनी जरूरतका अन्न-वस्त्र अुत्पन्न करनेकी शक्ति आ जायगी। आज तो पच्चीस वर्षके विद्यार्थीमें भी, अुसके अेम० अे० की या कोअी भी बड़ी डिग्री प्राप्त करनेके बावजूद और मां-बापके हजारों रुपये बरबाद करनेके बावजूद, परिणाममें यही निराशा और हताशा दिखाअी देती है कि पढ़नेके बाद क्या किया जाय। और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी वह मृतवत् जीता है अैसा कहा जा सकता है। अुधर मेरी शिक्षामें कुदरतकी गोदमें पला हुआ बालक तंदुरुस्त होगा और आध्यात्मिक वातावरण मिलनेके कारण अुसके मानसिक स्वास्थ्यकी भी पूरी तरह रक्षा होगी।

"अलग-अलग राजनीतिक दलोंने विद्यार्थियोंका खूब अुपयोग किया है। यह अेक बड़ी भूल हुअी, अैसा मालूम होता है। भूतकालकी अिस भूलको अब सुधारना ही चाहिये। और स्वतंत्र प्रजाके बालकोंकी शिक्षा कैसी होनी

चाहिये, अिसका भी नये सिरेसे विचार करना चाहिये। विद्यार्थियोंको खुद भी अब विचार करना सीखना चाहिये। परन्तु अिसका अर्थ आप यह न करें कि हड़ताल करके शिक्षकों पर पत्थर फेंककर अपने विचार या अपनी मांगें पूरी की जायं। आपको संचालकोंको समझा-बुझाकर काम करना चाहिये।

"जैसा मैंने अभी कहा, पश्चिमी शिक्षाके बन्द होते ही अुसकी फैशन भी अपने-आप दूर हो जायगी। विद्यार्थी विद्याध्ययनको 'बेगार' न मानें और राष्ट्रके प्रति अेक कर्तव्य समझकर अुसमें सच्चा आनंद लेने लगें, तभी अुसे मैं सच्ची शिक्षा मानूंगा। विद्यार्थी-जीवनको पूर्वजोंने संन्यासी-जीवन जैसा बताया है सो सच है। परन्तु विद्यार्थियोंसे अैसी अपेक्षा रखनेके पहले मुझे कहना चाहिये कि स्वतंत्र भारतकी सरकारका पहले अैसा वातावरण तैयार कर देनेका कर्तव्य है। बालकके जन्म लेने पर अुसे समय पर दूध देना माताका कर्तव्य हो जाता है, और तभी अुसका शरीर बनता है, वह बड़ा होता है, तथा अुसका विकास होता जाता है। ठीक यही बात सरकार और विद्यार्थीके निर्माण पर लागू होती है।"

ये भाअी-बहन बापूजीके हस्ताक्षर लेने ही आये थे और अुन्होंने मुझे कहा था कि हम दो मिनटमें चले जायंगे। परन्तु बापूजीने अपनी आदतके अनुसार जो दो बहनें आअी थीं अुनसे पूछा : क्या पढ़ती हो, कहां पढ़ती हो? अिस प्रकार समाचार पूछते हुअे लगभग दस मिनट तक अुनसे अुपरोक्त बातें कीं। अन्तमें बापूजी बोले : "आप दो मिनटके लिअे आये थे, परन्तु मैंने ही आपको दस मिनट दे दिये। जब-जब मुझे विद्यार्थी मिलते हैं तब तब अुनसे मिलना और बातें करना मेरे शौकका विषय है, यद्यपि मैं अन्य अनेक प्रवृत्तियोंमें लगा रहनेके कारण यह शौक पूरा नहीं कर पाता। परन्तु कहिये, अिन हस्ताक्षरोंके बदलेमें मुझे आप सिर्फ पांच पांच रुपये ही देंगे? मैंने तो आपको बंगालीमें हस्ताक्षर कर दिये हैं। अिसलिअे आपको अैसा नहीं लगता कि अुसकी फीस अधिक देनी चाहिये।"

सब लोग खूब हंसे। विद्यार्थी कहने लगे : "बापूजी! आपने तो यह व्यापारियोंका ढंग समझाया!"

बापूजी बोले : "मैं दरिद्रनारायणका धंधा लेकर बैठा हूं। अिसलिअे दूसरा चाहे जो धन्धा करूं, लेकिन मेरा यह धन्धा सबका मध्यबिन्दु है। खैर

आप अधिक न दे सकें तो मेरे अेकताके काममें तो मदद दीजिये। विद्यार्थियोंके बीच आप किसी भी प्रकारका जातिभेद न रखें। आप दुखी और गरीबोंकी सहायता न कर सकें, तो कमसे कम सहृदयतासे अुनके प्रति सहानुभूति तो जरूर दिखाअिये। अितना प्रामाणिकतासे आप करेंगे तो मैं मान लूंगा कि आपने मुझे हस्ताक्षरकी बहुत कीमत दी है।"

दो लड़कियोंमें से अेकके हाथमें सोनेकी अंगूठी थी। वह अुसने तुरंत सबकी तरफसे निकालकर बापूजीके हाथमें दरिद्रनारायण-कोषके लिअे दे दी। और सबने बापूजीको प्रणाम किया। बापूजीने सबकी पीठ पर मीठी धपें लगाअीं। सब हंसते हंसते विदा हुअे।

जब अैसे दर्शनार्थी आते हैं, तब बापूजी अचानक अुनसे बातें करने लगते हैं। और साधारण बातोंसे यह जाननेको मिलता है कि किन विषयों पर बापूजीके क्या विचार हैं। आज अैसा ही हुआ। अच्छा हुआ कि मैं यहीं बैठी रही, वर्ना विद्यार्थियोंके साथ बापूजीने जो सुन्दर बातें कीं वे सुननेको न मिलतीं।

मैंने बापूजीसे कहा: "मैं दूसरे काममें रहती हूं तब आपसे अैसे कितने ही लोग मिलने आते हैं। अुनके साथ आप कितनी ही जानने लायक बातें करते होंगे। आज तो मुझे अैसा लगता है कि अिस तरह मैं कितना ही गंवा देती हूंगी।"

बापूजी: "मैं कुछ पहलेसे तो सोचता ही नहीं। बातें करते करते मेरे मनमें जो भरा होता है वह स्वाभाविक रूपमें ही बाहर आ जाता है। तुम्हें यह सब सुनने-लिखनेका शौक है, यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु सहज ही जितना मिल जाय अुससे तुम्हें संतोष रखना चाहिये। तुम शरीरकी रक्षा करना सीख लो तो अभी जो मिलता है अुससे अधिक मिल सकता है। और फिर तुम दूसरा काम रातको जागकर भी पूरा करो तो मुझे तुम पर दया न आये!"

मुझे तो डर लगा कि फिर बापूजी स्वास्थ्य पर लंबा व्याख्यान देंगे। आजकल वे मेरे साथको हर बातमें मेरे स्वास्थ्यकी बात ले आते हैं।

दोपहरको सारा सामान बांधा। अिस बार हमारी मंडली बड़ी होनेके कारण रास्तेके भोजनका बन्दोबस्त आश्रमके भोजनालयने ही किया। वर्ना मैं बापूजीके लिअे जो खाखरे बनाती हूं अुनसे थोड़े ज्यादा लेनेसे काम चल

जाता है। रास्तेमें लोग भी फल-फूल बहुत दे जाते हैं। कताअी, मिट्टीकी पट्टी वगैरा नियमानुसार चला। गरमी बेहद पड़ रही है। यहां पसीना खूब होता है, अिसलिअे ज्यादा घबराहट होती है। नौ बजेसे ही सब कुछ तपने लगता है। दिल्लीमें भी गरमी खूब पड़ती है, परन्तु वहां अैसा पसीना नहीं होता।

२॥ बजे बापूजी सुहरावर्दी साहब, क्षितीश बाबू और निर्मलदाके साथ कलकत्ता शहरमें जहां खून हुअे हैं और मकान जले हैं वहां देखने गये। सख्त गरमी होने और नकसीर छूटनेके कारण बापूजी मुझे नहीं ले गये। मुझे साथ न ले जानेसे क्षणभर तो बहुत बुरा लगा। परन्तु बादमें सामान पैक करने और बापूजीकी डायरीकी नकल करनेके काममें लग गयी।

बापूजी, क्षितीशबाबू और निर्मलदा तीन ही जन यहांसे गये हैं। बाकी सब लोग आश्रममें हैं। फिर भी आश्रम और यह कमरा बहुत सूना लगता है। बापूजी जहां जहां जाते हैं वहां कैसी रौनक लगती है, अिसका पता अुनकी गैर-मौजूदगीमें चलता है।

पांच बजे बापूजी लौटे। आते ही पूछा कि मैं कितनी देर सोअी। मुझे साथ नहीं ले गये थे, अिसलिअे हंसते-हंसते बोले: "क्यों, नाराज जान पड़ती हो!" मुझे भी हंसी आ गअी और मेरा अबोला दो मिनट भी नहीं रहा।

सख्त गरमीसे बापूजीका चेहरा और छाती लालसुर्ख हो गये थे। मुझसे कहने लगे: "देखो अितनी गरमी है! अिसमें तुम्हें ले जाकर तुम्हारी तबीयत और अधिक बिगाड़नेका पाप ही करता। फिर जयसुखलाल कहता कि मेरी लड़की लाअिये तो मैं क्या करता? तुम तो बालक हो। लेकिन मुझे कौन बालक समझेगा?"

मैंने कहा, "बापूजी, जिसकी छाती अिस तरह लाल हो जाय वह महान मनुष्योंमें गिना जाता है।"

बापूजी बोले: "यह बात है? मैं धूपमें घूम आया तो तुमने मुझे महानका पद दे दिया। मैं सचमुच भाग्यशाली हूं न? और लोग तो यह पद मुझे देंगे तब देंगे। अिसलिअे तुम्हें साथ न ले गया अिससे मुझे कितना लाभ हुआ, यह तो देखो! क्योंकि तुम्हें साथ ले गया होता तो धूपके प्रतापसे तुम भी लाल हो जातीं और महान मनुष्योंमें गिनी जातीं। और मुझे यह 'महान' का पद न मिलता!"

अिस प्रकार मेरे और बापूजीके बीच विनोदपूर्ण वार्तालाप हो रहा था कि क्षितीशबाबू आये। बापूजीने अुन्हें हंसते-हंसते ये बातें और साथ न ले जानेके कारण मेरे रूठनेकी सारी बातें कहीं। अिस तरह दो मिनट बापूजीने सबको हंसाया और सीधे प्रार्थनामें गये। प्रार्थना-सभामें बापूने कहा :

"आज मैं यहांसे पटना जा रहा हूं। वहांसे दिल्ली जाकर समय पर यहां लौटनेका प्रयत्न करूंगा।

"आज मैं बंगालके मुख्यमंत्रीके साथ दो घंटे तक अुन मुहल्लोंमें घूमा जहां दंगे हुअे थे। मुझे आशा तो यही है कि यह दंगा अब अंतिम ही होगा।"

फिर बापूजीसे प्रश्न पूछा गया :

प्रश्न — कलकत्तेमें आज हिन्दू और मुस्लिम अिस तरह दो हिस्से हो गये हैं। तब साधारण जीवन-व्यवहार चालू होनेके लिअे क्या किया जाय?

बापूजी : "मैं तो अेक बात कहूंगा कि दोनोंमें से अेक पक्ष यदि पूरी तरह सत्य और अहिंसाका पालन करे और अीश्वरके सिवा किसीका भी डर न रखे, तो मनुष्यको मारनेवाला कोअी मनुष्य नहीं है। मनुष्य केवल निमित्त बनता है। परन्तु जिन्दगी पूरी होने पर मृत्यु-मित्रसे सभीको भेंट करनी पड़ती है। भले कोअी हृदयरोगसे मरे, दुर्घटनासे मरे, या खाटमें सड़कर मरे। परन्तु जिसका जन्म हुआ है अुसका मरना निश्चित ही है। अैसे साहसी लोगोंका पक्ष यदि मजबूत होगा, तो सब पक्षोंके लोग अुनके साथ मैत्री जरूर रखेंगे। अिससे अच्छा और कोअी अुपाय मेरे ध्यानमें नहीं है।

"अपने धर्मका अध्ययन तो प्रत्येक व्यक्ति करे ही। परन्तु अिसके साथ दूसरोंके धर्मग्रंथोंका अध्ययन भी सबको करना चाहिये। हमारे देशमें अनेक जातियां हैं। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब जातियोंके लोग हमारे देशभाअी हैं। अिसीलिअे हम अुनके धर्मग्रंथ पढ़ें और विचार करके अुनमें जो अच्छी चीज लगे अुसे आचरणमें लायें। अिससे हानि तो किसीकी जरा भी नहीं होगी। लाभ स्पष्ट है। अिससे हमारी बुद्धिका भी विकास होगा और दिलमें अुदारता भी बढ़ेगी।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी घूमने निकले। मैंने सामानकी सूची बनाकर तथा लारीमें भरवाकर अुसे स्टेशन भेजा। बिसेनभाअी पहले गये। ७-३०

पर यहांसे निकलेंगे। अब पांच मिनट बाकी हैं। बापूजीने भी सब काम निबटा लिया है। वे बालकोंके साथ अिस समय बंगालीमें अंतिम बातें करके आनंद ले रहे हैं।

*　　　*　　　*

(रातके दस बजे पटना जानेवाली गाड़ीमें बाकीकी डायरी लिख रही हूं।)

हमने ७-३० पर सोदपुर छोड़ा। पहले जो मंडली आगे गअी अुसमें कल्याणजी, बिसेनभाअी और श्रीमन्नारायणजी थे। बापूजीकी मोटरमें मदालसाबहन, संतोक काकी, भरत, क्षितीशबाबू और मैं अितने लोग थे। हावड़ा स्टेशन पर अपार भीड़ थी। मुश्किलसे पुलिस, 'निर्मलदा आश्रम' के आश्रमवासी भाअियों और स्वयंसेवक दलने रास्ता किया, तब कहीं हम गाड़ीके डिब्बेमें चढ़ सके। फोटो लेनेवाले भी रोशनी डालकर आंखोंमें चकाचौंध पैदा कर रहे थे। अिस हालतमें किसे रोका जाय? अेकको रोकने लगें तो दूसरा सामने आ जाता है, रोशनी चमकाता है और दूर हट जाता है। बापूजी बोले: "पत्रकारों और फोटोग्राफरोंसे हम कभी नहीं जीत सकते।" भीड़में पिसते पिसते अूपर चढ़े। बापूजीने फंड अुगाहना शुरू किया। मालूम होता है खासा चंदा हुआ होगा। पौन थैली तो रेजगारीसे भर गअी है।

अिस बार रेलवेवालोंने विशेष सुविधा की है। तीसरे दर्जेके डिब्बेमें बैठनेके लिअे जो तख्ता होता है अुसके साथ निकल सकनेवाला दूसरा लंबा तख्ता रख दिया है। अिससे सोनेके लिअे चौड़ाअी खूब बढ़ गअी है। मेरे और बापूजीके बिस्तरसे भी ज्यादा जगह हो गअी है। मैंने बापूजीके पैर दबाये, सामान जमाया और डायरी लिखी। मुझे बुखार चढ़ता मालूम होता है। मैं भी सोती हूं।

गांधी कैम्प, पटना,
१५-५-'४७

कुल मिलाकर रात अच्छी बीती। हर स्टेशन पर लोग दर्शन करने तो आते ही थे, परन्तु अब अुन्हें तालीम मिल गअी जान पड़ती है। बर्दवान स्टेशन पर खूब भीड़ हो गअी थी। अिसलिअे वहां रामधुन शुरू करनेकी बापूजीने सूचना की। अेक खिड़कीका कांच टूटा तो मुझे भय हुआ कि

कांच वापूजी पर गिरेगा। मैं खिड़कीमें से कूदकर लोगोंको वहां आनेसे रोकनेका प्रयत्न करने गअी मगर मेरी वहुत नहीं चली। रामधुन शुरू करनेसे लोग शांत हुअे। चंदा तो हर स्टेशन पर अिकट्ठा करते ही हैं। मदालसा बहन भी साथ हैं, अिसलिअे आनन्द रहा। रातको खिड़कीमें से कूदनेके कारण या अन्य किसी कारणसे अुलटी हुअी, बुखार आ गया। और पेटमें सख्त दर्द अुठा, अिससे बेचैनी बढ़ गअी। मुश्किलसे सुबह तो हुअी। प्रार्थना नियमानुसार कराअी। गाड़ी चल रही थी, परन्तु मदालसाबहन, संतोक काकी आदि दो तीन जनोंका साथ था, अिसलिअे प्रार्थना पूरी की। फिर वापूजीको गरम पानी देकर रस निकाला। यह अच्छा था कि वापूजी मदालसाबहनके साथ बातें कर रहे थे। रस देकर सामान फिरसे अच्छी तरह रखकर मैं सोअी। वापूजी मदालसाबहनसे मेरे बारेमें बातें कर रहे थे, अिसलिअे मैं वहां खड़ी नहीं रही। फिर वापूजीने अपनी डायरी लिखकर बंगाली पाठ किया। अपनी डायरीमें मदालसा बहनसे हुअी बातोंका सार वापूजीने स्वयं लिखा :

> "प्रार्थनाके बाद बंगाली पाठ। रस पिया। मदालसाके साथ मनुड़ी संबंधी बातें। मैंने अुसे कहा कि मनुड़ी तो जब तक मैं जिन्दा हूं, तब तक मेरे साथ ही रहेगी। मैंने अुसे अिसी शर्त पर आने दिया है। वह मुझे छोड़ सकती है, मैं अुसे नहीं छोड़ूंगा। मैं अुसके भीतर भरे हुअे गुणोंका पोषण करना चाहता हूं — वगैरा बातें कहीं।"

वापूजीने अपने हाथसे मेरे बारेमें डायरीमें लिखा, अिसका मुझे पता नहीं था। परन्तु मदालसाबहनने पढ़ा तो मुझे बधाअी देकर खूब खुश हुअी। स्वयं बड़े आनंदसे मुझे पढ़वाया और बोलीं: "तुम्हारे बारेमें वापूजीने मुझे जो बातें सुनाअीं, अुनसे मुझे अैसा आनन्द हुआ, मानो अुन्होंने यह प्रमाणपत्र मुझे ही दिया हो। मैं रोज यही प्रार्थना करूंगी कि अीश्वर तुम्हें अुनकी खूब सेवा करनेका बल दे।"

हम ६–४५ को सुबह गुलजार बाग पर अुतरे। यहांके मुख्यमंत्री श्रीबाबू, डॉ० सैयद महमूद साहब और मुस्तफा साहब स्टेशन पर लेने आये थे।

वापूजीने मृदुलाबहनके साथ बातें कीं। मैंने धीरे धीरे मालिश वगैरा की प्रातःकालीन तैयारी की। मेहमानोंकी व्यवस्था की।

मालिश, स्नान और भोजनका काम तो धीरे-धीरे मुश्किलसे पूरा किया। वापूजीके पैरोंमें मदालसावहनने घी मला। यह डायरी मैं दोपहरको दो वजे वापूजीके मिट्टी ले लेने पर लिख रही हूं। परन्तु अब अैसा लगता है कि मेरा वुखार वढ़ गया है। लिखा नहीं जाता। पेटमें सख्त दर्द हो रहा है।

(पटना सिविल अस्पतालके पलंग पर)
२०–५–'४७

पांचेक रोजकी डायरी आज अिकट्ठी धीरे-धीरे लिखना शुरू कर रही हूं। १५ तारीखके दो वजे तक डायरी लिखी थी। अुस रोज तीन वजे वाद वुखार तेज हो गया। जव वापूजीने मिट्टी निकालनेके लिअे मुझे वुलाया, तव विसेनभाअीने वापूजीसे कहा, "मनु सोअी हुअी है। अुसे सख्त वुखार आया है।"

वापूजी तुरंत मेरे पास आये। मेरी खाट पर वैठे। मुझे देखा। वाहर जाकर मृदुलावहनसे कहकर तीन-चार डॉक्टरोंको जमा किया। अिन सवकी राय हुअी कि तुरंत आपरेशन कराना चाहिये। अेपेन्डिसाअिटिस है। वापूजीने मुझे खूव प्रेमसे समझाया। मुझे पूछा कि, "जयसुखलालको तार देकर वुला दूं?" मैंने कहा: "आपकी गोदमें मौत आ जाय तो अिससे अधिक कोअी लालसा मेरी नहीं। आप मेरी अितनी अधिक संभाल रखते हैं। फिर क्या चाहिये? और भाअी (पिताजी) भी यहां आकर क्या करेंगे? सव ज्यादा चिन्तामें पड़ेंगे। आपको जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये।" मदालसा वहन और संतोक काकी दोपहरको वाहर गअी थीं। दोपहरके वाद नर्सों और डॉक्टरोंने ऑपरेशनकी तैयारी शुरू कर दी। वापूजी प्रार्थनामें गये, परंतु जल्दी लौट आये। मैंने धीरे धीरे मदालसावहन और विसेनभाअीको अिसकी यादी दी कि वापूजीको कव क्या चाहिये और कौनसी चीज कहां है। विसेन भाअीको मैं यादी लिखा रही थी और वे अपनी आंखोंके आंसू पोंछते जा रहे थे। निर्मलदा भी नहीं हैं। अिसलिअे अुन्हें खयाल हुआ कि वापूजीको वे संभाल सकेंगे या नहीं? वे स्वभावसे वड़े मूक और भले हैं। मेरी वेचैनीको देखकर वे अिस तरह वेचैन हो अुठे थे जैसे अुन्हींको वीमारी हो।

प्रार्थनासे आकर वापूजी मेरे पास ही वैठे। मेरी खाट पर वैठकर अुन्होंने प्रवचन लिखा। मुझसे कहा: "जरा भी न घवराना। मैं सामने खड़ा रहूंगा।"

मैंने कहा: "आपको अितनी थकान है और मृदुलाबहन तो आती ही हैं। आपके कारण मेरी शुश्रूषा अच्छी ही होगी। आपरेशन करानेकी मुझमें काफी हिम्मत है। पिछले अेक महीनेसे मैं जो तकलीफ पा रही हूं, अुससे तो छूट जाअूंगी।"

बापूजी बोले: "मुझे तो अपनी परीक्षा करनी है। अिसलिअे ऑपरेशनके समय मौजूद रहना है। क्योंकि प्राकृतिक चिकित्सकोंने तो साफ कहा है कि तुम्हें अेपेंडिक्सकी बीमारी नहीं है। अिसलिअे यदि रोग अेक प्रकारका हो और अिलाज दूसरी प्रकारका हो, तो रोगीका क्या हाल होगा? अतः यदि प्राकृतिक चिकित्सकोंकी भूल होगी, तो मुझे अुन्हें बताना पड़ेगा कि शरीर-विज्ञान अुन्हें पूरी तरह जानना ही चाहिये।"

अितना लिखनेसे थकान लगी, अिसलिअे मैं लेट गअी। बापूजीकी डायरी, बापूजीके भाषण और दूसरे कोअी पत्र वगैरा अुन्होंने लिखे हों तो अुन्हें दर्ज करनेको मैंने बिसेनभाअीसे कहा था। वह सब अुन्होंने दोपहरको भेजा है।

(दोपहरको दो बजे) लगभग ७–३० के बाद मुझे अेम्बुलैंस कारमें यहां लाये। मेरे साथ डॉ० भार्गवकी लड़की, अेक नर्स और सिस्टर थीं। दूसरी मोटरमें बापूजी भी आये। किसीको खबर नहीं होने दी थी, फिर भी लोगोंको पता चल गया। अिसलिअे फोटोग्राफर और पत्रकार तुरंत पहुंच गये।

रातको ९–३० के बाद ऑपरेशनकी तैयारी शुरू हुअी। क्लोरोफॉर्म देनेसे पहले बापूजीने अत्यंत वात्सल्यसे मेरे सिर पर हाथ फेरा। मुझसे कहने लगे: "मनमें रामनाम जपते रहना। कुछ भी पता नहीं चलेगा।" मैंने बापूजीका हाथ जोरसे पकड़ा। वे पास ही कुर्सी डालकर तथा मुंह पर पट्टी बांधकर बैठे। मृदुलाबहन और मदालसाबहनको ऑपरेशन थियेटरमें नहीं आने दिया गया। कुछ धब धब आवाज सुनाअी दे रही थी। (अिसके बादका भाग तो डॉक्टरों, बापूजी और नर्सोंसे सुनी हुअी बातों परसे और बापूजीने अपनी डायरीमें जो लिखा है अुस परसे मेरी डायरीमें लिख रही हूं।)

हाअुस सर्जन और डॉ० लज्जाबहनने १६ तारीखको सबेरे बातें करते हुअे मुझे बताया कि "बापूजीने तुम्हारे लिअे विशेष कमरेकी मनाही कर दी थी। अुन्होंने कहा: 'मेरी लड़की तो गरीबकी लड़की है। गरीबकी जैसी सार-संभाल होती है, वैसी ही अिसकी होनी चाहिये।'

"परन्तु हमने कहा, 'आप आते हैं तब खूब भीड़ हो जाती है और मनु भी पटनामें प्रार्थना कराती थी अिसलिअे काफी परिचित हो गअी है। अिसके पास बहुत लोग आयेंगे, अिस कारण हमें अिसे अलग ही रखना पड़ेगा।' अिस प्रकार तुम्हें यहां अलग कमरेमें रखा। रातको ११॥ बजे तुम्हें यहां लाये तब तक बापूजी यहीं थे। तुम्हारा क्लोरोफार्म अुतरनेका अिंत-जार कर रहे थे। मगर अन्तमें जब हमने कहा, अिसे देरसे अुतरेगा, तब वे अनिच्छासे गये। तुम्हें तीन अुलटियां हुअी थीं। अेक बजे क्लोरोफार्म अुतरा। तुम जागते ही 'बापू! बापू!' दो बार चिल्लाअीं और बापूके बजाय हमें देखकर घबरा गअीं। अेक डॉक्टरने खूब सांत्वना दी कि तुम्हें जल्दी ही अच्छा करके बापूके पास भेज देंगे।"

१६–५–'४७ को सुबह मैंने यह फोन करनेको कहा कि: "बापू मेरी चिन्ता न करें। मैं अच्छी हूं।"

अब तो शहरसे और बाहरसे बहुत लोग, मंत्रीगण वगैरा खबर लेने आ रहे हैं।

बिसेनभाअीने यह समाचार दिया कि बापूजी खाखरे नहीं खाते; केवल दूध और शाक लेते हैं। भोजनकी व्यवस्था बिसेनभाअी करते हैं। बाकीका सारा काम मदालसाबहन तथा प्रभाबहन (जयप्रकाशजीकी पत्नी) करती हैं। मालिश प्रभाबहन करती हैं।

१६–१७ तारीखको अधिक तकलीफ मालूम हुअी थी। तीन तीन घंटेसे पेनिसिलिन दिया गया।

पत्रकारोंको मना कर देने पर भी मेरे ऑपरेशनका ब्यौरा अखबारोंमें आ गया। मेरे पिताजी, बहनें, कुटुम्बीजन वगैरा और अन्य सब चिन्तामें पड़ गये। अिसलिअे तार पर तार आये। डॉ० सुशीलाबहनने भी तार किया कि मेरी जरूरत हो तो आअूं। बापूजीने मुझे पूछा। मैंने मना कर दिया। लोग बहुत आते हैं, अिसलिअे बाहर अेक चौकीदार रख दिया है, ताकि बेवक्त कोअी न आये।

बापूजी रोज शामको आते हैं। डॉ० भार्गवने खूब सावधानीके साथ ऑपरेशन किया। अुतनी ही सावधानीसे वे मेरी देखभाल भी कर रहे हैं। अुनकी भतीजी भी यहां लेडी डॉक्टर हैं, जो लगभग मेरे ही पास रहती हैं। वे अपने यहांसे आअीसक्रीम बनाकर लाती हैं। गरमी सख्त होनेके कारण

दूसरी चीज अच्छी नहीं लगती। नर्सें भी मेरी बहुत चिन्ता रखती हैं। सारा स्टाफ कहता है: "आपके कारण हमें रोज बापूजीके दर्शनोंका और निजी मुलाकातका लाभ मिलता है।" नर्सें नये नये फूल लाकर बापूजीके आनेके समय कमरेको सजाती हैं। "क्यों मनुड़ी, अभी जी रही है न?" यों हंसते हंसते कहते हुअे बापूजी आते हैं। आध घंटा मेरे पास बैठते हैं, हर बीमारके बिस्तर पर भी जाते हैं। पहले दिन तो अैसे बीमार भी, जिन्हें खाटसे अुठनेकी मनाही थी, अुठ अुठकर बापूजीके दर्शन करने चले आये थे। अिसलिअे डॉ० भार्गवने विनोदमें कहा: "अिस अेक लड़कीको अच्छा करनेमें हमारे दूसरे बीमार परेशान होंगे, अिसलिअे आप यदि दो मिनट अुनके पास चले जायंगे तो अुन्हें बड़ी सांत्वना मिलेगी।" बापूजी बोले, "अिसमें कहनेकी जरूरत ही नहीं। मुझे अपना कर्तव्य समझ कर सबके पास जाना चाहिये।"

कल (१९-५-'४७) बापूजी रात तक नहीं आये थे। गांवोंमें प्रार्थना करने जाते हैं। ९-३० के बाद मैंने आशा छोड़ दी थी। बापूजी १० बजे आये। मैं गहरी नींदमें सोअी थी, परन्तु बापूजीकी थपकी सिर पर पड़ते ही अेकदम जाग पड़ी और खुश हो गअी। मेरे मुंहसे 'बापूजी' अूंची आवाजमें निकल पड़ा। मैंने कहा, "आप अितनी देरसे क्यों आये?" बापूजी बोले: "आना ही चाहिये न? तुम यह समझती होगी कि तुम्हें मेरी सेवा नहीं करनी है। परन्तु मुझे तो तुम्हें जल्दी अच्छा करके तुमसे सेवा लेनी ही है। और अस्पतालका नियम तो तोड़ा ही नहीं जा सकता, परन्तु अिन डॉक्टर साहबने मुझ पर कृपा करके अिजाजत दी अिसलिअे आ सका।" अिस तरह दिल्लगी करके दस मिनटमें हालचाल पूछकर बापूजी चले गये। बादमें ११ बजे तक मैं और डॉ० लज्जाबहन बातें करती रहीं। बुखार जरा भी नहीं था। मैं बापूजीके अगाध प्रेमके विचारोंमें डूबी रही, अिसलिअे बहुत देरसे नींद आअी।

पता नहीं यह किस पुण्यका फल होगा कि संसारके महापुरुष माने जानेवाले बापूजीका अैसा लाड़ पानेका सौभाग्य मुझे मिला?

आज (२० तारीखको) दिनके १२-३० पर मैं सो गअी थी। कोअी खादीके कपड़े पहने हुअे भाअी मुझसे मिलने आ रहे थे। चौकीदारने मना किया तो अुन्होंने अुसे थप्पड़ लगा दिया और चले गये।

शामको डॉ० भार्गव मेरे पास आये। चौकीदारका सूजा हुआ गाल मुझे बताया। मुझसे कहने लगे: "खादीवाले अैसे काम करके टिक

सकेंगे ?" वे बहुत ही नाराज हो गये थे। मैंने बापूजी शामको आये तब अुनसे यह बात कही। बापूजी बोले: "मैं प्रार्थना-सभामें कहूंगा कि कांग्रेसका नाम लेने या खादी पहननेसे चाहे जहां जानेका बिल्ला नहीं मिल जाता है।"

आज जयप्रकाशजी और बेगम साहिबा भी समाचार लेने आये थे।

बापूजीका दिल्ली जाना तय हो गया है। मुझे भी ले जायंगे। अब यहां बड़ी अुकताहट होती है। शायद कल छुट्टी देंगे। डॉक्टर तो कहते हैं कि अभी हम तुम्हें पैदल नहीं चलने देंगे। जवाहरलालजीका तार था।

बापूजीकी डायरीसे अपनी डायरीमें अुद्धरण लेकर पांच दिनकी अपनी डायरी पूरी कर रही हूं।

"ता० १५-५-'४७ को गुलजार बाग पर अुतरे। आकर घूमा। मालिश-स्नान। खाते समय मृदुलासे बातें कीं। सोते समय देवसे। . . . मनुके पेटमें बहुत दर्द है। अुलटी और बुखार भी है। डॉक्टरोंको बुलवाया। डॉक्टरोंने अुसकी जांच की। मनुको अपेण्डिसाअिटिस है, अैसा तय हुआ। अिसलिअे आज ही अुसे दवाखाने भेज दिया। रातको ऑपरेशन करेंगे। मदालसा और संतोकको वापस बुलवा लिया। वे आ गअीं। दवाखाने जाकर मनुड़ीका ऑपरेशन देखा। साथमें मृदुला और मदु (मदालसाबहन) थीं। परन्तु अुनको ऑपरेशन थियेटरमें नहीं आने दिया। मैंने मुंह पर पट्टी बांधकर सारा ऑपरेशन देखा। ११-३० पर अुसे अूपरकी कोठरीमें ले गये। मैं अुसे डॉक्टरको सौंप कर ११-१० पर लौट आया। ११-३० के बाद सोया। डॉ० कर्नल भार्गवने ऑपरेशन किया।

"मनुड़ीके बजाय मेरी सेवामें मदु है। रातको मनुड़ीके बारेमें बहुत विचार आते थे।"

पटना,
१६-५-'४७

"प्रार्थनाके बाद शांतिनिकेतनसे आया हुआ बंगाली साहित्य देख गया। बंगाली पाठ। जल्दी खबर आअी कि मनुड़ीकी तबीयत अच्छी है। रातको अेक बार बेहोशीसे जागने पर बापू, बापू पुकार रही थी। मगर बादमें सावधान हो गअी। और कहलवाया कि "मैं अच्छी हूं।" पत्र लिखे: खुरशेदबहन और प्यारेलालको। घूमने गया। मदु आअी थी, परन्तु मैंने अुसे मनुड़ीसे

मिल आनेको कहा, अिसलिअे जल्दी चली गअी। मनुड़ीके विना सब अुल्टा हो रहा है। यह बताता है कि अिस अकेली लड़कीने मेरा कितना काम संभाल लिया था? मेरी सेवाके पीछे वह पागल है।

"मालिश अिन थोड़े दिनों तक मदनबाबू करेंगे। और नहलायेंगे देव (देवप्रकाशभाअी नय्यर)। शैलेनने अखबार सुनाये। ९–४५ पर खाने बैठा। १०–३० पर खाकसार मिल गये। फिर जरा सोया। ग्यारह बजे जाग गया। डाव (नारियल) पिया। सोते समय मनुड़ीके बजाय मृदुलाने घी मला। जागनेके वाद पत्र लिखे: जयसुखलाल, सतीश, रामेश्वरी नेहरू और सुशीला नय्यरको। बारह बजे मिट्टी ली और चिमनलालको पत्र लिखा कर सो गया। श्रीमन् और संतोक नालंदा देखने गये। अेक बजे अुठा। कातते हुअे विसेनसे पत्र लिखवाये: बलवन्तसिंह, कौशांवी और शंकरनको। कातनेके बाद कल्याणम्, सावित्री (आस्ट्रेलिया) पेटी, मार्टीन और मीराको पत्र लिखवाये। आंखोंमें नींद भर जानेसे सोया। ३–१५ पर अुठा। ब्रजलाल नेहरूको पत्र लिखवाया। Lady's Owen को पत्र लिखवाया। अन्सारी और मृदुलाके साथ बातें। प्रभा आअी। गुड़ खाया। दूध नहीं पिया। ५–१५ पर बाहर जाते समय जयप्रकाश आये।

"जयप्रकाश भी साथ थे। मनुड़ीके पास बीस मिनट बैठा। अुसकी तबीयत अच्छी है। पेशाब अभी तक नहीं आता। बहुत ही कमजोर हो गअी है। गुलजार बागमें प्रार्थना थी। प्रार्थनामें मनुड़ीकी कमी पूरी तरह खटकती थी। वहांसे ७–४५ पर लौटा। अनुग्रहबाबू और अन्सारीके साथ बातें। कलसे मालिशके लिअे प्रभा आयेगी। 'हरिजन' के लिअे थोड़ा-सा लिखवाया। देवका लिखा हुआ प्रवचन देख गया। रातको ८॥ बजे समाचार मिले कि अिन्जेक्शनके बाद मनुड़ीको पेशाब आया है। पेनिसिलिन तीन तीन घंटेसे देते हैं। रानानंद मिश्रका आदमी आया था। अुपवासकी बातें कीं। मैंने रोका है। बादमें घूमा। मृदुला साथ थी। स्वयं ही शरीर पोंछा। ९–३० बजे सोया।"

ता० १५–५–'४७ के प्रार्थना-प्रवचनमें बापूजीने कहा कि:

"आज ठीक पंद्रह दिन बाद हम यहां बांकीपुर मैदानमें प्रार्थना करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं। अिस बीच मैं दिल्ली और कलकत्ते हो आया हूं। मैंने सोचा नहीं था कि मुझे कलकत्ते जाना पड़ेगा। क्योंकि मेरी 'करेंगे या मरेंगे' की प्रतिज्ञा नोआखाली और बिहार तक ही मर्यादित थी। परंतु

कलकत्तेके बारेमें मैंने जो कुछ सुना अुससे मुझे लगा कि मैं वहां भी कुछ अुपयोगी सिद्ध हो सकूंगा। वहां बैठकर भी मैं बिहारकी ही सेवा कर रहा था। मैं कहीं भी जाअूं, मेरा कार्य तो वही रहनेवाला है।

"परन्तु अिस तरह मेरा 'करेंगे या मरेंगे' का विस्तार बढ़ता जा रहा है। मुझे विश्वास और श्रद्धा है कि कहीं भी अेक जगह यदि मेरा मिशन सफल होगा तो अुसका असर सभी जगह होगा।

"यहांका हाल आज जाना। यहांका काम धीरे हो रहा है। परन्तु जब बिहार पागल हुआ तब पागलपन मंद गतिसे नहीं आया था, अिसलिअे राहतका काम भी मंदगतिसे नहीं होना चाहिये। बरसातकी ऋतु भी आअी है। अिसलिअे निराश्रितोंको जितना जल्दी ठिकाने लगाया जा सके लगानेका प्रयत्न होना चाहिये। बहनोंसे भी मैं प्रार्थना करता हूं कि वे मुस्लिम बहनोंमें जाकर सेवाकार्य हाथमें ले लें!

"यदि यहां सफलता मिलेगी तो अुसका प्रभाव सारे भारत पर पड़ेगा।

"मुझे हिन्दुओंकी तरफसे पत्र मिलते हैं, जिनमें पूछा जाता है कि क्या आप हमसे यह आशा रखते हैं कि हम मुसलमानोंकी खुशामद करके अुन्हें लाड़ लड़ायें? अैसी बातें लिखनेवाले भाअियोंसे मैं क्या कहूं? अितना ही कहूंगा कि आपने मेरी बात समझी नहीं है। मैंने सारी अुम्र सत्य और अहिंसाके द्वारा अन्यायके विरुद्ध लड़नेमें बिताअी है। अिसलिअे अिस तरहकी खुशामदमें न फंसना ही मेरे लिअे स्वाभाविक है। मैं तो अितना ही कहता हूं कि क्रोध और वैरको दूर कीजिये। क्रूरता छोड़कर सज्जन बननेमें यदि खुशामद मानी जाती हो, तो यह शब्द काममें लेनेमें भी मुझे अेतराज नहीं है।

"मैं अिन गरमीके दिनोंमें गांवोंमें सफर करनेमें असमर्थ हूं, अिसलिअे शहरमें अलग अलग मुहल्लोंमें प्रार्थना-सभाअें रखकर संतोष मान लूंगा।"

ता० १६–५–'४७ के प्रवचनमें बापूजीने कहा:

"यहां आनेसे पहले मैं निराश्रितोंकी छावनी देख आया। अिस छावनीमें अधिक समय देकर सब कुछ अधिक बारीकीसे देखनेकी मेरी अिच्छा तो थी, परन्तु छावनीके सुपरिन्टेन्डेन्टसे मैंने जो कुछ सुना वह जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ।

"अिस छावनीमें जो अुद्योग चल रहे हैं, अुनमें स्वावलम्बनको महत्त्व दिया गया है। छावनीमें जो बालक रहते हैं, अुन्हें भी काम दिया जाता

है। और अुत्साह बना रहनेके लिअे कामकी अपेक्षा मजदूरी अधिक दी जाती है।

"मेरी सलाह है कि हिन्दू स्त्रियों और पुरुषोंको अिस छावनीमें समय समय पर आकर निराश्रितोंके साथ दोस्ती करनी चाहिये। अुन्हें आश्वासन देना चाहिये। अितना करेंगे तो अेक बड़ा पुण्यका कार्य होगा।"

[पत्रोंसे भी बापूजीके विचार जाननेको मिलते हैं। यहां (अस्पतालमें) रहनेसे मेरी डायरीमें जो दस दिनका नागा हो गया है, अुसे पूरा करनेके लिअे बापूजीने ही सुझाया कि, "तू मेरी डायरी और पत्रोंमें से अपनी डायरीमें दर्ज कर सकती है।" अिसलिअे मेरी डायरी अपूर्ण नहीं रहेगी। हां, मुलाकातियोंके साथ जो बातें हुअी होंगी, वे तो दर्ज नहीं की जा सकतीं। परन्तु दूसरा अुपाय क्या?]

ता० १५–५–'४७, १६–५–'४७ और १७–५–'४७ के पत्रोंसे:

[पहले दो पत्र हिन्दीमें हैं।]

पटना,
१५–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत आज पटनामें पढ़ा। कल शामको सोदपुरमें मिला था। काशीनाथका निवेदन खराब है। किसी भी कारणसे अगर अुसमें सच्च निवेदन देनेकी हिम्मत नहीं थी तो अुसकी कीमत बहुत ही कम रहेगी। अब क्या किया जाय वह मैं नहीं समझ पाता हूं। अगर सच्चे निवेदन पर कायम रहनेकी अुसमें ताकत हो तो, या वही सच्चा है अैसा सिद्ध करनेके लायक सबूत हो तो कुछ हो सके। काशीनाथके भाअीने पैसे दिये सो भी बुरा लगता है। अिस तरह लोग पैसा गुंडोंको देते रहें या दूसरी तरह डरते रहें, तो आखिरमें अुन लोगोंको बुराअियां करनेमें अुत्तेजना मिलती है। अैसे लोगोंको दूसरी जगह पर रहना चाहिये। यहां मैं २४ तारीख तक हूं। पच्चीसको देहली पहुंचना है।

बापूके आशीर्वाद

१५-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला, भजनावलिका दूसरा संस्करण नहीं मिला। पैगम्बरके वचनोंमें कौनसा ठीक है सो विनोबा या काकासे पूछो। मैं ध्यानसे पढ़ सकूं अैसी मेरी हालत नहीं है।

तुम्हारे विवाहकी बात सुनकर कुछ आश्चर्य होता है, कुछ दुःख भी। कहीं भी कोअी दोष रहा है कि जिससे जो वस्तु स्वाभाविक होनी चाहिये सो अति कठिन प्रतीत होती है। यह तुमको सावधान करनेके लिअे लिखता हूं, रोकनेके लिअे नहीं। जैसे विनोबा कहें करो।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१६-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला। रामेश्वरदासका जवाब आ गया, यह ठीक हुआ। तुम्हारी बीमारी जड़मूलसे जाती रहे और खुराक बराबर खा सको तो संतोष हो। शंकरनसे तुम्हारा मेल नहीं बैठता, यह विचार करने जैसी बात है। परन्तु क्या हो? अगर तुम अुसे जीत सको तो जीतना। परन्तु तबीयत बिगाड़ कर कभी नहीं।

मेरा अहंकार छोड़कर कल मनुका अेपेन्डिसाअिटिसका ऑपरेशन करवाना पड़ा है। मैं समझ गया था। परन्तु दिल्लीसे कलकत्ता तक ऑपरेशनको टाला। यहां दस दिन मिले हैं, अिसलिअे डॉक्टरोंको बताया। मेरा जो भय था सही निकला। अिन लोगोंने तुरन्त ऑपरेशन करवानेकी बात कही। मैंने मंजूर की। आज अस्पतालसे खबर आअी है कि वह ठीक है।

पटना,
१६-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारा तार मिला। . . . को भेजता हूं। आज वह कहां है यह पता नहीं। . . . ने तुम्हारे तारकी बात कही थी। तुम्हारे

विचारसे मैं सहमत हूं। दोनोंका प्रेम बिलकुल निर्मल है, परन्तु स्वभाव-भेद बहुत बड़ा है। वह यदि अिस प्रकार लिखेगा तो निपटारा जल्दी हो जायगा। दोनों सहमत हों तो ही मैं सार्वजनिक वक्तव्य निकाल सकता हूं। आशा तो रखता हूं कि अब तुरन्त निपटारा हो जायगा।

तुम दोनों आनन्दमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१६–५–'४७

चि० जयसुखलाल,

मेरा गर्व अुतर गया है। कल रातको अस्पतालमें मनुका अेपेन्डिसाअिटिसका ऑपरेशन कराया। मैं पासमें था। अभी सबेरेके ६ भी नहीं बजे हैं। आदमी कह गया कि मनु कहलवा रही है वह आराममें है।

मैं तो दिल्लीमें चेत गया था कि अेपेन्डिसाअिटिस है। सोचा था कि मिट्टीसे ठीक हो जायगा, परन्तु मिट्टीने पूरा काम नहीं दिया। अिसलिअे कल डॉक्टरोंको बुलाकर पूछा। अुन्होंने ऑपरेशनकी सलाह दी अिसलिअे करा दिया। अिस प्रकार अीश्वर मनुष्यका घमंड अुतारता है। अभी पता नहीं कि मुझे वह कहां ले जायगा। अब किससे कहूंगा कि मर जाना मगर प्राकृतिक चिकित्सा नहीं छोड़ना? स्वयं अपने लिअे अैसा कह सकूं तो भी बहुत समझूंगा।

चिन्ता तो करनी ही नहीं है। १२ बजे मदालसा और संतोक मनुके पास हो आओीं। आनन्द कर रही है। मैं शामको जाअूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[नीचेके दो पत्र हिन्दीमें हैं।]

१६–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत प्रार्थनाके पहले लिखा हुआ मिला। कौशांबीजीका पढ़कर आनन्द होता है। साथमें अुनके लिअे खत रखता हूं। मिलने

तक देह होगा तो अुनको दे देना या पढ़ा देना। अुनके आश्रममें रहनेसे आश्रम (सेवाग्राम आश्रम) पवित्र होता है। अिसमें मुझको कोअी भी शक नहीं है।

. . . का खत अिसके साथ है। कुछ होगा तो अच्छा है।

१६–५–'४७

चि० . . .

. . . लिखते हैं कि तुम्हारी और . . . की पटती नहीं है। अुपचारककी हैसियतसे तुम्हारे दर्दीके मनको जीतना है, दर्दीको अुपचारकका नहीं। जब दर्दी अुपचारकका मन जीतता है तब दर्दी अुपचारक बनता है, और अुपचारक दर्दी। अैसा तुम्हारे लिअे होना चाहिये। जब दर्दी अुपचारककी सेवा चाहता है, लेकिन सबके सब अुपचारोंको स्वीकार नहीं कर सकता है, तब अुपचारकको चाहिये कि वह दर्दीके अनुकूल बने और जितनी सेवा हो सकती है अुतनी करे। और धीरजसे काम ले। अगर यह समझमें आया है तो अैसा करो।

धर्मानंद कौशांबी बहुत बीमार होनेसे सेवाग्राम आश्रममें सेवा-शुश्रूषा करा रहे थे। अुन्हें हिन्दीमें लिखा:

भाअी कौशांबी,

तुम्हारा सब अहवाल हमेशा मिलता है। तुम्हारा पैगाम भी बलवन्तसिंहने दिया है। तुम्हारे आश्रममें रहनेसे मुझको बड़ा आनन्द होता है।

शांतिसे ही जाओगे, अिसमें मुझे शक नहीं है।

अेक आसन-विद्यामें विश्वास करनेवाले डॉक्टरको (हिन्दीमें) लिखा:

तुम्हारा खत तो जैसे मिला वैसे ही पढ़ गया था। लेकिन अुसके साथ जो लेख भेजा था वह आज ही पढ़ सका। पढ़कर खुश हुआ। सब केस (दर्दी) यौगिक क्रियासे अच्छे हुअे अैसा बताया है। वह काफी नहीं है। कौनसी क्रिया करवाअी थी और अुसमें खुराक अित्यादिका भी काफी हिस्सा था या नहीं आदि बताना चाहिये था।

अच्छी या बुरी सब बातें किताबोंमें लिखी जाती हैं, वही तुम्हें लिखनी चाहिये।

हारकर मुझको कल मेरी ही लड़कीके लिअे डॉक्टरोंका सहारा लेना पड़ा, तब मुझको तुम्हारा स्मरण हुआ और मनको कहा, कैसा अच्छा होता अगर मैं आसन आदिसे अिस लड़कीको अच्छा कर पाता! अुसको अेपेण्डिसाअिटिस था, अुसको सूजन था। मिट्टी, पानी और खुराकसे वह अच्छी नहीं हो सकी। दो नैसर्गिक अुपचारकोंसे मशविरा मैंने किया। वे भी कुछ बता न सके। अेक हकीमने हरड और बेलफल खिलानेको भी कहा। अुससे भी दुरुस्त न हुअी। अब अस्पतालमें पड़ी है। नैसर्गिक अुपचार और आसनोंको माननेवाला मैं हार गया। वह मुझे अच्छा नहीं लगा। लेकिन मेरा कोअी भी अिलाज न रहा। वह लड़की फल खाती थी तो सात आठ दस्त आ जाते थे। सिर्फ थोड़ी छाछ पर रखा था। न दस्तको मैं रोक सका, न अेपेण्डिक्सके सूजनको। अब बताओ अैसे केसमें मुझे क्या करना चाहिये था?

अेक प्राकृतिक चिकित्साके प्रखर डॉक्टरको लिखा:

. . . भाअी जहांगीर थोड़े समयके लिअे जापान जायंगे अैसा कल तार था। वे आपके पास हैं यह समझकर मैं बेफिक्र रहता था। आपके विचार कभी छूटते नहीं। मैं आपके पीछे चल कर प्राकृतिक चिकित्साके काममें पड़ा। परन्तु पड़ते ही मैंने देखा और अब अधिक देख रहा हूं कि शायद आपके और मेरे विचारोंमें बहुत फर्क है। मैं दूसरी तरहका बनूं, अैसा मुझे दीखता नहीं है। और संभव है कि आप भी दूसरे विचारोंके नहीं बन सकें। तो हम दोनोंको यह विचार करना है कि हम क्या करें। आपको मेरे पास दौड़कर आनेकी जरूरत नहीं। मैं अिस समय अपने आपको गढ़ रहा हूं। मुझे भटकना पड़ता है। मैं अहिंसाकी दृष्टिसे साधना कर रहा हूं। अिससे मैं दूसरी बातोंमें नहीं पड़ सकता। मेरे लिअे प्राकृतिक चिकित्सा भी अेक अहिंसाका क्षेत्र है। आपका धर्म, आपकी साधना अिस समय दो चीजोंमें निहित है। माताजीकी सेवा करना, माताजीके पास रहना और आपकी अपनी जरूरत सोच लेना। मेरे पास तो यह हो ही नहीं सकता। क्योंकि माताजी मेरे पास नहीं हैं, मैं अुनके साथ नहीं हूं। रुपयेका भी आपको ही विचार करना है।

अब दूसरा प्रकरण मेरी शर्मका है। चि० मनु मेरा कहा ही करती है, अिसलिअे मैं सोच रहा था कि मैं अुसे कहां तक ले जाअूं? जब मैं

दिल्लीमें था तभी मुझे खयाल हो गया था कि अिसे अेपेण्डिसाअिटिस होना चाहिये। परन्तु मेरा ज्ञान बिलकुल छिछला है। अिसलिअे मैं अपने पर कैसे विश्वास करता? फिर भी पानी और मिट्टीके अुपचार करता रहा। खुराकके भी। अेनिमा लेनेको कहता था। कब्जसे अुसे दस्त शुरू हुअे और अिससे अेपेन्डिसाअिटिसका पता चला। दो प्राकृतिक चिकित्सकोंसे मेरा संपर्क हुआ। परन्तु अुन बेचारोंका ज्ञान कितना? कोअी सम्पूर्ण प्राकृतिक चिकित्सक मेरे हाथ नहीं लगा। आपको अैसा समझनेके लिअे मन तो तैयार था, परंतु अिस प्रकार करने पर मैंने देख लिया कि सच्चा और नैसर्गिक अुपचारक तो मैं ही हूं। फिर भी अपूर्ण हूं। यहां मुझे दस दिन रहना था, अिसलिअे फुरसत देखी। अेकके बजाय चार डॉक्टर आ गये। और अुन लोगोंने ऑपरेशन करनेका निश्चय प्रगट किया। हारकर मैंने ऑपरेशन करने दिया। आज दूसरा दिन है। सवेरे पत्र लिख रहा हूं। अस्पतालसे खबर आअी है कि मनु अच्छी है। ऑपरेशन कराना मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा। अगर मुझे पूरा ज्ञान होता तो मैं ऑपरेशन कभी न होने देता। अैसे समय आप क्या करते? यह सवाल तो मैंने अपनी भविष्यकी सहायताके लिअे पूछा है। फुरसत और निश्चिततासे जवाब देना, जल्दी नहीं है। २५ तारीखको दिल्ली पहुंचना है। यह आजकी बात है। कल कहां होअूंगा यह तो भगवान जाने। आपका मन शांत होगा। माताजी अच्छी होंगी। . . . मजेमें होंगे और दोनों बच्चे भी।

पटना,
१७-५-'४७

बापूजीकी डायरीसे :

"प्रार्थनाके बाद मनुके साथ बातें। . . . को पत्र लिखवाया। मनुकी तबीयत अच्छी होनेके समाचार फोनसे आये। मंत्री, बिहार कैथोलिक अेसोसिअेशनको पत्र। घूमने गया, साथमें श्रीमन् और मदु थे। मालिश प्रभाने की। आज खाखरे नहीं लूंगा, अैसी सूचना दी। सुशीलाका दिल्लीसे तार आया मनुड़ीकी मददके लिअे आनेके बारेमें। मैंने तार भेजा, आनेकी जरूरत नहीं। कुछ दिनोंसे सुशीलाका पत्र नहीं आया है। स्नान और खाते समय संतोक तथा बालाके साथ बातें। डॉक्टर महमूद मिलने आये। फिर सोया। जागनेके बाद डाब (नारियल) पीकर देवसे डाक सुनी। शैलेन आया। मनुकी बात अखबारोंमें आ जानेसे

खबारोंके प्रतिनिधियोंसे कहा कि आप सब अब स्वतंत्र हैं। यह असलिअे कहा ; अेकके बाद अेक अखबारमें खबर पढ़कर तार छूटते हैं। खास तौर पर अुसकी हुनोंको व्यर्थ घबराहट होगी। शैलेनने अखबार सुनाये। १२–१५ पर पाखाने या। मृदुलासे बातें कीं। अेक बजे मिट्टी लेकर सोया। १–४० पर मिट्टी टा दी। देव डाक लाया। बहुत वक्त लग गया। दिनशाका पत्र देख या। . . . को मनुके बारेमें पत्र लिखा, क्योंकि अुन्होंने कहा था कि अुसे पेण्डिसाअिटिस है ही नहीं।

"बिसेनसे पत्र लिखवाये: हेमप्रभादेवी, दरबार साहब, जुगतराम तथा न्नपूर्णाको। . . . रामानन्द मिश्रके प्रतिनिधि बच्चूसिंह मिल गये। ४ बजे त्युंजयप्रसाद और नलेश्वरप्रसाद आये थे। ४–१५ बजे जयप्रकाश और भावती तथा दूसरे तीन भाअी। पुलिस हड़तालके बारेमें बात हुअी।

"दांतके डॉक्टर देखने आये। ५–३० पर चि० मनुड़ीको देखने अस्पताल या। वहां ३० मिनट बैठा। मुझे देखकर मनुड़ी गद्गद हो गअी। प्रार्थनाके लअे दीनापुर गया। ६–४० पर लौटा। अनुग्रहबाबूके साथ बातें।

"जवाहरलाल और सरदारके खास पत्र लेकर आदमी आया। . . . जवाब लखकर दिये। ८–४५ पर घूमने गया। मृदुला साथ थी। १०–१५ बजे सोया।

"आजका प्रार्थना-प्रवचन या प्रार्थना अच्छी तरह न हो सकी। क्योंकि ीड़ बहुत ज्यादा थी। व्यवस्था नहीं थी और जरा भी शांति नहीं थी। असलिअे केवल प्रार्थना करके ही चले आये। प्रार्थना दीनापुरमें थी।"

कुछ पत्रोंके अुद्धरण :

[हिन्दीमें]

पटना,
१७–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला। कस्तूरबा-निधिमें से अनाथोंके लिअे कुछ करना मुश्किल मानता हूं। अगर कुछ हो भी सके तो वह काम लावण्यलता (कस्तूरबा-निधिकी बंगालकी अेजेन्ट) का है। लेकिन अगर कोअी अनाथके लिअे तुम्हारे दिलमें कुछ है तो मुझे लिखो, मैं सोच लूंगा। हमारे पास जो फंड है अुसके बाहर अैसा अनाथका काम नहीं है।

सतीशबाबूके बारेमें मेरा तो निश्चय है कि अुनको अपना शरीर बगैर कारणके खतरेमें डालना नहीं चाहिये। दीदीमणि अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

. . . को। अंग्रेज सरकारके समयमें . . . जागीर खालसा की गअी थी, वह अब सरकारने . . . को लौटा दी। अुन्हें सुन्दर पत्र लिखा :

पटना,
१७–५–'४७

भाअी . . .

आपका तार मिला। आप तो कभी दरबार मिटे ही नहीं थे। मुझे विश्वास था कि जो पद आपसे छीन लिया गया था वह आपको वापस जरूर मिलेगा। यह बात अखबारोंमें आ गअी है। मुझे कोअी आश्चर्य नहीं हुआ। आपका तार आज मिला। जब वह कलकत्ते पहुंचा था, तब मैं कलकत्ता छोड़ चुका था। मुझे आशा तो यह है कि पद वापस मिलनेसे आपकी नम्रता बढ़ेगी; आपकी पवित्रता बढ़ेगी और सेवाभाव बढ़ेगा। पद वापस मिलनेसे सेवाका क्षेत्र कम नहीं होता परन्तु बढ़ता है। जिम्मेदारी भी बढ़ती है। अुसे सुशोभित करना। हम सब बहुत कठिन कालमें से गुजर रहे हैं। अिसमें कौन अुत्तीर्ण हुआ, यह आज कह सकना संभव नहीं।

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

पटना,
१७–५–'४७

चि० . . .

आपका और . . . के पत्र मिले। मुझे मसूरी जानेका जरा भी अुत्साह नहीं। आप मसूरी जब तक रहा जा सके रहें। मुझे जितने दिन मिलें कामके ही हैं। अिसलिअे आप छुट्टी दें तो वहां २१ तारीखको आअूं या जब कहें तब आअूं। मसूरीमें आप बिलकुल आराम लें तो मुझे अच्छा लगेगा। बातें तो हम दिल्लीमें करेंगे।

दरबारकी बात अखबारमें पढ़ी। मुझे तो विश्वास ही था। आज अुनका तार आया, अिसलिअे पत्र लिखा है।

तबीयत अच्छी रखें।

बापूके आशीर्वाद

*

चि० . . . का पत्र सुशीलाबहनके नाम आया है। परन्तु सच पूछें तो वह मेरे लिअे है। वह पत्र आपने न पढ़ा हो तो पढ़ लें। विचार करें और अिसकी मुश्किल दूर करें अथवा मुझे लिखना जरूरी हो तो लिखें।

*

चि० . . .

सुशीलाबहनके नामका तुम्हारा पत्र भटकता भटकता आज ही मिला। तुम अधीर न होना। मेरी कही हुअी बात सनातन सत्य है। सच्चे सेवकोंका संकट अीश्वर हमेशा मिटाता ही है। अिसीलिअे वह 'संकटमोचन' कहलाता है। . . . मैंने . . . भाअीको लिखा है। मेरा खयाल है वे तुमसे मिलेंगे। २५ ता० को दिल्लीमें रहूंगा। परन्तु अखबारोंसे अधिक मालूम होगा।

पटना
१८–५–'४७

बापूजीकी डायरीसे :

"प्रार्थनाके बाद कल लिखाये हुअे पत्र देखकर हस्ताक्षर किये। बंगाली ठ। जमींदारोंके बारेमें . . . को पत्र लिखवाया। घूमने गया। मदु साथ थी। ालिश मदनबाबूने की। देवने नहलाया। नहानेके बाद खानेमें देर थी, अिसलिअे . . का अधूरा पत्र पूरा किया। ब्रजकिशनका पत्र सुना। अधूरा रहा। नौ जे डॉ० दादू और नायकर मिलने आये। खाते हुअे अुनसे बातें कीं। खानेकी ात्रा कम की। सोया। १०–४५ पर जागकर डाब (नारियल) पिया। दक्षिण फ्रीका संबंधी पत्र लिखा। ११–४५ पर कातने बैठा। १–१० पर मिट्टी ली। सारीकी सारी योजना पढ़ी। सतीशबाबूको पत्र लिखवाया। ब्रजकिशनके कागजात ढ़ लिये। जवाब लिखवाया। मृदुलाके साथ बातें। ३–२० पर दादू, नायकर कर मिलने आये। प्रवचन लिखा। प्रभा आअी। ४–१५ अन्सारी तथा मृदुलासे ातें। पांच बजे दांतके लिअे दवाखाने गया। वहांसे चि० मनुड़ीके पास। बांकी-र मैदानमें प्रार्थना। पत्र . . .। घूमने गया। संतोक और मृदु साथ थीं।"

आज बापूजीका मौन था, अिसलिअे प्रवचनमें लिखित संदेश पढ़ा गया :

"कल बहुत बड़ी भीड़ प्रार्थनामें थी। परन्तु अितना ज्यादा शोर ौर अव्यवस्था थी कि मुझे जो कहना था वह कह न सका। यह मुझे पसन्द हीं आया, क्योंकि मैं अपने कहनेको भी प्रार्थनाका अेक अंग मानता हूं। मुझे गता है कि स्वयंसेवकोंमें या तो कुशलता नहीं है या लापरवाही है। अिस

ारण विशाल मानव-समूहको निराशा हुअी। हमारे कामोंमें हमें अैसी छोटी-छोटी ातोंमें भी यदि सफलता न मिले, तो हमारे लिअे यह शर्मकी बात होगी। ़जारों तो क्या, परन्तु लाखोंकी भीड़में भी हमें शान्त और व्यवस्थित रहना ाना चाहिये। यदि हम अितनी कुशलता भी अपनेमें पैदा न करें, तो आनेवाली वतंत्रताकी भी हम रक्षा नहीं कर सकते। लोकशाही शासनके तौर-तरीके त्येक स्त्री या पुरुषको अपनी जिम्मेदारीसे समझने पड़ेंगे। पंचायत राज्यका अर्थ ो मेरी दृष्टिसे यही है। शरीरमें अेक भी छोटी-सी खामी पैदा हो जाय या अेकाध ़्रयव काम न करता हो, तो सारा शरीर बेचैन हो जाता है। अिसी तरह मारा हिन्दुस्तान अैसा ही अेक शरीर है और अुसमें रहनेवाले लोग — अेक क व्यक्ति — भारतमाताके अवयव हैं; अिसलिअे यदि अेक भी मनुष्य सीधे ा पर न चले, तो हिन्दुस्तान बेचैन हो जायगा और कमजोर पड़ जायगा। सीलिअे जब मैं सभाओंमें, स्टेशनों पर या गाड़ीमें अनुशासनका अभाव देखता तब मुझे दुःख होता है। और कअी बार मैं अनुशासन पालनेके लिअे ़ता हूं। बाहर अनुशासन न हो तो हमारे निजी जीवनमें भी अनुशासन ीं आ सकता। परिणामस्वरूप हम दुःखी होंगे, कष्ट भोगेंगे और अिस ार अन्तमें मर जायंगे।

"प्रथम तो स्वयंसेवकोंको खुद पूरी तालीम लेनी चाहिये। फिर जहां ा झुंडमें अिकट्ठे होते हों वहां झुंडोंको कैसे शान्त करना, बिखेरना वगैरा ़यारीके साथ सीखना चाहिये। परन्तु अिसके बजाय स्वयंसेवक खुद ही शोर मचाते हैं और अव्यवस्था पैदा कर देते हैं। सभा चल रही हो वे लोगोंको सिखाने लगते हैं, अिससे कोलाहल बढ़ता है।

"स्वयंसेवकोंको मेरी सूचना है कि वे मुझे दुबारा दीनापुर ले जानेका जाम करें, परन्तु शर्त यह है कि लोगोंको शान्त रहना और प्रार्थनामें लेना सिखाया जाय। अब तो दिल्लीसे आनेके बाद।"

बादमें शान्ति और अैक्यके बारेमें रोजकी भांति कहा।

कुछ पत्र अिस प्रकार हैं:

[हिन्दीमें]

पटना,
१८-५-'४७

भाअी साहब,

'जनता' का लेख, जिसमें जमींदारोंकी शिकायतें हैं, अुसे साथ भेजता हूं। बिहारमें जबसे नीलवरोंका राज्य खत्म हुआ, तबसे कोअी

भी जमींदारको जैसे 'जनता' ने लिखा है, वैसा करना शर्मकी बात होनी चाहिये। अुस लेखके लेखकसे मेरी बात हुअी है। वे कहते हैं कि अुसमें कोओ अतिशयोक्ति नहीं है। आप देखें और अुचित समझें सो करें।

पटना,
१८-५-'४७

चि० . . .

यह पत्र प्रार्थनाके बाद काम करता हूं अुस वक्त लिखवाता हूं। तुमने फोटोग्राफरके लिअे तार मांगा है। तुम्हारा पत्र २५ अप्रैलका है। कुछ तो मनुने कहा ही है। अब यहां आनेके बाद रखे हुअे पत्र हाथमें लिये। अुनमें तुम्हारे पत्रका जवाब आज दे रहा हूं। अिसलिअे तार नहीं दे रहा हूं। फोटोग्राफरको भेजना ही चाहिये, अिसके लिअे मुझे अुतना अुत्साह नहीं। फिर भी तुम्हें नाराज करनेको जी नहीं चाहता। अिसलिअे तुम पर छोड़ता हूं।

लोगोंने मेहनत करके रास्ते बनाये। हुकूमत मेहनताना न दे तो अपवाद रूपमें हम दे दें, अिसमें मुझे बुराअी नहीं दिखती। क्योंकि यहां अुन्होंने आशा रखी होगी। लेकिन अिस प्रकार हम रिवाज नहीं बना सकते।

यह पत्र तुम . . . को पढ़ाओ तो काम चलेगा। फिर भी मैं लिख या लिखवा डालता हूं।

. . . के बारेमें मैं बहुत करके तुम्हें लिख चुका हूं। . . . के पत्रसे मुझे . . . के बारेमें चिन्ता हुअी। और . . . का यह सुझाव कि . . . को तुम्हारे साथ ही रहना चाहिये मुझे अच्छा लगा, अैसा नहीं कह सकता। परन्तु मैंने अुसे स्वीकार कर लिया। वह पसन्द अिसलिअे नहीं आया कि मैंने अपने मनमें जो निर्णय कर लिया था, वह अुससे टूटता है। तुम दोनोंने अिसे स्वीकार भी किया था। फिर भी . . . को मैं बिलकुल बच्चा समझूंगा, अिसलिअे यदि वह वहांका जीवन हजम न कर सके, तो अुसे बंधनमें रखना अुचित नहीं। परन्तु अिस सम्बन्धमें निर्णय तो तुम्हीं कर सकते हो। मेरी तरफसे तुम्हें छूट है, अितना मैं कह सकता हूं। और . . . को अपना स्वास्थ्य सुधारना ही चाहिये। न सुधरेगा तो सेवा कैसे करेगी?

मैं शायद २४ तारीखको यहांसे दिल्ली जाअूंगा। मनुका अेपेण्डिसाअिटिसका ऑपरेशन कराया है, यह तो तुम्हें मालूम हुआ ही होगा। वह अस्पतालमें है। अच्छी है। यहां गरमी सख्त पड़ रही है। अिस महीनेमें पहाड़ोंके सिवा हिन्दुस्तानमें चारों तरफ गरमी होती ही है। अुसे सहन करनेमें अभी तक मुझे कठिनाई नहीं आअी।

[हिन्दीमें]

पटना,
१८–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला। रोषसे भरा। अितना क्यों नहीं देखते हो कि हिन्दू और मुसलमान अिन्सानियतको खो बैठे हैं। बिहारको कभी न भूलो। दूसरे अैसे दृष्टान्त भी हैं। लेकिन मैं दलीलमें नहीं गिरना चाहता। अीश्वर हम सबको सन्मति देगा।

अुपवासके बारेमें जो लिखा वह गैरसमझसे लिखा है। जब मिलो तब समय होगा तो मुझे पूछो। अब शायद २५ तारीखको मेरा आना नहीं होगा। ३१ को तो होगा ही। लेकिन मेरी तैयारी यहांसे २४को चलनेकी रहेगी। समय ज्यादा मिल गया तो अच्छा ही है। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी।

मनुको शस्त्रक्रिया हुअी सो देखा होगा। अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१८–५–'४७

चि० . . . .

तुम्हारा खत आज मिला। रातको जवाब लिख रहा हूं। तुम बेकार बेचैन होती हो। मैंने तो तुम्हारा, तिरस्कार नहीं किया। गलत रीतिसे तुम्हें लाड़ नहीं किया, यह बात सही है। तुम्हारे खातिर कितनोंके साथ लड़ाअी हुअी, यह तुम कहां जानती हो? जाननेकी जरूरत ही क्या? . . . क्यों बुरे लगते हैं? . . . को ढूंढ़नेवाले तो वही थे न? अुसे चढ़ानेवाले भी वही हैं। अुनका अुपकार माननेके बदले दोष कैसे

निकालती हो? . . . . जो रुपया छोड़ गया अुसे पकड़ो तो दूसरेकी आशा कैसे रखती हो? अिस पैसेका मोह छोड़ो तो तुम्हारा सब ठीक हो जायगा। तुम दूर दूर रहती हो, अिससे दुःख पाती हो। तुम चंचल हो, बहुत आगे बढ़ गअी हो। और अब कोअी रोकता है तो अिसका कारण तुम ही हो। यह सब मैं न बताअूं तो कौन बतायेगा?

तुम अपना रास्ता खुद तय करने लगी हो, यह ठीक है। परंतु बेजा हठ छोड़ दोगी तो अभी और आगे बढ़ोगी और शोभायमान होगी। मैं तो अभी अितनेमें ही भटकता हूं। अीश्वर नया जन्म देगा तो सेवाग्राम जाअूंगा, नहीं तो अितनेमें ही करना या मरना है।

मनुबहनको अेपेण्डिसाअिटिसका रोग था। ऑपरेशन कराना पड़ा।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१८-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। अब तो तुम विमानवासी हो गअी हो। यह अुलाहनाके रूपमें नहीं है।

यह कैसी खूबीकी बात है कि मेरे पत्रोंसे तुम्हें पीड़ा हो, मेरे मीठे वचन तुम्हें जहर जैसे लगें? यह स्थिति तुम्हें दयाजनक क्यों नहीं लगती? 'मरा' शब्द भक्तके मुंहमें 'राम' हो गया, यह जानती हो न? अैसी ही कथा वाल्मीकि (रामायण) में है न? अिसका मूल संस्कृत भूल गया हूं। 'बापकी गाली घीकी नाली' कहलाती है। यह तुम्हारे विषयमें सच नहीं पड़ता, अिसमें कसूर मेरा ही मानूं न? अब क्या लिखूं? जो होनेका है अुसे होने दिया जाय और देखा जाय। मैं तो अखबारोंमें कुछ लिखनेवाला नहीं हूं। तुम्हें जो अच्छा लगे अुससे तुम फूलो, तुम्हें जो अच्छा न लगे अुससे तुम कुम्हलाओ, ये लक्षण डॉक्टरके हैं।

यहांके अस्पतालमें डॉक्टर भार्गवकी अेक भतीजी है। वह तुम्हारे कॉलेजमें पढ़ती थी। तुमसे ४ वर्ष नीचे थी। अुसने मनुसे कहा, "मुझे . . . कस्तूरबा ट्रस्टमें ले लें तो मैं मुफ्त काम करूं।" अिसमें कितना सत्य है, यह तो अीश्वर जाने।

मेरे विरोधी लगनेवाले वचन क्या समय समयके अनुभवके आधार पर बने हुअे नहीं होंगे? जिस बीमारको आज तुम तन्दुरुस्त मानो, अुसे कल बीमार नहीं मान सकतीं?

मैं वहां (दिल्ली) २५ वीं तारीखको पहुंचूंगा। अिस बीच तुम शिमला चली जाओ तो बहुत ठीक। २५ को अुतरना।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१९–५–'४७

बापूजीकी डायरीसे :

"आजसे सारा कार्यक्रम आध घंटा पहले करनेका निश्चय किया है। तदनुसार ३-३० बजे अुठा। ३-५० पर प्रार्थना। बंगाली पाठ। मौन-दिवस। पेट साफ किया। . . . को पत्र लिखा। साथ ही बंद किया। ५-१५ पर घूमने गया। साथमें संतोक थी। पांव धोकर दादू और नायकर जा रहे हैं, अिसलिअे अुनके साथ बातें कीं। ६ बजे मालिशमें गया। ८ बजे स्नानसे निबटा। ८-४५ पर खाना खाते हुअे किशोरलालका पत्र सुना। ९-२० पर लेटा। . . . को पत्र लिखा। जवाहरलालका पत्र डाकमें आया है। काता। कातते समय शैलेनने अखबार सुनाये। ११-१० पर कातना पूरा हुआ। पाखाने गया। १२-३० पर मिट्टी हटाअी। नारियल पीकर पत्र लिखे। . . . २-१५ पर कमलादेवी चट्टोपाध्यायसे बातें कीं। डाक देखी। . . . को पत्र लिखा। ३-३० पर पत्र लिखे: राजकुमारी, सत्यनारायणसिंह तथा महाराजा कूचबिहारको। ४-५० पर स्टेशनके लिअे रवाना हुआ। मेरे पत्रकी पहुंच देनेवाला वाअिसरॉयका पत्र बिहार सरकारके मारफत आया। बाढ़ (अेक गांवका नाम) में प्रार्थना। ट्रेन ८-३० के बजाय ९-३० पर आअी। वहांसे १० बजे मनुड़ीके पास गया। वह सो रही थी। परन्तु मेरे सिर पर हाथ फेरते ही जाग गअी। मुझे देखकर बड़ी खुश हुअी। १०-३५ पर दवाखानेसे आया। १०-५० पर सोनेकी तैयारी की। जवाहरलालका तार आया। गोपालदासका दुबारा तार आया। देर हो जानेसे शामको कुछ भी खाये बिना सो गया।"

१९ तारीखके प्रार्थना-प्रवचनसे और पत्रोंसे :

"परसों मैं दीनापुर गया था। वहां भी अैसी ही भीड़ थी। परन्तु वहां अैसी व्यवस्था नहीं थी। आज बहुत अच्छी व्यवस्था है। अिसके लिअे स्वयंसेवकोंको मैं बधाअी देता हूं। हमारे स्वयंसेवकोंका जो काम पहले था वह अब नहीं रहा। पहले तो अुन्हें यह सीखना था कि जेल कैसे भरें; और वह भी किसी पर क्रोध किये विना; और जानको जोखिममें डालकर भी सत्याग्रह करना था। क्योंकि हमें विदेशी हुकूमतको भारतसे निकालना था। अब तो हमारे देशमें हमारा राज्य है। अब स्वयंसेवकोंको दूसरी तरहकी तालीम देनी चाहिये। विदेशी हुकूमतके साथकी हमारी लड़ाअीमें हिंसा हुअी ही नहीं, अैसा मेरा कहना नहीं है। परन्तु आजके जैसी तो हरगिज नहीं हुअी। आज तो हम आपसमें लड़ रहे हैं। अिस तरह भाअी-भाअी आपसमें लड़ेंगे, तो जो आजादी आ रही है वह गायब हो जायगी।

"सच्चा प्रायश्चित्त तो यही है कि हमें अपना अपराध स्वीकार करके काममें लग जाना चाहिये। पापसे मुक्ति पानेका यह अेक ही अुपाय है। आज जो गुंडागिरी करते हैं, वे अिधर-अुधर भागते फिरते हैं। परन्तु यों कब तक छिपेंगे? ये अपराधी देर-सबेर पकड़े तो जायंगे ही। अपराधी कभी नहीं बच सकते। यदि अपराध करनेके बाद छिपकर जिया जा सकता, तब तो यह दुनिया टिक ही नहीं सकती थी। अिसलिअे जल्दी या देरसे अपराधी पकड़ाये बिना रहते ही नहीं। कोअी हिन्दू यह कहें कि हमने निर्दोष मुसलमानोंको मारकर पराक्रमका काम किया है और मुसलमान यह समझें कि हमने निर्दोष हिन्दुओंको मारकर पराक्रम किया है, तो मैं कहूंगा कि हम मनुष्य नहीं, दो पैरोंवाले जानवर हैं।

"दुनियामें वैरका बदला वैरसे लेनेमें कितना नुकसान हुआ है, यह तो हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। हमारा पुराना अितिहास भी यही बताता है। और अन्तमें हिंसा करनेवालेका हिंसासे ही नाश हुआ है। जर्मनी, जापान और अिटली जैसे देशोंका क्या हुआ? पीछेसे निर्दोषों पर छुरीसे हमला करना कायरता है। दक्षिण अफ्रीका और चंपारनका ही अुदाहरण लीजिये। वहां अहिंसात्मक लड़ाअियां लड़ी गअीं, अिसलिअे अंग्रेजोंको झुकना ही पड़ा। हम अैसी बहादुरी न दिखायें तब तक हमारा अुद्धार नहीं होगा।"

* * *

पटना,
१९-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारा पत्र कल मिला। आज मौनवार है, अिसलिअे जवाब तुरंत दे सकता हूं।

तुम्हें शाल भेजा तो कौनसा अहसान किया? तब तो तुम कुछ भेजो तब मुझे भी तुम्हारा अहसान मानना चाहिये?

विनयकी पूर्ति चाहे, वह प्रेमीका प्रेम नहीं होता।

कर्नाटककी पूरी बात नहीं समझा। मुझे फिर लिखो। क्या बहुतसी लड़कियां बिगड़ गअीं?

महाराष्ट्रका काम तुम काफी अुज्ज्वल बना रही जान पड़ती हो।

मुझे अुपवास करना ही पड़े तो तुम्हारा मेरे पास होना मुझे अच्छा लगेगा। परन्तु अच्छा लगे अिसीलिअे क्या अैसा किया जा सकता है? अुस समय मेरा और तुम्हारा जो धर्म होगा अुस पर विचार कर लेंगे। अभी अुसका विचार तक न करें। जिसका तुमने अुल्लेख किया अुतना नोटिस भी मैंने संकोचके साथ दिया है। न देता तो ठीक नहीं होता।

गाडगिल जो खबर लाये वह गलत है। स्त्रियोंके विरुद्ध अुपवास करनेकी बात मुझे सूझती ही नहीं। अुपवासके विचार मनसे निकालकर तुम अपने काममें जुटी रहना।

डॉक्टर गिल्डर डॉक्टरी दृष्टिसे यही कहेंगे कि मेरी दृष्टि स्पष्ट है। गीताजीके दूसरे अध्यायका जो श्लोक शामको हम रोज रटते हैं, वैसा स्थितप्रज्ञ जो मनुष्य हो जाय वह १२५ वर्ष जरूर जियेगा। अीशोपनिपद्में 'शत' शब्द है। अर्थ हमारा है। अुसका अर्थ ९९ + १ नहीं, अुसका अर्थ १२०, १२५ या १३० वर्ष है। मैंने तो बम्बअीमें १९४२ के अगस्तकी ७ तारीखको १२५ वर्ष तक जीनेकी बात कही थी। यही कहा करता हूं। परन्तु यदि मैं अपना काम-क्रोध न जीत सकूं, तो मुझसे १२५ वर्ष तक जिया ही नहीं जा सकता। जीनेकी अिच्छा भी छोड़ देनी चाहिये। अिस प्रकार मेरी अिच्छा शर्तवाली है!

बापूके आशीर्वाद

पटना,
१९-५-'४७

. . . तुम्हारा पत्र मिला। तुमने लिखनेमें बड़ा परिश्रम किया, यह पसन्द नहीं आया।

मैं जो विचार रखता हूं अुन्हें जिस ढंगसे तुम सुझाते हो अुस ढंगसे मैं पेश करना नहीं चाहता। मुझे जल्दी नहीं; अवकाश नहीं। वे जैसे हैं वैसे मैं अुन्हें रहने देना नहीं चाहता। परन्तु मैं यह नहीं मानता कि संसार अिससे कुछ खोयेगा, या मैंने कुछ खोया है। मैं पुनर्जन्ममें विश्वास रखता हूं। अिस जन्ममें जो कुछ सुधरना रह जायगा, वह दूसरे जन्ममें सुधरेगा। अिस जन्ममें पूरा प्रयत्न करनेका धर्म मैं स्वीकार करता हूं। अनेक जन्म हैं, अिसलिअे आलस्य करना गलत वचन समझता हूं।

यदि मैं अच्छा न लगनेवाला आचरण करूं, तो अुसे अब तुम सहन नहीं कर सकते। यह वचन वापस लेने जैसा है। मैं झूठ बोलूं तो तुम्हें आघात नहीं लगेगा? मैं मनुष्य-हत्या करूं तो? अिस विचारमें तुम्हें दोष नहीं दीखता?

तुम जिन लोगोंको अिस विचार पर न्याय करनेका काम सौंपना चाहते हो, वे यह काम हाथमें लें अैसे नहीं हैं। मैं तो अुन पर यह भार कभी न डालूंगा। यह कैसे कहा जा सकता है कि वे जो भी नीति-शासन बतायेंगे, वह गलत नहीं होगा? तुम पर तो यह कथन लागू नहीं होता। और मुझ पर मेरा अपना ही शासन लागू हो सकता है। अिस प्रकार हम दो जहां थे वहीं रहें। संसारके सामने निस्सार बातें रखकर क्या होगा? सौभाग्यसे अैसा कुछ होगा नहीं। अपनी रीतिके अनुसार वे अपने विचार पेश करते ही हैं। अिस अेक बातमें नहीं किये, यह सच है। परन्तु अिससे क्या?

हमारे बीचकी चर्चा मैं अपनी अिच्छासे बन्द नहीं करना चाहता। . . . के वचनमें मैं तथ्य पाता हूं। परन्तु मैं जब तक तुम लिखते रहोगे तब तक आनंदपूर्वक लिखता रहूंगा। अिससे भी तुम्हें कुछ संतोष दे सकूं तो मुझे अच्छा लगेगा। तुम सब साथियोंकी मुझे गरज तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

* * *

[हिन्दीमें]

पटना,
१९-५-'४७

. . . आपका खत मिला। ग्रीनविच साहबके बारेमें क्या कह सकता हूं? सब आदमी अपने-अपने हेतुके कारण लिखते हैं। कोअी मुझे गाली देते हैं, कोअी मेरी तारीफ करते हैं। अिसमें मैं क्या कहूं?

आपका
मो० क० गांधी

पटना,
१९-५-'४७

. . . को तुम्हारा १३ तारीखका पत्र कल मिला। आज पढ़ सका। मैंने पहले लिखा था सो पढ़ा। मुझे याद था। परन्तु जिस ढंगसे काम हो रहा है अुसे देखते हुअे अिसे स्वतंत्र चलने देना अधिक ठीक होगा। मूल ट्रस्टका कुछ भी हो, तो भी अुरुली टिका रहे तो अच्छा। और सारा आधार तो . . . भाअी पर है। यह देखते हुअे अुसे अलग होने देना अच्छा लगता है। अितने पर भी अुसमें हम मूल ट्रस्टी तो रहेंगे ही। अिसलिअे हमारे मुद्दोंकी रक्षा हो सकेगी। . . . के और तुम्हारे बीच मतभेद हैं, यह अुन्हें जानना था। अैसा तो होता ही रहेगा।

पंढरपुरका काम भी स्वतंत्र करनेमें मैं बुराअी नहीं देखता। अैसा करते हुअे कहीं भी विश्वविद्यालय (प्राकृतिक चिकित्साका) खड़ा होना होगा तो हो जायगा। मैं अुसकी आशा नहीं रखता। आदमी ही कहां हैं? न प्राकृतिक चिकित्साकी पाठशाला है, न कोअी विद्यालय है। अुसके बिना विश्वविद्यालय कैसे हो सकता है? मैं मानता हूं कि तुम पंढरपुरके काममें लग जाओ तो अिससे ट्रस्टको कोअी हानि नहीं होगी। क्योंकि अेक भी जगह तुम स्थिर हो सको तो मैं अुसे ट्रस्टका काम हुआ मानूंगा। तुम्हें अिस मामलेके कागजात या ब्यौरा भेजना हो तो भेज दो।

मेरा खयाल है कि तुम जिस ढंगसे नैसर्गिक अुपचारमें सफल होगे, अुसका लाभ ट्रस्टको जरूर होगा।

तुम गुजराती तेजीसे न लिख सको, यह कैसे चल सकेगा? अिसके विना गांवोंका काम कैसे होगा? तुम पर दया करके अंग्रेजीमें लिखनेको जी होता है, मगर अिसे मैं सच्ची मित्रता नहीं मानूंगा।

मांजीकी वात समझा। २५ तारीखको दिल्ली पहुंचूंगा।

वापूके आशीर्वाद

कांग्रेस कमेटीके वजाय पीस कमेटी — शांतिसभाका — नाम दिया गया। अिस वारेमें . . . के मंत्रीको (हिन्दीमें):

पटना,
१९–५–'४७

तुम्हारा खत आज मिला। सभा तो कल हुअी होगी। सफलतापूर्वक समाप्त हुअी होगी। मैं जानता हूं कि हमने नाम वदलकर वड़ा कदम अुठाया है। कैसा अच्छा होगा अगर हम अपने कामसे नामके लायक वनें!

पटना,
१९–५–'४७

चि० . . .

मेरा खयाल था कि कलकत्तेके वैंकमें कुछ रुपये पड़े हैं। परन्तु मैं देखता हूं कि वे सव अुठाकर वहां रख दिये गये मालूम होते हैं। अिसलिअे ३६ हजारका चेक मेरे खातेमें से वादशाहखानको मकान वनानेके लिअे भेज देना। (खानसाहवके गांवमें पाठशाला वनवानेके लिअे वापूजीके पास दानका रुपया है। अुसमें से खानसाहवके पाठशालाकी जरूरत वताने पर वापूजीने तुरंत भेजनेका प्रवंध किया।)

तुम्हें शक्ति आ रही होगी और वीमारी तो मिट ही गअी होगी। मैं यहांसे २४ तारीखको दिल्लीके लिअे रवाना होअूंगा। दिल्ली सातेक दिन तो रहना ही होगा। शायद ज्यादा भी रहना पड़े।

अूपरका भाग सवेरे लिखवाया था। लगभग दो वजे वहांकी डाक मिली। अुसमें तुम्हारा पत्र देखा। वीमारीमें भी आवश्यक ज्ञान वढ़ा रहे हो, यह वहुत अच्छा लगता है। 'अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिंतयेत्' यह वाक्य पहले कअी वार लिख चुका होअूं

तो भी याद करने लायक है। अर्थ जानते ही होगे। नहीं तो . . . से पूछ लेना। वे जानते हैं।

बापूके आशीर्वाद

पटना,
२०–५–'४७

बापूजीकी डायरीसे :

"प्रार्थनाके बाद बंगाली पाठ। बिसेनसे बातें कीं . . . के संबंधके बारेमें। 'हरिजन' के लिअे आये हुअे प्रश्नोंमें से अेकका जवाब लिखवाया। घूमने गया। साथमें मदु थी। मालिश-स्नान। घूमते वक्त 'हरिजन' के लिअे थोड़ा-सा लिखवाया। आकर लेटा। महेश आया है। १०–२० पर जागकर डाब (नारियल) पिया। लिखने बैठा। मृदुलाके साथ बातें। पाखाने गया। काता। कातते हुअे शैलेनने अखबार सुनाये। १०–५० पर मिट्टी लेकर सोया। ११–३० पर जागा। 'हरिजन' के लेख जांच गया। डाक देखी। सुरेन्द्र व आनंद हिंगोराणीके पत्र आये हैं। डाक पढ़कर अुत्तर लिखवाये। ३–१० पर जमींदारोंका शिष्ट-मंडल मिल गया। खाकसारोंसे मिला। ४–१० पर मनुड़ीसे मिलने दवाखाने गया। वहांसे सीधा स्टेशन गया। हिल्सामें प्रार्थना। शाहनवाज साथ थे। १०–३० के बाद सोया।"

कुछ हिन्दी पत्रोंमें से :

पटना,
२०-५-'४७

. . . आपका खत मिला। परम शांति कैसे मिल सकती है, यह पाठ हम सबके लिअे है न?

पटना,
२०–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा १६ का खत मिला है। अुसके पहले अैसा कोअी खत नहीं मिला है, जिसमें कौशांबीजीके शरीरका मृत्युके बाद क्या करना अैसा पूछा हो।

लेकिन आज . . . का खत है। अुसमें सब विगत दी है। कौशांबीजी आखिरका निर्णय हम पर छोड़ते हैं, तो अग्नि-संस्कार ही सबसे अच्छी क्रिया है। यह बात जगतमान्य हो रही है। अुसमें खर्च

भी ज्यादा नहीं है अथवा न होना चाहिये। दफन करनेमें या शास्त्रीय तरीकेसे करें तो काफी खर्च होता है। बाकी चीजें जो अुन्होंने लिखवाअी हैं पाली (पालीभाषा) अित्यादिके बारेमें, अुनका अमल होगा ही अैसा अुनको कहा जाय। मेरी अुनसे प्रार्थना है कि अब अैसी बातोंको भूल जायं और अन्तरध्यान होकर देह छूटनी है तो छूटे, रहनी है तो रहे। अुनसे यह भी कहो कि पाली भाषा तो लंकामें सीखी जायगी। लेकिन बौद्ध धर्म सीखनेका क्षेत्र लंका है, अैसा मेरा दिल नहीं मानता। बौद्ध धर्मकी अूपरी बात जाननेसे रहस्यका ज्ञान नहीं होता है।

पटना,
२०–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला। अच्छा लगा। . . . वे अगर तुमको आश्रमकी सेवासे बचा सकें तो माताको मिलनेके लिअे जाओ। और काकासाहबके पास भी। . . .

पटना,
२०–५–'४७

चि० . . .

तुम्हारा खत मिला। कौशांबीजीके बारेमें . . . को पत्र लिखा है सो देखो। अस्पतालके बारेमें समझा। फिर भी . . . के साथ बात करनेका तुम्हारा धर्म है। कौशांबीजीकी मौजूदगीमें तो तुम्हारे आश्रम छोड़ना नहीं है। तुम्हारा कहना यह है कि नैसर्गिक अुपचारकी मर्यादा है, अर्थात् जिस आदमीके पैरकी हड्डी टूट गअी है अुसका पैर काटना या नया लगा देना वह नैसर्गिक अुपचारके बाहरकी बात हुअी। अेपेंडिसाअिटिसका भी अैसा है क्या? यह दूसरी बात है कि जिसकी हड्डी टूट गअी है वह बगैर पैरका रहे और जो दुःख हो अुसे बर्दाश्त करे। यह अेपेंडिसाअिटिसवाला मरने तक जाय?

नैसर्गिक अुपचारकोंमें अराजकता है, अिसका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तानमें दो अुपचारक अैसे नहीं हैं जो अेक मतके हों। सब अपने अपने गुमानमें पड़े हैं। ज्ञानमें वृद्धि करनेका सोचते भी नहीं हैं। अिस

स्थितिका नाम अराजकता है। अराजकताका अर्थ अव्यवस्था कह सकते हो। अब मैं समझा सका हूं क्या ?

वापूके आशीर्वाद

खेड़ा जिलेके अेक ग्रामसेवक भाअीको लिखा :

पटना,
२०-५-'४७

चि० . . .

तुम्हारा पत्र बहुत दिनोंमें आया। पढ़कर खुशी हुअी। बारह वर्ष अेक ही जगह पूरे होंगे, अिसे धन्य घड़ी समझता हूं। अिसलिअे तुमने 'तिलक करने आअी हुअी लक्ष्मीको वापस नहीं लौटाया' यह ठीक किया। बिना मांगे रुपया मिला, अिससे चिन्ता क्यों बढ़े? यह रुपया (कार्यकर्ताको) नहीं मिला, परन्तु अुसके कामको मिला है। यह काम यदि भगवानका था तो भगवानको मिला, और भगवानके दासके रूपमें अुसका अुपयोग कर लिया जाय। बोरियावीके ही जो लड़के या लड़की अछूत अथवा अुनके नजदीक माने जायं अुनके लिअे काममें लिया जाय। भले वह पैसा धीरे धीरे काममें लिया जाय; अथवा जल्दी परन्तु नियमानुसार खत्म हो जाय। मैं तो नअी तालीमका पुजारी हूं। अिसलिअे मुझे तो यही सूझेगा कि नअी तालीमके ढंग पर ही शिक्षा दी जाय।

. . . और . . . भाअी तुम्हारे पास हैं। वे जैसा सुझायें अुसके अनुसार करना तुम्हारा धर्म है। अिसीसे तुम्हारी तटस्थता कायम रहेगी।

मुझसे मिलनेकी अिच्छा हो, यह समझ सकता हूं। परन्तु अिस अिच्छाको रोकनेसे अुसकी पूर्ति होती है। सहज ही मिलना होगा तब मिलेंगे ही। सेवाग्रामकी तरफ मेरा आना तो नया जन्म लूं तभी होगा। नया जन्म अर्थात् यहां नोआखाली और कलकत्तेका काम पूरा हो जाय अथवा अिसके पूरा होनेमें शरीर चला जाय तभी यह क्षेत्र छूटेगा। अैसा क्षेत्रसंन्यास है। यह खटकता नहीं, अच्छा लगता है। क्योंकि अिसे मैं अपना धर्म समझता हूं।

जिन्ना साहबके साथ (अपील पर) हस्ताक्षर किये हैं, अिसलिअे क्षेत्र शायद बढ़ जाय तो अिनकार नहीं किया जा सकता। मैं मानता हूं कि अिसमें सब कुछ आ जाता है।

तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है, यह तुम्हारे लिये शोभास्पद वस्तु है। मैं २४ तारीखको दिल्ली जा रहा हूं। वहां अेक सप्ताह तो लगेगा ही।

वापूके आशीर्वाद

पटना,
२१–५–'४७

वापूजीकी डायरीसे :

"प्रार्थनामें भजन नहीं गाया गया। लिखाये हुअे पत्रों पर हस्ताक्षर किये। . . . को पत्र लिखे। ५–१० पर घूमने गया। मदु साथ थी। खाते समय . . . के पत्र पढ़वा लिये। ९ वजे शाहनवाजके साथ वातें कीं। रावलपिंडीकी खवरें दीं। हिन्दू शरणमें चले गये। १०–३० वजे सोया। डाव पिया। अरुणांशुका वंगाली पत्र पढ़नेका प्रयत्न किया। वालका पत्र आया है। काता। अखवार सुने। १२–१० पर मिट्टी ली। डॉक्टर साहवके साथ वातें। डाक लिखी। खाकसारोंको अुत्तर लिख दिया। २–१५ पर कृष्णवल्लभवावू मिलने आये। ३–४५ पर जनरल स्टेवल और अुनके अे० डी० सी० मिलने आये। ४ वजे जमानत पर छूटे हुअे दो पुलिसवाले मिल गये। ४–१५ पर गुड़ खाया। अनुग्रहवावू (गृहमंत्री) आये। सरयूप्रसाद भी मिल गये। ४–४५ पर मनुसे मिलने अस्पताल गया। वहांसे मोटरमें विक्रम गया। प्रार्थनाके वाद ८–२० पर लौटा। मंत्रि-मंडल — श्रीवावू, कृष्णवल्लभ सहाय, अनुग्रहवावू, विवेकानंद झा और अन्सारी मिल गये।

"दूध नहीं पिया। अंगूर खाये। देवका लिखा हुआ प्रवचन देख लिया। १० वजे सोया।"

प्रार्थना-प्रवचनमें कांग्रेसियोंको चेतावनी दी :

"आजके अिस प्रचंड जनसमुदायके वावजूद आपने प्रार्थनामें शांतिपूर्वक भाग लिया और रामधुन तालवद्ध चलाओी, अिसलिअे आप वधाओीके पात्र हैं।

"फिर चारों तरफ लोगोंके पागल हो जाने पर भी अिस गांवमें आपने औरोंकी तुलनामें दिमागका काफी सन्तुलन कायम रखा, अिसके लिअे भी मैं आपको मुवारकवाद देता हूं।

"मुझे आज तो दूसरी ही बातें कहनी हैं। मेरे पास बहुतसे प्रान्तों और देशोंसे भले माने जानेवाले लोगोंके पत्र और शिकायतें आअी हैं कि सन् १८८५ में अेक छोटेसे आरम्भके परिणामस्वरूप अनेक कुरबानियां, बलिदान और कष्ट सहन करके कांग्रेसकी अेक महान संस्था बनी है। अिस कांग्रेसका अितिहास कितना अुज्ज्वल है? परन्तु आज जब शासनकी सत्ता हाथमें आ रही है तब अुनमें (कांग्रेसियोंमें) से ये गुण नष्ट होते जा रहे हैं। और अब कांग्रेसी खुद ही अधिकारी बननेके लिअे स्पर्धा करते हैं। अित्यादि।

"यदि यह बात सच हो तो हमें खूब शरमाना चाहिये और मुझे स्पष्ट कहना चाहिये कि स्वतंत्रताका जो अमूल्य रत्न हमारे हाथमें आ रहा हैं, अुसे हम खो बैठेंगे। स्वराज्यकी रक्षा करनेके लिअे हमें फिर ककहरेसे पढ़ना पड़ेगा। स्वराज्य लेनेका पाठ तो हमे मिला, परन्तु अुसे टिकाये रखनेका पाठ हमने नहीं सीखा। हमारी राज्यसत्ता अंग्रेजोंकी तरह बन्दूकोंके जोरसे नहीं निभ सकती। अनेक प्रकारके त्याग और तपश्चर्याके द्वारा कांग्रेसने जनताका विश्वास संपादन किया है। परन्तु यदि आज कांग्रेसवाले जनताको धोखा देंगे और सेवा करनेके बजाय अुसके मालिक बन जायेंगे तथा मालिककी तरह व्यवहार करेंगे, तो मैं शायद जीअूं या न जीअूं, परन्तु अितने वर्षोंके अनुभवके आधार पर यह चेतावनी देनेकी हिम्मत करता हूं कि देशमें बलवा मच जायगा, सफेद टोपीवालोंको लोग चुन चुनकर मारेंगे और कोअी तीसरी सत्ता अिसका लाभ अुठा लेगी।

"बिहारमें तो मैं हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नको हल करनेके लिअे आया हूं, परन्तु ये सब सवाल अेक-दूसरेके साथ खूब गुंथे हुअे हैं। अिसलिअे अिन प्रश्नोंकी चर्चा करना मेरा धर्म हो जाता है। कांग्रेसके बहुतसे भाअी-बहन मेरे साथी हैं, मेरे पुत्र-पुत्रीके समान हैं और मित्र तो हैं ही। अिसलिअे मुझे अिस संबंधके प्रति वफादार रहना हो, तो अुन्हें ये सब बातें मुझे कहनी ही चाहिये। अैसे दावपेंच छोड़कर सारे भारतकी अेकता कायम रखते हुअे गांव-गांव, घर-घर, कोअी नंगा-भूखा न हो, कोअी निरक्षर न हो, कोअी बेघरबार न हो, अिसकी कांग्रेसके प्रत्येक कार्यकर्ताको बारीकीसे जांच करके यह प्रश्न हल करना चाहिये और अिस प्रकार भारतको समृद्ध बनाना चाहिये और सेवाकी संस्कृतिको शिखर पर पहुंचाना चाहिये। अिस संस्थाके तमाम

भाओी-वहनोंका यह धर्म है। अैसा करेंगे तो ही यह संस्था टिकेगी और दुनियाके लिअे मार्गदर्शक वनेगी।"

. . . को (हिन्दीमें) लिखा:

चि० . . .

तुम्हारे अक्षर देखकर खुशी हुअी, लेकिन . . . और . . . के क्यों नहीं हैं? . . . के वारेमें समझ सकता हूं। शारीरिक दर्दसे घिरी हुअी कैसे लिख सकती थी? मुझे डर ही था कि . . . को ऑपरेशनका दर्द काफी होगा, क्योंकि अुसने दर्दको वहुत वढ़ने दिया। अगर तवीयत अच्छी हो जायगी तो दुःखको भूल जायगी और दुःखका कड़ा अनुभव सुखकी मात्रा वढ़ा देगा। अिसीका नाम संसार है न? अिसी तरहसे मानसिक सुखका भी है। पाप मानसिक दुःख है, पुण्य मानसिक सुख है। अिसीलिअे अंग्रेजी कहावत है कि 'महापापी महापुण्यशाली हो सकता है।' वशर्ते कि महापापी प्रायश्चित्तरूप कड़ा ऑपरेशन करता है।

माताजीको पूना वुला लिया। और . . . को तुम्हारे साथ रखना मुझे अच्छा लगेगा। फिर भी देखो धर्म क्या वताता है? मेरा शरीर अव तक तो काम दे रहा है। गरमी सख्त है, लेकिन मुझे वहुत नहीं सताती है। वीचमें कभी थोड़ा पानी आ जाता है तो अेक दिन थोड़ी ठंडक मिलती है।

मनुको अेपेण्डिसाअिटिसका ऑपरेशन करवाना पड़ा। वह अस्पतालमें है। अच्छी है। नैसर्गिक अुपचारके वारेमें मैं जो गर्व करता था वह ढीला पड़ गया। देखें ओीश्वर मुझे कहां ले जायगा?

पच्चीस तारीखको मैं दिल्ली पहुंचता हूं। कमसे कम अेक हफ्ता तो रहना होगा। वादमें पटना या कलकत्ता।

मेरी वड़ी वहनके वीमार होनेकी खवर मेरे पूज्य पिताजीने दी। अिस लिअे वापूजीने डॉ० . . . को सिफारिशका पत्र लिखा:

भाओी . . .

चि० संयुक्ता मेरी पौत्री होती है, चि० मनुकी सगी वहन और मेरे भतीजे जयसुखलाल गांधीकी लड़की। वहुत समयसे वह पीड़ित

रहती है। आप और डॉ० जीवराज मेहता अुसकी जांच करके कुछ हो सकता हो तो वताअिये। मेरा खयाल है कि आपने अेक वार अुसकी जांच की है। पता नहीं डॉ० मेहता वहां हैं या नहीं। यह पत्र आपको ही लिख रहा हूं। भरसक कोशिश कीजिये। चि० संयुक्ताके पति फीस दे सकनेकी स्थितिमें हैं। अिसलिअे फीस लेना हो तो ले लीजिये। आप अपने सार्वजनिक कामोंसे फुरसत पा सकते हैं या नहीं, अिस डरसे अैसा पत्र हो तो आप तक पहुंचा जा सकता है। अिसीलिअे यह सिफारिशी पत्र है। आप सव आनन्दमें होंगे।

मेरी वहनको लिखा :

चि० संयुक्ता,

जयसुखलालका तार आया है। मनुके साथ वात भी की। तुम्हें कफमें वहुत खून गया अिसलिअे जयसुखलालको चिन्ता हो गअी है। मूल पत्र डॉ० गिल्डरको भेज रहा हूं। अुसकी नकल अिसके साथ है। तुम दोनों डॉ० गिल्डरसे समय मांग कर वहां पहुंच सकते हो। अिससे लाभ होगा या नहीं यह तो दैव जाने।

जहांसे आश्वासन मिल सके वहांसे लेना शायद धर्म हो सकता है। रामवाण दवा तो जगतमें अेक ही है। वह है रामनाम; और नाम रटनेवालेके अधिकारके संवंधमें जिन नियमोंका पालन करना चाहिये अुन नियमोंका पालन। परन्तु यह रामवाण दवा हम सव कहां कर सकते हैं? मनुके लिअे मैं कहां धीरज रख सका? और मेरा धीरज किस कामका? मेरे हाथमें आअी हुअी लड़कीको मैं मरने तो नहीं दूंगा। राम अुसके हृदयमें कहां तक वसे हैं, अिसका पता मुझे कैसे लगे? अिसलिअे मैंने अपनी अधीरता यहांके डॉक्टरोंको वताअी और अुन लोगोंने ऑपरेशन करनेकी सलाह दी। अुसी दिन ऑपरेशन कराया। अव वह अस्पतालमें है। अच्छी है। २३ तारीखको मेरे साथ दिल्ली जायगी। दिल्लीमें कितने दिन ठहरूंगा, यह तो भगवान जाने। तुम्हारा तार मिला। अुसका जवाव तारसे नहीं दिया। (मेरे ऑपरेशनकी खवर मेरी वहनने अखवारमें पढ़ी थी, अिसलिअे स्वास्थ्यके समाचार जाननेको वापूजीके नाम अुन्होंने तार किया था।) क्योंकि तुम्हें

मनुका पत्र मिल गया होगा। खून गिरने पर भी तुम शान्त होगी। बहादुरीसे सामना करती होगी और तुम्हारे पति भी धीरज रखते होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गांधी कैम्प, पटना,
२२–५–'४७

मैंने पूज्य बापूजीके पत्रोंके आधार पर और पूज्य बापूजीकी डायरी और प्रवचनोंके आधार पर पांच दिनकी अपनी डायरी पूरी की। आज अस्पतालसे घर आ गअी। शामको ५–३० बजे बाद पूज्य बापूजी प्रार्थना-सभामें फतेहपुर गये हैं। मैं आजकी यह डायरी लिख रही हूं। थकान न मालूम हो, अिस तरह थोड़ी-थोड़ी डायरी लिखी जा रही है। अभी पूरे टांके नहीं तोड़े हैं। कमजोरी भी है ही। बहनकी बीमारीकी खबरसे भी बड़ी चिन्ता होती है। मुझे अस्पतालमें जरा भी अच्छा नहीं लगता था। डॉक्टरों और बापूजीने मुझसे वचन लिया है कि घर आराम लूंगी, जरा भी नहीं अुठूंगी। अिसलिअे मुझे घर ले आये हैं।

ठीक ४ बजे मुझे कुर्सीमें बिठाकर नीचे ले गये। जानेसे पहले डॉ० भार्गव साहब मुझे कुछ बीमारोंके पास भी ले गये थे।

हाअुस सर्जन भार्गव साहब और अन्य तीन डॉक्टर तथा डॉ० लज्जा-वतीबहन मुझे छोड़ने आये। बेचारी नर्सें और सिस्टर तो रो पड़ीं। ये सब छह बजे आयेंगे। बापूजी मुझे देखकर खुश हो गये। मैंने अुनके चरणोंमें प्रणाम किया। बापूजीने आदतके अनुसार जोरसे धप न लगाकर धीरेसे सहलाकर कहा: "अभी धप खानेकी शक्ति कहां है?" मेरा पलंग अपनी बैठकके सामने ही डलवाया। मैंने कहा, आपसे कअी लोग मिलने आते हैं। यहां आपकी मीटिंग होती रहे और मैं पलंग पर सोअी रहूं तो यह शोभा देगा?

बापूजी बोले, "बीमार होना ही अशोभनीय बात है। बादकी सब बातें गौण हैं। तुम्हारा पलंग मेरे सामने हो तो मैं सब तरहसे निश्चिन्त रह सकूंगा। नहीं तो तुम कामकाज करने अुठोगी ही। सबके सामने सोना अच्छा न लगे तो बीमार न पड़नेकी भी तो शर्त होनी चाहिये न? अपनी बीमारीके लिअे तुम कम अपराधी नहीं हो।"

(अितनी डायरी लिखकर थकान मालूम होनेसे रख दी थी। वाकीकी रातको ९ वजे लिख रही हूं।)

६–३० के वाद नर्सें आअीं। वाकीके दो टांके भार्गव साहवने तोड़े। अुन्होंने और अुनकी भतीजी लज्जावहनने वड़ी लगनसे मेरी देखभाल की।

निर्मलदा अचानक आ गये। मैं तो खुश हो गअी। मदालसावहनने मेरे लिअे खिचड़ी वनाअी थी। वह शामको खायी। वापूजीके आने तक निर्मलदाके साथ खूब वातें कीं।

वापूजी प्रार्थनासे ८–३० के वाद आये। आकर मेरे पलंग पर वैठकर अुन्होंने अंगूर खाये। अंगूर खाते खाते मेरे साथ विनोद किया और कुछ वातें कीं :

"मुझे तुम्हारे विना अच्छा तो नहीं लगता था। परन्तु तुम परसे मुझे वहुत गहरा अध्ययन करना है। मुझे अेक पाठ मिला है कि रामनामसे तुम्हें मैं क्यों अच्छा न कर सका? प्राकृतिक चिकित्सामें भी कहीं न कहीं खामी होगी ही। मैंने जयसुखलाल, संयुक्ता और अन्य कअी लोगोंको पत्र लिखे। अुनमें मेरे मनके सारे भाव अुंड़ेल दिये हैं। अिसीलिअे वे सव पत्र और अपनी डायरीमें जो विचार मैंने प्रगट किये हैं अुन्हें देखनेको तुम्हें खास तौर पर कहा था। परन्तु मुझे तुम्हें खोना नहीं था। और दस दिनका समय मिल रहा था। अिस तरह लगातार दस दिन आजके समयमें वहुत कम मिलते हैं। डॉ० भार्गवकी सलाह हुअी कि ऑपरेशन यदि तुरंत न करेंगे तो लड़की चली जायगी। मैं जानता हूं कि तुम चली जाती तो तुम्हारा पिता मुझे कुछ भी न कहता। वल्कि शायद प्रसन्न होता। क्योंकि अुसकी मुझ पर असाधारण श्रद्धा है। और तुम तो मैं कहता वैसा ही करती रहतीं। परन्तु मुझे सौंपी हुअी लड़कीको अिस तरह मरने देनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। अितना मेरा मोह कहो या कमजोरी, परन्तु अुस हद तक मैं न पहुंच सका, यह सत्य है। पिछले आठ दिनोंमें जवसे मैंने तुम्हें अपनेसे अलग करके अस्पतालमें रखा, तवसे यह विचार मैं सोते-जागते रात-दिन करता रहता हूं कि अीश्वर मुझसे अभी क्या क्या करायेगा? मैं कहां हूं? मुझे क्या करना चाहिये? तुम्हें तो यह सव अिसीलिअे कह रहा हूं कि तुम भी विचार करो कि रामनामसे मैं क्यों अच्छी नहीं होती। मेरा तो विश्वास है कि जो हृदयसे रामनाम लेता है, जो विलकुल निःस्वार्थ है, जो फलकी

आशा रखे बिना कर्तव्य करता रहता है, अुसके पास बीमारीके लिअे स्थान नहीं हो सकता। अुसका प्राणपखेरू भी मुखसे राम-राम जपते हुअे ही क्षण-भरमें अुड़ जाता है। अुसे कष्ट सहन करते करते मरना नहीं पड़ता। मुझे किसी समय १२५ वर्ष जीनेकी लगन थी। आज वह नहीं है। अिसके कअी कारण हैं। परन्तु अितना तो कहूंगा कि राम-रटन करते करते 'मृत्यु-मित्र' से बहादुरीके साथ मिल सकनेका मेरा प्रयत्न जारी है। अिस प्रयत्नमें अभी कचाअी है। तुम्हारा ऑपरेशन ही अुसका सबूत है। परन्तु मैं यदि कष्ट सहन करके मरूं तो तुम्हें दुनियाको पुकार पुकार कर कहना चाहिये कि यह दंभी महात्मा था। अगर तुम अिस तरह मेरी कलअी न खोलो तो मैं जहां जाअूंगा वहां दुःखी होअूंगा। परन्तु रामनाम लेते हुअे मृत्यु आवे तो समझ लेना कि नहीं, अिस बापूमें कुछ था; अथवा लोगोंने मुझे 'महात्मा' बना दिया तो अुस लोक-भावनाके प्रति वफादार रहनेकी अीश्वरने मुझे शक्ति दी।"

अंगूर खाते खाते — यह सारी बात बापूजीके हृदयमें भरी होगी अिसका तो मुझे जरा भी खयाल नहीं था — यह बात मुझे खूब गंभीरता-पूर्वक कही। आजकल बापूजी अपनी मृत्युके बारेमें समय-समय पर अिस तरहकी बातें कह देते हैं। नाथजीके बिहार आनेके बाद तो बापूजी बहुत हलके हो गये हैं और यही कहते हैं कि "मेरी श्रद्धा अुत्तरोत्तर दृढ़ होती जा रही है। मैं अपने अिस यज्ञकी बात किसीको समझा नहीं सकता, परंतु जीवनमें यह अेक अद्वितीय यज्ञ है।" यह यज्ञ कितना पवित्र है, अिसके सबूतमें अिस बातका हवाला बापूजी मुझे समय-समय पर देते रहते हैं कि अुनकी मृत्यु कैसे होगी।

अिसके सिवा, अस्पतालमें मुझसे मिलने आनेवाले कार्यकर्तानें चौकीदारसे जो बरताव किया था, अुसकी बात भी प्रवचनमें कही।

बापूजीने . . . को लिखा:

> ४–४५ पर मनुड़ी आ गअी। डॉक्टर भी आये। चि० मनुका पलंग मेरे ही कमरेमें मेरी बैठकके सामने रखवाया। मनुड़ीके पास थोड़ी देर बैठा। . . . ८३–० पर वापस आया। मनुड़ीके पास अुसके पलंग पर बैठकर ही अंगूर खाये।

वापूजीके पत्रोंमें भी शब्द-शब्दमें वात्सल्य झरता है। आज अुन्होंने मुझसे अंगूर खाते खाते जो वातें कहीं, अुनमें अुनकी आवाजसे अैसी ध्वनि निकलती थी, मानो मेरी वीमारी अच्छी न कर सकनेमें अुनका वड़ा अपराध हो।

आजकी फतेहपुरकी प्रार्थना-सभामें वापूजीने कहा:

"आजकल मैं रोज आसपासके अलग अलग गांवोंमें प्रार्थना करने जाता हूं, परन्तु मेरा स्वागत करनेके लिअे लोग रास्ता रोककर खड़े रहते हैं। अैसा करनेसे लोगोंको और मुझे दोनोंको काफी तकलीफ होती है। अिसलिअे यदि वे शान्तिपूर्वक खड़े रहें तो हम दोनोंको परस्पर लाभ होगा।

"मुझे अेक सवाल पूछा गया है कि निराश्रितोंको फिरसे वसानेमें वहनोंको क्या मदद करनी चाहिये?

"अिस प्रश्नका अुत्तर तो मैं अनेक वार दे चुका हूं। हिन्दू वहनें मुस्लिम वहनोंके पास जायं, क्योंकि हिन्दू वहनें मुसलमान वहनोंकी तरह परदानशीन नहीं होतीं। मैं तो कहूंगा कि अिस जमानेमें वाहरी परदा किसी भी कामका नहीं। दिलमें परदा रखिये। लाज-मर्यादा रखो और मनको संयमित रखो, यही अिस परदेका मतलव है। वहनोंका दुःख-सुख वहनें समझ सकती हैं। और वहनें केवल प्रेम और सेवासे अेक-दूसरेका हृदय जीत सकती हैं; अैसी शक्ति अुन्हें कुदरतने दी है। अिसलिअे वे अुसका पूरी तरह अुपयोग करें।

"अेक और वात भी मुझे आपसे कहनी है। अभी पटनाके अस्पतालसे वापिस आअी हुअी मेरी पौत्रीने मुझे जो हाल वताया वह आपको सुनाअूं। वह घटना दुःखद है। कोअी खादी पहना हुआ आदमी अपनेको कांग्रेसी वताकर असमय अुससे मिलना चाहता था। अुसे आराम मिले अिसलिअे डॉक्टरोंने अेक चौकीदार रखा था, क्योंकि अिस लड़कीको देखने वहुत लोग जाते थे। चौकी-दारने अुसे अन्दर जानेसे मना किया तो अुस आदमीने अुसे तमाचा मार दिया। अिस घटनाका दुःखद पहलू तो यह है कि कांग्रेसियोंके हाथमें अभी पूरी राज्यसत्ता नहीं आअी है, परन्तु जितनी आअी है अुसीमें कांग्रेसी यह मानने लगे हैं कि अिस देशमें जो कुछ है सव हमारा ही है। अेक तरहसे तो यह वात सच है। परन्तु अिस सारी चीजमें भी मर्यादा और अनुशासनका नियम कायम रहना चाहिये। प्रत्येक कांग्रेसी भाअी-वहनको अनुशासन, नम्रता, विवेक, सादगी, स्वच्छता आदिको अपना भूषण मानना चाहिये।

"अभी-अभी चारों तरफ प्रत्येक वस्तुमें कालावाजारका खूव शोर मच रहा है। परन्तु व्यापारियोंसे कालावाजार करानेवाले हमीं हैं। यदि जनता

अेकदम निश्चय कर ले कि भूखों मर जायेंगे, परन्तु कालाबाजारमें अेक पाअी भी अधिक नहीं देंगे, तो मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तानसे अिस बुराअीका अन्त २४ घंटेमें ही हो जायगा। अगर लोग मेरी सलाह मानें तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि हमें अनाजके लिअे दूसरे देशोंसे भीख मांगनी ही नहीं पड़ेगी; देशका अेक आदमी भी नंगा-भूखा नहीं रहेगा। लेकिन अिसके लिअे मैं किसीको अेक पलका समय भी आलस्यमें बिताने नहीं दूंगा। प्रत्येक स्त्री-पुरुष या समझदार बालकसे भी मैं अुसकी शक्तिके अनुसार काम लूंगा। ४० करोड़में से ४० लाख भी यदि अिस तरह हिन्दुस्तानको अपना देश मानकर फर्ज अदा करें, तो यहां दूध-घीकी नदियां बहने लगें। परन्तु मेरी कौन सुनता है?

"आस्ट्रेलिया हमें कहता है कि तुम हमें अलसी दो तो हम तुम्हें अनाज देंगे। किसी देशमें धान्यकी सख्त तंगी हो रही हो, अुस समय अैसी बदलेकी बातें करना किसी दूसरे देशको शोभा देनेवाली बात नहीं कही जायगी। परंतु मौजूदा दुनियाका यही व्यवहार है, तब क्या किया जाय?"

प्रार्थना-सभासे आकर बापूजीने मेरे पलंग पर बैठकर ही अंगूर खाये। और प्रार्थना-सभाका संदेश कहा। अेक बीमार भाअीको (हिन्दीमें) पत्र लिखा:

पटना,
२२-५-'४७

तुम बीमार पड़ गये थे सो मुझे किसीने कहा था। मैं भूल गया। कल यकायक स्मरण हुआ। मनुष्य अपने अपराधसे बीमार होता है। तुमने क्या किया? क्यों किया? बीमारीसे सेवाका काम रुकता है न? . . . कहां है?

बापूके आशीर्वाद

बापूजीके पास मंत्रि-मंडल आया है। अिस समय लगभग ९ बजे हैं। भार्गव साहब मुझे देखने आये। निर्मलदा सुबह ही जानेवाले हैं। मदालसा बहनने सबके बिस्तर किये। मेरा काम भी अुन पर ही आ पड़ा है। मुझे स्पंज देना, मेरा बिस्तर कर देना वगैरा सारी जिम्मेदारी अुन्हीं पर है। अिससे मुझे अच्छा नहीं लगता। बेचारी दो दिनके लिअे घूमने आअी हैं। और मुझे अुनसे सेवा करानी पड़ती है। भार्गव साहब और नर्सोंने मेरे पास रहनेके लिअे खूब आग्रह किया। परन्तु बापूजीने मना कर दिया। (हंसीमें) बापूजीने

अुन लोगोंसे कहा : "मैं ही खुद नर्स हूं न? और मेरा दावा है कि मैं तुम सबसे अच्छा नर्सका काम करूंगा। अिसलिअे अब तक तो तुमने मनुकी सेवा की। अब मुझे करने दो। फिर भार्गव साहबसे पूछूंगा कि कौन बढ़कर है। अगर तुम्हें रात-दिन यहां रोकूं तो 'फीस' कहांसे लाअूं? मैं कमाने तो जाता नहीं। अिसलिअे मेरी ही परीक्षा होने दो।" अिस तरह सबको खूब हंसाकर विदा किया। दोनों नर्स बहनोंने बापूजीके हस्ताक्षर मांगे। परन्तु अुन बहनोंको पता नहीं था कि बापूजी अपने हस्ताक्षरोंके ५ रुपये लेते हैं।

बापूजी यों छोड़नेवाले कहां थे? मुझसे कहने लगे, "तुम्हारे खातेमें लिखकर अिन दोनोंको हस्ताक्षर देता हूं।" अुन दोनोंको बापूजीने यह संदेश लिख दिया :

> तुम्हारी नौकरी अैसी है, जिसमें स्वार्थके साथ परमार्थ भी सिद्ध हो सकता है। किसी पुण्यके प्रतापसे ही अैसी परमार्थ साधनेकी शिक्षा पाअी जा सकती है। और वैसी नौकरी भी मिलती है। अिस-लिअे अीश्वरने तुमको जो सेवाका काम दिया है अुसे सुशोभित करो और रुपया कमानेका मोह छोड़ो।
>
> बापूके आशीर्वाद

लगभग ९-३० के बाद सोनेकी तैयारी।

पटनासे दिल्ली जाते हुअे रेलमें
२४-५-'४७

बापूजी नियमानुसार प्रार्थनाके लिअे अुठे। मैं भी अुठी। परन्तु बोलनेमें अभी तक अैसा लगता है जैसे आंतें खिंच रही हैं। अिसलिअे भजन और धुन नहीं गवायी। बापूजी आज प्रार्थनाके बाद खूब काममें रहे। बंगाली पाठ अब गाड़ीमें कर रहे हैं। सुबह जल्दी ही खाकसार मिलने आये। अुनके साथ और भी कुछ भाअी थे। बापूजीने अुनके साथकी बातोंमें कहा :

"अब चन्द दिनोंमें ही हम पूर्ण स्वराज्य ले लेंगे। परन्तु राजनीतिक स्वतंत्रता कितनी ही कीमती क्यों न हो, तो भी जब तक मिली हुअी स्वतंत्रतामें खुली आंखोंसे दिखनेवाला लोगोंका कल्याण न हो, तब तक हमें चैन न लेना चाहिये। अब हमारी समाज-व्यवस्था अैसी होनी चाहिये, जिसमें शोषणका बिलकुल नाश हो जाय। सारा व्यवहार लोकतंत्रके ढंग पर

ही चलना चाहिये। अब अंग्रेजोंकी या किसी और देशकी मुराद कुछ भी हो, परन्तु आनेवाली आजादीको कोअी रोक नहीं सकेगा। अिस समय अगर हम नहीं चेतेंगे तो टाअिफाअिडके रोगीकी जो हालत होती है वही हमारी होगी। टाअिफाअिडके रोगीको कितना ही बुखार हो, तो भी हम अुसकी रक्षा करते हैं। परन्तु रोगीकी असली सेवा करनेका समय तो बुखार अुतरनेके बादका होता है। यदि बुखार अुतरनेके बाद टाअिफाअिडके रोगीको अच्छी तरह न संभाला जाय, तो अुसकी तबीयत पलटा खाती है और वह मृत्युकी शरणमें चला जाता है। अैसा ही आजादी मिल जानेके बादका हमारा यह समय है। यदि हमें आजादीके लायक बनना हो, तो थोड़ा अेक-दूसरेके लिअे कष्ट सहना सीखना पड़ेगा। समुद्रकी तरह बड़ा पेट रखना पड़ेगा। जैसे समुद्रमें अनेक नदियोंका पानी समा जाता है, अनेक जीव-जन्तु रहते हैं, अनेक जहाज चलते हैं और किनारों परसे अनेक प्रकारकी गंदगी मिल जाती है तो भी वह पवित्र माना जाता है, अुसमें स्नान करनेसे पाप धुल जाते हैं अैसी हमारी मान्यता है, अुसी तरह अगर हमें कोअी दो शब्द कह भी जाय या कोअी मार जाय, तो भी वह हमारा भाअी है अैसा मान कर हम समुद्र जैसा अुदार दिल रखें तो हम समुद्रके पानी जैसे पवित्र बन सकेंगे। स्वतंत्रताकी प्राप्ति तो हमने अहिंसा और सत्यके साधनोंसे की है।

"मैं आजकल अेक-दूसरेमें विश्वास पैदा कराने और आपसमें बराबरीका भाव अुत्पन्न करानेके लिअे घूम रहा हूं। मुझे अुसमें आपकी मदद चाहिये। फौज या पुलिसकी मददसे जो शांति होती है, वह शांति नहीं, परन्तु अुसमें क्रांतिकी अग्नि जल रही होती है। पुलिसकी जरासी भी गैरहाजिरीमें यह अग्नि भड़क अुठेगी अिसमें मुझे कोअी शक नहीं। जबरदस्ती लादी हुअी शांति सच्ची शांति नहीं। भयको दूर करानेका अेक ही अुपाय है कि प्रत्येक धारासभाका सदस्य कुटुम्ब-सहित, प्रत्येक मंत्री कुटुम्ब-सहित आम लोगोंमें मिल जाय। हिन्दू हो वह मुसलमान बस्तीमें जाय, मुसलमान हो वह हिन्दू बस्तीमें जाय, स्त्रियां स्त्रियोंके पास जायं, बालक बालकोंके साथ हंसें, खेलें और पढ़ें और पुरुष पुरुषोंके पास जाकर अपनी बुद्धिके अनुसार आजाद भारतकी किस ढंगसे अुत्तम सेवा हो सकती है अिसके विचारोंका आदान-प्रदान करें, तो मुझे विश्वास है कि समाज अूंचा अुठेगा। कोअी मंत्री अैसा न समझे कि मैं अधिकारी हूं। कोअी मंत्रीकी पत्नी अैसा न समझे कि मेरा पति अमुक विभागका मालिक

है। और अुसके वालकोंको भी अैसा भान न हो कि हम मंत्रीके वालक हैं। अितनी मिलनसारी भी प्रत्येक प्रान्तके केवल पांच-सात मंत्रियों और अुनके कुटुम्वियोंने ही वढ़ाअी होती तो मेरा विश्वास है कि आज ये दिन न आते। मैं तो अनुभवसे देख रहा हूं कि श्रीवावू (विहारके मुख्यमंत्री) मंत्री नहीं थे, तव वे समाजमें वहुत मिलते-जुलते थे। अव मंत्री हो गये हैं तो जो स्थान आगाखां महल जैसे वादशाही वंगलेमें मेरा था वह स्थान आज अुनका हो गया है। मैं अकेले श्रीवावूकी ही वात नहीं कहता। यह वात प्रत्येक मंत्री पर लागू होती है। मंत्री वन गये तो अुनके वंगलेके दरवाजे पर पुलिस-वाले रख दिये गये। मंत्री हो गये अिसलिअे पहलेसे पुलिसवालोंको तैयार करना पड़ता है। 'अंग-रक्षक' के विना कैसे जायं? अिन सव झंझटोंमें पड़ गये। मंत्री न थे तव रातको १२ वजे विस्तरमें सोते सोते विचार आता कि अमुक जगह जाना है तो विस्तरसे अुठकर चले जाते थे। अिसलिअे सच पूछो तो मुझे मंत्रियों पर दया आती है और मेरी भाषामें कहूं तो अुनकी हालत अेक कैदीसे भी अधिक विषम है।" (हंसी)

७–१० पर हम स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। घरसे स्टेशन तकका रास्ता वहुत लंवा था। वापूजीने मोटरमें मुझे सुला दिया। मुझसे कहने लगे: "रोज मैं तुम्हारी गोदमें सिर रखकर सोता था न? आज तुम्हारी वारी है। मेरी गोदमें सिर रखकर सो जाओ।" परन्तु मैंने वैसा नहीं किया। वापूजी थक जायं तो? अेक तौलिया सिरके नीचे रखा। परन्तु वापूजीको चैन नहीं पड़ा। मुझसे कहा: "तुम मुझे वापू, दादा, मां माननेकी वात कहती हो। परन्तु तुमने मुझे कोअी वड़ा आदमी मान लिया है, अिसीलिअे मेरी गोदमें सिर रखनमें तुम्हें संकोच होता है। यह गलत है। लड़कियों, पोतियों या पोतोंको अपने दादाकी गोदमें सोनेको मिले तो सौभाग्यकी वात नहीं है? मेरे दादा तो जल्दी गुजर गये, नहीं तो मैं तुम्हारी तरह दादा पर दया न करता।" यों कहकर मेरा सिर अुन्होंने अपनी गोदमें रख लिया। और लटकते हुअे पैरोंको जगह हो जानेसे अूपर ले लिया। आगेकी सीट पर कर्नल शाहनवाज साहव और मृदुलावहन वैठी थीं।

डॉ० भार्गव साहव सीधे ही स्टेशन आये। हमारे साथ जयप्रकाशजी और प्रभावतीवहन भी हैं।

अिस वार प्रत्येक स्टेशन पर भीड़का पार नहीं है। मैं अुठती थी, परंतु वोला नहीं जाता था। रास्तेमें वापूजीका चरखा विसेनभाअीने तैयार कर

दिया। बापूजीके पेडू पर मिट्टी मैंने रखी। शामको अत्यन्त निर्बलता मालूम हुअी और चक्कर आये। भार्गव साहबने देखभाल की। नाकमें से कोअी तीन बार नकसीर जैसी खूनकी धार निकली। भार्गव साहबने कैलशियमका अिंजेक्शन दिया और कोरामिनकी बूंदें पिलाअीं।

भार्गव साहब भी प्रत्येक स्टेशन पर चन्दा अिकट्ठा करनेमें मदद देते थे। शामकी प्रार्थनामें भी अुन्होंने भाग लिया। वे बापूजीके साथ बड़ी भक्तिसे तीसरे दरजेमें सफर कर रहे हैं। बापूजी भी अुनके सोने, खाने आदिका खूब ध्यान रखते हैं।

शामकी प्रार्थना मैंने कराअी। भजन और रामधुन छोड़ दी। कानपुर स्टेशन आया तब मैं सो गअी। कानपुरके बाद अेक-दो स्टेशन जाने पर मैं अेकाअेक जागी। बापूजी कुछ ढूंढ़ते हुअे सारा सामान टटोल रहे थे। मैंने पूछा तब बापूजी बोले, "कानपुरमें किसीने तकियेके नीचेसे घड़ी अुठा ली मालूम होती है।" बापूजीके पास यह घड़ी २० वर्षसे थी। बापूजीने कहा, "यह घड़ी जब मैं मोतीलालजीसे मिलने अलाहाबाद गया था तब अिन्दू (अिन्दिराबहन गांधी) के पास थी। मैंने रेलमें ही अुससे मांगी थी। अुस समय तो वह छोटी-सी लड़की ही थी। लेकिन अुसने बड़े हर्षसे मुझे यह घड़ी दे दी थी।" मुझसे बोले, "तुम बीमार पड़ी अिसका यह परिणाम है। अिसलिअे अब तुम्हें जल्दी अच्छी होनेका विचार करना चाहिये।" अब रातके १२ बजे हैं। मैं दिनमें काफी सो ली थी, अिसलिअे नींद अुड़ जाने पर डायरी पूरी की। बापूजीके लिअे सुबहकी आवश्यक वस्तुअें तैयार करवाकर बाकी सामान बंधवाया। अिस बार असह्य गरमी है। संतरे-मोसम्बीका बड़ा ढेर लग गया है। लोग प्रत्येक स्टेशन पर दे जाते हैं। कल भंगीबस्तीके बच्चोंको दे दूंगी। बापूजीने खुराकमें सबेरे रस लिया था। दोपहरको अेक ही खाखरा लिया और शामको ताजे अंगूर खाये। खूब गरमीके कारण, और लोग भी घबरा देते हैं अिसलिअे, खुराकमें खास तौर पर कुछ नहीं लिया।

घड़ी ढूंढ़नेके लिअे सब-कुछ छान मारा। कहीं नीचे न गिर गअी हो। आखिर न मिली तो न मिली। अेक पिन भी गफलतसे चली जाय तो बापूजी बेचैन हो जाते हैं। आज तो वर्षों पुरानी घड़ी गुम हो गअी!

गांधी अध्ययन केन्द्र

तिथि	तिथि
२३.११.८७	